अपने संतानकौ या लोक परलोककी कामना चाहै है और कहा पैहै ता ही संध्यानयमसो निवृत्ति होइ कश्यपजी यह बोले ३६ तेरी अपवि
त्रताते और संध्यारूप दोषते और मेरी आज्ञा उलंघन करी और देवतानकी अवज्ञाते तेरे पुत्र बडे नीच होंइगे ३७ या संध्यारूप दोषते
तेरे पुत्रमें अधर्म होइ गर्भ ही मे मलते घडवे पालन सहित तीनो लोकनको बडी पीडा देइगे ३८ बलकरि निरअपराधी प्राणीनकै मारेंगे
बिचारी स्त्रीनको पकरैंगे महात्मानको पकरामेंगे तब भगवान अवतार लैके मारेंगे ३९ लोकनके पालन हारे भगवान विश्वरूप उनपै क्रो
ध करि अवतार लैके ऐसे मारेंगे जैसे इंद्र पर्वतनकौ बिही ऐ परिहार करै है ४१ तब दिती बोली हे पति चक्र करि उत्तर जामको ऊ जानावति जो

सन्नाप्रसीदतां भामो भगवानुर्वनुग्रहः व्याधस्याप्यनुकंप्यानां स्त्रीणां देवः सतीपतिः ३६ मैत्रेय उवाचः स्वसर्गस्याशिषं लोक्या
माशासानां प्रवेपतीं निवृत्तसंध्यानियमो भार्यामाह प्रजापतिः ३७ कश्यप उवाचः अप्रायत्यादात्मनस्ते दोषान्मौहूर्तिकादुतः
मन्निर्देशातिचारेण देवानां चैव हेलनात् भविष्यतस्तवाभद्रावभद्रे जाठराधमौ लोकान्सपालांस्त्रींश्चंडि मुहुराक्रंदयिष्यतः ३९
प्राणीनां हन्यमानानां दीनानामकृतागसां स्त्रीणां निगृह्यमाणानां कोपितेषु महात्मसु ४० तदा विश्वेश्वरः क्रुद्धो भगवांल्लो
कभावनो हनिष्यत्यवतीर्यासौ यथाद्रीं छतपर्वधृक् ४१ दितिरुवाचः वधं भगवता साक्षात्सुनाभोदारबाहुना आशासे पुत्रयोर्म
ह्यं मा क्रुधाद्ब्राह्मणात्प्रभो ४२ न ब्रह्मदंडदग्धस्य न भूतभयदस्य च नारकाश्चानुगृह्णंति यां यां योनिमसौ गतः कश्यप उवाच कृतशो
कानुतापेन सद्यः प्रत्यवमर्षनात् भगवत्युरुमानाच्च भवे मय्यपि चादरात् पुत्रस्यैव च पुत्राणां भवितैकः सतां मतः ४३ गास्यंति यद्य
शः शुद्धं भगवद्यशसा समं योगैर्हेमेव दुर्वर्णं भावयिष्यंति साधवः निर्वैरादिभिरात्मानं यच्छीलमनुवर्तितुं यत्प्रसादादिदं विश्वं
प्रसीदति यदात्मकं स स्वदृग्भगवान्यस्य तोष्यतेनन्यया दृशा ४५ हमारे पुत्रनको वध तो होइगो तो भलो ही होउ मैं वाहू मैं मन स्पृहं
परंतु ब्राह्मणके क्रोधकरि मति मारो ४२ ब्रह्मदंड करि जरे और प्राणीनको भय देवेवारो या योनमें जारे ता योनमें नर्क तेहू कृपा न होत
है ४२ कीयो अपराध जाता और पीछे पश्चाताप करी ताते और श्री प्रभुहीमें ... विचार कीयो ताते और रुद्रमें तेने मान राखो और मो
हको आदर कीयो ताते पौत्र तेरे श्रेष्ठ होइगो ४३ हिरण्यकशिपुके पुत्र नमें एक पुत्र प्रल्हाद नाम करि विख्यात बडो भक्त होइगो

भागवतपुराण : लाला श्री मनोहर जी
(व्रज) फिरोजपुर



जैसे तीनवर्ण सुवर्णादिक उपायन करि शुद्ध करिये है ऐसे निर्वैरादिक उपायन कर जा प्रसाद के स्वभाव कौं अपने अंतःकरण करि साधुलोग अपने चित्त कौं शुद्ध करै है ४५ जाके प्रसादनै यह विश्व प्रसन्न होइहै सोई आत्मा साक्षी भगवान प्रह्लाद पै अनन्य दृष्टि करि सें तुष्ट होइगो ४६ सो भगवान महानुभाव वडेन के वडे वडी जो पाश्नि तासे शुद्ध अंतःकरन ताम वैकुंठ भगवान को स्वने पानै करि यह देह अभिमान कौं त्यागैगो ४७ जाकी विषय मैं आधाश्नि नही सुद्र सें स्वभाव जाकौं विरानी समृद्धि देषि कै प्रसन्न दुखी या देख मैं हैं यथा जाकौं जाके वैरी कोई भयो नही जैसे कर मीके ताप कौं चंद्रमा हरै है ऐसें जगत के शोक हरिवे वारे श्री प्रह्लाद जी होइगे ४८ निर्मलजि

सर्वे महाभागवतो महात्मा महानुभावो महतां महिष्ठः प्रवृद्धभक्त्या ह्यनुभाविताशये निवेश्य वैकुंठमिमं विहास्यति ४५ अलंपटः शीलधरो गुणाकरो हृष्टः परर्द्ध्या व्यथितो दुःखितेषु अभूतशत्रुर्जगतः शोकहर्ता नैदाघिकं तापमिवोडुराजः ४६ अंतर्बहिश्चामलमब्जनेत्रं स्वपूरुषेच्छानुगृहीतरूपं पौत्रस्तव श्रीललनाललामं द्रष्टा स्फुरत्कुंडलमंडिताननं ४७ मैत्रेय उवाच श्रुत्वा भागवतं पौत्रममोदत दितिर्भृशं पुत्रयोश्च वधं कृष्णाद्विदित्वासीन्महामनाः ४८ इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे दितिगर्भाधानकथनं नाम चतुर्दशोध्यायः १४ मैत्रेय उवाच प्राजापत्यं तु तत्तेजः परतेजोहनं दितिः दधार वर्षाणि शतं शंकमाना सुरार्दनात् १ लोके तेन हतालोके लोकपाला हतौजसः न्यवेदयन्विश्वसृजे ध्वांतव्यतिकरं दिशां २

न केवल अपने पुरुषन की इच्छा करि कै ही वा रूप धारण करै है रूप जानें लक्ष्मी रूपी शोभा करिवे वारे कुंडलन करि शोभित जाकौं मुख ताहि तेरो पोतो प्रह्लाद साक्षात देखैगो ४९ पोतो भागवत होइगो यह सुनि कै दिती प्रसन्न होत भई और पुत्रन कौं वध श्री कृष्ण ते सुनि कैं वडी उत्साह युक्त भई ५० इति तृतीयस्कंधे चतुर्दशो ध्यायः १४ विरानें तेज कौं हरिकरिवे वारो कश्यप जी कौ वीर्य ताहि दिती वर्ष ताई उदर में राषत भई यह देवतान कौं पीडा देहिगे या सें जाते १ वा गर्भ के तेज करि हरि कौ पातेलख यी दिशन में प्रकाश जाम ऐसे लोकन में लोकपालन कौ प्रभाव नष्ट होइ गयौ तव वे अंधकार करि

नष्टयोगभय अपनो अंगके मांस मैं भूल गयो वस्त्र जाके उड़ि गयो जाको माधुरी पालन करेहैं मानों वासुदेवमें प्रविष्ट नाकी
बुद्ध ऐसी देवहूतीन जानत भई कैसे ते २९ ऐसे कपिलदेवजीने कह्यो जो मार्ग ताकर थोरे कालहीमें नित्य मुक्त भगवान
हे तत्को प्राप्ति होत भई ३० हे वीर विदुर सो वह स्थेत्र त्रिलोकीमें विख्यात पवित्र सिद्धपद नाम करके होत भयो जहां देवहूती
ने सिद्धि पाई ३१ ता देवहूतीको सरीर योग करिके लीन भयो है ताके धातु मल जाके सो नदी तिनमें श्रेष्ठ सिद्धिन करके सेवित सिद्ध
दा नाम नदी होत भई ३२ भगवान कपिल योगी पिताके आश्रममें मातासे आज्ञा मांग पूर्व उत्तरके बीच आवत भये ३३

स्वांगं न योगनयं मुक्तकेशं गतांबरं दैवं गुप्तं न बुबुधे वासुदेवप्रविष्टधीः २९ एवं सा कपिलोक्तेन मार्गेणाचि
रतः परं आत्मानं ब्रह्मनिर्वाणं भगवंतमवाप ह ३० तद्वीरासीत्पुण्यतमं क्षेत्रं त्रैलोक्यविश्रुतं नाम्ना सिद्ध
पदं यत्र सा सिद्धमुपेयुषी ३१ तस्यास्तद्योगविधुतमार्त्यं मर्त्यमभूत्सरित् स्रोतसां प्रवरा सौम्या सिद्धदा
सिद्धसेविता ३२ कपिलोऽपि महायोगी भगवान् पितुराश्रमात मातरं समनुज्ञाप्य प्रागुदीचीं दिशं ययौ ३३
सिद्धचारणगंधर्वैर्मुनिभिश्चाप्सरोगणैः स्तूयमानः समुद्रेण दत्तार्हणनिकेतनः ३४ आस्ते योगं स
मास्थाय सांख्याचार्यैरभिष्टुतः त्रयाणामपि लोकानामुपशांत्यै समाहितः ३५ एतन्निगदितं तात यत्पृष्टो
हं तवानघ कपिलस्य च संवादो देवहूत्याश्च पावनः ३६ य इदमनुशृणोति योऽभिधत्ते कपिलमुनेर्मतमा
त्मयोगगुह्यं भगवति कृतधीः सुपर्णकेतावुपलभते भगवत्पदारविंदं ३७ इति श्रीभागवते महापुराणे

सिद्ध चारण गंधर्व मुनि अप्सरानके गणने अस्तुत जाकी करी समुद्रने दियो है पूजन और स्थान जाको औ इस सांख्य
के आचार्य जाको अस्तुत करे हैं ३४ ऐसे कपिलदेवजी तीनो लोकनकी शांतिके लीये योगमें स्थित होय गंगासागर
में विराजे हैं हे विदुर यह जो तैंने मोहि पूछ्यो कपिलदेव देवहूतीको संवाद पावन मैंने तेरे आगे कह्यो ३६ यह आत्मयोग कर

इंद्रतें की स्त्रीराको वांछित ऐसे घर कों छोडिके वह तौ पुत्र के विरह करि आतुर कछुक मुख मलीन करत भई २० पतिके व
न गयें सतें पुत्र के विरह में आतुर भई तत्वज्ञा भोहूहैं परपुत्र गये पै ऐसे आकुल भई है जैसे वछरा के गये गऊ आकुल होत है २१
सोई पुत्र रूप कपिल हरि तिन कों ध्यान करत हे विदुर वे से ई घर में निःस्पृह होत भई २२ जो कपिल जीने कह्यौ ध्यान को विषय प्र
सन्न ज्ञा में मुख सो भगवद्रूप ताहि ध्यान करत भई २३ भक्ति प्रवाह योग करि और बलवान वैराग्य कर ऐसे युक्ति अनुष्ठान कर
भयो जो है ब्रह्म हेतु ज्ञान ताहि करि विश्वतोमुख आत्म स्वरूप प्रकास करत ते रोग भ्रमते माया गुण न कर पृथक् है जाको ताहि प्राप्ति

हित्वा तद्दीप्सिततममप्याखंडलयोषितां । किंचिच्चकार वदनं पुत्रविश्लेषणातुरा २० वनं प्रव्रजिते पत्यावपत्य
विरहातुरा ज्ञाततत्वाप्यभून्नष्टे वत्से गौरिव वत्सला: २१ तमेव ध्यायती देवमपत्यं कपिलं हरिं बभूवाचिर
तो वत्स निःस्पृहा तादृशे गृहे २२ ध्यायती भगवद्रूपं यदाह ध्यानगोचरं सुतः प्रसन्नवदनं समस्तव्यस्तचिंतया २३
भक्तिप्रवाहयोगेन वैराग्येन बलीयसा युक्तानुष्ठानजातेन ज्ञानेन ब्रह्महेतुना २४ विशुद्धेन तदात्मानमात्मना
विश्वतोमुखं स्वानुभूत्या तिरोभूतमायागुणविशेषणं २५ ब्रह्मण्यवस्थितमतिर्भगवत्यात्मसंश्रये नीवृत्ती
जीवापत्तित्वात् क्षीणक्लेषाप्तनिर्वृती: २६ नित्यारूढसमाधित्वात् परावृत्तगुणभ्रमा न सस्मार तदात्मानं स्व
मे दृष्टमिवोत्थिता २७ तद्देहः परतः पोषोप्यकृशश्चाध्यसंभवात् बभौ मलैरवछन्नः सधूम इव पावकः २८

होत भई २८ हंस्त भगवान में स्थिर सें बुद्धि जाकी याहीतें निवृत्ति है जीव भाव जाको प्राप्ति है निवृत्ति जाकों २६ नित्य स
माधि पै आरूढ है याहीतें गुणनि निमित्त भ्रम जाकों दूर भयो सो अपनी देही कों स्मरण करत भई जैसे सोई कोऊ स्वप्न प्र
पंच कों नहीं स्मरण करे है ९ रूप ने सेती देवहूती के देह मैल की विसम्रतता न भई २७ ताहि देह कों विद्याधर पोषण करे
है परंतु मन में गिलान नहीं याते पुष्ट और मल न करत ढकौ ऐसौ सो आयमान होत है जैसे धूमा सहित अग्नि २८

सो देवहूती हूं पुत्र ने उपदेश की पौंने श्रवना करि सरस्वती कौ पुण्य सुकृत मुख ज्यौं बिंदु सरोवर ता पैं सावधान होई स्थित होत भई १३
अकाल स्नान करि पीरे ऐसी जटील कुटील अलक तिन ने धारण करे हैं और उग्र तप कर कृश शरीर युक्त देह कौ धारण करे हैं १४ प्रजा
पति कर्दम के तप योग करि अतिसविलयाई स्म देवना नकूर मार्थिना कर वे को योगश नारि छोड कर पुत्र कौ विरत कर कछु व्याकु
ल मुख करत भई सो ककरि १५ जो देवहूती के घर में दुधके फेण सरीखो उज्वल सेयाहैं ताथी दांत के जिन में पारी सेत हंस मेके

सा चापत नयो क्तेन योगादेशेन योगयुक् तस्मिन्नाश्रम आपीडे सरस्वत्यास माहिता १३ अभीक्ष्णावगात क
पिशान् जटिलान् कुटिलालकान् आत्मानं चोग्र तपसा बिभ्रती चारिणां कृशं १४ प्रजापते कर्दमस्य तपोयोग
विजृम्भितं स्वगार्हस्थ्यमनौपम्यं प्रार्थ्यं वैमानिकैरपि १५ पयःफेननिभाः शय्या दान्ता रुक्मपरिच्छदाः आसना
नि च हैमानी सुस्पर्शास्तरणानि च १६ स्वच्छस्फटिककुड्येषु महामारकतेषु च रत्नप्रदीपा आभान्ति ललनारत्नसं
युतः १७ गृहोद्यानं कुसुमितैः रम्यं बह्वमरद्रुमैः कूजद्विहंगमिथुनं गायन्मत्तमधुव्रतं १८ यत्र प्रविष्टमात्मानं व
वुधानुचतजगु: वाप्यामुत्पलगंधिन्यां कर्दमेनोपलालितं १९ १९ . १९ १९ १९ १९ १९

काम भयो हैं सोने के आसन जिनके कोमल स्पर्श १६ स्वच्छ स्फटिक मणि के मन रकन के घर तिन में स्त्री रत्न कर युक्त
रत्न के दीप प्रकास करे हैं १७ और वा घर के बाग फूले वो होत कल्पवृक्ष तिन कर मणीपते जा में पक्षीन के जोडा वो ले
हैं मतवारे भौंरा गावे हैं १८ जा बाग में प्रविष्ट जो देवहूती ताहि देवतान के यश गावे हैं कमलन की जा में सुगंध ता की बावरी
करि मजीने श गाई हैं १९

भा०त०
९२

याऽनुमारे मननसंकीर्तनते श्रवणतेतुमारेचिंतयतेस्मरणप्रणामकीयेतेकुलानकोभक्षणकरे ऐसोचांडालहूं सोमया
ग के जो अपवित्र हो भगवान्तुमारे दर्शननेसोनपवित्रतोय ६ देखोतें आश्चर्यवत चांडालश्रेष्ठ तैं जाके जिह्वाग्रमें तुमारो नाम
वर्ते है जिननेतुमारो नामलियोवतसंनहनकरत भवहनसोमकरत भयो तीर्थस्नानतावयेसववेदनुनभेपाढे वेद वेद स(?)चारी
है जिननेतुमारो नामलीयो अथवा पूर्वजन्ममें उनने एसव पुन्नकरैते जो नामकीर्तनकरे पूर्वसुकृत नविनानामो च्चारण होयत
ही ७ सोतुम हं सपरमात्माजीसोमननामें चिंतमनकर वेवारो जोग अपनेतेजकर ध्वस्तहे गुणप्रवाह जामें वेदजाके गर्भमें:

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्यत्प्रह्वणाद्यत्स्मरणादपि क्वचित् श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कुतः पुनस्ते भग
वन्नु दर्शनात् ६ अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यं तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या ब्रह्मा
नूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ७ तं त्वामहं ब्रह्म परं पुमांसं प्रत्यक्स्रोतस्यात्मनि संविभाव्यं स्वतेजसा ध्वस्तगुणप्रवाहं व
न्दे विष्णुं कपिलं वेदगर्भं ८ मैत्रेय उवाच: ईडितो भगवानेवं कपिलाख्यः परः पुमान्: वाचाविक्लवयेत्याह मातरं मा
तृवत्सलः ९ कपिल उवाच: मार्गेणानेन मातस्ते सुसेव्येनोदितेन मे आस्थितेन परां काष्ठामचिरादवरोत्स्यसि १०
श्रद्धत्स्वैतन्मतं मह्यं जुष्टं यद्ब्रह्मवादिभिः येन मामभयं याया मृत्युमृच्छन्त्यतद्विदः ११ श्रीमैत्रेय उवाच: इति प्रदर्श्य
भगवान् सतीं तामात्मनो गतिं स्वमात्रा ब्रह्मवादिन्या कपिलोऽनुमतो ययौ १२ ऐसे कपिल भगवान तिनेमें दंडोतकरूं ८ ऐसे
स्तुतकीयेपीछे भगवान् कपिलदेव मातमें वडो जिनको स्नेह गंभीरवाणीकरयतकहत भये ९ हे मात सुखकरसेई कीयो अ
मैंनेकहो जो मार्ग तामें स्थितहोई थोरेकालहीमें तु जीवन्मुक्तिदशाकोप्रासतोयगी १० हे मात सुखकरसेइ वेदवादीनकीर
सेवितजोयहमेरोमततामें श्रद्धाकर मोसप्राप्तिहोयगी औरजेयामेरेमतकोनतीजानेहै तेमृत्युकोप्रासतोवै ऐसे भगवामाताको
अपनीआत्मगतिदिखायब्रह्मवादनीमाताने आज्ञादई जबतोकपिलदेववनमेंजातभये : ३ १२

मातादेवहूतीकपिलदेवजीकौवचनसुनै उरभयोहै मोहजाकौ ताकपिलदेवजीकोदंडोतकरकै अस्तुतकरतभई १
गुणनकौहैप्रवाहजामैं सबकौबीजअनंतई हुती अर्थ आत्माप्रियतुसारोवपु जलमैसोवैहैं तिनकोतुमारोउदरकमल
तेभयो सोउध्याननहीकरतभयो तोओरनकौसाक्षातदर्शनकहिकतीहैं २ जोतुमगुणप्रवाह याविधिधारणकरेहै हे कर्ता
दिरूपजानें ऐसेतुमश्रेष्ठसत्यसंकल्पजीवनकेईश्वर अपरमितहै जोरनशक्तिजाकी सोतुमविश्वकीसृष्टादिककरौहौ

मैत्रेयउवाच: एवं निशम्यकपिलस्यवचोजनत्रीसाकर्दमस्यदयितकीलदेवहूती विस्रस्तमोहपटलातम
भिप्रणम्यतुष्टावतत्त्वविषयांकितसिद्धभूमिं १ देवहूतीउवाच: अथाप्यजोन्त:सलिलेसयानं भूतेंद्रियार्था
त्ममयंवपुस्ते गुणप्रवाहंसदशेषबीजंदध्यौस्वयंयज्जठराब्जजाता २ सएवविश्वस्य भवान्विधत्ते गुणप्रवाहे
नविभक्तवीर्य: सर्गाद्यनीहोवितथाभिसंधीरात्मेश्वरोतर्क्यसहस्रशक्ति: ३ सत्वंभृतोमेजठरेणनाथकथंनु
यस्योदरएतदासीत् विश्वंयुगान्तेवटपत्रएक: शेतेस्ममायाशिशुरंघ्रिपान: ४ त्वंदेहतंत्र:प्रशमायपाप्मनां
निदेशभाजांचविभोविभूतये यथावतारास्तवसूकरादयस्तथायमप्यात्मपथोपलब्धये ५

सोतुममेरेपेटमैधारणकरै जातुमारेउदरमैयहविश्वहोतभयो तुमप्रलयमैंमायाकरबालकहोई अंगु
ष्ठकोपानकरतवटपत्रपैअकेलेतीसोवतभए ४ हेप्रभोअज्ञानीजिनकेतिनकेबोधकेलीये पापीनकेनाशके
लीयेंतुमदेहधारणकीयौहै जैसेतुमारेसूकरादिअवतारहैं तैसेज्ञानमार्गदिखायवेकोयहअवतारहै ५

भा०त०
९१

हे माता तेरे आगे गुणभेद करि चारि प्रकार को भक्तियोग को स्वरूप कह्यो है और अव्यक्तगति काल ताको स्वरूप कह्यो जो सब प्राणीन
में अंतर व्याप्त है जीव की संसार की गति अविद्या करि बनी तिनमें प्रवेश करि जो आत्मा अपनो स्वरूप को नहीं जानै है ३८
को भक्तियोग नाम कह्यो है ३७ और अविद्या करि मन अरि चौ लीला वन ससे सत जे कही तिनमें प्रवेश करि जो
यह ज्ञान खल को न कहीयें अनम्र को न कहीयें स्तब्ध भेद दर्शी धर्मध्वज इनके आगे न कहीये ३९ लोलुप के आगे न कहीये
जाको घर में आरूढ चित्त ताके आगे न कहै और जो मेरे भक्त के वैरी तिनके आगे न कहूं न कहै ४० जाके श्रद्धा होय भक्त होय नम्र होय अम्रस

प्रवोचं भक्तियोगस्य स्वरूपं ते चतुर्विधं कालस्य चाव्यक्तगतेर्योन्तर्धावति जंतुषु ३७ जीवस्य संसृतीर्बह्वीरविद्याकर्मनिर्मिताः
यास्वंगप्रविशन्नात्मा न वेद गतिमात्मनः ३८ नैतत्खलायोपदिशेन्नाविनीताय कर्हिचित् न स्तब्धाय न भिन्नाय नैव
धर्मध्वजाय च ३९ न लोलुपायोपदिशेन्न गृहारूढचेतसे नाभक्ताय च मे जातु न मद्भक्तद्विषामपि ४० श्रद्दधानाय
भक्ताय विनीतायानसूयवे भूतेषु कृतमैत्राय शुश्रूषाभिरताय च ४१ बहिर्जातविरागाय शान्तचित्ताय दीयतां निर्मत्स
राय शुचये यस्याहं प्रेयसां प्रियः ४२ य इदं शृणुयादम्ब श्रद्धया पुरुषः सकृत् यो वाभिधत्ते मच्चित्तः स ह्येति पदवीं च मे ४३
इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे कापिलदेवयाख्याने नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२

याहि ... प्राणीन में जानै मित्रता करी है शुश्रूषा रति है ताके आगे कहीयें ४१ बाहिर विषय में जाको वैराग्य शांति जाको चित्त
ताको है जो पै निर्मत्सर है शुचि है जाको मैं प्यारो ताको यह ज्ञान कहीये ४२ हे माता या मेरे मत को जो पुरुष श्रद्धा करि एक वार सुनै
वा सो मेरे में चित्त करि कहै सो मेरी पदवी को प्राप्त होइ ४३ इति श्रीमद्भागवते तृतीयस्कंधे कापिलदेवयाख्याने द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२

हे स्त्रीय तू मैं तेरे आगे ब्रह्मज्ञान कह्यौ जा करि प्रकृती औ पुरुष कौ स्वरूप जान्यौ जाहे ३१ ज्ञानयोग हमनिष्ठ है और भक्तिलक्षण योग सो उत्तमनिष्ठ है दोउन कौ एक ही प्रयोजन है भगवच्छब्द तें लक्षण ताप कह्यौ ३२ जैसें बहुत रूप सात्विक गुणन कौ आश्रय गुण छिही णादि एक ही अर्थ मार्गन करि प्रवर्ति जोई श्रीतिन करि नाना प्रकार की प्रतीत होत है तैसें एक भगवान् शास्त्र मार्गन करि नाना प्रकार की प्रतीत होत है ३३ क्रिया यज्ञ दान तप वेदाध्ययन आत्मा को विचार मन इंद्रियनि कौ जय कर्मन को त्याग इन करि ह

यथा महानहंरूपस्त्रिवृत्पंचविधः स्वराट् एकादशविधस्तस्य वपुरंडं जगद्यतः २८ एतद्वै श्रद्धया भक्त्या योगाभ्यासेन नित्यशः समाहितात्मा निःसंगो विरक्त्या परिपश्यति ३० इत्येतत्कथितं गुर्वि ज्ञानं तद्ब्रह्मदर्शनं येनानुबुध्यते तत्त्वं प्रकृतेः पुरुषस्य च ३१ ज्ञानयोगश्च मन्निष्ठो नैर्गुण्यो भक्तिलक्षणः द्वयोरप्येक एवार्थो भगवच्छब्दलक्षणः ३२ यथेंद्रियैः पृथग्द्वारैः रर्थो बहुगुणाश्रयः एको नानेयते तद्वद्भगवान् शास्त्रवर्त्मभिः ३३ क्रियया क्रतुभिर्दानैस्तपः स्वाध्यायमर्शनैः आत्मेंद्रियजयेनापि संन्यासेन च कर्मणां ३४ योगेन विविधांगेन भक्तियोगेन चैव हि धर्मेणोभयचिह्नेन यः प्रवृत्तिनिवृत्तिमान् ३५ आत्मतत्त्वावबोधेन वैराग्येण दृढेन च ईयते भगवानेभिः सगुणो निर्गुणः स्वदृक् ३६

रि मैं जाहे ३४ और विविधि जाके अंग ऐसें नियम करि और भक्ति योग करि और सकाम निष्काम लक्षण धर्म जो प्रवृत्ति निवृत्ति मानै है ३५ हे मात आत्मस्वरूप कौ ज्ञान दृढ वैराग्य इन मार्ग करि और भक्तियोग करि और स्वप्रकाश सगुण निर्गुण भगवान जानै है ३६

वासुदेव भगवान मैं प्रयोग कियौ जो भक्ति योग सो तत्काल वैराग्य उपजावै है और ब्रह्म दर्शन जो ज्ञान ताहि उपजावै है २१ जब या भक्त कौ चित्त इंद्रिय वृत्तिन करि समजे अर्थ तिन वीषै विषमता प्रिय अप्रिय रूप नै ग्रहण करै तब हु तब आपु ही करि स्वप्रकाश निःसंग समदर्शी त्याग परित्याग रहित आरूढ पद ताहि देखै है २२ ज्ञानमात्र परब्रह्म परमात्मा ईश्वर भगवान् एक ही दृश्य दृष्टा कारण रूप करि न्यारे २ पावत कैसे होत है २४ योगी जु रूप कौ समग्र योग करि यह अभिमत अर्थ है जो सब और ते असंग रहित है सो २५ शब्दादि ते धर्म जा कौ

ततस्तेक्षीणसुकृताः पुनर्लोकमिमं सति पतंति विवशा दैवैः सद्योविभ्रंशितोदया २१ तस्मात्त्वं सर्वभावेन भजस्व परमेष्ठिनं तद्गुणाश्रयया भक्त्या भजनीयपदांबुजं २२ वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानं यद्ब्रह्मदर्शनं २३ यदास्य चित्तमर्थेषु समेष्विंद्रियवृत्तिभिः न विगृह्णाति वैषम्यं प्रियमप्रियमित्युत २४ स तदैवात्मनात्मानं निःसंगं समदर्शनं हेयोपादेयरहितमारूढं पदमीक्षते २५ ज्ञानमात्रं परब्रह्म परमात्मेश्वरः पुमान् दृश्यादिभिः पृथग्भावैर्भगवानेक ईयते २६ एतावानेव योगेन समग्रेणेह योगिनः युज्यतेऽभिमतो ह्यर्थो यदसंगस्तु कृत्स्नशः २७ ज्ञानमेकं पराचीनैरिंद्रियैर्ब्रह्म निर्गुणं अवभात्यर्थरूपेण भ्रांत्या शब्दादिधर्मिणा २८

ऐसौ अर्थ रूप प्रीत करि ईंद्रीयण द्वारा ज्ञान रूप एक निर्गुण ब्रह्म तैसौ भासै है २९ जैसे महत्तत्व अहंकार रूप तैं अहंकार तीन प्रकार कौं भूत रूप करि पांच प्रकार कौं फिर जीव रूप ईंद्रीय रूप करि ग्यारे प्रकार कौं वयब्रह्म लोक जातैं सब जगत भयौ ३० या बात कौं श्रद्धा करि नित्य योगाभ्यास करि वैराग्य सावधान चित्त तें हि निःसंग तोइ देखै है ३१

या विश्व के उत्पत्ति पालन नास कर वे वारे पुरुष नारायण प्राप्ति होय हैं ७ द्विपरार्द्ध के अंत में जो ब्रह्मा को प्रलय न वनाई तो को ऊपर में ध्य
रह मूकर हिरण्यगर्भ की उपासना करें हैं ते ब्रह्मलोक में रहे हैं पृथ्वी जल अग्नि पवन आकास मन इंद्री विषय अहंकारादिकन
करवे ढिग न ब्रह्मा जु ताय संहार कीयो चाहे गुणत्रयात्मा ब्रह्मा द्विपरार्द्ध लक्षण काल को अनुभव कर ईस्वर में प्रवेश करै
हैं ऐसे जो को जु हिरण्यगर्भ में प्रविष्ट जे जोगी पवन मन जित मैं जीतैं वैराग्यसील पहिले हैं ब्रह्मा के संग विश्लोंघ फिर हंस्ता पाश

सूर्यद्वारेण ते यांति पुरुषं विश्वतोमुखं परावरेसं प्रकृतिमस्योत्पत्त्यंतभावनं ७ द्विपरार्द्धावसाने यः प्रलयो ब्र
ह्मणस्तु ते तावदध्यासते लोकं परस्परचिंतकाः ८ क्ष्मांभोनलानिलवियन्मन इंद्रियार्थभूतादिभिः पर
वृतं प्रतिसंजिहीर्षुः अव्याकृतं विशति यर्हि गुणत्रयात्मा कालं पराख्यमनुभूय परः स्वयंभूः ९ एवं परे
त्य भगवंतमनुप्रविष्टा ये योगिनो जितमरुन्मनसो विरागाः तेनैव साकममृतं पुरुषं पुराणं ब्रह्म प्रधान
मुपयांति गताभिमानाः १० अथ तं सर्वभूतानां हृत्पद्मेषु कृतालयं श्रुतानुभावं शरणं व्रज भावेन भामिनि
११ आद्यः स्थिरचराणां यो वेदगर्भः सहर्षिभिः योगेश्वरैः कुमाराद्यैः सिद्धैर्योगप्रवर्तकैः १२

प्रधान पुरुष जो ब्रह्म तिनातीं प्राप्त होय हैं १० जो केवल हर को भजे है ते हर ही को प्राप्ति होहें याते सब प्राणीन के हृदय कम
ल में कीयो है स्थान जानैं ऐसे भगवान की स्वभाव कर शरण लै ११ स्थावर जंगम की आदि ब्रह्मा सनत्कुमारादि
योगेश्वर योग के प्रवर्तक सिद्ध तिन करि सहित भेद दृष्टि करि भजन करवे मैं फेर जन्म ले हैं १२

योगवैराग्यकरयुक्त ऋलोजामैंज्ञान ऐसीबुद्धिकररचोजोलोकतातिविषैं शरीरकीआशाछोडिविचरै ४८ ~~इतीतृतीयेएकत्रिं शोध्यायः~~ ३१ अवजोकोउगृहनवस यत्नमेंधीयपुरुषग्रहकर्मणकोंक्रमन ङनगृहकेधर्मनकोंनाडदुखवैं फिरउनपैरीथी नरहेहैं १ सोउभआराधनरूप भगवत्धर्मनितें मुखिवलोई कामीनृत श्रद्धाकरिदेवता पुंजोपितृनकोंपूजैं २ ताश्रद्धाकरि जाकीमति जाकीबुद्धि पितृदेवनाकोंहै नियमजाकैं सोचंद्रमाकेलोकमैंजाइ अमृतपीके फिरवगरआवैहैं ३ अवशेषशैयापै अनंतआसनभ

तस्मान्नकार्यःसंत्रासोनकार्पण्यंनसंभ्रमः बुद्ध्वाजीवगतिंधीरोमुक्तसंगश्चरेदिह ४१ सम्यग्दर्शनयाबुद्ध्यायोग वैराग्ययुक्तया मायाविरचितेलोकेचरेन्न्यस्यकलेवरं ४७ ~~इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेएकत्रिंशोऽ~~ ध्यायः ३१ श्रीभगवानुवाचः अथयोगृहमेधीयान्धर्मानेवावसन्गृहे कामम र्थंचधर्मांश्चदोग्धिभूयःपिपर्तितान् १ सचापिभगवद्धर्मात्काममूढःपराङ्मुखः यजतेक्रतुभिर्देवान्पितॄंश्चश्रद्धयान्विताः २ तच्छ्रद्धयाक्रांतमतिःपितृदेव व्रतःपुमान् गत्वाचांद्रमसंलोकंसोमपाःपुनरेष्यति ३ यदाचाहींद्रशय्यायांशेतेनंतासनोहरिः तदालोकालयंयांतित एतेगृहमेधीनां ४ येस्वधर्मान्नदुह्यंतिधीराकामार्थहेतवे निःसंगान्यस्तकर्माणःप्रशांताःशुद्धचेतसाः ५ निवृत्तिधर्मनिरतानिर्ममानिरहंकृताः स्वधर्माख्येनसत्वेनपरिशुद्धेनचेतसा ६

गवान्सोवेहै तबऐंकेगृहस्थलोकलयकोप्राप्तिहोतहैं ४ औरजेघरकेअर्थकेलीयैस्वधर्मनकोंनहीदुहैहैं निसंगनिरहंकार निर्मोहअरुकरेंकर्मजिनमें सांतसमाचिततनेमेरेलोककोपावैहैं ५ निवृत्तिधर्ममेंरतममतारहित अहंकाररूपस्वधर्मजाको नाम ऐसेंसत्वकरसुद्धजीवकरमोहिपावैहैं ६ तेसूर्यद्वाराकरमार्गपरिपूर्णउपादानकारणविश्वतोमुखपरअवरकेईसः

कोईयोगकोपारयायोचाहैं सोस्त्रीएाभैसंगनकरें मेरीसेवाकर पायोहैं आत्मस्वरूपलाभजानैं नामनुष्यकोयहस्त्रीनरककोद्वार
कहीयेंहैं ३८ जोयोगीकेनिकटपानेशानेप्राप्तभयाहिमिसकर जोस्त्रीरूपमायाआवैहैं फिरनाहिदेखिअपनीमृत्युजानैं त्रे
सेतिनुकानकरिआवतिकुआपणकीमृत्यु ३९ औरपुरुषकीसीनाई आचरणकरन मेरीमायारचित अपत्यगृहकोदे
वेवारोताहिस्त्रीसंगीतिः स्त्रीएानेपामिहीजीवसोवागुरुषहकोअपनीमृत्युजानेः सोसंसारतेछुटोजावे ५० जोतुमस्त्रीउत्पत्त
पुत्रगरात्मकपुर्वकेदेवनेप्रामिकरिताहिअपनीमृत्युजानेः औसेवधिककोगायवोमगीकीमृत्युतें ५१ जीवकेउपाधिभूतजोलिं

संगंनकुर्यात्प्रमदासुजातुयोगस्यपारंपरवारुरुक्षुः मत्सेवयाप्रतिलब्धात्मलाभोवदंतयानिरयद्वारमस्य ३८
योयजानिप्राननैर्भाणायोषदेवविनिर्मिता तांमीक्षेतात्मनोमृत्युमृणैःकूपमिवावृतं ३९ यांमन्यतेपतिंमोहान्मन्मा
यावृषभाइनिः स्त्रीत्वंसंहितामासोविद्यापत्यगृहप्रदं ५० तामात्मनोविजानीयाःत्सत्यसथंत्यगृहात्मकं देवोपसार
तंमृत्युंमृगयोर्गायनंयथाः ५१ देहेनजीवभूतेनलोकाल्लोकमनुव्रजन् भुंजानएवकर्माणिकरोत्यविरतंपुमान् ५२
जीवोस्यानुगनेदेहे भूतेंद्रीयमनोमया तन्निरोधस्यमरणमुवीर्भावस्तुसंभवा ५३ द्रव्योपलब्धिस्थानस्यद्रव्येक्षायो
ग्यताघदा तत्पंचत्वमहंमानादुत्पत्तिर्द्रव्यदर्शनं ५५ यथाक्षणोर्द्रव्यवयवदर्शनायोग्यताघदा तदेवचक्षुःद्रष्टाद्रव्य

गदेहहैं तासोकर्मवसकरदेहमेंजानकर्मनकोभोगानिरंतर कर्मतीकरैंकर्मनवीनतीहोती ५२ भूतेंद्रियमनोमय जीवोपाधिलिं
गदेह सोनोआत्माकोअनुवर्तीतैं औरस्थूलभरतादिविकारदेह ताकोनाशमरणकहीयैं औरजोप्राडरभाव सोजन्मकहियै
द्रव्योपलब्धिस्थान जोनेत्रगोलोकताकों द्रव्यकोदर्शनकहीयैं अयोग्यतासोपंचतत्वकरकहियेहैं औरद्रव्यकोजोदर्श
नसोउत्पत्तिकहियेहैं तातेस्मरणतैंत्रासनकरियैं औरजीवमेंमदैन्यमनकेकरियैं औरसंक्रमणकरैविवेकस्वरूपकोजानेजी

यह अज्ञानी जो जीव पंच महाभूतनि करि रच्यौ यह देह ता विषै बेरो जाकौ आग्रह कुबुद्धि अहं मम या बुद्धि करै है ३० या देह के लियै कर्म करै है जा कर्म करि बंध्यो संसार कौं प्राप्त होइ है और इह अविपाक कर्म करि क्लेश पाइ के फिर फिर होइ है ३१ और जो सिस्न उदर परायन तिनके संग सो वै है और जो कुनरी के मार्ग मैं रमै तो पहिली सी नाई फिर नर्क मैं प्रवेस करै ३२ जिन दुष्टन के संग तै सत्य सौच दया मौन बु
द्धि लज्जा सो भाग्य सनय कौ प्राप्ति होइ है ते असांत मूढ खंडित या देह कौ आत्मा मानै हैं ३३ असाधु सोच करिवे से जो स्त्रीन के

भूतैः पंचभिरारब्धे देहे देह्यबुधोसकृत अहं ममेत्यसद्ग्रहः करोति कुमतिर्मतिं २९ तदर्थं कुरुते कर्म यद्बद्धो याति संसृतिं योनुयाति ददत्क्लेशमविद्याकर्मबंधना ३० यद्यसद्भिः पथि पुनः सिस्नोदर कृतोद्यमैः आस्थितो रमते जंतुस्तमो विसति पूर्ववत ३१ सत्यं सौचं दया मौनं बुद्धिर्ह्रीः श्रीर्यशः क्षमा शमो दमो भगश्चेति यत्संगाद्याति संक्षयं ३२ तेष्वसांतेषु मूढेषु खंडितात्मस्वसाधुषु संगं न कुर्याच्छोच्येषु योषित्क्रीडामृगेषु च ३३ न तथास्य भवेन्मोहो बंधश्चान्यप्रसंगतः योषित्संगाद्यथा पुंसो यथा तत्संगिसंगतः ३४ प्रजापतिः दुहितरं दृष्ट्वा तद्रूपधर्षितः रोहिद्भूतां सोन्वधावदृक्षरूपी हतत्रपः ३५ तत्सृष्टसृष्टसृष्टेषु कोन्वखंडितधीः पुमान् ऋषिं नारायणमृते योषिन्मय्येह मायया ३६ बलं मे पश्य मायायाः स्त्रीमय्या जयिनो दिशां या करोति पदाक्रांतान् भ्रूविजृंभेण केवलं ३७

क्रीडा मैं वा क्रीडा मृग की सी नाई आधीन तिनकौ संग करै है अपनो भलो चाहै तौ पुरुष कौ और के प्रसंग तैं ऐसे मोह अरु बंधन नहीं होत है जैसैं स्त्रीन के संगी की स्त्रीन के संगतें होत है ३४ ब्रह्मा अपनी बेटी कौं देखि वाको रूप करि धर्षित होई वह मृगी होई भाज जात वाके पीछैं मृग होई निर्लज्ज भाजो ३५ ता ब्रह्मा के सृष्ट मरीच्यादिक तिनके कस्यपादिक तिनके सृजे मनुष्यादिक तिनमें एक नारायण ऋषि बिना ऐसो कोन जो स्त्री मयी माया करि जाकी बुद्धि न डिगै ३६ हे माता मेरी स्त्री मयी माया कौ बल देखौ बडे दिगविजयी सूरन कौ केवल भृकुटी चढाय पाइन मा करि लेत है ३७

ऐसे गर्भ में करी है बुद्धि जानें दश मास ताई जो जीव करि ही प्रस्तुति करत प्रसूत गयु नीचे को जाके मुखवात ति तत्काल जन्म ले लीये नीचे डारि देहे २२ तापवनने नीचो आ सोसहसा नीचे को शिर जाको वेदी स्मरण जाको दूरि भयो आतुर होइ बडे कष्ट सो निकसे है २३ पृथ्वी मे लोहू छत्र मे गिरे है विष्टा के कीरा की सी नाई षिहावे है विपरीत गति को प्राप्त भयो जो ज्ञान गयो अति शय रोवे है २४ याके अभिप्राय को उन जानत जो जन ता करपोष्यो है जो अभिप्राय वाको नाहि सो उ जाने नही और आप कहिवे में असमर्थ है २५ जू आंष ठमलन

श्रीभगवानुवाच एवं कृतमतिर्गर्भे दसमासः स्तुवन्नृषिः सद्यः क्षिपत्यवाचीनं प्रसूत्यै सूतिमारुतः २२ तेनावसृष्टः सहसा कृत्वावाक्शिर आतुरः विनिःक्रामति कृछ्रेण निरुच्छ्वासो हतस्मृतिः २३ पतितो भुव्यसृग्मत्रे विष्टाभूरिव चेष्टते रोरूयति गते ज्ञाने विपरीतां गतिं गतः २४ परिछंदं न विदुषा पुष्यमाणो जनेन सः अनभिप्रेतमापन्नः प्रत्याख्यातुमनीश्वरः २५ शायितो शुचिपर्यंके जंतुः स्वेदजदूषिते नेशः कंडूयनेंगानामासनोत्थानचेष्टने २६ तुदंत्यामत्वचं दंशा मशका मत्कुणादयः रुदंतं विगतज्ञानं कृमयः कृमिकं यथा २७ इत्येवं शैशवं भुक्त्वा दुःखं पौगंडमेव च अलब्धाभीप्सितोज्ञानादिद्धमन्युः शुचार्पितः २८ सह देहेन मानेन वर्द्धमानेन मन्युना करोति विग्रहं कामी कामिष्वंताय चात्मनः २९

कंड खिन अपवित्र सेष्या पे सुलाताने स्वायो सो वे तोरषा पे है अंगन के खुजावे मे समर्थ और वेठवे की चेष्टा मे असमर्थ है २६ कोमल जाकी त्वचा जाहि डांस माछर षट मल काटे षारे ज्ञान जाको गयो रोवे है जैसे कीरा को राषाले असे री काटे है २७ असे पांच वर्ष ताई बाला पन मे दुःख भोग करि फिर पौगंड अवस्था के दुःख भोगे है नहीं पायो है वांछित जाने अज्ञान ते महा क्रोध शोक करि व्यास होहि है २८ देह के संग बढत जो अभिमान और क्रोध ता करि कामी य अपने नास के लिये कामीन सो विग्रह करे है २८

स्थिरचरमैं अनुवर्तित जानौं ऐसे ऐसे भगवान् विना और कौन है जो ऐसो ज्ञान देहि और को उनही जीव रूप कर्म पदवी मे अनुवर्त्ती
मान हम तीन्यौं तापदूरि करिवे को भजन करै है १६ यह जीव माता के उदर मैं जाठराग्नि करि तप्त जाको देह रुधिर विष्टा मूत्र के
कूप मै परौ है तहां निकसवे की इच्छा करत अपने २ महीना ने गिनै है कृपण जाकी बुद्धि सो हे भगवान् कव निकसैगो १७ तुम सार के
दयाल जानै दश मास को मैं ताको यह ज्ञान दियो सो दीनवंधु तुम अपने किये करि आपही प्रसन्न होउ अंजली मात्र विना को तुम्हारो

ज्ञानं दधे तदद्धा कतमः स देवस्त्रैकालिकं स्थिरचरेष्वनुवर्तितांशः । तं जीवकर्मपदवीमनुवर्तमानास्तापत्रयोपशमना
य वयं भजेम ॥ १६ ॥ देह्यन्यदेहविवरे जठराग्निनासृग्विण्मूत्रकूपपतितो भृशतप्तदेहः । इच्छन्नितो विवसितुं गणयन्स्वमासा
न्निर्वास्यते कृपणधीर्भगवन्कदा नु ॥ येनेदृशीं गतिमसौ दशमास्य ईशः संग्राहितः पुरुदयेन भवादृशेन । स्वेनैव तुष्य
तु कृतेन स दीननाथः को नाम तत्प्रति विनाञ्जलिमस्य कुर्यात् ॥ १८ ॥ पश्यत्ययं धिषणया ननु सप्तवध्रिः शारीरके द
मशरीर्यपरः स्वदेहे । यत्सृष्टयासं तमहं पुरुषं पुराणं पश्ये बहिर्हृदि च चैत्यमिव प्रतीतम् ॥ १९ ॥ सोऽहं वसन्नपि विभो बहुदुः
खवासं गर्भान्न निर्जिगमिषे बहिरन्धकूपे । यत्रोपयातमुपसर्पति देवमाया मिथ्यामतिर्यदनु संसृतिचक्रमेतत् ॥ २० ॥ त
स्मादहं विगतविक्लव उद्धरिष्य आत्मानमाशु तमसः सुहृदात्मनैव । भूयो यथा व्यसनमेतदनेकरन्ध्रं मा मे भविष्यदुप

प्रत्युपकार करै १८ और पश्वादिक तो केवल शरीर के सुख दुःख ही जाने है और यह मनुष्य तो जो तुम्हारी दई बुद्धि करि सप्त धातु शरी
रवान हो तन भयो ऐसे तुम पुराण पुरुष नाहि बाहिर हृदे मैं देखो हौं और हृदय मैं हू अहंकार रूप मो मैं कोई सी नाई देखो हूं १९ हे प्रभो सो
मै बहोत दुःख को जा मैं वास ता गर्भ ते बाहिर अंधकूप संसार मे निकसवे की इच्छा न करौ हूं जा संसारि निकसे पै या प्राणी कूं तुम्हारी मा
या प्राप्त है जाते हमे आत्मबुद्धि होत है ताकी पीछे ए अकल जन्म मरन सेवक अतेय ह सत संसार चक्र होई है २० ताते हृदय मे प्राप्त भयो है विक्लवपणो जाते
ऐसो मैं व्याकुल होइ या संसार ते दुःख रूप तम सो पाप बुद्धि जो मैं नाहि अपने आत्मा कुं उद्धार करौंगो जा ते नाना मर्म वास रूप दुःख फेर न होई २१

स्वासवंद होइ उहांस्थिर नि रहै मे याके समान उदरते हैं जन्मजावों ऐसो विष्टामें कीराकी सीनाई विल्लापतो फिरै है १० हरिसों याचना करै हैं देहते भीत रसातो धातु हैं बंधन जाकों जो रजानें उदर मेंराष्यो ताहरिकों प्रार्थना करै है ११ शरणागति जो जगत ताकी रक्षा करवेकों अपनी इच्छा करि ग्रहण करी है मूर्ति जानें ता हरिजो पृथ्वी मेंचरणारविंद अकुतोभय ताति मेंशरण लेहुं जानेहुं जोमें ताकों सो जोग ऐसी गति दिखाय १२ जो मैंयहां कर्मन करि आवृत स्वरूप देहाधिकार परिणत माया जोंआश्रय लें वकीसीनाई हूं और जोंतुम

आरभ्य सप्तमान्मासाज्जातबोधोपि वेपितः नैकत्रास्ते सूतिवातैर्विष्ठाभूरिव सोदरः १० नाथमान ऋषिर्भीतः सप्तवध्रिः कृतांजलिः स्तुवीत तं विक्लवया वाचा येनोदरेर्पितः ११ जीवउवाच तस्योपसन्नमवितुं जगदिच्छयात्तनानातनोर्भुवि चलच्चरणारविंदं पोहं व्रजामि शरणं ह्यकुतोभयं मे येनेदृशी गतिरदर्श्यसतोनुरूपा १२ यस्त्वत्र बद्ध इव कर्मभिरावृतात्मा भूतेंद्रियाशयमयीमवलंब्य मायां आस्ते विशुद्धमविकारमखंडबोधमातप्यमानहृदयेवसितं नमामि १३ यः पंचभूतरचिते रहितः शरीरे छन्नोयथेंद्रियगुणार्थचिदात्मकोहं तेनाविकुंठमहिमानमृषिं तमेनं वंदे परं प्रकृतिपूरुषयोः पुमांसं १४ यन्माययोरुगुणकर्मनिबंधनेस्मिन् सांसारिके पथि चरंस्तदभिश्रमेण नष्टस्मृतिः पुनरयं प्रवृणीत लोकं युक्त्या
कया महदनुग्रहमंतरेण १५

याही आतप्यमान हृदय मैं मीलीत परंतु शुद्ध विवेक करि अखंड ज्ञान ऐसे तुम ताहि प्रणाम करूं हूं १३ जो पंचभूतन करि रचित शरीर तामैं मिथ्याही अपरछन्न तैवत्स तेन हीं इंद्रियगुण अर्थ चित्स्वरूप ना शरीर करि नतीकुंठउ नहैं महिमा जाकी ऐसे प्रकृति पुरुषते परै सर्वज्ञ पुरुष ताहि प्रणाम करूं हूं १४ जो तुम्हारी माया करि बहुत गुण कर्मण जोंजामैं बंधन ऐसे संसार मार्ग मैं विचरत ताके श्रम करि नष्ट ज्ञान कों स्मरण ऐसो पर पुरुष तुम्हारे अनुग्रह विना कौन जानैं युक्ति करि अपने स्वरूप कों भजे १५

भा.त
८५

औरमाताया हीलोकमैंनर्क और स्वर्ग होउतैं जोनर्क यातनाहै मेयाहीलखियेहैं २९ ऐसेकुटंबकोभरणकरत नवउदरको भरणकरतयहांदेहपरदार उनकोछोडि परलोकमैं आपुही वाफलभोगैहैं ३० यासरीरकोछाडिअकेलोतीनरकनकोप्राप्त होहैं जोसरीर भूतद्रोहकरि स्थूलकीयोताहि छोडि अपनो पापकोसंगलेजाहैं ३१ नरकमै जापरेवनैं माभिकीयोहैं तैसें

अत्रैवनरकःस्वर्गः इतीमातःप्रचक्षते यायातनावैनारक्यास्ताइहाप्युपलक्षिताः २९ एवंकुटंवंबिभ्राणं उदरंभरएववा विसृज्येहोभयंप्रेत्यभुंक्तेतत्फलमीदृशं ३० एकःप्रपद्यतेध्वानं हित्वेदंसकलेवरं कुशलेतरपाथेयोभूतद्रोहेनयद्भृतं ३१ दैवेनासादितंतस्यसमलंनिरयेपुमान भुंक्तेकुटंवपोषस्यहृतवित्तइवातुरः ३२ केवलेनह्यधर्मेणकुटंवभरणोत्सुकः यातिजीवोंधतामिस्रं चरमंतमसःपरं ३३ अधस्तान्नरलोकस्ययावतीर्यातनादयः क्रमसःसमनुक्रम्यपुनरत्राव्रजेच्छुचिः ३४ इतीश्रीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेत्रिंशोध्यायः ३०॥

जोकुटंबपोषणकोपापताहि भोगैहैं जैसेहृतद्रव्यहैं वित्तजाकोवहतदुःखकोप्राप्तहोहैं ३२ जोकेवलअधर्महीकरि कुटुंवकोभरणपोषणजोकोईकरैहै सोजीवअंधतामिस्रनर्कमेंउत्तमस्थानजामेंजाहै ३३ इतीत्रीशोध्यायः ३०

यातनादेह मैं रोकि करि गले मैं चलातका रकर बांध महा मार्ग कौं लैजांहैं सो जैसै यसौं अपराधी कौं राजा के पौछा लैजांहै २० यमदूतनकी त
र्जनानि करि विदीर्णजाको हृदय मार्ग मैं कुत्तान कर भक्ष्यमान अपने पापनकौं स्मरण करि दुखिया तोय चलै है २१ क्षुधा प्यास कर
करव्याप्त सूर्य और दावाग्निकी ज्वालान करतातीवालुका जामें और स्नहीतै विश्रामस्थान जामें ता मार्ग मैं तें अप्रशक्ति तोई चलै है २२
जहां तहां ई श्रांत मूर्छित तोय गिरै है और फिर उठै है अंधकार रूप पाप ता मार्ग कर यमलोककौं प्राप्त करीयै है २३ निन्यानवै हजार योजन यम
कौ लोक है ता मैं तीन मुहूर्त वा दो मुहूर्त मैं पोहोचावै है उहां जाय यातना पावै है २४ उलका ज्वरील कर तीन सौं वेष्टीत कर अंगनकौं जराई

यातनादेह आवृत्य पाशैर्बद्ध्वा गले बलात्‌ नयतो दीर्घमध्वानं दंड्यं राजभटा यथा २० तयोर्निर्भिन्नहृदयस्तर्जनै
र्जातवेपथुः पथि श्वभिर्भक्ष्यमाणः आर्तोऽघं स्वमनुस्मरन्‌ २१ क्षुत्तृट्परीतोऽर्कदवानलानिलैः संतप्यमानाः पथि
तप्तवालुके कृच्छ्रेण पृष्ठे कशया च ताडितश्चलत्यशक्तोऽपि निराश्रमोदके तत्र तत्र पतन्‌ श्रांतो मूर्छितः पुनरुत्थितः
यथा पापीयसा नीतस्तमसा यमसादनं २३ योजनानां सहस्राणि नवतीं नव चाध्वना त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वाभ्यां वा नीतः प्रा
प्नोति यातनाः २४ आदीपनं स्वगात्राणां वेष्टयित्वोल्मुकादिभिः आत्ममांसादनं क्वापि स्वकृत्तं परतोऽपि वा २५ कृंतनं
चावयवशो गजादिभ्यो भिदापनं पातनं गिरिशृंगेभ्यो रोधनं चांबुगर्तयोः २७ यास्तामिस्रांधतामिस्रा रौरवाद्याश्च या
तनाः भुक्तेनरो वा नारी वा मिथः संगेन निर्मिताः २८ कै अपने हाथन काटिकैं वा और काटिकै या कौं मांस याही कौं

खवावै है २५ यमलोक के रहिवे वारे कुत्ता की गीध जीवतै निकासै है सर्प बीछु डांस पे अपनो अपराध स्मरण कर काटि काढीय
ये २६ अंगनकौं काटि कैं हाथीन सौं पीड़ा है नी पर्वत की शिखरन तैं गिराय वो जल मैं गढे न मैं राषि के रोकि कैं ये दुख भोगै है
२७ जो तामिस्र अंधतामिस्र रौरव ते आदि ● है जम जातना तिनै स्त्री पुरुष सब भोगै है जे परस्पर संगम भिन्न ईते २८

माध्वजीवकाजवनसूहोहैं नवलोभकोमास्योआशाकपरायेद्रव्यमेंचाहकरैहै ११ कुटंवकेभरणमेअसमर्थमेंमंदभागवृथाजा कोउद्यमसंपत्तिकरहीनकृपणमूढवुद्धीचिंताकरतवडेवडेस्वासलेहैं १२ ऐसेकुटंवकेभरणपोषणमेजवअसमर्थहोतेहैं त वस्त्रीपुत्रादिकहूपहिलेकीसीनाईआदरनहीदेहैं जैसेकिसानवुढेवेलकोछोडदेहै १३ तौहूपनतीआवैहैं निर्वेदजाकोपाल्योपोषोहैं दिनकरपुष्यमानजरानेरूपजाकोविगारदीयो मरणकेसन्मुखघरतीमेंभूतसेधुसैईपरेहैं १४ घरनकेअपमानपूर्वकदियो

वर्तायांलुप्यमानायांमारब्धायांपुनःपुनः लोभाभिभूतोनिसत्वाःपरार्थेकुरुतेस्पृहा ११ कुटंभभरणाकल्पो मंदभाग्योवृथोद्यमाः श्रियाविहीनःकृपणोध्यायन्श्वसतीमूढधीः १२ एवंस्वभरणाकल्पंतत्कलत्रादयस्त था नाद्रियंतेयथापूर्वंकीनाशाइवगोजरं १३ तत्राप्यजातनिर्वेदोभ्रियमाणःस्वयंभृतैः जरयोपात्तवैरूप्योम रणाभिमुखोगृहे १४ आस्तेवमत्योपन्यस्तंगृहपालईवाहरन् आमयाव्यप्रदीप्ताग्निरल्पाहारोल्पचेष्टितः १५ वायुनोत्क्रमतोत्तारःकफसंरुद्धनाडिकः कासश्वासकृतायासःकंठेघुरघुरायते १६ शयानःपरिशोचद्भिः परिवीतःस्वबंधुभिः वाच्यमानोपिनब्रूतेकालपाशवशंगतः १७ एवंकुटुंबभरणेव्यापृतात्माजितेंद्रियः म्रियते रुदितांस्वानांमुरुवेदनयास्तधीः १८ यमदूतौतदाप्राप्तौभीमौसरभसेक्षणौ सदृष्ट्वात्रस्तहृदयःसकृन्मूत्रंविमुंचति १९

टूकनाहिकुत्ताकीसीनाईलेहै रोगीअप्रदीप्तजाकीजठराग्नि अल्पजाकीचेष्टा १५ उपरकोवायुचल्लेहै ताकरवाहरजाकेने त्रनिकसे कफकररूपीहैं नाडीजाकी कासस्वासनैहीपायोहैदुःखजाको कंठमेंघुरघुरकरेहै १६ शोचकरतनकजेवंधुति नकरिवेष्ठितसोवैहैं धरकेवडनेरेवोलैहैं भाईतेमानपरकालकेवसभयोनतौवोलैहै १८ ताहीसमैवडेभयंकरयम दूतआयकैमामिलेहैं क्रोधयुक्तजिनकीद्रष्टिनैदेखत्रासितजाकोहृदयमलमूत्रछोडदेहै १९

यहपुरुषवडोयत्नकरि सुखकेलीयें नानाअर्थकोग्रहणकरैहैं नारीनारीकों भगवानमायाकरैतें जाकेनिमित्त यहपुरुषसोचकरें
हैं २ जोकलत्रादिसहित अनित्यदेहजाकोसंबंधी घरमूर्तिहु अनित्यमैं यहदुर्बुद्धिनित्यमानैं ३ यहमानी यासंसारमैंजाआयोनिमैंजातें
नारीमैं आनंदमानलेहैः वैराग्यकोनतीप्राप्तिहोहैं ४ नर्कमैंस्थितजोपुरुषसोदेह छोड्वेकीनतीइछाकरैं परमेश्वरकी मायाकरमोहित
नरककेआहारविहारहीमें आनंदमानिलेहैं ५ देहपुत्रघरपशुद्रव्यमेंपावंधुहनोविषैं वद्धमूलहृदयजाको आपकोवोहीतमानेहैं ६ श्लोक

यंयमर्थमुपादत्ते दुःखेनसुखवेतनवे तंतंधुनोतिभगवान्पुमानसोचतीयत्कृते २ यदध्रवस्यदेहस्यसानुबंधस्यदु
र्मतिः ध्रुवाणिमन्यतेमोहान्गृहक्षेत्रवसूनिच ३ जंतुर्वैभवएतस्मिन् यांयांयोनिमनुव्रजेत तस्यांतस्यांसलभते
निर्वृतीनत्वरज्जते ४ नरकस्थोपिदेहंवैनपुमांस्त्यक्तुमिच्छति नारक्यांनिर्वृतौसत्यांदेवमायाविमोहिता ५ आत्म
जायासुतागारपशुद्रविणबंधुषु निरूढमूलहृदयआत्मानंबहुमन्यते ६ संदह्यमानसर्वांगएषांमुद्वहनाधिनाक
रोत्यविरतंमूढोदुरितानिदुराशयाः ७ आक्षिप्तात्मेंद्रियस्त्रीणांमसतीनांचमायया रहोरचितयालापैःशिशूनांक
लभाषिणां ८ गृहेषुकूटधर्मेषुदुःखतंत्रेष्वतंद्रितः कुर्वन्दुःखप्रतीकारंसुखवंन्मन्यतेगृही ९ अर्थैरापादितैर्गुर्वी
हिंसयेततस्ततश्चतान् पुष्णातियेषांपोषेणशेषभुग्यात्यधःस्वयम् १०

पोषणकोचिंताकरिजरैहै सब अंगजाको दुर
यशात्रिदिनदुष्टकर्मकरैहै ७ पुंश्चलीस्त्रीनकीमायाएंकांतमेंरचीसंभोगारूप औरलरकानकी तोतलीबोलीनतामें
आपक्तिहैं ८ कपटकेजिनकेधर्मदुःखजिनमेंवहुतऐसेघरनमें दुःखनकोप्रतिकारकरतयहगृहस्थसुषकीसीकीसी
नाईमानिलेहैं ९ वहीहिंसाकरइतउतमेंसिद्धकीयेजोद्रव्यतिनकीउनलरकावारेनकोपोषैहै । जिनकेपोषणकरआ
पनर्कमेंपरैहैं जोउनसोवचैहैसो आपयायहैकाकोसोभोगतेसोउदुलभते १०

महदादिकनकौ पंचमहाभूतनकौ जाके भयतें हैं सो सबकौ आश्रय भीतर प्रवेशकर प्राणीनकर प्राणीनकौ भक्षण करैहै ३७ सो
विष्णुयज्ञको नाम ऐसे यज्ञफलदाता कालतैं सबकरणहारे तिनको नियंता ३८ नयाके कोउ प्यारो न द्वेषकरवेकौ जोग्य न बंधु वह सब
कौ अंतकरवेवारो बहुत सावधान काल असावधान जनमें प्रवेश करैहैं ३९ जाकालके भयतें यहपवन चलोकरैहै जाके भयतें सूर्य तपै
जाके भयतें चंद्रमा प्रकाशै जाके भयतें इंद्र वर्षैहै नक्षत्रगण जाके भयतें भासैहैं ४० जाके भयतें वनस्पति लता औषधिन करसहित अपने
अपने समयमें पुष्पफलनकौ ग्रहण करैं ४१ नदी डरके मारे बहाकरैहैं समुद्र कालके भयकरि मर्यादा नहीं छोड़ैहैं अग्नि जलैहै जाके भय

भूतानां महदादीनां यतो भिन्नदृशां भयं योंतः प्रविश्य भूतानि भूतैरत्त्यखिलाश्रयः ३८ स विष्ण्वाख्योधियज्ञोसौ कालः कल
यतां प्रभुः न चास्य कश्चिद्दयितो न द्वेष्यो न च बांधवाः आविशत्यप्रमत्तोसौ प्रमत्तं जनमंतकृत् ३९ यद्भयाद्वाति वातोयं सूर्य
स्तपति यद्भयात् यद्भयाद्वर्षते देवो भगणो भाति यद्भयात् ४० यद्वनस्पतयो भीता लताश्चौषधिभिः सह स्वे स्वे कालेभिगृ
ह्णंति पुष्पाणि च फलानि च ४१ स्रवंति सरितो भीता नोत्सर्पत्युदधिर्यतः अग्निरिंधे सगिरिभिर्भूर्न मज्जति यद्भयात् ४२
नभो ददाति श्वसतां पदं यन्नियमाददः लोकं स्वदेहं तनुते महान्सप्तभिरावृतं ४३ गुणाभिमानिनो देवाः सर्गादिष्व
स्य यद्भयात् वर्तंतेनुयुगं येषां वश एतच्चराचरं ४४ सोनंतोंतकरः कालोनादिरादिकृदव्ययः जनं जनेन जनयन्मारयन्मृ
त्युनांतकं ४५ इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे एकोनत्रिंशोध्यायः २९ कपिल उवाचः तस्यैतस्य जनो नूनं नायं
वेदोरुविक्रमं काल्यमानोपि बलिनो वायोरिव घनावलिः १

तैं पर्वतनसहित पृथ्वी जलमें नहीं डूबैहै ४२ आकाश जाकी आज्ञातें श्वास
प्राणधारीनकौं स्थान देहै और महत्तत्त्वनकरिकैं आवृत ब्रह्मांड अपनी देहकौ लोकरूपकर विस्तारैहै ४३ और गुणाभिमा
नी जो देवता विष्णुके स्वर्गादिकनमें वर्तैहैं जिनके वस यह स्थावरजंगम जगत है तेवे कालके वस हैं ४४ सो काल आपतो अनंत
है औरनकौ अंतकरैहै आपु अनादि है और वाकी आदि करैहै मातापिता पुत्रादिकनकूं उपजावैहै और मृत्युकर कालहूकौ मारत
है अंतकारी है और अविनाशी है ४५ इति तीसरे स्कंधे एकोनत्रिंशोध्याय २९ ताकालके बलकौ जो जन है सो वडे पराक्रमकौ नहीं जानैहै जो
जन बलवान कालकर चाल्यमान है जैसे पवनके पराक्रमकौ मेघपंक्ति नहीं जानैहै १

यानैहे मानासवभाएगीन मैं स्थित जो मैं भूतात्मा ताहि दान मैत्री कर अभेद दृष्टीकर माएगीन द्वारा पूजे २७ ताडमे मनुष्यनकी विशे
षप्रजनकरै जीएसव उत्तम है अचेतनन मैं जीव श्रेष्ठ हैं तिनहूंमे प्राणवृत्तिवारे श्रेष्ठ हैं तिनहूंते संची जो वृत्ति जिनकै हैं तिनउ
त्तम हैं तिनहूं तेइन्द्रीवृत्तउत्तम हैं जिनके हैं ते वस्पारिक श्रेष्ठ हैं २८ तिनहूं मैं स्पर्शवेदी तिनहूं ते उत्तम रसवेदी मत्स्यादिक हैं ति
नहूं मैं गंधज्ञानिवेवारो भ्रमरादिक श्रेष्ठ हैं तिनहूं ते सद्बज्ञानवेवारो सर्पादिक श्रेष्ठ हैं २९ तिनहूं ते रूपभेदकै ज्ञानवेवारो काक
दिक उत्तम तिनहूं ते दोउ ओर जिनके दांत ते उत्तम तिनहूं मैं बोतीनपाउवारे श्रेष्ठ तिनहूं ते चौपाये उत्तम तिनहूं मैं दुपाये सव मनुष्य

अथ मां सर्वभूतेषु भूतात्मानं कृतालयं अर्हयेद्दानमानाभ्यां मैत्र्याभिन्नेन चक्षुषा २७ जीवाः श्रेष्ठा ह्यजीवानां ततः
प्राणभृतः शुभे ततः सचित्ताः प्रवरास्ततश्चेन्द्रियवृत्तयः २८ तत्रापि स्पर्शवेदिभ्यः प्रवरा रसवेदिनः तेभ्यो गंधविदः श्रे
ष्ठास्ततः शब्दविदो वराः २९ रूपभेदविदस्तत्र ततश्चोभयतोदताः तेषां बहुपदः श्रेष्ठाश्चतुष्पादस्ततो द्विपात् ३० ततो
वर्णाश्च चत्वारस्तेषां ब्राह्मण उत्तमः ब्राह्मणेष्वपि वेदज्ञो ह्यर्थज्ञोभ्यधिकस्ततः ३१ अर्थज्ञात्संशयच्छेत्ता ततः श्रेयान्स्वक
र्मकृत् मुक्तसंगस्ततो भूयानदोग्धा धर्ममात्मनः ३२ तस्मान्मय्यर्पिताशेषक्रियार्थात्मा निरंतरः मय्यर्पितात्मयोगश्च
मया मानुः सुदीरताः ३३ ययोरेकतरेणैव पुरुषः पुरुषं व्रजेत् एतद्भगवतो रूपं ब्रह्मणः परमात्मनः परः प्रधानं पुरु
षं दैवं कर्मविचेष्टितं रूपभेदास्पदं दिव्यं कालमित्यभिधीयते ३६

उत्तम ३० तिनहूं मैं मनुष्यहूं मैं चार वर्ण उत्तम तिन वर्णन मैं
ब्राह्मण उत्तम उनहूं मैं अर्थज्ञानवेवारो अधिक ३१ अर्थज्ञ ते संसय काटिवेवारो उत्तम ताहूं ते स्वकर्म करिवेवारो उत्तम ताहू मैं मु
क्तसंग सो उत्तम जो धर्मकर फलकी कामना करै ३२ ताहूं ते मो मैं अर्पण करी हैं सब क्रीया और क्रीयानके फल और देह जानें स्वभाव रहित
सो उत्तम से मो मैं जाने चित अर्पण करतौ ऐसे भक्त तासम दूसरो तासमान मैं काहूकों न ती देखत हैं ३३ तीन प्रानीन मैं अंतर्यामी ताकर के सव मैं
ईश्वर भगवान प्रविष्ट हैं यह जानिकै बहुत सन्मान कर सबको प्रणाम करत हैं ३४ हे मनुपुत्रि यह भक्तियोग और योग मैंने तेरे आगे कह्यो जिन मैं
ते एक करकै यह पुरुष हरकों प्राप्त होइ ३५ यह भगवान परस्पर ब्रह्म परमात्मा को रूप है प्रधान पुरुषात्मक और तुम मनुष्यन कर दैव ऐसे कहि

भा॰स॰
८२

भगवद्धर्मकरवेवारो भक्त कोई गुणन कर शुद्ध जो चित्त सो यत्न बिना ही श्रवण करे है गुणता कोंता मोमें प्राप्ति हो है १९ जैसे पवन है सो गंधनाको ऐसो गंध अपने स्थान ते पवन कर आप प्राणको आवरण करे है ऐसे योग रत अविकार जो चित्त सो आत्मा को वरते २० हे माता सब प्राणीन में भूतात्मा में स्थित हूं ताको तिरस्कार करि प्रतिमान में पूजा विडम्बना करे है २१ जो मैं प्राणीन में स्थित आत्मा ईश्वर ताहि छाड प्राणीन द्वारा पूजन न कर जो मूढ मनन ते केवल प्रतिमा ता ही को भजे है सो भस्म ही में होम करे है २२

मद्धर्मणो गुणैरेतैः परिसंशुद्ध आशयः पुरुषस्याञ्जसाभ्येति श्रुतिमात्रगुणं हि मां १९ यथा वातरथो घ्राणमावृङ्क्ते गंध आशयात् एवं योगरतं चेत आत्मानमविकारि यत् २० अहं सर्वेषु भूतेषु भूतात्मावस्थितः सदा तमवज्ञाय मां मर्त्यः कुरुतेऽर्चाविडंबनं २१ यो मां सर्वेषु भूतेषु संतमात्मानमीश्वरं हित्वार्चां भजते मौढ्याद्भस्मन्येव जुहोति सः २२ द्विषतः परकाये मां मानिनो भिन्नदर्शिनः भूतेषु बद्धवैरस्य न मनः शांतिमृच्छति २३ अहमुच्चावचैर्द्रव्यैः क्रिययोत्पन्नयानघे नैव तुष्येऽर्चितोऽर्चायां भूतग्रामावमानिनः २४ अर्चादावर्चयेत्तावदीश्वरं मां स्वकर्मकृत् यावन्न वेद स्वहृदि सर्वभूतेष्ववस्थितं २५ आत्मनश्च परस्यापि यः करोत्यंतरोदरं तस्य भिन्नदृशो मृत्युर्विदधे भयं

जो पराये सरीर में मो सो द्वेष करे है मानी है भेददर्शी है और प्राणीन में जाने बैर बांध्यो ताको मन सांति नहीं पावे है २३ जो कोई प्राणीन को निरादर करे है बहुत केसेहू सम्भाई द्रव्यन कर मेरी पूजा करे मैं वापै प्रसन्न नहीं हो २४ स्वकर्म को कर बेवारो तब ताई मो ईश्वर को प्रतिमादिकन में पूजे जब ताई सब प्राणीन में स्थित है यह अपने हृदय में न जाने २५ जो कोई अपनो पराये ऐसे नेक हू भेद देखे है ता भेद दर्शी को भेद रूप जो मैं सो उल्बण भय देउ हो २६

ओरमेरेगुणश्रवणमात्रहीकरसबप्राणीनमेरहतजोमैं अखंड मनकोगति जैसेगंगाजलकौसमुद्रमैं अखंडगतिसोनिर्गुण
भक्तयोगकेलक्षणकहियें जोफलकीकामनाशून्यअप्रतिहत पुरुषोत्तमकोयोगकरनो १२ मेरेसंगएकलोकमैंवासमेरेसमानु
ऐश्वर्य मेरेसमानरूपतामेरेनिकटरहिवो सोमेसायुज्यऐसेंपांचप्रकारकीमुक्तिहै उतांपरमेरेभक्तसेवाबिनामुक्तिकौंईश्याने
हीकरेहैं सोवुहअतंतकरभक्तियोगकहियें जाकरनीगोगुणनकौछोडमेरेहंसस्वरूपने १४ सेवनकीयोजोनिजधारमस्व

मद्गुणश्रुतिमात्रेणैवमयिसर्वगुहाशये मनोगतिरविछिन्नायथागंगांभसोंबुधौ: ११ लक्षणंभक्तियोगस्यनिर्गुणस्य
ह्युदाहृतं अहैतुक्यव्यवहितायाभक्तिपुरुषोत्तमे १२ सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत दीयमानंनगृह्णंतिविना
मत्सेवनंजनाः १३ सएवभक्तियोगाख्यआत्यंतिकउदाहृतः येनातिव्रज्यत्रिगुणंमद्भावायोपपद्यते १४ निषेवितेना
निमित्तेनस्वधर्मेणमहीयसा क्रियायोगेनशस्तेननातिहिंस्रेणनित्यशः १५ मद्धिष्ण्यदर्शनस्पर्शपूजास्तुत्यभिवंद
नैः भूतेषुमद्भावनयासत्त्वेनासंगमेनच: १६ महतांबहुमानेनाःदीनानामनुकंपया मैत्र्याचैवात्मतुल्येषुयमे
ननियमेनच: १७ अध्यात्मिकानुश्रवणान्नामसंकीर्तनाच्चमे आर्जवेनार्यसंगेननिरहंक्रिययातथा १८

धर्मलाकरजामैंबहुतहिंसानंही ऐसेप्रसस्तकर्मकरिप्राप्तिहोहैं १५ मेरीप्रतिमानकौंदर्शनस्पर्शनपूजनस्तुतिप्रणाम
इनकरसबप्राणीनमैं मेरीभावनाकर धार्यवैराग्यकरि १६ महतपुरुषनकेबोहोतमानकरि दीननपेंकरुणाकरि
तुल्यनसोंमित्रताकर यमनियमकर मेरीप्राप्तिहोहैं १७ वेदांतकौश्रवणकर औरमेरोनामकीर्तनतातें औरस
धा-ईबड्डेनकौसंगनिरहंकारता १८

भा०त० यहमाताकोसुंदरवचनताहि आनंदकरिके विदुरमहराजकरि पीडन श्रीकपिलदेवजीयह बोले ६ हेमाता भक्तीयोगव
८९ हुतप्रकारकोहै मार्गनकरि भामत्ताकरि स्वभावमत जोगुणनिहूनमेंहोतोहै ७ जोकोईसंतापविचारवांछनमात्रथी

लोकस्यमिथ्याभिमतेरचक्षुषश्चिरंप्रसुप्तस्यतमस्यनाश्रये श्रांतस्यकर्मस्वनुविद्धयाधियात्वमावि
राविःकिलयोगभास्करः ५ श्रीमैत्रेयउवाचः इतिमातुर्वचःश्लाक्ष्णंप्रतिनंद्यमहामुनिः आबभाषेकुरु
श्रेष्ठप्रीतस्तांकरुणार्दितः ६ श्रीभगवानुवाचः भक्तियोगोबहुविधोमार्गैर्भामिनिभाव्यते स्वभावगु
णमार्गेणपुंसांभावोविभिद्यते ७ अभिसंधाययोहिंसांदंभंमात्सर्यमेवच संरंभीभिन्नदृग्भावंमयिकुर्यात्स
तामसः ८ विषयानभिसंधाययशऐश्वर्यमेववा अर्चादावर्चयेद्योमांपृथग्भावःसराजसः ९ कर्मनिर्हारमु
द्दिश्यपरस्मिन्वातदर्पणं यजेद्यष्टव्यमितिवापृथग्भावःससात्विकः १०

करिमैनदर्शीहोहै संसारभयलेंमोमेंभावकरैसोरातामसकहीये ८ विषयकोसंकल्पकर वायशऐश्वर्यकेलियेजनदर्शी
प्रतिमादिकनमेंपूजनकरैसोराजसकहीये ९ पापक्षयकोउद्देशकरकेंवापरमेश्वरमेंकर्मार्पणविचारवोयजनकरवोजी
वकोधर्महोहै यहविचारजोतरिमेंभावकरैसोसात्विककहीये १०

जैसेएकअग्निकाष्ठमेंप्रवेशहोयहै तबनानाप्रकारकीप्रतीतहोयहै तैसेदेहनमेंस्थितजीवएकहीआत्मानानाप्रकारकोप्रतीतहोतहै ४३ तातेजीवजोहैसोदेहकेहेतुजोदेहप्रकृतितामैंकार्यकारणरूप अतवर्णनादिहरिकीप्रसादकरिकैआत्मस्वरूपकरस्थितहोय ४४
इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेअष्टाविंशोध्यायः २८ हेप्रभोमहदादिकनकोंऔरप्रकृतिपुरुषकौलक्षणकहो
जाकरइनकोपरमार्थस्वरूपलखीयें १ जैसैसांख्यमतमेंलक्षणकहेहै तिनसबकौजानवेकौप्रयोजनभक्तियोगहै

स्वयोनिषुयथाज्योतिरेकंनानाप्रतीयते योनीनांगुणवैषम्यात्तथात्माप्रकृतौस्थितः ४३ तस्मादिमां
स्वांप्रकृतिंदैवींसदसदात्मकां दुर्विभाव्यांपराभाव्यस्वरूपेणावतिष्ठते ४४ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणे
तृतीयस्कंधेनामअष्टाविंशोध्यायः २८ देवहूतिरुवाचः लक्षणंमहदादीनांप्रकृतेःपुरुषस्यच स्वरूपंलक्ष्य
तेमीषांयेनतत्पारमार्थिकं १ यथासांख्येषुकथितंयन्मूलंतत्प्रचक्षते भक्तियोगस्यमेमार्गंब्रूहिविस्तरशः
प्रभो २ विरागोयेनपुरुषोभगवन्सर्वतोभवेत् आचक्ष्वजीवलोकस्यविविधाममसंसृतीः ३ कालस्येश्वररू
पस्यपरेषांचपरस्यते स्वरूपंवतकुर्वंतियद्धेतोःकुशलंजनाः ४

ताभक्तियोगकौमार्गमेरेआगैविस्तारतेकहो २ औरवडेतेंजैसेवडोईश्वररूपजोकालकौस्वरूपकहो औरजाकेसुने
तेंपुरुषवीतरागहोय औरजीवकोंनानासंसारकोजन्ममरणादिकदुःखतिनकोकहो ३ औरवडेतेंतैवडोईश्वररूपजोका
लकोस्वरूपकहो जाकेभयतेलोककर्मकरेहै ४ इत्यादिकमेंहेप्रभोयकारजानौ ऐसोअरजकरवहुतदिननतेअपारयासंसा
रमेंसोयोंकर्मनामैआसक्तिजोबुद्धितातेरक्षाहेतताकौयोगप्रकाशकतुमप्रगटभयेहो ५

भा॰३॰
८०

ऐसे लखए प्रकृत्यो सिद्ध सो यह देह बैठो है ठाढो है दैवाधीन स्थानतें गयो कहूं बाहर उठाही फिर आयो ताय नहीं देखे जातें
स्वरूप प्राप्ति भयो॥ स्वरूपानंद मैं मग्न होय रह्यो जैसे मदिराके मदसों आंधरो वस्त्र कमरि कें स्थित है वा गिर्यो रहे ताहि नहीं जाने है ३७
और यह देह है सो प्रारब्धकर्मके आधीन है इंद्रियनसहित याते पूर्वसंस्कारवसतें चलत जब ताय स्वारंभक कर्मको रहत बता
ई प्रतीक्षा करे है याते समाधिपर्यंत पायो है योग जानें औ जान्यो है आत्मतत्त्व जानें ऐसो सिद्ध प्रपंचसहित स्वप्नतुल्य यह है

देहं च नश्वरमवस्थितमुत्थितं वा सिद्धो न पश्यति यतोऽध्यगमत्स्वरूपं दैवादुपेतमथ दैववशादपेतं वासो यथा
परिकृतं मदिरामदान्धः ३७ देहोऽपि दैववशगः खलु कर्म यावत्स्वारंभकं प्रतिसमीक्षत एव सासुः तं सप्रपंचमधि
रूढसमाधियोगः स्वाप्नं पुनर्न भजते प्रतिबुद्धवस्तुः ३८ यथा पुत्राच्च वित्ताच्च पृथङ्मर्त्यः प्रतीयते अप्यात्मत्वे
नाभिमताद्देहादेः पुरुषस्तथा ३९ यथोल्मुकाद्विस्फुलिंगाद्धूमाद्वापि स्वसंभवात् अप्यात्मत्वेनाभिमताद्
यथाग्निः पृथगुल्मुकात् ४० भूतेंद्रियांतःकरणात्प्रधानाज्जीवसंज्ञितात् आत्मा तथा पृथग्द्रष्टा भगवान् ब्र
ह्मसंज्ञितः सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षेतानन्यभावेन भूतेष्विव तदात्मतां ४२

ताय नहीं भजे ३८ जैसे पुत्र मित्र और धन उ प्रीतिसों ए सब तें मानें हैं परंतु इनमें तें न्यारो ही प्रतीत होते हैं ऐसे ही या देह
तें यह पुरुष न्यारो है ३९ जैसे लकरी पतंगा धूआं आग्नि स्वरूप करि मानें यहैं परंतु अग्नि सो न्यारो है तैसेही आत्मा सबतें
न्यारो है ४० आगि कीसी नाई महाभूत इंद्री अंतःकरण और जीवसंज्ञित प्रधानतातें भगवान ब्रह्मसंज्ञक द्रष्टा आत्मा न्यारो है ४१
सब प्राणीनकी आत्मा को देखे है और आत्मा में सब प्राणीको देखे अनन्यभाव करि जैसें महाभूतनमें महाभूतताको देखे है ४२

नमस्ते लोकनि तिनके तीव्र सोक जो अंतर तिनकों समुद्र ताय सुखाय को वे ऐसो जो हरि को प्रति उदार हास ताहि ध्यान करैं और मुनी
न के उपकार के लीये अपनी माया करि याके दर्पन को मोहिवे को ल्यावें हरि को भ्रूमंडल ताहि ध्यान करें जो कंदर्प मुनिन को मोहते
ताको भ्रूमंडल की माया नाश करैं ३२ मंदहास्य अति केवल ही हास्य हरै फेर ध्यान को विषय भूत अट्टहास हरि को ताहि ध्यान करैं अधिक
औष्ठन की कांति करि अरुण भयो जो स्फुरत कुंदकली से दंत तिन की पंक्ति जामें फुरे है ताउ स्मेर सन को ध्यान करें और अपने हृद
याकास में स्थित जो विष्णु तिन में भक्ति करि जाने मन लग्यो ऐसे भक्त हरि यातिरिक्त कछु देखवे को चिंतन चलावे ३३ ऐसे हरि

हासं हरेरवनताखिललोकतीव्रशोकाश्रुसागरविशोषणमत्युदारं संमोहनायरचितं निजमाययास्य भ्रूमंडलं
मुनिकृते मकरध्वजस्य ३२ ध्यानायनं प्रहसितं बहुलाधरोष्ठभासारुणायिततनुद्विजकुंदपंक्ति ध्यायेत्स्वदेहकुहरे
वसितस्य विष्णोर्भक्त्यार्द्रयार्पितमना न पृथग्दिदृक्षेत् ३३ एवं हरौ भगवति प्रतिलब्धभावो भक्त्या द्रवद्धृदय उत्पुलकः
प्रमोदात् औत्कंठ्यबाष्पकलया मुहुरर्द्यमानस्तच्चापि चित्तबडिशं शनकैर्वियुंक्ते ३४ मुक्ताश्रयं यर्हि निर्विषयं विरक्तं
निर्वाणमृच्छति मनः सहसा यथार्चिः आत्मानमत्र पुरुषोऽव्यवधानमेकमन्वीक्षते प्रतिनिवृत्तगुणप्रवाहः ३५ सोप्येत
याचरमया मनसो निवृत्त्या तस्मिन्महिम्न्यवसितः सुखदुःखबाह्ये हेतुत्वमप्यसति कर्तरि दुःखयोर्यत् स्वात्मन्विधत्त उ

भगवान् में पायो है प्रेम जानें भक्ति करि स्रवीभूत जो हृदय जाको आनंद तें पुलकावली जाके होइ आई उत्कंठा करि कैं आंसुन के
तिन करि आनंद समुद्र में डूब्यो ऐसो बडिश रूपी वंसी ताहि याने भ्रमित रूप होइ जाको कौन ध्याता कौन ध्येय यह विचार भ्रम होइ जा
इ ३४ जब याको मन आश्रय छोडि निर्विषय विरक्त होय नवत ज्वाल हरि में लय पावै जैसें ज्वाला अग्नि में लय है है
तब यत प्रत्यक्ष गुन रहे देहादिक उपाधि जाकी ध्याता ध्येय पृथक् अद्वय जो आत्मा ताहि देखें है ३५ सो सिद्ध पुरुष जो मन की वृत्ति रूप विधाता करि
सुखदुःखरहित जो वृत्ति रूप निर्गुण ताहि पाइ जो पहलें सुखदुःख को भोक्ता आत्मा में होत भयो ताय अहंकार निष्ठ ही देखें है पायो है ऐसो आत्मा

भा॰ म॰ ७९

फेर मंदराचल कौं भ्रमरण करि धुये ये अंगदादिक जिनमें ऐसे ईहर की भुजा लोकपालन कौं आश्रय तिनैं ध्यान करै फि रि असह्य जाकौ तेज ऐसे चक्र कौं ध्यान करै और हस्त कमल कौं मैं राजहंस की सी नाई सो भाय मान जो संख ताय ध्यान करै २७ फिरि हरि की प्यारी कौमोदकी गदा वैरी जे योद्धा तिनके लोहु सों ईभई कीच ता मैं लिपटी ताहि स्मरण करै फिर वनमाला कौं ध्या न करै जो अनेक भौरान की वाणी करि नादित और जिय के निर्मल स्वरूप जो कौस्तुभ मणि हर के कंठ मैं ताहि ध्यान करै २८ भक्तन पै कृपा करि वृद्ध ग्रहण करी है मूर्ति जानै ता भगवान के मुखारविंद कौ चिंतवन करै जो कुंडल के सौं दैदीप्यमान मकराकृ

बाहूंश्च मंदरगिरेः परिवर्तनेन निर्णिक्तबाहुवलयानधिलोकपालान्। संचिंतयेद्दशशतारमसह्यतेजः शंखं च तत्कर सरोरुहराजहंसः॥ २७ कौमोदकीं भगवतो दयितां स्मरेत दिग्धामरातिभटशोणितकर्दमेन। मालां मधुव्रतवरूथगिरोपघुष्टां चैत्यस्य तत्त्वम मलं मणिमस्य कंठे॥ २८ भृत्यानुकंपितधियेह गृहीतमूर्तेः संचिंतयेद्भगवतो वदनारविंदं। यद्विस्फुरन्मकरकुंडलवल्गितेन वि द्योतितामलकपोलमुदारनासं॥ यच्छ्रीनिकेतमलिभिः परिसेव्यमानं भूत्या स्वया कुटिलकुंतलवृंदजुष्टं। मीनद्वयाश्रय मधिक्षिपदब्जनेत्रं ध्यायेन्मनोमयमतंद्रित उल्लसद्भ्रु॥ ३० तस्यावलोकमधिकं कृपयातिघोरतापत्रयोपशमनाय नि सृष्टमक्ष्णोः। स्निग्धस्मितानुगुणितं विपुलप्रसादं ध्यायेच्चिरं विततभावनया गुहायां॥ ३१

तके कुंडल के चापल्य करि शोभाय मान है निर्मल कपोल जाके और उदार है नासिका जामें २९ जो मुख शोभा को निकेत है अप नी शोभा करि भौरान करि से ये मान है घुंघरवारी अलक समूह करि सेवित जामें शोभायुत लोचन को तिरस्कार करें चंचलता जामें ऐसे नेत्र कमल है उल्लसित है भृकुटी जाके ऐसे मनही ना करि वे तो आलस्य छोडि ध्यान ३० ता हरि के नेत्रन की चितवनि कृपा करि अति घोर तीनो ताप हरिवे को प्रेरी और स्निग्ध हास्य युत प्रसन्न जामे प्रसाद ताहि वडी भावना करि हृदय में ध्यान करै ३१

देदीप्यमानकमलकोप्रस्तेनञ्जनपीतवस्त्रहैं जिनकैं श्रीवत्स जाकौं वक्षस्थलमें चिन्हकौस्तुभ मणियुक्त जाकी ग्रीवा॥ २६ मानो
भौरानकी है मधुरगुनजामे ऐसीवनमाला नृकरिव्याप्तवहुतमोलकेहारचूरा मुकटबाजूवंदनूपुरजाकैं २५ छुद्रघंटिकाकेसूत्र
करिके देदीप्यमानहै नितंवजाकौ हृदयकमलमें आसन अतिसयदर्शनजिनकौ आनंदवढाइवेवारो अतिसुंदरसकललोक जि
नकौं नमस्कारकरैं सदाकिसोरअवस्थामें स्थित भक्तनके अनुग्रहमैं रहैं २७ कीर्तनकरवेलायक तीर्थसेजाकेजस पुण्य

लसत्पंकजकिंजल्कपीतापीनकौसेयवाससं श्रीवत्सवक्षसंभ्राजत्कौस्तुभामुक्तकंधरं २६ मत्तद्विरेफकलयाप
रीतंवनमालया परार्ध्यहारवलयाकिरीटांगदनूपुरं २५ कांचीगुणोल्लसच्छ्रोणिहृदयांभोजविष्टरं दर्शनीयतमं
शांतंमनोनयनवर्द्धनं २६ अपीच्यदर्शनंशाश्वत्सर्वलोकनमस्कृतं संतंवयसकैशोरे भृत्यानुग्रहकातरं २७
कीर्तन्यतीर्थयससंपुण्यश्लोकयशस्करं ध्यायेद्देवसमग्रांगंयावन्नच्यवतेमनः २८ स्थितंव्रजंतमासीनंशयानं
वागुहाशयं प्रेक्षणीयेहितंध्यायेत्शुद्धभावेनचेतसा २९ वोसंचिंतयेद्भगवतश्चरणारविंदंवज्रांकुशध्वजसरोरु
हलांछनाढ्यं उत्तुंगरक्तविलसन्नखचक्रवालज्योत्स्नाभिराहतमहद्धृदयांधिकारं ३० तस्मिल्लब्धपदंचित्तंसर्वाव
वसंस्थितं विलक्ष्यैकत्रसंयुज्यादंगेभगवतोमुनिः ३०

श्लोकराजावलिकेप्रेयेकरिवेवारे ऐसेसमग्रजाकोअंग ताभ
गवानकौध्यानकरैं २९ जाहरमेंजवध्यानपावे सवअंगमेंस्थितहोई तवभगवानकेएक एकअंगकोन्यारेकरचिंतलगा
वैं ३० पहिलेहरकेचरणारविंदकौचिंतवनकरैं जोचरणचक्रअंकुशध्वजाकमलइनकेचिन्हकरियुक्तहैं उचेलालदेदीप्य
मानरवनिनकेमंडलकीकांतिकरदूरकरीहै ध्यानकरनवारेनकौअंधकारमाने ३१

अपने २ स्थानीपंचप्राणन में एकदेश में मनकर सहित प्राणन को धारण करनो वैकुंठलीलान को ध्यान तैसे ई अपनो समाधान ६ ऐं मार्ग और और हूं ऐसे मार्गनि करकें दुष्ट कुमार्ग में जो मन ताहि बुद्धिकर शनै शनै एकाग्र करैं प्राण जीत आ लस छोड़ि कें ७ जीत्यो है आसन जानें ऐसो पवित्र देश में आसन बिछाई कारि तापै स्वस्तिकासन वेधि सूधो सरीर कर योगा भ्यास करैं ८ पूरक कुंभक रेचक इन मार्गनि कर प्राणमार्ग शुद्ध करैं वा प्रतिकूल रेचक सो कर कें जैसे स्थिर होय चंचल ना

स्वधिष्ण्यानामेकदेशे मनसा प्राणधारणं वैकुंठलीलाभिध्यानं समाधानं तथात्मनः ६ एतैरन्यैश्च पथिभिर्मनो दुष्टमसत्पथं बुद्ध्या युंजीत शनकैर्जितप्राणो ह्यतंद्रितः ७ शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य विजितासन आसनं तस्मिन् स्वस्ति समासीन ऋजुकायः समभ्यसेत् ८ प्राणस्य शोधयेन्मार्गं पूरकुंभकरेचकैः प्रतिकूलेन वा चित्तं यथा स्थिरमचंचलं ९ मनोऽचिरात्स्याद्विरजं जितश्वासस्य योगिनः वाय्वग्निभ्यां यथा लोहं ध्मातं त्यजति वै मलं १० प्राणायामैर्दहेद्दोषान् धारणाभिश्च किल्बिषान् प्रत्याहारेण संसर्गान् ध्यानेनानीश्वरान् गुणान् ११ यदा मनः स्वं विरजं योगेन सुसमाहितं काष्ठां भगवतो ध्यायेत्स्वनासाग्रावलोकनः १२ प्रसन्नवदनाम्भोजं पद्मगर्भारुणेक्षणं नीलोत्पलदलश्या

होई ९ जित श्वासन में योगीन को मन निर्मल होई वही अग्नि कर तपायो सुवर्ण जैसे मैल को त्यागे है १० प्राणायाम न कर वातादि दोषन को जरावैं धारणन कर किल्बिष दूर करैं ऽ ई ई इनको एककर संसर्ग दोष दूर करैं ध्यान कर अनीश्वरता के गुणनि नै दूर करैं ११ जब अपनो मन निर्मल होई योगकर सावधान होइ तब भगवान के स्वरूप को ध्यान करैं अप नी नासिका के अग्रभाग पे दृष्टि राखे जो मैल या विशेषन होय १२ ध्यान करै है प्रसन्न जाको मुखारविंद पद्मगर्भवत् अ रुण जिनके नेत्र दल वत् श्याम स्वरूप चक्र गदा धारण करै तैः १३

आत्मज्ञानकरिसंसयजाकोनिमभयो ऐसोपुरुषमेरेस्वरूपकोप्राप्तिहोहै अनायासलिंगसरीरनासभयेसंतै जोस्वमपायथोगी
न्हतिनहीहोहै २९ हेमामलवमेरीप्राप्तिकीविरीया अणिमादिकसिद्धअंमरायरूपहोहै सोजोयोगजिनकोनतीऐसीनाथ
अणिमादिकसिद्धतिननैसिद्धकोमनआयात होयतवशीघ्रमेरीगतिहोई जागनभयेसंतैमस्तुकोगर्भनतीतोरै जोसिद्धहैमैनेव
सकीयोयहवगनहीतोहै ३० इतीमनीयेसतविंशोध्याया ॥२७॥ हेराजकुमारीअवमैनेरेआगेध्यानसहितयोगकेल

प्राप्तोपिहांजसाधीराः स्वशरीरच्छिन्नसंशयाः यद्ध्यानानवर्तमेयोगी लिंगाद्विनिर्गमे २९ यदानयोगोपचिता
सुचेतोमायासुसिद्धस्यविषज्जतेङ्गः अनन्यहेतुष्वतमेगतिः स्यादात्यंतिकीयत्रनमृत्युहासाः ३० इतीश्रीभाग
वतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेसप्तविंशोध्यायः ॥२७॥ श्रीभगवानुवाच योगस्यलक्षणंवक्ष्येसबीजस्यनृपात्
मजे मनोयेनैवविधिनाप्रसन्नंयातिसत्पथं १ स्वधर्माचरणंशक्त्याविधर्माच्चनिवर्तनं दैवाल्लब्धेनसंतोषआत्म
विच्चरणार्चनं २ ग्राम्यधर्मनिवृत्तिश्चमोक्षधर्मरतिस्तथा मितमेध्यादनंशश्वद्विविक्तक्षेमसेवनं ३ अहिंसा
सत्यमस्तेयंयावदर्थपरिग्रहं ब्रह्मचर्यंतपःशौचंस्वाध्यायःपुरुषार्चनं ४ मौनंसदासनजयःस्थैर्यंप्राणजयःशनैः
प्रत्याहारश्चेंद्रियाणांविषयान्मनसाहृदि ५

स्वणकहूहूं जाविधिकरमसन्नहोईसर्म्माई स्वर्गमैंजाई १ शक्तिकरिस्व
धर्मिकोआचरण विधिअधर्मतैनिवृत्तिहोयवो दैवयोगतैजोमिलैतामेसंतोष आत्मवेत्तानकोपूजन २ त्रिवर्गिकधर्म
मैंनिवृत्ति मैसेमोक्षधर्मरति थोरोअोरपवित्रभोजनकरनो सोऊएकवार। निर्जननकेबीचस्थानकोसेवनकरनो ३
हिंसाकोईकीनकरनी चोरीनकरनी। जितनेमेंअपनोप्रयोजन तितनेहीअर्थकोपरिग्रह ब्रह्मचर्यतपवित्रतबहाध्य
यनहरकोपूजन ४ मौनसदाआसनजपधैर्यशनैशनैप्राणनकोजपइंद्रियनकोमनकरसहितविषयननैसमेरवो ५

हे मात निष्काम स्वधर्म करती है जो मैं भक्ति कथा सो पुष्ट भई ता सों भक्ति तीव्र होय है २१ देख्यो है तत्व जाने ऐसो जो ज्ञान और बल
वान् वैराग्य और तप युक्त योग और तीव्र आत्मसमाधि कर दिन दिन जरत जो पुरुष की प्रकृति सो धीरे धीरे तिरोहित होय है अग्नि
ऐते जैसे आरणी रहित होय है २३ जो भोग्यो है भोग जाको ऐसो पीछे देख्यो है दोष जाके परित्याग जाको कीयो ऐसी प्रकृति महिमा में स्थित
जो ईश्वर ताको अशुभ नहीं करे है २४ जैसे जगत नाई जगे नही तब नाई स्वप्न बहुत दुःख दाई है सो ई स्वप्न जागे पै मोह के अर्थ नहीं

२६

श्रीभगवानुवाच: अनिमित्तनिमित्तेन स्वधर्मेणामलात्मना तीव्रया मयि भक्त्या च श्रुत संधि तया चिरं २१ ज्ञानेन दृष्टतत्त्वेन वैराग्येन बलीयसा तपोयुक्तेन योगेन तीव्रेणात्मसमाधिना २२ प्रकृतिः पुरुषस्येह दह्यमाना त्वहर्निशं तिरो
भवित्री शनकैरग्नेर्योनिरिवारणिः २३ भुक्तभोगा परित्यक्ता दृष्टदोषा च नित्यशः नेश्वरस्याशुभं धत्ते स्वे महिम्नि स्थित
स्य च: २४ यथा ह्यप्रतिबुद्धस्य प्रस्वापो बह्वनर्थभृत् स एव प्रतिबुद्धस्य न वै मोहाय कल्पते २५ एवं विदिततत्त्व
स्य प्रकृतिर्मयि मानसं युञ्जतो नापकुरुत आत्मारामस्य कर्हिचित् २६ यदैवमध्यात्मरतः कालेन बहुजन्मना:
सर्वत्र जातवैराग्य आब्रह्मभुवनान्मुनिः २७ मद्भक्तः प्रतिबुद्धार्थो मत्प्रसादेन भूयसा निःश्रेयसं स्वसंस्थानं

है २५ ऐसे ही विदित तत्व है मो मैं मन लगावै है आत्माराम है ताको प्रकृति कछु अपकार नहीं कर सके २६ बहुत जन्म लें
काल पाई जन्म अध्यात्म जा विन मे रति होय है और ब्रह्मलोक पर्यन्त सब लोकन मैं वैराग्य होय तब मेरी भक्त होई २७ मेरो
भक्त होई जीत्यो है स्वरूप जाने ऐसो पुरुष मेरी कृपा करि देहादिकन तें अतिरिक्त निरंतर से यानं स्वरूप नो केवला प्र मेरो
स्वरूप ताप माप्त होय है २८

भा॰तृ॰ ७६

और वंसनकौ हैं आभासज्ञा मैं ता अंग्रहंकारि परमार्थ आपपुरुष आत्मा नैं लखिये हैं १३ भूतसूक्ष्म इंद्री मन बुद्धि आदिक इनकौं नि
द्राकरि अव्याकृत मैं लीन भये संतै जो आत्मा निद्रा अहंकार रहित सो मा निहोई १४ तास्त्रौ आप मैं है ना आत्मा अनष्ट परंतु अहं
कारके नष्ट निद्राएँ आपेकौ मिथ्या ही नष्ट की सी नाही मानै हैं जैसे द्रुमन द्रष्टा भये ऐं पैं आपतौ नष्ट नहीं परनष्ट की सी नाही विवस्तौ
ई जा है १५ ऐसे विचार करि कैं पुरुष आत्मा कौ पामि हौं है जो आत्मा कारी पिकार रण धानकौ द्रष्टा और प्रकासक हैं १६ देवहूती

एवंत्रिवृदहंकारो भूतेंद्रीयमनोमयैः स्वभासैर्लक्षीतोनेनसदाभासेंनसत्यदृक् १३ भूतसूक्ष्मेंद्रियमनोबुद्ध्या
दिष्विह निद्रया लीनेष्वसतियस्तत्र विनिद्रो निरहंक्रियाः १४ मन्यमानस्तदात्मानमनष्टोनष्टवन्मृषा नष्टेहंकर
णेद्रष्टानष्ट विन्नइवातुरः १५ ऐवंप्रत्यवमृश्यासावात्मानंप्रतिपद्यते साहंकारस्य द्रव्यस्ययोवस्थानमनुग्रहः १६
देवहूतीरुवाच: पुरुषंप्रकृतिर्ब्रह्मन्नविमुंचतिकर्हिचित् अन्योन्यापाश्रयत्वाच्चनित्यत्वादनयोःप्रभो १७ यथागं
धस्यभूमेश्चनभावोव्यतिरेकतः अपांरसस्यचयथातथाबुद्धेःपरस्यच १८ अकर्तुःकर्मबंधोयंपुरुषस्यदाश्रयः गुणेषु
सत्सुप्रकृतेःकैवल्यंतेष्वतःकथं १९ क्वचित्तत्वावमर्शेनानिवृत्तंभयमुल्वणं अनिवृत्तनिमित्वात्पुनःप्रत्यवतिष्ठते २०

पूछै है हे प्रभो प्रकृति पुरुष कौ कवहू नही छोडै है इन दोऊन कौ परस्पर आश्रयत्व है और नित्यत्व हैं याते जैसे गंधर्व और भू
मई भ की व्यतिरेक तैं स्थित नही और जैसे जल और रस की न्यारी सत्ता नहीं तैसे प्रकृति पुरुष इन की न्यारी न्यारी सत्ता नहीं १८
अकर्त्ता पुरुष कौ जो कर्म बंध सो गुणाश्रय हो है ता मैं प्रकृती के गुण मद होंहैं ता तै पुरुष कौ गुण गुणन तैं मोक्ष कैसे होई १९
और जो कवहू तत्व विचार कर उल्वण भय निवृत्त भई तौ वा भय कौ निमित्त प्रकृति कैं विकार निमित्त भयो वह भय फिर हू
उठ ठाडो होई ऐसे देवहूती पूछत भई भगवान सौं तव तौ भगवान बोलें २०

याहीतेयह चित्त जो विषययोनिकी मार्गमें आसक्त हैं ताहि धीरे धीरे तीव्र भक्ति और वैराग्य कर वशकरें ५ श्रद्धायुक्त होय यमादिक योगमार्गनिकर अभ्यासकरे और मोमें सांचे भावकर मेरी कथा श्रवणकरि ६ सर्वप्राणीनमें समताकर निर्वैरताकरि प्रसंग सबको त्यागवसकर ब्रह्मचर्य मौन बलवान स्वधर्म इनकर आत्मप्राप्तको अभ्यासकर ७ जो हरइछा मिलै ताकर मिले नाहि तैसे संतोषकर थोरोई भोजन करै मननशील होय एकांतवासी सांत सबसों जाकी मित्रता करुणाशील आत्मवान होई ८ पर वारस हितपा देह में झूठो आग्रह अहं भाव तापनकरकें तत्वज्ञान पर्यंत जो प्रकृति युक्त पुरुषको ज्ञानताकर ९ इन उपायनकर निवर्त्ते जाग्रदादि अवस्था जाकी आत्मा बिनादू

अतः एवं शनैश्चित्तं प्रसक्तमसतां पथि भक्तियोगेन तीव्रेण विरक्त्या च नयेद्वशं ५ यमादिभिर्योगपथैरभ्यसन् श्रद्धयान्विताः मयि भावेन सत्येन मत्कथाश्रवणेन च ६ सर्वभूतसमत्वेन निर्वैरेणाप्रसंगता ब्रह्मचर्येण मौनेन स्वधर्मेण बलीयसा ७ यदृच्छयोपलब्धेन संतुष्टो मितभुङ्मुनिः विविक्तःशरणः शांतो मैत्रः करुण आत्मवान् ८ सानुबंधे च देहेस्मिन्नकुर्वन्नसदाग्रहं ज्ञानेन दृष्टतत्वेन प्रकृतेः पुरुषस्य च ९ निवृत्तबुद्ध्यवस्थानो दूरीभूतान्यदर्शनः उपलभ्यात्मनात्मानं चक्षुषेवार्कमात्मदृक् १० मुक्तलिंगं सदाभासमसति प्रतिपद्यते सतो बंधुमसच्चक्षुः सर्वानुस्यूतमद्वयं ११ यथा जलस्थ आभासः स्थलस्थेनावदृश्यते स्वभावेन तथा सूर्यो जलस्थेन दिवि स्थितः १२

र भयो है अन्यदर्शन जाको ऐसे अहंकार वर्जित आत्माक

रि शुद्ध आत्माकर जानें जैसे चक्षुरवछिन्न सूर्यकर आकासमें जो सूर्य सो जानियें है १० ऐसे निरुपाधि प्रधानको अधिष्ठान कार्यको चक्षुकी सीनाई प्रकासवे कार्य कारणनमें अनुस्फुलकरि पूर्ण आत्मा अहंकारमें घट घट करि भासमान वस्तु स्वरूप ताहि प्राप्ति होई ११ जैसे जलमें स्थित जो सूर्य प्रतिबिंब ता द्वारा सूर्य गर्भ्नो स्थित सूर्य लखिये है ऐसे त्रिगुण जो अहंकार सो ताभूत इंद्रिय जो मय जो वाके प्रतिबिंब तिनकर केवल लखिये है ॥१२॥

भा॰ त॰ बुद्धिकरसहित ब्रह्मा हृदयमैं प्रवेश करत भयौ तौउ विराट् न उठौ रुद्र अहंकारसहित हृदयमैं प्रवेश करत भयौ तौउ विराट् न उठौ ६८
७५ और चित्ताधिष्ठाता क्षेत्रज्ञ भगवान् जबही चित्तकरसहित हृदयमैं प्रवेश करत भयौ तबही विराटपुरुष जलमै उठि बैठौ तो होत भयौ ६९
जैसे सोयौ सो पुरुष ताहि प्राण इंद्री मन बुद्धि सब जीव बिना नहीं उठाय सकैं ऐसे ही क्षेत्रज्ञ बिना विराट कौं कोई देवता ईश्वर समर्थ न ही
होत भयौ ७० ता क्षेत्रज्ञ प्रभु कौं जोग मैं प्रवृत्ति जो बुद्धि ता करि और भक्ति ज्ञान वैराग्य करि कार्य कारण कौं संघात तें जो देव ताही मैं विवेच

बुद्ध्या ब्रह्मापि हृदयं नोदतिष्ठत्तदा विराट् रुद्रोभिमत्या हृदयं नोदतिष्ठत्तदा विराट् ६८ चित्तेन हृदयं चैत्यः क्षेत्रज्ञः प्राविश
द्यदा विराट्तदैव पुरुषः सलीलादुदतिष्ठत ६९ यथा प्रसुप्तं पुरुषं प्राणेन्द्रियमनोधियः प्रभवंति विना येन नोत्थाप
यितुमोजसा ७० तमस्मिन्प्रत्यगात्मानं धीया योगप्रवृत्तया भक्त्या विरक्त्या ज्ञानेन विविच्यात्मनि चिंतयेत् ७१
इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे कापिलेयोपाख्याने षड्विंशोऽध्यायः २६ श्रीभगवानुवाच प्रकृतिस्थो
पि पुरुषो नाज्यते प्राकृतैर्गुणैः अविकारादकर्तृत्वान्निर्गुणत्वाज्जलार्कवत् १ स एष यर्हि प्रकृतेर्गुणेष्वभिविषज्जते
अहंक्रियाविमूढात्मा कर्तास्मीत्यभिमन्यते २ तेन संसारपदवीमवशोभ्येत्यनिर्वृतः प्रासंगिकैः कर्मदोषैः सदसन्मिश्र
योनिषु ३ अर्थे ह्यविद्यमानेपि संसृतिर्न निवर्तते ध्यायतो विषयानस्य स्वप्नेनर्थागमो यथा ४

नन करि चिंतवन करै ७१ इ
तीश्रीमद्भागवते तृतीयषड्विंशोऽध्यायः २६ यह पुरुष देह मैं स्थित हू है परंतु गुण सुख दुःखादिक तिन करि लिप्त नहीं होहै जैसे
जलमैं स्थित जो सूर्य सो जैसे लिप्त नहीं होहै अविकारी तैं आत्मा अकर्ता निर्गुण है यातें सो यह आत्मा जब माया के गुणन मैं आ
सक्त होजात है तब अहंकार करि मूढात्मा चित मैं कर्ता हू ऐसे प्रारब्ध कौं मानै है २ ता मन करि प्रसंगिसंग कृत जे कर्म दोष तिन करि परिवस
हुवो तिन होई देव पशु मनुष्यादिक योनिन मैं संसार पदवी कौं प्राप्ति होहै ३ कछु अर्थ नहीं है वास्तव तें परंतु विषय न कौ ध्यान करत जो पुरु
ष ताकौ संसार नहीं निवृत होहै जैसे स्वप्न मैं शिरछेदादिक है झूठ परंतु जब ताई सोवै है तब ताई ही सोच लगै है प्रेरकछु नहीं ४ ७५

फिर छुधापिपासभई उनकोसमुद्रदेवताभयो तापीछे हृदयनिकसो हृदयतेमनभयो मनकोचंद्रमाअधिष्ठाताभयो फिरबुद्धिभई बुद्धिकोब्रह्माअधिष्ठाताभयो फिरअहंकारभयो ताकोरुद्रदेवताभयो तामेतेचित्तप्रधिष्ठाताभयो ६१ येदेवताप्रवेशकरतभए परियाकोउठायवेसकै फिरयाविराटकोंउठायवेकेलीयें क्रमसोंसवयामेप्रवेशकरतभए एनसंगती ६२ प्रग्निवाणीकरसहितमुखकोभजतभयो तो उविराटनउठोंं प्राणकरसहितपवननासिकामे प्रवेशकरततोउविराटनउठो ६३ त्वचामेरोमनकरिसहतऔषधीप्रवेशकरतभई

हस्तौचनिरभिद्येतांवलंताभ्यांततःस्वराट् पादौचनिरभिद्येतांगतिस्ताभ्यांततोहरिः ५८ नाड्योऽस्यनिरभिद्यंतताभ्योलोहितमाभृतं नद्यस्ततःसमभवत् उदरंनिरभिद्यत क्षुत्पिपासेततःस्यातांसमुद्रस्त्वेतयोरभूत् ५९ अथास्यहृदयंभिन्नंहृदयान्मनउत्थितं मनसश्चंद्रमाजातोबुद्धिर्बुद्धेर्गिरांपतिः ६० अहंकारस्ततोरुद्रश्चित्तंचैत्यस्ततोऽभवत् ६१ एतेह्यभ्युत्थितादेवानैवास्योत्थापनेशकन् पुनराविविशुःखानितमुत्थापयितुंक्रमात् ६२ वह्निर्वाचामुखंभेजेनोदतिष्ठत्तदाविराट् घ्राणेननासिकेवायुर्नोदतिष्ठत्तदाविराट् ६३ अक्षिणीचक्षुषादित्योनोदतिष्ठत्तदाविराट् श्रोत्रेणकर्णौचदिशोनोदतिष्ठत्तदाविराट् ६४ त्वचंरोमभिरोषध्योनोदतिष्ठत्तदाविराट् रेतसाशिश्नमापस्तुनोदतिष्ठत्तदाविराट् ६५ गुदंमृत्युरपानेननोदतिष्ठत्तदाविराट् हस्ताविंद्रोवलेनैवनोदतिष्ठत्तदाविराट् ६६ विष्णुर्गत्यैवचरणौनोदतिष्ठत्तदाविराट् नाडीर्नद्योलोहितेननोदतिष्ठत्तदाविराट् ६७ क्षुत्तृड्भ्यामुदरंसिंधुर्नोदतिष्ठत्तदाविराट् हृदयंमनसाचंद्रोनोदतिष्ठत्तदाविराट् ६८

तोउविराटनउठो शिश्नमेवीर्यकरसहितजलप्रवेशकरतभयो तोउविराटनउठो ६४ गुदमेअपानसहितमृत्युप्रवेशकरतभयो तोउविराटनउठो हाथनमेवलकरसहितइंद्रप्रवेशकरतभयो तोउविराटनउठो ६५ विष्णुगतिलेचरणमेप्रवेशकरतभयो तो उविराटनउठो नाडीनमेरुधिरकरसहितप्रवेशकियो तोउविराटनउठो ६६ छुधापियासाकोलेउदरमेंसमुद्रप्रवेशकियो तोउविराटनउठो मनकोसंगलेहृदयमेचंद्रमानेप्रवेशकीयो तोउविराटनउठो ६७

तातें पृथ्वी मैं चारौ आकासादि अनुस्यूत हैं तातें शब्दादिक गुण सब या पृथ्वी मैं हैं ऐसे सब तत्व बिना मिले स्थित हैं महदादिक सातौ तब कालकर्म्मी हरि यातें जगत की आदि ईश्वर इन सातौन मैं प्रवेश करत भयौ ५० तब मिले औरनसों भिन्न भए जो तत्व तिनके अचेतन अंड उनतें विराट पुरुष उठत भयौ ५१ विशेष ज्ञान कौ नाम औ सो यह अंड सो क्रम तें बढौ एक तें एक दश गुणौ अधिक और जलादिकन कौ आवर्ण कर आवृत हैं बाहिर सब के प्रधान कौ आवरण तें ५२ जामैं लोकन कौ विस्तार सो यह हरि कौ रूप ब्रह्मांड है सो जल मैं सोवत जो हिरण्मय पुरुष ता अंड कौं तातें उदासीन ता छोडि वामैं भगवान प्रवेश करि बहुत प्रकार छिद्र रचित भयौ ५३ पहिलें या विराट कौं मुख निकस्यौ तामें वाणी भई वाणी कर सहित अग्नि वामैं प्रवेश करत भयौ:

एतान्यसंहत्य यदा महदादीन सप्त वै कालकर्म्मगुणोपेतो जगदादिरुपाविषत् ५० ततस्तेनानुविद्धेभ्यो युक्तेभ्योऽण्डमचेतनं उत्थितं पुरुषो यस्मादुदतिष्ठदसौ विराट् ५१ एतदंडं विशेषाख्यं क्रमवृद्धैर्दशोत्तरैः तोयादिभिः परिवृतं प्रधानेनावृतैर्बहिः यत्र लोकवितानोऽयं रूपं भगवतो हरेः ५२ हिरण्मयादंडकोशादुत्थाय सलिलेशयात् तमाविश्य महादेवो बहुधा निर्बिभेद खं ५३ निरभिद्यतस्य प्रथमं मुखं वाणी ततोऽभवत् वाण्या वह्निरथो नासे प्राणोतो घ्राण एतयोः ५४ घ्राणाद्वायुरभिद्येतामक्षिणी चक्षुरेतयोः तस्मात्सूर्यो व्यभिद्येतां कर्णौ श्रोत्रं ततो दिशः ५५ निर्बिभेद विराजस्त्वग्रोमश्मश्र्वादयस्ततः ततश्चौषधयश्चासन् शिश्नं निर्बिभिदे ततः ५६ रेतस्तस्मादाप आसन्निरभिद्यत वै गुदं गुदादपानोऽपानाच्च मृत्युर्लोकभयंकरः ५७

ता पीछे नासिका के छिद्र भए तामैं प्राण करि कें घ्राण होत भयौ ५४ घ्राण तें पीछे वायु प्रवेश करत भयौ तिन मैं चक्षु ई दोऊ भई तामैं सूर्य ने प्रवेस कीयौ फिर कर्ण भए तामैं श्रवण इंद्री तहां दशान नै प्रवेस कीयौ ५५ विराट कें त्वचा भई तामें रोम केश होत भये तहां औषधि अधिष्ठाता भई ता

२ पीछे शिश्न मैं रेत भयौ जल उहां कौ अधिष्ठाता भयौ फिर गुदा भई उहां अपान मै लोकन कौ भय करिवे वारौ मृत्यु अधिष्ठाता भयौ ५७ विराट के हाथ भये तिनमैं बल भयौ इंद्र उहां कौ देवता भयौ पाउ निकसे तिन मैं गति भई हरि उहां के देवता भए ५८ या विराट के नाडी भई तिन मैं रुधिर भयौ नदी उहां की अधीष्ठाता भई फिर उदर भयौ ५९

रूपतें मात्रा जाकी ऐसो तेज जब विकार कौं प्राप्ति भयो तब वातें रसतें मात्रा जाकी ऐसो जल भयो जो रस जिह्वा करि ग्रहण करियै है ४१ कषाय लो मधुर तिक्त अम्ल कटु अम्ल ऐसे संसर्ग द्रव्यन के विकार करि एक ही रस अनेक प्रकार के भेद पावै है ४२ । आर्द्र करन आह्लाद करिबौ पिंड बंधबौ तृप्ति दैबौ जीवन कौं प्यास की विकलता निवृत्ति करबु उष्णता ताप कौं दूरि करिबे कुं क्याहि जन ने सो । और फिर होइ आवै ये जल की वृत्ति है ४३ रसतें मात्रा जाकी ऐसो देव कौं प्रेर्यो जल विकार कौं प्राप्ति भयो । तब वातें गंधतें मात्रा जाकी ऐसी पृथ्वी भई घ्राण द्वारा प्राप्ति होइ है ४४ ये जनन मैं हिंग्वादिकन के से स्वार करै संतें जो गंध कौं करै अरु और दुरगंध सो रम्य कर्पूरादिक की कमल की सोत गंध उग्र ल

रूपमात्राद्विकुर्वाणात्तेजसो दैवचोदितात् रसमात्रमभूत्तस्मादम्भो जिह्वा रसग्रहः ४१ कषायो मधुरस्तिक्तः कट्वम्ल इति नैकधा भौतिकानां विकारेण रस एको विभिद्यते ४२ क्लेदनं पिंडनं तृप्तिः प्राणनाप्यायनोदनं तापापनोदो भूयस्त्वमम्भसो वृत्तयस्त्विमाः ४३ रसमात्राद्विकुर्वाणादम्भसो दैवचोदितात् गंधमात्रमभूत्तस्मात्पृथ्वी घ्राणस्तु गंधगः ४४ करम्भपूतिसौरभ्यशान्तोग्राम्लादिभिः पृथक् द्रव्यावयववैषम्याद्गंध एको विभिद्यते ४५ भावनं ब्रह्मणः स्थानं धारणं सद्विशेषणं सर्वसत्वगुणोद्भेदः पृथ्वीवृत्तिलक्षणं ४६ नभोगुणविशेषोऽर्थो यस्य तच्छ्रोत्रमुच्यते वायोर्गुणविशेषोऽर्थो यस्य तत्स्पर्शनं विदुः ४७ तेजोगुणविशेषोऽर्थो यस्य तच्चक्षुरुच्यते अम्भोगुणविशेषोऽर्थो यस्य तद्रसनं विदुः ४८ भूमेर्गुणविशेषोऽर्थो यस्य स घ्राण उच्यते परस्य दृश्यते धर्मो ह्यपरस्मिन्समन्वयात् अतो विशेषो भावानां भूमावेवोपलक्ष्यते ४९

रसनादिक की षहीरा से संग्रीह द्रव्यन कौ वैषम्य तैं जो गंध कौं प्राप्ति है सो गंध एक ही है ४५ ब्रह्म कौ प्रतिमादि रूप करि साकारता संपादन जलादिकन कौ जल कौं आधार करन आकाशादिकन कौ अवच्छेदक सत्व प्राणीन कौ प्रगट करिबौ यह पृथ्वी कौं वृत्तिन का लक्षण है ४६ आकाश कौ गुण विशेष शब्द जाकौ विषय सो श्रवण कहीये और पवन कौ विशेष स्पर्श जाको विषय सो त्वचा कहीये ४७ और रूप जाको विषय सो चक्षु कहीये रस जाको विषय सो रसनेंद्रिय कहिये ४८ और गंध जाकौ विषय सो घ्राण कहिये और कारण कौ जो धर्म शब्दादिक सो पवनादिक कार्यन में अनुस्यूत दिखाइ देहै ४९

भा०त० ७३

शब्दके अर्थको आश्रयत्व करि और द्रष्टाको ज्ञापक ऐसे आकासकौं सूक्ष्म स्वरूप तन्मात्र विश्वर शब्दकौं लक्षण कहैहैं ३३ भीतर बाहिर प्रा
णीनकौं अवकाश देवो प्राण इंद्री आत्मा इनकौ आश्रय ऐसें आकाशकी वृत्तिन करि लक्षण कहीये ३४ शब्दतें तन्मात्रा जाकी ऐसो आ
काश जनकी लगन करि विकारकौं प्राप्ति भयो तव वातें स्पर्श भयो त्वचा स्पर्शको ग्रहण करैहैं ३५ मृदुत्व कठिनत्व शीत उष्णता यह स्प
र्शको स्पर्शत्व है सो स्पर्श पवनको सूक्ष्मरूप है ३६ वृक्षणको सांखानकौ चलाइवो उर्णादिकको मिलाइवो संयोग गंध वा अन्न वस्तु

अर्थाश्रयत्वं शब्दस्य द्रष्टुर्लिंगत्वमेव च: तन्मात्रत्वं च नभसो लक्षणं कवयो विदु: ३३ भूतानां छिद्रदातृत्वं बहिरंतर
मेवच प्राणेंद्रियात्मधिष्ण्यत्वं नभसो वृत्तिलक्षणं ३४ नभस: शब्दतन्मात्रात् कालगत्या विकुर्वत: स्पर्शोभवत्त
तो वायुस्त्वक्स्पर्शस्य च संग्रह: ३५ मृदुत्वं कठिनत्वं च शैत्यमुष्णत्वमेव च: एतत्स्पर्शस्य स्पर्शत्वं तन्मात्रत्वं नभ
स्वत: ३६ चालनं व्यूहनं प्राप्तिर्नेतृत्वं द्रव्यशब्दयो: सर्वेंद्रियाणामात्मत्वं वायो: कर्माभिलक्षणं ३७ वायोश्च स्प
र्शतन्मात्राद्रूपं दैवेरितादभूत् समुत्थितं ततस्तेजश्चक्षू रूपोपलंभनं ३८ द्रव्याकृतित्वं गुणता व्यक्तिसंस्थात्व
मेवच तेजस्त्वं तेजस: साध्वि रूपमात्रस्य वृत्तय: ३९ द्योतनं पचनं पानमदनं हिममर्दनं तेजसो वृत्तयस्त्वेता: शो
षणं क्षुत्तृडेव च ४०

कौ ग्राण प्रति लायवो शब्दको श्रवण प्रति प्राप्ति करिवो सब इंद्रीयनको आत्मत्व यह पवनको कर्म ती लक्षण है ३७ स्पर्श है
तन्मात्रा जो की ऐसो पवन दैवको प्रेरो तातें रूप भयो तारूपतें तेज भयो जो रूप चक्षुकरि जान्यो जाइहै ३८ द्रव्यको आकार सम
र्पकत्व द्रव्यको गुणता करिकै ताद्रव्यकौं परिणामता करि प्रतीत असाधारणत्व रूप है साध्वी जाकी तेजकी वृत्ति है ३९ प्रकाश
करवो तंदुलादिकनको पचवो जलादिकको पीवनो शीतको मर्दन स्कुरवाइवो भूख प्यास ए तेजकी वृत्ति है ४० ४०

जो अहंकार कौं हजार सिर हैं जिन के ऐसे साक्षात अनंत कहैं हैं संकर्षण पुरुष भूत इंद्री मनोमय कहै हैं २५ देवता रूप करि कर्तृत्व इंद्री रूप करि करणत्व महाभूत रूप करि कार्यत्व और शांत घोर विमूढत्व यत अहंकार का लक्षण है २६ सात्वक अहंकार जब विकार कौ प्राप्ति भयो तब वाते मन तत्व होत भयो जा मन ते काम संकल्प विकल्प करि संभव होत भयो २७ जा मन कौं अनिरुद्ध ऐसे कहत हैं जो इंद्रीयन कौ नियंता है शरद ऋतु के नील कमल सौं श्याम योगीन कौं हरुवे हरुवे वस करवे कौं जोग्य २८ और राजस अहंकार जब विकार कौ प्राप्ति भयो

सहस्रशीरसं साक्षाद्यमनंतं प्रचक्षते संकर्षणाख्यं पुरुषं भूतेंद्रीयमनोमयं २५ कर्तृत्वं कारणत्वं च कार्यत्वं चेति लक्षणं शांतघोरविमूढत्वमिति वा स्यादहंकृते २६ वैकारकाद्विकुर्वाणा मनस्तत्वमजायत यत्संकल्पविकल्पाभ्यां वर्तते कामसंभवः २७ यद्विदुर्ह्यनिरुद्धाख्यं हृषीकाणामधीश्वरं शारदेंदीवरश्यामं संराध्यं योगिभिः शनैः २८ तैजसात्तु विकुर्वाणा बुद्धितत्वमभूत्सति द्रव्यस्फुरणविज्ञानमिंद्रीयाणामनुग्रहः २९ संसयोऽथ विपर्यासो निश्चयः स्मृतिरेव च स्वाप इत्युच्यते बुद्धेर्लक्षणं वृत्तितः पृथक् ३० तैजसानींद्रियाण्येव क्रियाज्ञानविभागशः प्राणस्य हि क्रिया शक्तिर्बुद्धेर्विज्ञानशक्तिता ३१ तामसाच्च विकुर्वाणाद्भगवद्वीर्यचोदितात् शब्दमात्रमभूत्तस्मान्नभः श्रोत्रं च शब्दगं ३२

तब वाते बुद्धि तत्व भयो जा बुद्धि तत्व ते द्रव्य कौ स्फुरण रूप विज्ञान और इंद्रीयन कौ अनुग्रह संशय मिथ्याज्ञान निश्चय स्मरण निद्रा प्रमाण यह वृत्तिन द्वारा बुद्धि कौ लक्षण कहीये ३० ज्ञानेंद्रीय कर्मेंद्रीय दोउ राजस अहंकार ही ते होत हैं प्राण कौ क्रिया ज्ञान में शक्ति है ३१ हरि के वीर्य कौं प्रेरयौं तामस अहंकार जब विकार कौं प्राप्ति भयो तब वाते शब्द तें सूक्ष्म रूप जाकौ ऐसौ आकास भयो सो अप्र त्यक्ष श्रवण द्वारा जान्यो न जात है ३२

भा०त० विर्विचेष्टा है प्रकृति ताकी जो चेष्टा तातें होइ सो काल ऐसें लषीयेहैं १७ भीतर पुरुषरूप करि बाहिर काल रूप करि ऐसें जो भ
७२ गवान् आपनी माया करि विकार रहित सब मैं अनुप्रवेश करै है १८ जो कर्म्म करि क्षोभित है धर्म जाकौ ऐसी आपनी प्रकृति
मैं परमात्मा पुरुष आपनौं वीर्य धारण करत भयो सो प्रकृति महत्तत्व हिरण्मय ताहि उपजावत भई १९ सो महत्तत्व
आपने मैं व्याप्त जो प्रपंच ताहि प्रगट करत जगत कौ अंकुर लय विक्षेप शून्य आपने तेज करि प्रलय काल कौ जो अंधकार ताहि

प्रकृतेर्गुणसाम्यस्य निर्विशेषस्य मानवि: चेष्टा यत: स भगवान् काल इत्युपलक्षित: १७ अन्त:पुरुषरूपेण का
लरूपेण यो बही समन्वेत्येष सत्वानां भगवानात्ममायया १८ दैवात्क्षुभितधर्मिण्यां स्वस्यां योनौ पर:पुमान् आ
धत्त वीर्यं सासूत महत्तत्वं हिरण्मयं १९ विश्वमात्मगतं व्यंजन् कूटस्थो जगदंकुर: स्वतेजसा पिबत्तीव्रमात्म
प्रस्वापनं तम: २० यत्तत्सत्वगुणं स्वच्छं शान्तं भगवत: पदं यदाहुर्वासुदेवाख्यं चित्तं तन्महदात्मकं २१ स्वच्छत्व
मविकारित्वं शान्तत्वमिति चेतस: वृत्तिभिर्लक्षणं प्रोक्तं यथापां प्रकृति: परा २२ महत्तत्वाद्विकुर्वाणाद्भगवद्वीर्य
सम्भवात् क्रियाशक्तिरहंकारस्त्रिविध: समपद्यत: २३ वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्च यतो भव: मनसश्चेन्द्रियाणां च
भूतानां महतामपि २४

पालन करत भयो २० जो सत्वगुण स्वच्छ शान्त भगवान् की प्राप्ति कौ स्थान् जाकौं वासुदेव ऐसें कहै हैं सो महत्तत्व रूप चित्त है २१
स्वच्छत्व अविकारत्व शान्तत्व यह वृत्तिनि करि चित्त कौ लक्षण कह्यौ जैसें जल निर्मल फेन तरंगादि रहित अवस्था है २२ भग
वद्वीर्य तें भयो महत्तत्व जब विकार कौं प्राप्त भयो तब क्रियावान मैं जाकी शक्ति ऐसो तीन प्रकार कौ अहंकार भयो २३ सात्व
कु राजस तामस तीन प्रकार कौ अहंकार तातें मन ईन्द्रीयन कौ महाभूतनि की उत्पत्ति है २४

जो यत त्रिगुण अव्यक्त नित्य कार्य्य कारण स्वरूप प्रधान ताहि ही प्रकृती कहै हैं जो स्वतत्तो अविशेष औरै परिसव विशेषन को आश्र
यहै १० पांच और पांच और चार और दश याय चौवीसा गण प्रधान कार्य्यात्मक ब्रह्मस्वरूप ही है ऐसो विवेकी जो जन है सो जानै है
११ पांच महाभूत पृथ्वी और अग्नि पवन आकाश जल इतनी ही तनमात्रा स दस्पर्श रूप रस गंध १२ दश इंद्रीय श्रवण त्वचा
दृष्टि जिह्वा नासिका और वाणी हाथ पाउं शिश्न गुदा दशमी इंद्री १३ और मन बुद्धि अहंकार जो चित्त ए चार अंतःकरणात्मक

श्रीभगवानुवाच॥ यत्तत्त्रिगुणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकं प्रधानं प्रकृतीं प्राहुरविशेषं विशेषवत् १० पंचभिः
पंचभिर्ब्रह्म चतुर्भिर्दशभिस्तथा एतच्चतुर्विंशतीकं गणं प्राधानिकं विदुः ११ महाभूतानि पंचैव भूरापोऽग्नि
र्मरुन्नभः तन्मात्राणि च तावंती गंधादीनि मतानि मे १२ इंद्रियाणि दश श्रोत्रं त्वग्दृग्रसननासिका वाक्करौ
चरणौ मेढ्रं पायुर्दशम उच्यते १३ मनो बुद्धिरहंकारश्चित्तमित्यंतरात्मकं चतुर्धा लक्ष्यते भेदो वृत्त्या लक्षणरूपया
१४ एतावानेव संख्यातो ब्रह्मणः सगुणस्य ह संनिवेशो मया प्रोक्तो यः कालः पंचविंशकः १५ प्रभावं पौरुषं प्राहुः
कालमेके यतो भयं अहंकारविमूढस्य कर्त्तुः प्रकृतिमीयुषः १६

लक्षण रूपा वृत्ति करि यह चार प्रकार को भेद लखीये है १४ यह सगुण ब्रह्म को रचना विशेष जो मैं कह्यो सो ई तत्त्व जिन नें
गिनो है और पचीसमो काल सो उ प्रकृती को अवस्था विशेष है १५ कोई एक ईश्वर को जो भाव ताही को काल कहै है जाका
ले है अहंकार करि मूढ प्रकृति आसक्त कर्ता पुरुष ताहि ताको भय तो है १६

पुरुषको आत्मा दर्शन जो ज्ञान ताहि मोक्षके अर्थ कहे हैं हृदयकी गांठि काटिवेवारो ताहि मैं तेरे आगे वर्णन करतहूं २ आत्मा अनादि पुरुष है निर्गुण प्रकृतीतें परे है इंद्रियन में प्रतिलोम जाकी स्फुर्णा करि विश्वप्रकाशित सो वह आत्मा यदृच्छा करि प्राप्त भई जो दैवी यगुणमयी सूक्ष्म प्रकृती ताहि लीला करि प्राप्त होत भयो ४ जो वह प्रकृति गुणन करि विचित्र प्रजान को रचे है ओर प्रजान के आवर्ण करवेवारी ताहि देषि कैं यह पुरुष आत्मा अपने स्वरूप को भूलत भयो ५ ऐसे प्रकृति

ज्ञाननिश्रेयसार्थाय पुरुषस्यात्मदर्शनं यदाहुर्वर्णये तत्ते हृदयग्रंथीभेदनं २ अनादिरात्मा पुरुषः निर्गुणः प्रकृतेः परः प्रत्यक्धामा स्वयंज्योति र्विश्वं येन समन्वितं ३ स एष प्रकृतीं सूक्ष्मां दैवीं गुणमयीं विभु यदृच्छयैवोपगतामभ्यपद्यत लीलया ४ गुणैर्विचित्राः सृजतीं सरूपा प्रकृतिं प्रजाः विलोक्य मुमुहे सद्यः स इह ज्ञानगूहया ५ एवं पराभिध्यानेन कर्तृत्वं प्रकृतेः पुमान् कर्मसु क्रियमाणेषु गुणैरात्मनि मन्यते ६ तदस्य संसृतिर्बंधः पारतंत्र्यं च तत्कृतं भवत्यकर्तुरीशस्य साक्षिणो निर्वृतात्मनः ७ कार्यकारणकर्तृत्वे कारणं प्रकृतिं विदुः भोक्तृत्वे सुखदुःखानां पुरुषं प्रकृतेः परं ८ देवहूतिरुवाच: प्रकृतेः पुरुषस्यापि लक्षणं पुरुषोत्तमा ब्रूहि कारणयोर

के अभ्यास करि पुरुष को कर्तृत्व दे प्रकृती के गुण कर्म करे हैं पर यह पुरुष आपै मैं मानैं हैं ६ प्रकृती ईश्वर साक्षी आनंद स्वात्मक जीव ताको प्रकृत गुणनी संसार बांधे हैं ओर तत कृत परतंत्रतें ७ कार्य शरीर कारण इंद्री वर्ग कर्तृत्व देवता वर्ग ताको कारण प्रकृती कहे हैं ओर सुख दुःखन के भोगवेमें अहंकार द्वारा प्रकृती पुरुष तिनको कारण कहे हैं ८ या विश्व को स्थूल सूक्ष्म कार्य जिनको स्वरूप ऐसे कारण जो प्रकृती पुरुष तिनको लक्षण हे पुरुषोत्तम मेरे आगे कहो ६

सर्वतोमुखमैं मानोहिजेअनन्यभक्तिकरभजेहै तिनैमैसंसारतेपारलगाउंहं ४० सबप्राणीनकोआत्माप्रधानपु
र्षईश्वरमैं भगवान तामोबिना संसारकोतीव्रभयनिवृतिनहीहोतहैं मेरेहीभयतेयहपवनचलेहै मेरेईभयतेसूर्य
तपैहै इंद्रवर्षैहै अग्निजरावेहै मेरेईभयतेमृत्युविचरेहै ज्ञानवैराग्ययुक्तजोभक्तियोगताकरि अपनेकल्याण:

द्विसृज्यसर्वानन्यांश्चमामेवंविश्वतोमुखं भजंतनन्ययाभक्त्यातान्मृत्योरतिपारये ४० नान्यत्रमद्भगव
तःप्रधानपुरुषेश्वरात् आत्मनःसर्वभूतानांभयंतीव्रंनिवर्तते ४१ मद्भयाद्वातिवातोयंसूर्यस्तपतिम
द्भयात् वर्षतींद्रोदहत्यग्निर्मृत्युश्चरतिमद्भयात ४२ ज्ञानवैराग्ययुक्तेनभक्तियोगेनयोगिनः क्षेमाय
पादमूलंमेप्रविशंत्यकुतोभयं ४३ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेपंचविंशोध्यायः २५ अथ
ातेसंप्रवक्ष्यामितत्वानांलक्षणंपृथक् यद्विदित्वाविमुच्येतपुरुषःप्राकृतैर्गुणैः १

केलीयैं योगीअकुतोभयमेरेचरणारविंदतामैंप्रवेशकरेहैं ४३ यहलोकमेंपुरुषनकोकल्याणकोउपरएदईत
नोहीहैं जोतीव्रभक्तिकरमोमैंअर्पणकीयोमनस्थिरहोउ ४४ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेटीकापं
चविंशोध्याय २५ अबतेरेआगेतत्वनकोलक्षनन्यारेन्यारेकहुंहुं जायजानिपुरुषमायाकेगुणनकरिछुटिजाय

जोकोईमेरीसेवामेंरतहैं मेरेलीयेसवचेष्टाकरेहै परमभागवतपरस्परमिलकेचरित्रनकोगावेसुनेहैं तेभक्तसायुज्यमोक्ष
हुकोनहींचाहेंतोश्रोरकहाचाहेंगे ३४ तेसाधुरुचिरतैंश्राभूषणजामें प्रसन्नजिन्हमेंमुखारविंद श्ररुणनेत्र श्रेसेवरकेदेने
वारेरूपनकोदेखैहैं श्रोरमेरेरूपनिकरसहितस्पृहाकरवेलायकवाणीकहैहैं ३५ उदारविलासपूर्वकजिनमेंहासचित
वनमनोहरवोलिनितिनकरहरेहैंचित्तजिनके श्रोरतरीतेइंद्रीजिनकीऐसेमेरेभक्तनकेतोमुक्तकीइछानहींपरंतुभक्ती

नैकात्मतांमेस्पृहयंतकेचिन्मत्पादसेवाभिरतामदीहा येन्योन्यतोभागवताप्रसज्यसभाजयंतेममपौरुषाणि ३४
पश्यंतितेमेरुचिराण्यवसंतःप्रसन्नवक्त्रारुणलोचनानि रूपाणिदिव्यानिवरप्रदानिसाकंवाचंस्पृहणीयांवदंति
तैर्दर्शनीयावयवैरुदारविलासहासेक्षितवामसूक्तैः हृतात्मनोहृतप्राणांश्चभक्तिरनिछतोमेगतीमण्वींप्रयुंक्ते ३६
अथोविभूतिंममायाविनस्तामैश्वर्यमष्टांगमनुप्रवृत्तं श्रियंभागवतींवास्पृहयंतिभद्रांपरस्यमेतेश्नुवतेतुलोके ॥३७॥
नकर्हिचिन्मत्पराःशांतरूपेनंक्ष्यंतिनोमेनिमिषोलेढिहेतिः येषामहंप्रियआत्मासुतश्चसखागुरुःसुहृदोदैवमिष्टं ३८
इमंलोकंतथैवामुमात्मानमुभयायिनं आत्मानमनुयेचेहयेरायःपशवोगृहाः ३९

भक्तिहीउनकोमुक्तिदेहैं ३६ तापीछेभक्तभयेपैंमोहमायाविनकीविभूती श्रोरप्राप्तभयो श्रष्टांगऐश्वर्य श्रोरभगवतीलक्ष्मी
ताहिभक्तितोनहीचाहेहैं परंतुवैकुंठलोकमेंजोजायकेंभोगकरेहैं ३७ तेशांतिरूपजिनकोमेंहीप्रियआत्मा मेंहीपुत्रसखा
मेंहीगुरुसुहृदइष्टदेवसवनातेजिनकेमोसोंतेपरायणभक्तकवहुंनासकोनहीप्राप्तहोहैं कालहुंउनकूंनहींभक्षण
करैहैं ३८ यालोकतैसेईपरलोक श्रपनीश्रात्माश्रोरश्रात्मकेपीछेंजेपुत्रकलत्रादिकजेधनपशुघर श्रोरसवपरिग्रहको

देवहूतीपूछैहैं अहोकपिलतुह्मारे विषैउचितभक्तकोनसीहैं मेरेजोगपकोनसोकहोजाकरअनायासतुह्मारेमोक्षानंदकोप्राप्त होई २८ हेप्रभोनिर्वाणमोक्षकर्मयोगतुह्मारेप्रगटकरवेवारोजोकह्योसोकहोकितनेअंगहैं आपोगमेतत्वज्ञानयोहेसोयहवानवि शेषकरमेरेआगेकहौ जैसेमैंस्त्रीज्ञानितुह्मारेअनुग्रहतेयाद्दुर्बोधयोगकोसुखपूर्वकजानौ ३० हेविदुरजीऐसेश्रीकपिलदेवजीजामे देहकरप्रगटभयेमातामाकोप्रयोजनकरतत्वनकीजामेंगिनतीऐसेसांख्ययोगकोकहतभयेओरभक्तिकोजामेविस्तार ऐसेजो

असेवयायंप्रकृतेर्गुणानां ज्ञानेनवैराग्यविजृंभितेन योगेनमय्यर्पितयाचभक्त्यामांप्रत्यगात्मानमिहावरुंधे २७ देवहूतीरुवाचः काचित्त्वय्युचिताभक्तिःकीदृशीममगोचराः ययापदंतेनिर्वाणमंजसान्वाश्नवाअहं २८ योयोगो भगवद्बाणोनिर्वाणात्मंस्त्वयोदितं कीदृशःकतिचांगानियतस्तत्वावबोधनं २९ तदेतन्मेविजानीहीयथाहंमंदधीः हरे॥ सुखंबुध्येयदुर्बोधंयोषाभवदनुग्रहात् ३० मैत्रेयउवाचः विदित्वार्थंकपिलोमातुरित्थंजातस्नेहोयत्रतन्वा भिजातः तत्वाम्नायंयत्प्रवदंतिसांख्यंप्रोवाचवैभक्तिवितानयोगं ३१ श्रीभगवानुवाचः देवानांगुणलिंगानांमा नुश्रविककर्मणां सत्वएवैकमनसोवृत्तिस्वाभाविकीत्वया ३२ अनिमित्ताभागवतीभक्तिःसिद्धेर्गरीयसीजर त्याश्वयाकोशंनिगीर्णमनलोयथाः ३३ श्रीहरिः

गकोकहतभये ३१ वेदोक्तहैंकर्मजिनकेंऐसीजोपुरुषकीइंद्रीतिनकीहैमानसत्वमूर्तिभगवानविषेंऐकप्रभाव कीवृत्तिफलरहितसोसिद्धहूतेश्रेष्ठहैं ३२ अनिमित्तभागवतभक्तिकहियेंजोभक्तलिंगशरीरकोजरावेजैसेभुक्तअन्न कोजैसेजठराग्निजरावैहैं ३३

भा॰ त॰
७०
६४

भगवान अखिल आत्मा मैं करी जो भक्ति ता समान और कोइ प्रतिमैं कल्याणकारी मार्ग नहीं है १९ या जीव कौं संसारीन कौ जो संग ताहि
कवीश्वर अजर बंधन कहै हैं और जो सोई संग साधुन में करिये तौ खुलो भयो मोक्ष को द्वार है २० ते साधु कौन से हैं जो क्षमाशील है करुणा
स्वरूप करै हैं सब देह धारीन के सुहृद हैं शत्रु उनके कोउ नहीं साधुता हि जीनके भूषण ते साधु है २१ जो मैं अनन्य भाव कर दृढ जे भक्ति
करै हैं मेरे लीये त्यागे हैं सब कर्म जिनने त्यागे हैं स्वजन और बंधु जिनने २२ जो मेरी ई आश्रय राखै है मेरी उज्वल कथा नकौ कहै है
सुनैं है मो मैं जिनको चित्त तिनने नाना प्रकार के अध्यात्म अधिभूत अधिदैव ये ताप नहीं तपावै है २३ हे साध्वि ते ई साधु है सब संगन

न युज्यमानया भक्त्या भगवत्यखिलात्मनी सदृशोस्ति शिवाः पंथा योगिनां ब्रह्मसिद्धये १९ प्रसंगमजरं पाशमात्मनः
कवियो विदुः स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतं २० तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनां अजातशत्रवः शांता
साधवा साधुभूषणा २१ मय्यानन्येन भावेन भक्तिं कुर्वंति ये दृढां मत्कृते त्यक्तकर्माणस्त्यक्तस्वजनबांधवा २२ म
दाश्रयाः कथा मृष्टाः शृण्वंति कथयंति च तपंति विविधा स्तापा नैतान्मद्गतचेतसः २३ त एते साधवाः साध्वि सर्वसं
गविवर्जिताः संगस्तेष्वथ ते प्रार्थ्याः संगदोषहरा हि ते २४ सतां प्रसंगान्मम वीर्यसंविदो भवंति हृत्कर्णरसायना
कथा तज्जोषणाः दाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धा रति भक्तिरनुक्रमिष्यति २५ भक्त्या पुमान्जातविराग ऐंद्रियात् दृष्टा
श्रुतान्मद्रचनानुचिंतया चित्तस्य यत्तो ग्रहणे योगयुक्तो यतिष्यते ऋजुभिर्योगमार्गैः २६

कर रहित ते सब जन कौ प्रा
र्थना करबे कौ जोग्य हैं ते साधु संग दोष कौ हरिबे वारे हैं २४ साधुन के प्रसंग ते मेरे वीर्य जो है सम्यक ज्ञान जिनमें ऐसे हृदय कर्ण
कौ रसायन कथा होते हैं तिनको सेवन करे ते मोक्ष के मार्ग भगवान् विषै श्रद्धा भक्ति प्रीति ये क्रम ते होते हैं २५ भक्ति करि के जो मेरी ली
ला कौ चिंतवन ता करि के देखे सुने जे विषय तिनमें वैराग्य जाको भयो योग युक्त चित्त के ग्रहण में वे ऐसा साधु जो भक्तियोग है
मार्ग तिन कर मोक्ष प्राप्ति होइगो २६ प्रकृति के गुण को असेवन करि और वैराग्य कर वृद्धि ज्ञान करि और अभ्यास योग और मो मैं

अपनेभक्तनकीइछाकारिवेंऐसेभगवान्केकीर्तिनकरवेलायकजोकर्मकरेहैंतेमेरेआगेंकहौं ३ हेब्रौनकजैसेतुममोतिप्रेरेहौ ऐसे
हीविदुरजीनेआन्वीक्षकीविद्यामेंवेदव्यासकौसिष्यभगवान्मैत्रेयजूकोंप्रेर्यौं तवप्रसन्नहोयविदुरजीसोंबोले ४ पिताकर्दमजीके
वनकोंगएसंतेभगवान्कपिलदेवजीमाताकौप्रियकरवेकीइछाकरवातीविंदुसरोवरमेंरहतभए ५ सोअपनेपुत्रकपिलदेवजीतत्वमा
र्गकेपारदेखिवाइवेवारेकर्मरहिततिनसोंदेवहूतीयोंबोली ब्रह्माजीनेजोवातीहीतेरेगर्भमेंभगवान्प्रविष्टभए तावचनकोंस्मरणकरिवोली ६

यद्यद्विधत्तेभगवान्स्वछंदात्मात्ममायया तानिमेश्रद्दधानस्यकीर्तिन्यान्यनुकीर्तय ३ सूतउवाच: द्वैपायनसख
स्त्वेवंमैत्रेयोभगवांस्तथा प्राहेदंविदुरंप्रीतआन्वीक्षिक्यांप्रचोदितः ४ श्रीमैत्रेयउवाच: पितरिप्रस्थितेरण्यंमातुःप्रियचि
कीर्षया: तस्मिन्विंदुसरेवात्सीद्भगवान्कपिलःकिल: ५ तमासीनमकर्माणंतत्वमार्गाग्रदर्शनं स्वसुतंदेवहूत्याह
धातु:संस्मरतीवच ६ देवहूतिउवाच: निर्विण्णानितरांभूमन्नसदिंद्रियतर्षणात् येनसंभाव्यमानेनप्रपन्नांधंतमःप्रभो ७
तस्यत्वंतमसोंधस्यदुःपारस्याद्यपारगं सच्चक्षुर्जन्मनामंतेलब्धंमेत्वदनुग्रहात् ८ यआद्योभगवान्पुंसामीश्वरोवैभवान्कि
ला लोकस्यतमसांधस्यचक्षुःसूर्यइवोदितः ९ अथमेदेवसंमोहमपाक्रष्टुंत्वमर्हसि योवग्रहोहंममेतीत्येतस्मिन्योजि
तस्त्वया १०

हेभूमन्दुष्टोंईंद्रीयनकोजोविषयाभिलाष तातेमेंनिर्विण्णहूं याविषयविलासनमें अंधतमकौंप्राप्तिभयौं ७ सोअपारअंधतमका ध
केपारलगायवेवारेश्रेष्ठनेत्रऐसेतुमअनेकजन्मनके तुम्हारेहीअनुग्रहतेंमेंनेपायौहै ८ जोतुमसवकेआदिपुरुषनकेईश्वर
अज्ञानकरिअंधजोलोकताकोंचक्षुरूपसूर्यउदेभयौं ९ याहीतेंहेदेवहमारोमोहतुमदूरिकरिवेकोंजोग्यहौ जोमेंमेरीतेरीया
देहमेंतुमनेलगायेहै १०

जोकाजीकारस्नेतेपरै ब्रह्म तामैं मन लगावत जो उरागुनको आभास कर और स्वतौ सी निर्गुण एक भक्तिहीकर जो प्रत्यक्ष होत है ४३
अहंकाररहितममतारहितरहितनिर्द्वंद्वसर्वदर्शी स्वप्रकाशसे और शांत विषे परातिनते बुद्धिजाकी बडौ धीरप्रशांत है तरंगजाकी ऐसे स
मुद्रकी सी नाई वासुदेव भगवान सर्वज्ञ सवके आत्मा ता विषें केवल भक्तिभाव कर लगायो है चित्तजानें छूटौ तें अज्ञान जाकौ ४५
सवप्राणिन मैं स्थित भगवान आत्मा तायदेखत भयौ और सवप्राणी भगवान आत्मा मैं है ऐसे देखत भयौ ४६ इच्छाद्वेषकरि हीन

मनो ब्रह्मणि युंजानो यत्तत्सदसतः परं गुणावभासे विगुण एकभक्त्यानुभाविते ४३ निरहंकृतिर्निर्ममश्च निर्द्वंद्वः स
मदृक् स्वदृक् प्रत्यक्प्रशांतधीर्धीरः प्रशांतोर्मिरिवोदधिः ४४ वासुदेवे भगवति सर्वज्ञे प्रत्यगात्मनि परेण भक्तिभा
वेन लब्धात्मा मुक्तबंधनः ४५ आत्मानं सर्वभूतेषु भगवंतमवस्थितं अपश्यत्सर्वभूतानि भगवत्यपि चात्मनि ४६
इच्छाद्वेषविहीनेन सर्वत्र समचेतसा भगवद्भक्तियुक्तेन प्राप्ता भागवती गति ४७ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीय
स्कंधे नाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४ शौनक उवाच कपिलस्तत्त्वसंख्याता भगवानात्ममायया जातः स्वयमजः साक्षा
दात्मप्रज्ञप्तये नृणां १ न ह्यस्य वर्ष्मणः पुंसां वरिम्णः सर्वयोगिनां विश्रुतौ श्रुतदेवस्य भूरि तृप्यंति मेऽसवः २

सर्वत्र समान जाकौ चित्त भगवद्भक्तिकरि युक्त जो मन ईश्वर जीतानें भागवति गति पाई ४७ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीय
स्कंधे नाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४ शौनक पूछै है हे सूत कपिलदेवजी सांख्य के प्रवर्त्तक भगवान अजन्मा मनुष्यन के आत्मज्ञा
न देवे कै लीयें जन्म लेत भए १ सव पुरुषन में वडे सव योगीन में श्रेष्ठ ता भगवान कपिलदेवजी की कीर्ति सुनिवे में मेरी इंद्री वहुत
नहीं अघाये हैं २

वैदिक लोकन मे जो मैंने कह्यो सो लोकको प्रमाण ऐसो मैंने तुम सो जो कही तुम्हारे जन्म लेउंगो सो ई सफल करिबे कों मैं तुम्हारे जन्म लीयो ३५ या लोक में यह जो मेरो जन्म सो लिंग शरीर तै कोई छुटो चाहैं तिनको तत्वन के कहिवे लेलीये हैं और मुमुक्षुन को आत्मा दर्शन में संमत है लीये हैं यह जानि ३६ यह जो आत्म मार्ग सो बहुत काल करिकै नष्ट होइ गयो ताहि प्रवर्तित करिवे को यह देह मैंने धारण करी है यह जानिः ३७ मैंने आज्ञा दई सो तुम अब यथेष्ट जाउ और मो मे अर्पण किये जो कर्म सो ई भई विधाता करि दुर्जेय मृत्यु को जीतकरि मोक्ष के लीये मोहि भजन करि ३८

श्रीभगवानुवाचः मया प्रोक्तं हि लोकस्य प्रमाणं सत्यलौकिके अथाजनि मया तुभ्यं यदवोचमृतं मुने ३५ एतन्मे जन्म लोकेऽस्मिन्मुमुक्षूणां दुराशयात् प्रसंख्यानाय तत्त्वानां संमतायात्मदर्शने ३६ एष आत्मपथोऽव्यक्तो नष्टः कालेन भूयसा तं प्रवर्तयितुं देहमिमं विद्धि मया भृतं ३७ गच्छ काममया पृष्टो मयि संन्यस्तकर्मणा जित्वा सुदुर्जयं मृत्युममृतत्वाय मां भज ३८ मामात्मानं स्वयंज्योतिः सर्वभूतगुहाशयं आत्मन्येवात्मना वीक्ष्य विशोकोऽभयमृच्छसि ३९ मात्र आध्यात्मिकीं विद्यां शमनीं सर्वकर्मणां वितरिष्ये यया चासौ भयं चातितरिष्यति ४० श्रीमैत्रेय उवाचः एवं समुदितस्तेन कपिलेन प्रजापतिः दक्षिणीकृत्य तं प्रीतो वनमेव जगाम ह ४१ व्रतं स आस्थितो मौनमात्मैकशरणो मुनिः निःसंगो व्यचरत्क्षोणीमनग्निरनिकेतनः ४२

सब प्राणीन के हृदय के रहिवे वारो मैं आत्म स्वरूप प्रकाशनात्मक करि अपने पे विषे ही देखकर शोक रहित होई मोक्ष कौ प्राप्ति होहुगे ३९ सर्व कर्मन की सांति करिवे वारी अध्यात्म विद्या माता के अर्थ मैं कहूंगो जाकरि के यह मोक्ष कूं प्राप्ति होयगी ४० ऐसे जब कपिलदेवजी ने कह्यो तब प्रजापति कर्दमजी तिन कपिलदेवजी की प्रदक्षणा करि प्रसन्न होइ वन कों जात भए ४१ कर्दम जी मुनिन को व्रत अहिंसादि लक्षण तामै स्थित भये आत्मा विलक्षण एक जाको शरण निःसंग होई पृथ्वी में डोलत भये अग्नि सा ध्य कर्म रहित कुटी मठ रहित तहे ४२

अहो अश्चर्य है कों अपने पापन करि संसार में पतित भय करि जरत जे प्राणी तिन पै बहोत काल करि देवता प्रसन्न होते हैं २७ बहोत जन्मन में तपकर
जोग समाधि ता करि कै एकांत स्थान में यती या के चरणारविंद कौं देखिवे कौं जतन करते हैं २८ सोई तुम भगवान् हमारो अपराध न गनि कै
ग्रामीन जो हम तिन हमारे घरन में जनमे जो अपने जनौं पक्ष पोषिवे वारे हों २९ तुमने जो कही ती मैंने तेरो पुत्र होउंगो या वचन के सत्य
करिवे कौं और ज्ञान साधन से व्याख्या करिवे कौं मेरे घर में अवतीर्ण भए हो ३० ता भगवान् जे तिहारे अलौकिक चतुर्भुज आदि रूप स्वजनन
कौं अच्छे लगे हैं ते ही तुमारे अभिरूप हैं उन ही धारण करो हो ३१ विवेकीन करि तत्व जानवे के लीयें सदा वंदन करिवे कौं जोग्य हो ॥

अहो पापच्यमानानां निरये स्वैरमंगलैः कालेन भूयसा नूनं प्रसीदंतीह देवताः २७ बहुजन्म विपक्वेन सम्यग्योगसमा
धिना द्रष्टुं यतंते यतयः शून्यागारेषु यत्पदं २८ स एव भगवान् अद्य हेलनं न गणय्य नः गृहेषु जातो ग्राम्याणां यः स्वानां पक्ष
पोषणः २९ स्वीयं वाक्यमृतं कर्तुमवतीर्णोऽसि मे गृहे चिकीर्षुर्भगवान् ज्ञानं भक्तानां मानवर्धनः ३० तान्येव तेऽभिरूपा
णि रूपाणि भगवंस्तव यानि यानि च रोचंते स्वजनानामरूपिणः ३१ त्वां सूरिभिस्तत्वबुभुत्सयाद्धा सदाभिवादार्हणपाद
पीठं ऐश्वर्यवैराग्ययशोऽवबोधवीर्यश्रिया पूर्तमहं प्रपद्ये ३२ अथो परं प्रधानं पुरुषं महांतं कालं कविं त्रिवृतं लोक
पालं आत्मानुभूत्यानुगतप्रपंचं स्वच्छंदशक्तिं कपिलं प्रपद्ये ३३ आ स्माभिपृच्छेऽद्य पतिं प्रजानां त्वयावतीर्णर्ण उताप्तकामः
परिव्रजत्पदवीमास्थितोऽहं चरिष्ये त्वां हृदि युंजन् विशोकः ३४

चरण पीठ जाकौं ऐसे ऐश्वर्य वैराग्य ता करि परिपूर्ण जो तुम ता तुम्हारी मैं शरण हूं ३२ परमेश्वर पुरुष महतत्त्व रूप शक्ति के नि
यंता अधिष्ठाता महातत्व रूप अहंकार रूप लोकपाल आत्म अनिच्छा शक्ति करि आपुही मैं लीन होते हैं प्रपंच जा के स्वच्छंद है शक्ति जा की
ऐसे कपिलदेव जी तिहारी मैं शरण हूं ३३ अब प्रजान के पति जो तुम ता तुम्हें मैं पूछत हौं जो तुम्हारे जन्म करि मेरे सब ऋण छूटे अब
मैं संन्यासीन के मार्ग में स्थित होय तुम्हें हृदय में धरि शोक रहित होय विचरूंगो ३४

भा०स्क०
६६

ज्ञानविज्ञान को जोग करि कर्मनि की वासना उपारते हिरण्यवर्ण से केश जाके कमल से हैं नेत्र जाके पद्ममुद्रा युक्त हैं चरणकमल जाके
ऐसे भए हैं १७ हे मनुते रे गर्भ में मधु कैटभ के मारवे वारे भगवान प्रविष्ट भए हैं अविद्या से भए संसय जो हृदय की गांठि ताहि काटि कै पृथ्वी
में विचरेंगे १८ ये सिद्धि गणन के ईश्वर सांख्य व तन्त्र आचार्यन करि सन्मानित लोकन में कपिलदेव नाम कौं पावेंगे और तेरी कीर्ति बढावेंगे १९
जगत के कर्ता ब्रह्मा ते सो वो ले तब कर्दम जी कों विश्वास दे ऐसे कहि गए और सनकादिक नारद हंस कों संग लै हंस पै चढि कै सत्यलोक कौं जा
त भए मरीच्यादिकन के विवाह कौं लियें छोडि गए और ये नारदादिकन कों संग ले गये २० ब्रह्मा के गये से ते हे विदुर ब्रह्मा के प्रेरे

ज्ञानविज्ञानयोगेन कर्मणामुद्धरन् जटाः । हिरण्यकेशः पद्माक्षः पद्ममुद्रापदाम्बुजः । १७ एष मानवि ते गर्भं प्रविष्टः कैटभा
र्दनः । अविद्यासंशयग्रन्थिं छित्त्वा गां विचरिष्यति १८ अयं सिद्धगणाधीशः सांख्याचार्यैः सुसंमतः । लोके कपिल इत्याख्यां
गन्ता ते कीर्तिवर्धनः । १९ श्रीमैत्रेय उवाच । तावाश्वास्य जगत्स्रष्टा कुमारैः सहनारदः । हंसो हंसेन यानेन त्रिधामपरमं ययौ । २०
गते शतधृतौ क्षत्तः कर्दमस्तेन चोदितः । यथोदितं स्वदुहितॄः प्रादाद्विश्वसृजां ततः । २१ मरीचये कलां प्रादादनसूयामथा
त्रये श्रद्धामङ्गिरसेऽयच्छत्पुलस्त्याय हविर्भुवं २२ पुलहाय गतिं युक्तां क्रतवे च क्रियां सतीं ख्यातिं च भृगवेऽयच्छद्वसिष्ठायाप्यरुं
धतीं २३ अथर्वणेऽददाच्छान्तिं यया यज्ञो वितन्यते विप्रर्षभान्कृतोद्वाहान्सदारान्समलालयत् २४ ततस्त ऋषयः क्षत्तः
कृतदारा निमन्त्र्य तं प्रातिष्ठन्नन्दिमापन्नाः स्वं स्वमाश्रममण्डलं २५ स चावतीर्णं त्रियुगमाज्ञाय विबुधर्षभं विविक्त उपसं

कर्दम जे से ब्रह्मा ने कही ते से ही प्रजापतिन कों अपनी बेटी देत भयें २१ मरीच कों कला देत भये अत्रि कों अनसूया देत भए अंगिरा
कों श्रद्धा सी देत भए पुलस्त्य कों हविर्भू देत भये २२ पुलह कों अर्थ जोग गति ताहि देत भये क्रतु कों क्रिया भृगु कों ख्याति वसिष्ठ कों अ
रुन्धती जो है ताहि देत भयें २३ अथर्वा कों शान्ति देत भयें ऐसे ही ऋषि सहित ते ब्राह्मण तिन ने घर ही में राखि कों ही लालन करत भये २४ ती
न्हें ते ऋषि जिनने या ही ते दुर्लभ दे ऋषि कर्दम जी सों आज्ञा मांगि अपने अपने आश्रम मंडल कों जात भए २५ सो कर्दम भगवान विष्णु में है प्रव

देवतानै छोडे दिव्य पुष्प आकासतें गिरत भए सब दिसा प्रसन्न होत भई जल और मन जिनके प्रसन्न निर्मल होत भये ८ सरस्वती करिवे
पूरन वर कर्दमजी कौ स्थान ता मैं मरीच्यादिक ऋषिन कौ संग लै ब्रह्मा आवत भए ९ भगवान् परब्रह्म सत्वमूर्ति करि उत्पन्न भए हैं तत्वन
की संख्या कहिवे के लीये या बात कौं ब्रह्मा जानत हैं आये हैं १० विशुद्ध चित्त सौं कर्दमजी जो करिवे की इच्छा ताहि प्रसन्न इंद्रियों न करि
बड़ाई करत कर्दम सौं ब्रह्मा बोले ११ हे पुत्र तैनें मेरी पूजा भली करी जो निष्कपट होइ मान देत मेरो वचन मानत आदर सौं यह तास्य

येतु: सुमनसो दिव्या: खेचरैरपवर्जित: प्रसेदुश्च दिश: सर्वा अंभांसी च मनांसि च: ८ ततः कर्दमाश्रम पदं सरस्वत्या परि
श्रितं स्वयंभू: साकमृषिभिर्मरीच्यादिभिरभ्ययात् ९ भगवंतं परंब्रह्म सत्वेनांशेन शत्रुहन तत्वसंख्यानविज्ञप्त्यै
जातं विद्वानज: स्वराट् १० सभाजयन् विशुद्धेन चेतसा तच्चिकीर्षितं प्रहृष्यमानैरसुभि: कर्दमं चेदमभ्यधात् ११ ब्रह्मो
वाच: त्वया मेपचितिस्तात कल्पिता निर्व्यलीकत: यन्मे संजगृहे वाक्यं भगवान् मानद मानयन् १२ एतावत्येव शुश्रूषा
कार्या पितरि पुत्रकैः बाढमित्यनुमन्येत गौरवेण गुरोर्वच: १३ इमा दुहितर: सत्यस्तव वत्स सुमध्यमा: सर्गमेतं प्रभावै:
स्वैर्बृंहयिष्यंत्यनेकधा: १४ अतस्त्वमृषिमुख्येभ्यो यथाशीलं यथारुचि: आत्मजा परिदेह्यद्य विस्तृणीहि यशो भुवि: १५
वेदाहमाद्यं पुरुषमवतीर्णं स्वमायया: भूतानां शेवधिं देहं बिभ्राणं कपिलं मुने १६

करत भयो १२ पुत्रन करि पितान मैं इतनी ही सुश्रूषा करिवे कौं जोग्य है जो गौरव करि गुरन कौ वचन भलो ऐसें करि मानवो १३
हे वत्स यह तुम्हारी बेटी अपनी संतान करि या सृष्टि कौं अनेक प्रकार बढावेंगी १४ यातें तुम मरीच्यादिक जे ऋषि तिनकैं अर्थ यथा
शील यथा रुचि अब यह बेटी देउ और पृथ्वी मैं यश विस्तारो १५ और हे रिषि आदि पुरुष भगवान् अपनी माया करि अवतीर्ण
भये यह मैं जानत हूं प्राणीन कौ सब अभीष्ट जो देवे वारो कपिल देह कौ धारन करि अवतीर्ण भये हैं १६

भा॰त॰
६५

जो यतां कर्म धर्म के अर्थ नहीं न वैराग्य को जोग्य होते हैं न हरकी सेवा के अर्थ होते हैं सो जीवन ही मृतक है ५६ सो भगवान की माया
में ठगी हूं जो मुक्ति के देवे वारे तुम्हें पाप के बंधन ते छुटवे की इछा न करत भई ५७ ई तीन नीये हाविंशो अध्याय २३ ऐसे निर्वेद
की बातें कहत बडाई कर वे लायक जो मनु की बेटी ताम्रत कई नजी पहबोले हर ने जो कहीं ती मेरे ऐसे प्रसन्न करनमी तो तुम गोता
वानको स्मर णतो इसी ना पकरो १ हे राजपुत्री तेर्थ ति ग्रहन मैं भाग्यवती तेरो ऐसे तु मन में वेदमत कहे भगवान अक्षर तेरे गर्भ मे
जल दी आवेंगे २ तैने व्रत धारण करे हैं ते रो कल्याण होहु इद्रीजीत कर नियम कर तप द्रव्य न को दान श्रद्धा इन कर ईश्वर को भजन

नेह यत्कर्म धर्माय न विरागाय कल्पते न तीर्थपदसेवायै जीवन्नपि मृतो हि सः ५६ साहं भगवतो नूनं वंचिता
मायया दृढं यत्त्वां विमुक्तिदं प्राप्य न मुमुक्षेय बंधनात् ५७ [illegible] स्कंधे त्रि यशाने
त्रयोविंशोऽध्यायः २३ श्रीमैत्रेय उवाच: निर्वेदवादिनीमेवं मनोर्दुहितरं मुनिः दयालुः शालिनीमाह शुक्लाभिव्या
हृतस्मरन् १ ऋषिरुवाच। मा खिदो राजपुत्रीत्थमात्मानं प्रत्यनिंदिते भगवांस्तेऽक्षरो गर्भमदूरात्संप्रपत्स्यते २५
धृतव्रतासि भद्रं ते दमेन नियमेन च तपोद्रविणदानैश्च श्रद्धया चेश्वरं भज ३ सत्त्वयाराधितः शुक्लो वितन्वन्मामकं यशः
छेत्ता ते हृदयग्रंथीमौदर्यो ब्रह्मभावनः ४ श्रीमैत्रेय उवाच: देवहूत्यपि संदेशं गौरवेण प्रजापते सम्यक् श्रद्धाय पुरुषं
कूटस्थमभजद्गुरुं ५ तस्यां बहुतिथे काले भगवान्मधुसूदनः कार्दमं वीर्यमापन्नो जज्ञेऽग्निरिव दारुणि ६ अवा
दयंस्तदाकाशे वादित्राणि घनाघनाः गायंति तं स्म गंधर्वा नृत्यंत्यप्सरसो मुदा ७

न करि ३ सो तेने आराधन जाको कर्यो ऐसो भगवान् मेरो यश विस्तार तेरे पुत्र होई अंतःकार तेरो काटेगो ४ देवहूती भी प्रजाप
ति के वचन में गौरव कर भलीभांति विश्वास कर निर्विकार ओर र भग॰वान तिन को भजन करत भई ॥ ८ ॥ ५ ॥ ता पै देवहूती
दिन गए दे भगवान् मधुसूदन कर्दम जाके वीर्य में प्राप्त होई जन्म लेत भए जैसे काठ में अग्नि होते हैं ६ बर्षन जो मेघ ताते आकास में गा

आणाकारहितहोईवाइने देवहूतीनेकंन्यानोउपजाई तेसवमनोहरजिनकेअंग अरुणकमलकीसीजिनकेगंधऐसीभई ४८
तोवटीभई तवकर्दमजीसंन्यासलेकैजायवेलगे व्याकुलहृदयऊपरतैमुसक्याईकैवोली ४९ नीचेकोजाकोमुख ऐसीनखमा
णिकीहैसोभाजाकी ऐसेचरणकरिपृथ्वीकोखोदत आसनकोरोकिकै रोलैमनोहरवाणीकरवोलतभई ५० हेप्रभोजोतुम्हसो
प्रतिज्ञाकरी सोसवपूर्णकरी तथापिसरणआईजोमैं तामोकोअभयदेवेकोयोग्यहैं ५१ हेब्रह्मन् औरवेटीनकेसमानपति

अतिःसासुषुवेसद्योदेवहूतिःस्त्रियःप्रजाः सर्वाःस्ताश्चारुसर्वांग्योलोहितोत्पलगंधयः ४८ पतिंसाप्रव्रजिष्यंतं
तदालक्ष्योसतीवहि स्मयमानाविक्लवेनहृदयेनविदूयता ४९ लिखंत्यधोमुखीभूमींपदानखमणिश्रिया उ
वाचललितांवाचंनिरुध्याश्रुकलांशनैः ५० सर्वंतद्भगवानमह्यमुपोवाहप्रतिश्रुतं अथापिमेप्रपन्नायाअभ
यंदातुमर्हसि ५१ ब्रह्मनदुहितृभिस्तुभ्यंविमृग्याःपतयःसमाः कश्चित्स्यान्मेविशोकायत्वयिप्रव्रजितेवनं ५२
एतावतालंकालेनव्यतिक्रांतेनमेप्रभो इंद्रियार्थप्रसंगेनपरित्यक्तपरात्मनः ५३ इंद्रियार्थेसुषज्जंत्याप्रसंग
स्त्वयीमेकृतः अजानंत्यापरंभावं तथाप्यस्त्वभयायमे ५४ संगोयःसंसृतेर्हेतुरसत्सुविहितोधिया स
एवसाधुषुकृतोनिःसंगत्वायकल्पते ५५

ढूढवेकूंतुमयोग्यहौ औरतुमारेवनगयेपंमेरेशोकदूरकरवेकोकोउचहियै ५२ इतनेदिनविषयनकेप्रसंगक
रभूलीहैआत्माजानेतामोकोव्यतीतभयोजोवृथाकालताकरप्रणीभई ५३ विषयनमेंआसक्तजोमैं तामैंनेतु
मतत्ववेत्ताहौ ऐसेनजानेकेतुममेंप्रसंगकीयोहै अभयकेअर्थहीहोउ ५४ विनाजानेउजोदुष्टनकोसंगसोसंसा
रहैं सोईसंगजोसाधुनमेंविनाजानेंकरीयेंसोमोक्षकोजोगतोहै ५५

औरदर्पण मैं देवहूती अपने मुखकौं देखत भई जैसो रूप माला पहिरैं है निर्मल जामें वस्त्र मलिन रहित स्वस्तिमंगल जाकौं कियौ भैस्या
नने वो होत सनमान जाकौ कीयौ ३० उन सबौन ने उबटनौ करि प्रक्षालन जाकौ कीयौ फिर और स्नान जाकौ कीयौ सब आभरण
रभूषित भुजभुजकी जाकी ग्रीवा मैं चंद्रहार पहिरें बाजे है सोने के नूपुर जाके ३१ और नितंब मैं बांधी रसना करी ओढ़ दुकूल घरि आ बहुत रत्ननि
करि सोभित और बहोत जाको मोल ऐसो हार ओर कुंकुमादि लेपन करि विभूषित ३२ सुंदर जामें दंत सुंदर जामें भृकुटी ऐसे स्नेह करि
और रमनो हर स्निग्ध जामें कटाक्ष कमल के समान स्पर्धी करैं ऐसे नेत्र और नील अलक तिन करि जे शोभा मान है मुख जामें ऐसे अपने रूप

अथादर्शे स्वमात्मानं स्रग्विणं विरजोवरं विरजं कृतस्वस्त्ययनं कन्याभिर्बहुमानितं ३० स्नातं कृतशिरःस्नानं सर्वाभरणभूषितं
निष्कग्रीवं वलयिनं कूजत्काञ्चननूपुरं ३१ श्रोण्योरध्यस्तया काञ्च्या काञ्चन्या बहुरत्नया हारेण च महार्हेण रुचकेन च भूषितं ३२
सुदता सुभ्रुवा श्लक्ष्णस्निग्धापाङ्गेन चक्षुषा पद्मकोशस्पृधा नीलैरलकैश्च लसन्मुखं ३३ यदा सस्मार ऋषभमृषीणां दयितं पतिं
तत्र चास्ते सह स्त्रीभिर्यत्रास्ते स प्रजापतिः ३४ भर्तुः पुरस्तादात्मानं स्त्रीसहस्रवृतं तदा निशाम्य तद्योगगतिं संशयं
प्रत्यपद्यत ३५ स तां कृतमलस्नानां विभ्राजन्तीमपूर्ववत् आत्मनो बिभ्रतीं रूपं संवीतरुचिरस्तनीं ३६ विद्याधरीसहस्रेण से
व्यमानां सुवाससं जातभावो विमानं तदारोहयदमित्रहन् ३७ तस्मिन्नलुप्तमहिमा प्रिययानुरक्तो विद्याधरीभिरुपचीर्ण
वपुर्विमाने बभ्राज उत्कचकुमुद्गणवानपीच्यस्ताराभिरावृत इवोडुपतिर्नभःस्थः ३८

रूप देखत भर जब भावन मैं सोच अपने पति कौ जब स्मरण जब करयौ तब ही हजारन स्त्रीन सहित जहां वे प्रजापति है तहां जाइ स्थित
भई ३४ अपने पति के आगे हजारन स्त्रीन सहित आय कै पतिकी जो गयगति देखि तब उच्छाह कौ प्राप्त होत भई ३५ सो कर्दम जी नि
र्मल स्नान जाने कीयौ सुंदर अपूर्व अपने रूप धारण कर शोभा जाके स्तन ताय देखि कै प्रसन्न भए ३६ हजार विद्याधर जाको सेवन करैं
है सुंदर जाके वस्त्र ऐसी देवहूती देख प्रेमवश जी न के होत भयो ऐसे कर्दमजी है विदुर ता स्त्री कौ लै कै विमान मे चढत भए ३७ ता विमान मैं प्रत्य
क्ष जाकी महिमा प्यारी करि अनुरक्त विद्याधरिन सहित सब मोहते तेज कौ बहुत सोभा देत भयो विकसत है कुमुदगण जाते ऐसे प्रतिसुंदरता

ऐसेहर्षके॰मनिमसन्नचित्तकरनहीदेखेहैं नवतोसवप्राणीनकेहृदयकेज्ञानवेवारेकईमजीयहबोले २२ हेदर्पोकनी
याविंदुसरोवरमेंस्नानकरि याविमानपैआरूढहोई विंदुकोकीयातीर्थकोयेहैहे मनुष्यनकेमनोरथकोदेनवारो २३ ५
सोदेवहूतीपतिकोवचनसुनकेकमलसेजाकेनेत्रऐसीनवस्त्रनकोधारणकरेहैं वेणीभूतकेसनकोधारणकरेहैं सरो
वरमेंप्रवेशकरतभई २४ मैलकीकीचकरव्याप्तस्विरराजामेनेन ऐसेअंगकोधारणकरेहैं नवतोसरस्वतीकोस

इहप्राग्रहंनत्पसंनिंनानमीतेनचेतसा सर्वभूतासयाभिज्ञाप्रावोचत्कर्मम्स्वयं २२ निवज्ञास्मिन्हृदेभीरु
विमानमिदमारुह इदंशुक्लकृतंतीर्थमाशिषांमायकंनृणां २३ सानद्भर्तुसमादायवचःकुवलयेक्षणा सर
जंबिभ्रतीवासोवेणीभूतांश्चमूर्द्धजान २४ अंगंचमलिपंकेनसंछन्नंसवलस्तनं आविवेशसरस्वत्याःसरः
शिवजलासयं २५ सांतःसरसिवेश्मस्थाःशतानिदशकन्यका सर्वाकिसोरवयसोददर्शोत्पलगंधयाः २६ तां
दृष्टासहसोत्थायाप्रोचुःप्रांजलयस्त्रियाः वयंकर्मकरीस्तुभ्यंसाधनाकरवामकिं २७ स्नानेनतांमहार्हेणस्नापयि
त्वामनःस्विनीदुकूलेनिर्मलेनूत्नेददुरस्यैवमानदा २८ भूषणानिपराध्यानिवर्यांसिद्युवंतिचः अन्नंस
र्वगुणोपेतंपानंचैवामृतासवं २९

रोवरतामेंप्रवेशकरतभई २५ वोभितसरोवरतामेंएकघरतेस्थित हजारकंन्यातिनेंदेखतभई सुवेरीकिसोराजिन
कीअवस्था कमलसीजिनकीगंधऐंसीहैं २६ तादेवहूतीकोदेखकरहाथजोरस्त्रीयहबोली हमतेरीटहलनीहैं:
हमेंआज्ञादेहकहाकरे २७ तायदहमोलसुगंधतेलकरस्नानकरायनवीनवस्त्रदेतभई २८ वोहुतमोलकेआभू
षनदेवहूतीकोप्यारेकांतिमान औरसर्वगुणसंपन्नअन्नअमृतसोस्वाद असवसोमोदक ऐसोपानदेतभई २९

दिव्य सामिग्रीन करि युक्त सब काल में सुखदाई पट्टिका छोटी और पताका बडी तिन करि अलंकृत १४ विचित्र हैं पुष्प जिनमें मनो
हर गुंजार करे है भौंरा जिनमें ऐसी मालान करि शोभित दुकूल क्षौम कौशेय नाना वस्त्रन करि विराजत है १५ उपर उपर रचित
जो घर तिनमें न्यारे न्यारे जो पलिका सेया व्यजन आसन करि शोभित विमान है १६ जहां तहां रची जो नाना प्रकार की कारीगरी तिन करि
शोभित मरकत मणि की स्थली मूंगान की वेदी तिन करि शोभित १७ द्वार में मूंगान की देहरी हीरान के किवार तिन करि शोभित

दिव्योपस्करणोपेतं सर्वकालसुखावहं पट्टिकाभिः पताकाभिर्विचित्राभिरलंकृतं १४ स्रग्भिर्विचित्रमाल्याभिर्मं
जुसिंजत्षडंघ्रिभिः दुकूलक्षौमकौशेयैर्नानावस्त्रैर्विराजितं १५ उपर्युपरि विन्यस्तनिलयेषु पृथक्पृथक् क्षिप्तैः कशि
पुभिः कांतं पर्यंकव्यजनासनैः १६ तत्रतत्र विनिक्षिप्तनानाशिल्पोपशोभितं महामरकतस्थल्या जुष्टं विद्रुमवेदि
भिः द्वास्सु विद्रुमदेहल्या भातं वज्रकपाटवत् शिखरेष्विंद्रनीलेषु हेमकुंभैरधिश्रितं १८ चक्षुष्मत्पद्मरागाग्र्यै
र्वज्रभित्तिषु निर्मितैः जुष्टं विचित्रवैतानैर्महार्हैर्हेमतोरणैः १९ हंसपारावतव्रातैस्तत्र तत्र निकूजितं कृत्रि
मान्मन्यमानैः स्वानधिरुह्याधिरुह्य च २० विहारस्थानविश्रामसंवेशप्रांगणाजिरैः यथोपजोषं रचितैर्वि
स्मापनमिवात्मनः २१

प २

इंद्रनील मणिन की शिषर तिन पर सोने के कलसा तिन करि युक्त है १८ हीरान की भीत तिन पे रचे पद्मराग के श्रेष्ठ तिन
करि और हारन सहित सोने के तोरण तिन सहित सोभित १९ कृतिम जे हंस सारिका तिन के उपर बैठे उन्हें अपनी जाति के
मानि सान्वे जो हंस परेवान के समूह तिन करि कूंजत ऐसो विमान है २० क्रीडा स्थान सयन स्थल भोग गृह और प्रांगण औ
बाहिर को आंगन यथा योग्य रचे हैं तिन करि कर्दम जी के हू विस्मय उपजायवे वारो है २१

विश्वासकरमन कीपवित्रता गौरव करिजितेंद्रियताकरि शुश्रूषासों हृदमधुरवाणीकरिपतिकौसेवनकरतभई १ कामदंभद्वेषा लोभनिषिद्धआचरणमदइनसबकोंछोडिसावधानहोइ नित्यउद्यमहोइ प्रतितेजस्वीकर्दमजीकोप्रसन्नकरतभई ३ सो देवऋषीनमेश्रेष्ठकर्दमजी मनुकीबेटीदेवहूतीकों प्रारब्धसोंपतितातेंवडीकामनाचाहतहुतासोंयहबोले ४ बहु तकालजोपतिव्रतिकोमोतासोंकरकराजोदेवहूतीताप्रति कृपाकरिपीडितप्रेमसोंगद्गदवाणीकरियोंबोलतभए ५ हेमनुपुत्री

विश्रंभेणात्मशौचेन गौरवेण दमेन च शुश्रूषया सौहृदेन वाचा मधुरया च भो २ विसृज्य कामं दंभं च द्वेषं लोभमघं मदं अप्रमत्तोद्यता नित्यं तेजीयांसमतोषयत् ३ स वै देवर्षिवर्यस्तां मानवीं समनुव्रतां दैवाद्गरीयसः पत्युराशासानां महाशिषः ४ कालेन भूयसा क्षामां कर्शितां व्रतचर्यया प्रेमगद्गदया वाचा पीडितः कृपयाब्रवीत् ५ तुष्टो ऽहमद्य तव मानवि मानदायाः शुश्रूषया परमया परया च भक्त्या यो देहिनामयमतीव सुहृत्स्वदेहो नावेक्षितः समुचि तः क्षपितुं मदर्थे ६ ये मे स्वधर्मनिरतस्य तपःसमाधिविद्यात्मयोगविजिता भगवत्प्रसादाः तानेव ते मदनुसेवनया ऽवरुद्धान् दृष्टिं प्रपश्य वितराम्यभयानशोकान् ७ अन्ये पुनर्भगवतो भ्रुव उद्विजृंभविभ्रंशितार्थरचनाः किमुरुक्रम स्य सिद्धासि भुंक्ष्व विभवान्निजधर्मदोहान् दिव्यान्नरैर्दुरधिगान्नृपविक्रियाभिः ८

मानवी देवहूतीजोतू तातेरीसेवा करवडीभक्तिकरमेप्रसन्नभयों यहजोदेहधारीनकोंयहदेहअतिप्यारोहैं परंतुतेंनेंमेराधाकरिवेलायक यहदेहवरमेरेलि येतिनेंनहीकृपाकरडारीयातेमैप्रसन्नभयो ६ स्वधर्मनिष्ठजोमैंतामोकोंतपसमाधिउपासनाचितएनाम्यइनकरप्राप्तिभए भगवत्प्रसादीभोगतेमेरीसेवाकरतेंनेंसर्वनिर्मलयप्राकरवधाकारीहैं तातिनैतदेखिप्रत्यक्षविस्तारहुं ७ औरजोराजानके भोगहेंतोअतितुच्छहै भगवानकीभृकुटीदेखीकरवोताकरिभ्रष्टहैंअर्थरचनाजिनकीहेतोनकोगिनतीमेरे तातेंतसिद्धभईअपनेधर्म

दैवे लाई कर्दमजी कों वेटी देआया रषित होय चलती वार उनके ठाकर रहे भेतजा कों चित्त ऐसें मनु जानवर वेटी कों हृदय सों
लगाय विरह न सहि सक्यौं २४ वेटी को विरह न सहि सक्यो आंसू डारत है विंदु नेत्रन के नेजल नर देवत्स ऐसें कहि वेटी कौ शिखा नारि
भिजोवति भये २५ तव तौ मुनीन में श्रेष्ठ कर्दमजी तिनै पूछि करि आज्ञा मांगि अपने नर सहित रथ में बैठ अपने पुर कौं जात भए २६
ऋषीकुल्या कौ हित सो सरस्वती नाके दोऊ किनारे पेर रहत जो शांत ऋषि तिनके आश्रम की संपति देषत पुर कौं जात भए २७ प्रजा

प्रतां दुहितरं सम्राड् सदृक्षाय गतव्यथा उपगुह्य च बाहुभ्यां औत्कंठ्योन्मथिताशयः २४ अशक्नुवंस्तद्विरहं मुंचन्
वाष्पकलां मुहुः आसिंचदम्ब वत्सेति नेत्रोदैर्दुहितुः शिखाः २५ आमंत्र्य तं मुनिवरमनुज्ञातः सहानुगः प्रतस्थे रथ
मारुह्य सभार्यः स्वपुरं नृपः २६ उभयोर्ऋषिकुल्यायाः सरस्वत्याः सुरोधसोः ऋषीणामुपशांतानां पश्यन्नाश्रम
संपदः २७ तमायांतमभिप्रेत्य ब्रह्मावर्तात्प्रजापतिं गीतसंस्तुतिवादित्रैः प्रत्युदीयुः प्रहर्षिताः २८ वर्हिष्मती नाम
पुरी सर्वसंपत्समन्विता न्यपतन्यत्र रोमाणि यज्ञस्यांगं विधुन्वतः २९ कुशाः काशास्त एवासन् शश्वद्धरितवर्चसः
ऋषयो यैः पराभाव्य यज्ञघ्नान्यज्ञमीजिरे ३० कुशकाशमयं वर्हिरास्तीर्य भगवान्मनुः अयजद्यज्ञपुरुषं लब्धा

पति मनु कों आयें जानि प्रजा प्रसन्न होइ कें गीत स्तुति वादित्रन कर आगे लेवे कों जात भये २८ वर्हिष्मती नाम नगरी सर्व
संपतिन करि कें युक्त जामें वाराह जी नें जव अंग फटकारे यों तव उनके रोम गिरे वे ई कुशा होत भये २९ हरित जिनकी कांति ऐसें
कुशा होत भए जिन कुशान करि यज्ञ के विघ्न करिवे वारे राक्षसन कौं पराभव करि ऋषीश्वर हरि कौ यजन करत भए ३० कुशकास
मय कुशासन विछाय के स्वायंभू मनु परम पुरुष कों पूजत भये जिन की कृपा सों पृथ्वी कौ राज्य पायो है ३१

सोहे वांछनीयान मै श्रेष्ठ मैया हि श्रद्धा कर लायो हुं तुम या हि अंगीकार करौं गृहस्थाश्रम के कर्म विषें हम सब प्रकार तुमारे अनुरूप हैं १० स्व
मे: सिद्ध प्राप्त भयो जो काम ताको नाही करिवौ मुक्तिसंग्रह कोन तीन नहीं दिखाइ देहै तौ काम प्राप्ति को तो कैसे नाही करवो वने ११ जो उ
घम को अनादर करै कृपणता सो ठोर ठोर मांगत्ति फिरै वाको यस नष्ट होय जाय और अपमान करि मारण हु जाम रहै १३ सो मैं तुमे
तुमे विवाह के लीये उद्यत रहों ऐसे सुनी है याते तुम सावधि ब्रह्मचारी मेरी दई कंन्या को ग्रहण करो १४ तव कर्दमजी बोले। निश्चय यह मेरी

यदा तु भवतः शील श्रुत रूप वयो गुणान् अशृणोन्नारदादेषा त्वय्यासीत्कृतनिश्चया १० तत्प्रतीच्छ द्विजा
ग्र्येमां श्रद्धयोपहृतां मया सर्वात्मनानुरूपां ते गृहमेधिषु कर्मसु ११ उद्यतस्य हि कामस्य प्रतिवादो न शस्यते अ
पि निर्मुक्तसंगस्य कामरक्तस्य किं पुन ॥१२॥ य उद्यतमनादृत्य कीनाशमभियाचते क्षीयते तद्यशः स्फीतं मानश्चा
वज्ञया हतः १३ अहं त्वाशृणवं विद्वन्विवाहार्थं समुद्यतं अतस्त्वमुपकुर्वाणः प्रत्तां प्रतिगृहाण मे १४ ऋषिरुवाच:
बाढमुद्वोढुकामोहमप्रत्ता च तवात्मजा आवयोरनुरूपोसावाद्यो वैवाहिको विधिः १५ कामः स भूयान्नरदेव
तेस्याः पुत्र्याः समाम्नायविधौ प्रतीतः क एव ते तनयां नाद्रियेत स्वयैव कांत्या क्षिपतीमिव श्रियं १६

विवाह की कामना है और अवताई तेने हू यह पुत्री काहू कों न दई हमारे तुम्हारे अनुरूप यह विवाह की विधि पहिली ही है:
अवताई कोऊ विवाह भयो नहीं १५ हे राजा नृदेव विधि में करी जो तेरी बेटी की कामना सो पूरी होउ और तेरी बेटी कों
कौन आदर न देइ जो अपनी अंग की कांति करि लक्ष्मी का हि कन की शोभा ताही तिरस्कार करै है १६

ब्रह्मा तुमकौ अपने मुखतें सृजत भयौ जो तुम वेद मय तप विद्या योग विषें अलंपट नहीं हैं २ तातें हमारे ब्राह्मणके रक्षा करिवे
केलीयें भगवान भुजाननतें हमें सृजत भए ब्रह्मा तो भगवान कौ हृदय है और क्षत्री अंग कहीये हैं ३ यातें परस्पर ब्राह्मण क्षत्रीकी र
क्षा करै हैं क्षत्री ब्राह्मणकी रक्षा करें हैं ऐसे कार्य कारणात्मक ईश्वर देव भगवान सोई दोऊनकी रक्षा करें हैं ४ तुम्हारी दया
तें मेरो संसय कटि गयौ जो तुम या पृथ्वीकी रक्षा करो चाहत जो मैं तामें रागे प्रसन्न होई सुंदर धर्म कहत भए ५ जाते चित्त
वसन नहीं करै ताकौ इदर्श तुमनें दै सो यह वडो मंगल भयो और तुम्हारी चरणरेणु मैंने सिरकरस्परस करी यह वडो ही मंगल

मनुरुवाच॰ ब्रह्मासृजत्स्वमुखतो युष्मानात्मपरीप्सया छंदोमयस्तपोविद्यायोगयुक्तानलंपटान् २ तत्त्राण
यासृजच्चास्मान्दोःसहस्रात्सहस्रपात् हृदयं तस्य हि ब्रह्म क्षत्रमंगं प्रचक्षते ३ अतो ह्यन्योन्यमात्मानं ब्रह्म क्षत्रं च
चरक्षतः रक्षति स्माव्ययो देवः स यः सदसदात्मकः ४ तव संदर्शनादेव छिन्ना मे सर्वसंशयाः यत्स्वयं भगवान्प्री
त्या धर्ममाह रिरक्षिषोः ५ दृष्टो मे भगवान्दृष्टो दुर्दर्शो योऽकृतात्मनां दिष्ट्या पादरजः स्पृष्टं शीर्ष्णा मे भवतः शिवं ६ दिष्ट्या
त्वयानुशिष्टोऽहं कृतश्चानुग्रहो महान् अपावृतैः कर्णरंध्रैर्जुष्टा दिष्ट्योशतीर्गिरः ७ स भवान्दुहितृस्नेहपरिक्लिष्टात्म
नो मम श्रोतुमर्हसि दीनस्य श्रावितं कृपया मुने ८ प्रियव्रतोत्तानपादोः स्वसेयं दुहिता मम अन्विच्छति पतिं युक्तं वयःशील

भयो ६ और तुमने मोकौ सिक्षा दई यह वडो मंगल भयो मेरे उपर अनुग्रह कीयो और खुले जो कर्णरंध्र तिन कर तुम्हारी मनोहर वा
णी सेवन कर यह वडो मंगल भयो ७ वेटीके स्नेह करि परिक्लिष्ट है चित्त जाको मता हेन जो मैं ता मेरी विना कृपा कर कौन सुनवे को
योग्य हैं ८ प्रियव्रत उत्तानपादकी वहिन मेरी वेटी अवस्था शील गुणादि कर अपने लायक पति चाहै हैं सो जव तें तुम्हारे
शील विद्या रूप अवस्था गुण तिनें नारद ते यह सुनत भए तव तें तुमही में याने निश्चय कीयौ है॥ ९

जोतुम समय समय में सूर्य चंद्रमा अग्नि इंद्र पवन यम धर्म कुवेर सबको सबको रूपनको धारण करो हो ऐसो प्रभु हरि रू
पनको धारण करो हो ऐसे प्रभु हर रूप तुम तातुम्हें नमस्कार है ५१ जयनशील मणिगणन में धरे प्रकाश करे है प्रचंड धनुष
जामें ऐसे रथमें बैठि तुम मर्यादा राखवेको डोलो हो ५२ अपने सैन्य के चरणन करि इन पृथ्वीमंडलको हिलावन वडी सेना
कोलीयें सूर्यकी सी नाई जो तुम न डोलो तो मर्यादा नहीं रहै ५३ ऐसे जो तुम न डोलो तो हरिको रचो वर्णाश्रमकी मर्यादा वो

योर्केदग्नीद्रवायूनां यमधर्मप्रचेतसां रूपाणि स्थान आधत्से तस्मै शुक्लाय ते नमः ५१ न यदा रथमास्थाय जैत्रं
मणिगणार्पितं विस्फूर्जच्चंडकोदंडो रथेन त्रासयन्नघान् ५२ स्वसैन्यचरणक्षुण्णं वेपयन्मंडलं भुवः विकर्षन्
बृहतीं सेनां पर्यटस्यंशुमानिव: तदैव सेतवः सर्वे वर्णाश्रमनिबंधनाः भगवद्रचिता राजन् भिद्येरन्बत द
स्युभिः ५४ अधर्मश्च समेधेत लोलुपैर्व्यंकुशैर्नृभिः शयाने त्वयि लोकोयं दस्युग्रस्तो विनंक्ष्यति ५५ अथापि पृच्छे त्वां वीर य
दर्थं त्वमिहागतः तद्वयं निर्व्यलीकेन प्रतिपद्यामहे हृदा ५६ इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे एकविंशोऽ
ध्यायः २१ श्रीमैत्रेय उवाचः एवमाविष्कृताशेषगुणकर्मोदयो मुनिं सव्रीड इव तं सम्राट् उपारतमुवाच ह: १

रनकरि ह्वै जाय याते तुम रक्षाके लीये डोलो हो ५४ जो तुम न जो न डोलो तो लोलुप निरंकुश मनुष्यनि कर अधर्म वढ जाई
और तुम्हारो निश्चिंत भये पे चोरनकर ग्रस्त यह लोक नष्ट होय जाई ५५ लोकनके रक्षाके लीये तुम्हारो डोलवौ है सो हुं ह
म तुम पूछे हैं कहां काजि को तुम यहां आए हो जो तुम प्रसन्न ह्वै यकर अंगीकार करोगे ५६ इति तृतीये एकविंशो अध्यायः २१
ऐसे प्रघट कर्यो है तमो गुण कर्मको उदय जाको ऐसे स्वायंभू मनु लज्जीले से होई कर्दम मुनि सो वोले १ श्रीरामजी

भा०त० ५८

कारंडव। काढुर। हंस। कुरर जलमुरगाई सारस। राजहंस। सारस। सारदूल। सुरैगो। मांजार। चकवा। चकोरादिनकर मनोहर जैसे होई तिनतें सेकु जिमहै ३६ जैसे हिरण। बाराह। सिंह। गौ। हाथी। लंगूर। वानर। मृगादिनकर वेष्टित तें ४६ बुहती थन मेंश्रेष्ठ कर्दमजी को आश्रम तामें आयंमनु अनुगति सहित प्रवेश करकें अग्निहोत्र जिनने कीयौ जैसे कर्दम मुनि को देखत भयो ४५ तवयें बहुत दिन कियौ जो योग तप ताकर दे दिप्यमान है शरीर तिनको और हरिने स्नेह करा दृष्ट करजोरें देखे और हरि के पास सो ई भयो अमृत ताके श्रवण कर बहुत वर्ष के नहीं ४६ ऊंचे जिनके कांधे कमलपत्र

कारंडवैः प्लवैर्हंसैः कुररैर्जलकुक्कुटैः सारसैश्चक्रवाकैश्च चकोरैर्वल्गुकूजितं ४३ तथैव हरिणैः क्रोडैः श्वाविद्गवयकुंजरैः गोपुच्छैर्हरिभिर्मर्कैर्नकुलैर्नाभिभिर्वृतं ४४ प्रविश्य तत्तीर्थवरमादिराजः सहात्मजः ददर्श मुनिमासीनं तस्मिन्हुतहुताशनं ४५ विद्योतमानं वपुषा तपस्युग्रयुजा चिरं नातिक्षामं भगवतः स्निग्धापांगावलोकनात् ४६ तद्व्याहृतामृतकलापीयूषश्रवणेन चः प्रांशुं पद्मपलाशाक्षं जटिलं चीरवाससं ४७ उपसंसृत्य मलिनं यथार्हणमसंस्कृतं अथोटजमुपायातं नृदेवं प्रणतं पुरः सपर्यया पर्यगृह्णात्प्रतिनंद्यानुरूपया ४८ गृहीतार्हणमासीनं संयतं प्रीणयन्मुनिः स्मरन्भगवदादेशमित्याह श्लक्ष्णया गिरा ४९ नूनं चंक्रमणं देव सतां संरक्षणाय ते वधाय चासतां यस्त्वं हरेः शक्तिर्हि पालिनी ५०

जाके नेत्र जटाधारी चीर वस्त्र धारण करै हैं मलिन जैसे मार्जन जाको न कर्यो ऐसे मणि मलीन होतें तामात मलिन सो तिनके निकट जाय कें स्वायंभुव मनु देखत भयो ४७ याके अनंतर मन्वंतर मनु परणसाला के समीप आई आगे नम्र भयो ताहि आसिष कर अभिनंदन करि के अनुरूप जाकर मतिगर ण करत भये ४८ पूजा वाने ग्रहण करी और वैठ्यो ऐसो मनु ताहि सुंदर वाणी कर प्रसन्न करत हरि की आज्ञा को स्मरण करि कर्दमजी यह वोले ४९ हे देव तुमारो जो भ्रमण सो साधुन की रक्षा के लिये और दुष्टन के मारवे के लिये जो तुम हर की पालन शक्ति हो

याके अनंतर भगवानकेपधारेपीछे कर्दमऋषि उहीबिंदुसरोवरमैं वासमेकोपड़ोदेखत विराजत भऐं ३४ स्वायंभू मनुजो
हैसोसुनतरीसाजकेरथमैंबैठकें स्त्रीसहितप्रेम मार्गके कर्दमके आश्रममैं आऐं ३५ हे विदुरजा दिनकी भगवान् कहिआ
ऐंहैं ताही दिन पांतिकर्दमुनके आश्रममैं स्वायंभूमुनिआवतभऐं ३६ जास्थानमैं कर्दमपैकृपाकरणाभिजोतांह तिन
केनेत्रननें कृपाकर आंसूकीबुंद गिरीसोई बिंदुसरोवरभयो सोवुहबिंदुसरोवरसरस्वतीकरव्याप्त पवित्रशीतल अमृतसो

अथसंप्रस्थितेशुक्ले कर्दमोभगवानृषिः आस्तेस्म बिंदुसरसि तंकालंप्रतिपालयन् ३४ मनुस्यंदनमास्थायाः शा
तकौंभंपरिछदं आरोप्यस्वां दुहितरंसभार्यः पर्यटन्महीं ३५ तस्मिन्सुधन्वन्नहनि भगवान्यत्समादिशत्
उपायादाश्रमपदं मुनेःशांतव्रतस्यतत् ३६ यस्मिन्भगवतोनेत्रान्न्यपतन्नश्रुबिंदवः कृपयासंपरीतस्यप
न्नोर्पितयाभृशं ३७ तद्वैबिंदुसरोनामसरस्वत्यापरिप्लुतं पुण्यंशिवामृतजलं महर्षिगणसेवितं ३८ पुण्यद्रु
मलताजालैः कूजत्पुण्यमृगद्विजैः सर्वर्तुफलपुष्पाढ्यं वनराजिश्रियान्वितं ३९ मत्तद्विजगणैर्घुष्टं मत्त
भ्रमरविभ्रमं मत्तबर्हिनटाटोपमाह्वयन्मत्तकोकिलं ४० कदंबचंपकाशोककरंजबकुलासनैः कुंदमंदारकुटजैः

जाकोजलवड़ेऋषिनकरसेवितहै ३८ पवित्रवृक्षलताजालकरयुक्त हे राजन् तहां भ्रमरगुंजारकरैहैं मानोद्विज
गणवेदपढ़ैहैं अनेकपक्षीतिनकरयुक्त औरसबऋतुनमैंफलपुष्पकर आछवनपंक्तिकीसोभाकरयुक्तहै ३९
फिरवुहआश्रमकैसोहै तपस्वीनकेसमूहनकरसेवितभ्रमरणकोहै विलासजामैं मतवारेमयूरजतांनाचैहै
मतवारीकोकिलाजतांवोलैहै ४० कदंमचंपाअसोक करंज मौरसरी ऐसेअनेककुंदमंदार कुड़ावकुल आमकेवृ

कटहर बड़हर

भा.म.
५७

सुंदरनीलमणिसेकटाक्ष सुंदरजाकीअवस्था शीलगुणनकरयुक्त पतिकोचाहेहैं सोतुमअनुरूपतीतुमारे अर्थ देहिंगो २६
इतनेवर्षनतेजामेंतुमारे हृदयलग्यौहैं सोवहराजकंन्याअत्यसतुमारोसेवनकरैगी २७ जोतुमारोधारणकरोवीर्य ताहि
नोप्रकारउपजावेगी नेकंन्यानोहोयगी तिनतुम्हारेकंन्यानमेंऋषिश्वर औरपुत्रउपजामेंगे २८ औरतुमनोभलीभांतिमेरी
आज्ञामेंथितहोऊ सुद्धसत्वमेरीआमोअर्पणकरैहैं सबकर्मफलजामें अैसेमोहिप्रामतोहुगे २९ याइअवस्थाकाजीवनमें

मू.श्लो.

आत्मजामसितापांगीयवशीलगुणान्वितां मृगयंतिपतिंदास्यात्यनुरूपापतेप्रभो २६ समाहितंतेहृदयंय
त्रेमान्परिवत्सरायन् सात्वांब्रह्मन्नृपवधूः काममाशुभजिष्यति २७ यातआत्माभृतंवीर्यं नवधाप्रसविष्यति
वीर्येत्वदीयेऋषयआधास्यंतंजसात्मनः २८ त्वंचसम्यगनुष्ठायनिदेशंमेउशत्तमः। मयितीर्थीकृताशेषक्रिया
र्थोमांप्रपत्स्यसे २९ कृत्वादयांचजीवेषुदत्वाचाभयमात्मवान् मय्यात्मानंसहजगत्द्रक्ष्यस्यात्मनिचा
पिमां ३० सहाहंस्वांशकलयात्वद्वीर्येणमहामुने तवक्षेत्रेदेवहूत्यांप्रणेष्येतत्वसंहितां ३१ श्रीमैत्रेयउवाच एवं
तमनुभाष्याथभगवान्प्रत्यगक्षजः जगाम बिंदुसरसः सरस्वत्यापरिश्रितात् ३२ निरीक्षतस्तस्यययाः
शेषसिद्धेश्वराभिष्टुतसिद्धमार्गः आकर्णयन्पत्ररथेंद्रपक्षैरुच्चारितंस्तोममुदीर्णसाम ३३

दयाकर औरसन्यासकर सबकोअभयदे मोमेंजगतसहितदेषोगे ३० सोमैंहूअपनीअंसकलाकरतुम्हारोवीर्यमेंहो
देवहूतीमैं अवतीर्णहोतत्वसंहिताकरूंगो ३१ अैसे भगवानहरकर्दमजीकोकहि सरस्वतीकरव्याप्तजोबिंदुसरो
वरतातेजातभये ३२ संपूर्णसिद्धेश्वरनिकरस्तुतिकरवेकूंयोग्यहैं सिद्धमार्गजाको अैसेभगवानगरुडकेपक्ष

नकउच्चारितजोवेदसामसमुदायतिनेंसुनावतजातभये

और हम भक्तन के अर्थकरनवारे नको माया करि विषयसुखविस्तारो यह हमको इच्छित नहीं मोहूं हमारे आगे तकौं अर्थ तो
उ जो तुम भक्तन कौ देदीप्यमान जामें तुलसी ऐसी मूर्ति करि लखियें हो तातें तुम्हारे दर्शन भुक्ति मुक्ति के भक्तन को देवे वारो है अर्थ
ज्ञान कर उपरति रहे हैं कर्मफलको भोग जामें अपनी माया करि रच्यो है लोकतंत्र जानें नमस्कार जो मेरे हे चरनकमल जाको अल्प
काम का मपुरुष कामनावर्षन वारे जो तुम तारि मैं प्रणाम करत हूं २१ ऐसे निष्कपट तें ईश्वर कहें भक्ति नैं अस्तुति करी तब गरुड़ के ऊ

नैतद्बताधीशपदं तवेप्सितं यन्मायया नस्तनुषे भूतसूक्ष्मं अनुग्रहायास्त्वपि यर्हि मायया लसत्तुलस्या तनुवा विलक्षि
तः १९ तं त्वानुभूत्योपरतक्रियार्थं स्वमायया वर्तितलोकतंत्रं नमाम्यभीक्ष्णं नमनीयपादसरोजमल्पीयसि कामवर्षं
२० मैत्रेय उवाच: इत्यव्यलीकं प्रणुतोऽब्जनाभस्तमाबभाषे वचसामृतेन सुपर्णपक्षोपरि रोचमानः प्रेमस्मितो
द्वीक्षणविभ्रमद्भ्रूः २१ श्रीभगवानुवाच: विदित्वा तव चैत्यं मे पुरैव समयोजि तत् यदर्थमात्मनियमैस्त्व
यैवाहं समर्चितः २२ न वै जातु मृषैव स्यात् प्रजाध्यक्ष मदर्हणं भवद्विधेष्वतितरां मयि संगृभितात्मनां २३
प्रजापतिसुतः सम्राड् मनुर्विख्यातमंगलः ब्रह्मावर्तं योऽधिवसन् शास्ति सप्तार्णवां मही २४ स चेह विप्र राजर्षि
र्महिष्या शतरूपया आयास्यति दिदृक्षुस्त्वां परमो धर्मकोविदः २५

परविराजमान प्रेमस्तुति जो चितवन ताकर भ्रमत
है भ्रकुटी जाकी ऐसे भगवान अमृत सरीषी वाणी कर बोले २१ और कर्दम तुम्हारो अभिप्राय जान कर वा बात यह पहिलें
ही बनाय राषी है जब बात के लीएं तुम ने नियमन कर मेरी पूजा करी है २२ हे प्रजाध्यक्ष मेरी पूजा में तुमारे ती तोतें और
रतुम सारकें मोमे चित लगायो तिनको मनोरथ अतिसय कर झूठो नहीं होत है २३ ब्रह्मा के बेटा स्वायंभू मनु जो वंश
वर्तमें रहें समस्त समुद्र वनी पृथ्वी को पालन करें हैं २४ हे विप्र सो वत राजा नमें श्रेष्ठ सतरूपा रानी कर सहित धर्म में नि

ना.र. जे तुम्हारी मायाकरि बुद्धहीन हैं ते संसारसमुद्रमें नौकासरीखे जो तुम्हारे चरणारविंद ता हि विषयसुखसे वे लीयेसे वन न रहें :

५६ परंतु महाराज आपदयाल हो उनसे काममको विषयसुख दीदे हो जो विषय नरकहूमें मिले है तुच्छ है १४ अक्षररूप जो ब्रह्म तात । प्रजर :

मेहेन मजा को अधिकमाससहित तेरह मासन्हामें आरा तीनसें साठदिन ते ई जामें पर्व छ ऋतुजामें नेमि अनंत लक्षण वलजा

मेंवत्र तीनचातुर्मासजामें आधारभूत वलय कराल जाको वेग ऐसो कालचक्र सबजगतको आरवलकाटतहो रहे है परंतु :

ये माययाते हृतमेधसस्त्वत्पादारविंदं भवसिंधुपोतं उपासते काममलाय तेषां रसीकामान्निरयेऽपि ये स्युः १३ तथा

सत्वां तं परिवोढुकामाः समानशीलं गतमेधि धेनुं उपेपिबाम्मूलनरोषमत्वं दुरासयाः कामदुघा प्रियस्य १४ प्रजा

पतेस्त्वं वचसा धीशातं स्यालोकः किलाऽयं काम हतोऽनुबद्धः अहं च लोकाऽनुगतो वलाभिर्वलिं चसंत्कालीतिमि वयेतु

भ्यं १५ लोकोमलोकाऽनुगतान्यपश्यहित्वा खिलास्ते चरणातपत्रं परस्परं त्वद्गुणवादसीधुपीयूषनिर्यापित दे ह

धर्माः १६ न ते जरस्ताऽभिराष्टुते षां त्रयो स्थार त्रिपातं षष्ठपर्वा घटो यन्ने तच्छदियन्त्रिणणभि कराल स्रोतो न गरच्छि

द्यधावत् १७ एकं स्वयं सन्नुजगत्ःसिसृक्षयाद्वितीयया त्मन्नधियोगमायया सृजस्य दः पाभि पुनर्ग्रसिष्यसेय

थोर्णनाभिर्भगवन्स्वशक्तिभिः १८

हरिभक्तनकी आरवल नहीं दरे है १५ पर लोकोको तुम रक्षा ही है फिर दूसरी अपनी जोगमायाना करि अंगीकार करी जो श

क्ति तिन करि या विश्वको सृजो हो पालन करो हो फिर ग्रास लेते हो जैसे मकरी जाल कोसृजत है जैसे फिर निगललेते १८

तव भगवान् प्रसन्न भए सतयुग मैं सो वेदन की रीत वेदब्रह्मरूप वपु धारण कर कर्दम जी कों दर्शन देत भये ८ निर्मल जिनके
नेत्र कमलन की माला पहरैं हैं सचिक्कण औरु नील अलकन समूह तें मुखकमल पै जाकैं निर्मल वस्त्र जाके ९ किरीट मुकट पहरैं
कुंडल पहरें संख चक्र गदा पद्म धारण करैं श्वेत कमल की हैं गेंद जापै प्रेम कौ आनंद जिनकें मंद मुसक्यान सहित चितवन जाकी १०

तावत्प्रसन्नो भगवान् पुष्कराक्षः कृते युगे दर्शयामास तं क्षत्तः शाब्दं ब्रह्म दधद्वपुः ८ स तं विरजमर्काभं सितपद्मो
त्पलस्रजं स्निग्धनीलालकव्रातवक्त्राब्जं विरजोम्बरं किरीटिनं कुण्डलिनं शंखचक्रगदाधरं श्वेतोत्पलक्रीडनकं मनः
स्पर्शस्मितेक्षणं १० विन्यस्तचरणाम्भोजमंसदेशे गरुत्मतः दृष्ट्वा खेऽवस्थितं वक्षःश्रियं कौस्तुभकन्धरं ११ जात
हर्षोऽपतन्मूर्ध्ना क्षितौ लब्धमनोरथः गीर्भिस्त्वभ्यगृणात्प्रीतिस्वभावात्मा कृताञ्जलिः १२ ऋषिरुवाच जुष्टं बताद्या
ऽखिलसत्त्वराशेः सांसिद्ध्यमक्ष्णोस्तव दर्शनान्नः यद्दर्शनं जन्मभिरीड्य सद्भिराशासते योगिनो रूढयोगाः १३

गरुड के कंधा पै राखे हैं चरण कमल जानें आकाश मैं स्थित वक्षस्थल मैं जाके लक्ष्मी कौस्तुभ मणि जाके ग्रीवा मै ११
ऐसे हरि कों दर्शन कर कर्दम जी कों बड़ो आनंद भयो मनोरथ पूरण भयो हरि के आगे दंडवत कीनी पृथ्वी मैं गिर पड़े और
हरि मै प्रीत ही है स्वभाव तें सिद्ध धर्म जाको ऐसो जाको मन हाथ जोड स्तुति वाणीन करि हरि की अस्तुति करत भयो १२ अखिल सत्व
राशि जो तुम ना तुम्हारे दर्शन हू वो मानो आंखिन को फल पायो तुम्हारे दर्शन अनेक जन्मन करि गूढ योगी चाहे हैं १३

भा.त्र.
५५

विदुरजी कहे हैं मैत्रेयजी स्वायंभू मनु कौ वंस बडाई करवे लायक सो कहौ जामे मैथुन करि प्रजा बढन भई १ और प्रियव्रत उत्तान पाद दोउ स्वायंभू मनुके बेटा जो सुधर्म और सप्त द्वीपवती पृथ्वी की रक्षा करत भए सो कहौ २ और स्वायंभू मनु की बेटी देवहूती जा कौ नाम सो कहौ है म प्रजापति कर्दम ने स्त्री करी ३ सो येह महायोगी कर्दम देवहूती तामें कर्दमजी ने कितने पुत्र उपजाये यह मेरे सुनवे कूं है मेरे आगे कहौ ४ और रुचि ब्रह्मन दक्ष चि प्रजापति और ब्रह्मा के बेटा हते ते आकूती प्रसूती देवहूती इन स्त्रीयन कूं पाई के कितने

विदुरउवाचः स्वायंभुवस्यचमनोर्वंसपरमसंमतः कथतांभगवन्यत्रमैथुनेनैधिरेप्रजा १ प्रियव्रतोत्तानपादौसु तौस्वायंभुवस्यवै यथाधर्मंजुगुपतुःसप्तद्वीपवतीमही २ तस्यवैदुहिताब्रह्मन्देवहूतीतिविश्रुता पत्नीप्रजापते रुक्ताकर्दमस्यत्वयानघ ३ तस्यांसवैमहायोगीयुक्तायांयोगलक्षणैः ससर्जकतधावीर्यंतन्मेशुश्रूषवेवद ४ रु चिर्योभगवान्ब्रह्मन्दक्षोवाब्रह्मणःसुतः यथाससर्जभूतानिलब्ध्वाभार्यांचमानवी ५ मैत्रेयउवाचः प्रजाःसृ जेतिभगवान्कर्दमोब्रह्मणोदितः सरस्वत्यांतपस्तेपेसहस्राणांसमादशः ६ ततःसमाधियुक्तेनक्रियायोगेनकर्दे मः संप्रपेदेहरिंभक्त्याप्रपन्नवरदाशुषं ७

प्राणीनकूं उपजावत भए सो मेरे आगे कहौ ५ प्रजान को सृजो ऐसे ब्रह्मा ने कर्दमजी को आज्ञा ने करी तब सरस्वती पे जाय द स हजार वर्ष ताई तप करत भयो ६ तब तो समाधि युक्त जो उपासना करिके कर्दम जी भक्ति करि भक्तन के वरदाता हरि की सरण लेत भए ७

एकसमय वडो है विस्तार जाको ऐसी देह करि सोवे है जव सृष्टन वढी तव वहुत चिंता करि क्रोध ते वा सरीर को छोड़त भये ४६

सो ब्रह्मा एक दिन आपको कृतकृत्य मानत मन करि के लोकनि के पालन हारे जो तुम मनुष्य तिनें सृजत भये तिन मनुष्यन को

पौरुष आपनो रहिवे कों स्थान जो पुरुष आकार देह ता प्रसृजत भये जो ब्रह्मा ने पहिलें वनायें ते तेइ मनुष्य देखवे ब्रह्मा की वड़ाई

सकिंनरान् किंपुरुषान् प्रत्यात्म्येनासृजत्प्रभुः मानयन्नात्मनात्मानं मात्माभासं विलोकयन् ४६ ते तु तज्जगृहू रूपं त्यक्तं यत्परमेष्ठिना मिथुनी भूय गायंत तमेवोषसि कर्मभिः ४७ देहेन वै भोगवता शयानो वहु चिंतया सर्गे नुपचिते क्रोधादुत्ससर्ज ह तद्वपुः ४८ येहीयंतामुतः केशा अहयस्तेंग जज्ञिरे सर्पाः प्रसर्पतः क्रूरा नागा भोगोरु कंधराः ४८ स आत्मानं मन्यमानं कृतकृत्यमिवात्मभूः तदा मनूंससर्जांते मनसा लोकभावनान् ५० तेभ्यः सोस्सृजत्स्वीयं पुरं पुरुषमात्मवान् तान् दृष्ट्वा ये पुरा सृष्टाः प्रशशंसुः प्रजापतिं ५१ अहो एतज्जगत्स्रष्टः सुकृतं वत ते कृतं प्रतिष्ठिताः क्रियायस्मिन् साकमन्नमदामहे ५२ तपसा विद्यया युक्तो योगेन सुसमाधिना ऋषीन् ऋषिर्हृषीकेशः ससर्जाभिमताः प्रजा ५३ तेभ्यश्चैकैकशः स्वस्य देहस्यांशमदादजः यत्तत्समाधियोगर्द्धि तपो विद्या विरक्तिमत् ५४ इति श्रीभागवते तृतीय

करत भए ५० अहो ब्रह्मन एप तुमने जो यह मनुष्य सरीर वनायो सो वड़ो सुकृत कियो जामे अग्निहोत्रादि क्रिया स्थित है

यामें हम सव तिनि भोगादि भक्षण करे है ५१ तप विद्या योग समाधि करि युक्त ब्रह्मा ऋषीनि कों सृजत भए जो वांछित प्रजा है

तिन ऋषिन के अर्थ ब्रह्मा आपनो एक देह को अंस देत भयो समाधियोग ऐश्वर्य तप विद्या योग विरक्त युक्त देह है ५४ इति श्री

आवकरगंभीरजैसोहोय तैसे आपुतें आपुही अप्राणसो दर्पकरि ब्रह्मा गंधर्वअप्सरानके गणनिनेंसृजतभयो ३८ सोचंद्रमारूपकांतिकामिनी प्रतिप्यारी मूर्तिताय विश्वावसुनिमें छांडिया ऐसे गंधर्वग्रहणकरतभये ३९ ब्रह्मा अपुनेआलस्यकरनग्न औरकेशनिनकेखुले ऐसे भूतपिसाचनकोसृजकरि नेत्रमूदलेतभयो ४० तबब्रह्माने छोड़ेजो जृंभणा तिनेंनिद्राजाकोसृजकरिभूतप्रेतग्रहणकरतभये जानिंद्राकरिप्राणीनमें इंद्रीयनकी शिथिलता औरअशुद्धिता इदेखै ४१ एकबारब्रह्मा अपनीबलवान् ईश्वरूपजानि साध्यगणपितृगणनिसृजतभयो ४२ अपनोसृजवेवारोजो वह

प्रस्स्वप्नावगांनीरंजिघ्रंत्यात्मानमात्मना कांत्यासससर्जभगवान्गंधर्वाप्सरसांगणान् ३८ विप्रासर्जतनुंतांवे ज्योत्स्नांकांतिमतीप्रियां तरावचाददुःप्रीत्या विश्वावसुपुरोगमाः ३९ दृष्ट्वाभूतपिसाचांश्चभगवानात्मतंद्रिणा दिग्वाससोमुक्तकेशान्वीक्ष्यामीलयद्दृशौ ४० जगृहुस्तद्विसृष्टांतांजृंभणाख्यांतनुंप्रभो निंद्रामिंद्रियविक्लेदोयपाभूतेषुदृश्यते ४१ येनोच्छिष्टान्धर्षयंतीतमुन्मादंप्रचक्षते ऊर्जस्वंतंमन्यमानंआत्मानंभगवानजः ४२ साध्यान्गणान्पितृगणान्परोक्षेणासृजत्प्रभुः तेआत्मसर्गंतंकायंपितरप्रतिपेदिरे साध्येभ्यश्चपितृभ्यश्चकवयोयद्वितन्वते ४४ सिद्धान्विद्याधरांश्चैवतिरोधानेनसोऽसृजत् तेभ्योऽददत्तमात्मानमंतर्धानाख्यमद्भुतं ४५

ब्रह्माकौसरीरताय पितरप्राप्तहोतभये जेकर्ममेंनिपुणतेसाध्यपितरनको अर्थ हव्यकव्यरूपजोवह देवताहोतताय विस्तारैहे ४३ तिहारोंहितबद्रसिद्ध औरविद्याधर औरतिनेंसृजतभये औरतिनकोअंतरध्यानरूपदेतभयो ४४ सोब्रह्मा प्रतिबिंबकरि किंनर औरकिंपुरुषनिनेंसृजतभयो प्रतिबिंबदेखकर अपनपैको आपहीजरससमानकरतभये ४५

लज्जाकरि अपनेको छिपावैहैं वस्त्रते अंचलकरि नीलकमलगनजोजाके समहतेहे विदुरजाय तौमानिकै सवअसुरमो
हवैकौं प्राप्तिभए ३१ आश्चर्य देखोहो यावौंकै सोंदरूपहैं नवीन माकी अवस्थाहै हमतो याकी कामना करे हैं और यह हमारेवी
चमें निषामसीजाहैं ३२ ऐसे स्त्रीकी प्रकृतिवह संध्या नायतहैता करत सत्कारकरि विश्वासते कुबुद्धियो इछतभए ३३
हे रंभोरू तू कौन है कौनकी है कहांतेरो कहां आयवै है तेरोंजो रूपसोई भयो मोल्य वहवेच वेजोजोग्य ताकोमोल दैवेंजोग्य समर्थ
भाग्यहीनहमतिनैतु मवाधा है हो ३४ हे अवले तू जोऊ तोहु हमैतेरी जानकुलहे प्रश्नकरतहा हमैतेरो दर्शनभयो यहवड़ोमं

अहोरूपमहोधैर्यमहोरस्यानवंवयः मध्यकामायमानानां मकामेवविसर्पति ३१ वितर्कयंतोवरुधातोसंध्यांप्रम
दाकृतिं अभिसंभाव्यविश्रंभात्पर्यपृछन्कुमेधसः ३२ कासिकस्यासिरंभोरुकोवार्थस्तत्रभामिनि रूपद्रविण
पण्येनदुर्भगान्नोविवाधसे ३३ यावाकाचित्वमवले दिष्ट्यासंदर्शनंतव उत्सनोषीक्षमाणानां कंदुकक्रीडया
मनः ३४ नैकत्रतेजयतिशालिनपादपद्मं घ्नंत्यामुहुःकरतलेनपतत्पतंगं मध्यंविषीदतिवृहत्स्तनभारभीतं
शांतेवदृष्टिरमलासुशिखासमूहः ३५ इतिसायंतनीं संध्यामसुराप्रमदायतीं प्रलोभयंतीं जगृहुः मत्वामूढधियः

गलभयों जोतू गेंदसोंक्रीडाकरैहैं सो हमारो देखि देखिके मन भुरावे हैं ३५ हे मुग्धा कर वे लायक वारंवार हस्तकरकै
गेंदकोंकुरावत जो तू जाते रो चरणकमल एकठौर न ठहरे हैं अनेकवित्ना सनमें वरते हैं औं वडे वडे स्तनन केभार कर
कटि जो है ना यजोत्त चलावैहैं और सोभनतेरो शिखासमूह हैं और दृष्टि तेरी निर्मल मंद मंद विकुरचले हैं ३६ ऐसें
वहुसायंकालकों संध्यास्त्रीकों सों आचरन करैहै भुलावैहैं तातिमूढ कुवुद्धी स्त्री मानकरिके ग्रहण करत भए ३७

ब्रह्माजी भगवान तें स्त्रीलंपट जे असुर तिनें सृजत भयौ तें लंपट ताकरि ब्रह्माजी सों मैथुन कों दौरे २३ वे निरलज्ज असुर दौरे ब्रह्माके पीछें मैथुन कौं दौरे तब ब्रह्माजी क्रोध ओ भयसहित वेगि करि उनते भाजत भयौ २४ सो ब्रह्मा वरकौ देनवारो सरणागतिन कौ दुःखदूरिकरिवेवारो भक्तनके अनुग्रह के अर्थ तैसोई जनरूप स्वरूप दर्शन जाकौ तिनें प्रार्थना करत भयौ २५ हे परमात्मा मेरी रक्षा करौ मैं तुम्हारी आज्ञासों यह प्रजा सृजी है ते यह प्रजा पापी है मोही सों मैथुन करिवे कौ दौरे है २६ लोक क्लेश पाय हैं तिनके एक तुमही क्लेश नासिक हौ और जे तुम्हारे चरणन कों आश्रित नही तिनकौ क्लेश देवेवारे तुमही हौ असें दुःख देही चित्त जिनकौ

ततो हसन् स भगवानसुरैर्निरपत्रपे अन्वीयमानस्तरसा क्रुधो भीतः परापतत्॥ २३ स उपव्रज्य वरदं प्रपन्नार्तिहरं हरिं अनुग्रहाय भक्तानामनुरूपात्मदर्शनं २४ पाहि मां परमात्मंस्ते प्रेषणेनासृजं प्रजाः ता इमा यभितुं पापा उपाक्रामन्ति मां प्रभो २५ त्वमेकः किल लोकानां क्लिष्टानां क्लेशनाशनः त्वमेकः क्लेशदस्तेषामनासन्नपदां तव॥ २६ सोवधार्यास्य कार्पण्यं विविक्ताध्यात्मदर्शनः विमुञ्चात्मतनुं घोरामित्युक्तो विमुमोच ह २७ तां क्वणच्चरणाम्भोजां मद विह्वललोचनां कांचीकलापविलसद्दुकूलछन्नरोधसं २८ अन्योन्यश्लेषयोत्तुंगनिरंतरपयोधरां सुनासां सुद्विजां स्निग्धहासलीलावलोकनां २९ गूहंतीं व्रीडयात्मानं नीलालकवरूथिनीं उपलभ्यासुरा धर्म सर्वे संमुमुहुः

ऐसे भगवान ब्रह्माजी दीन ताकी स्तुतिन कें यह बोले और जो यह सरीर है ताय छोडि दे तब यह स्तुतिनके ब्रह्मा वा सरीर कों छोडित भयौ २८ वह संध्या होय गई पायन में नूपुर जाकें बजें मदकर कें विह्वल जाके नेत्र छुद्रघंटिका के सहित करि दीप्यमान जो वस्त्र ता करि ढक्यौ है कटि तट जाकौ २८ परस्पर मिलिवे ऊंचे कठोर मानो कंदर्प कौ षिलोना है ऐसे निरंतर रहैं स्तन जाकें सुंदर जाकी नासिका सुंदर जाके दंत औंर स्त्री मुग्ध हास लीला पूर्वक जाकी चितवनि ३०

टीका दू८ १ निरात्मक ब्रह्मांड समुद्र कैं जल मैं वास करत भयो हजार वर्ष तक ताम्है ईश्वर प्रवेश करत भयो १

तैसब न्यारे न्यारे ब्रह्मांड कौं बनायवे कौं समर्थ है तातें दैवयोग करि मिलिके याप्रकार रूप ब्रह्मांड कौं सृजत भए १५ ता हरि की नाभ में कमल भयौं हजार सूर्य तुल्य तेज जाकौ ऐसौ सब जीव समूहन कौ स्थान जा कमल मै साक्षात् ब्रह्मा होत भयौ सो भ गवान् जल भीतर सोवे सो ब्रह्मा प्रवेश करत भयौ तब ब्रह्मा पहले की सी नाई लोकन की रचना करत भयौ १७ पहिलें तो ब्रह्मा अपनी छाया करि पंच पर्व की अविद्या कूं सृजत भयौं तामिस्र अंधतामिस्र तम मोह महातम ऐसें पंच प्रकार की सृजी १८ ब्रह्मा तो ब्रह्मा कौं शरीर तमोमय ताहि अभिनंदन करत छोड देत भयौं सो वह रात्रि भई क्षुधा प्यास की जामें उत्पत्ति ता पर यक्ष राक्षस ग्रहण

तानि चैकैकशः स्रष्टुमसमर्थानि भौतिकं संहत्य दैवयोगेन हैममंडमवासृजन् १४ सोशयिष्टाब्धिसलिले आं डकोशो निरात्मकः साग्रं वै वर्षसाहस्रमन्ववात्सीत्तमीश्वरः १५ तस्य नाभेरभूत् पद्मं सहस्रार्कोरुदीधिति सर्व जीवनिकायौको यत्र स्वयमभूत्स्वराट् १६ सोनुविष्टो भगवता यः शेते सलिलाशये लोकसंस्थां यथापूर्वं नि र्ममे संस्थया स्वया १७ ससर्ज छाययाविद्यां पंचपर्वाणमग्रतः तामिस्रमंधतामिस्रं तमो मोहो महातमः १८ विससर्जात्मनः कायं नाभिनंदंस्तमोमयं जगृहुर्यक्षरक्षांसि रात्रिं क्षुत्तृट्समुद्भवं १९ क्षुत्तृड्भ्यामुपसृष्टास्ते तं जग्ध मभिदुद्रुवुः मा रक्षतैनं जक्षध्वमित्यूचुः क्षुत्तृडर्दिता २० देवस्तानाह संविग्नो मा मां जक्षत रक्षत अहो मे यक्षरक्षांसि प्रजा यूयं बभूविथ २१ देवताः प्रभया या या दीव्यन् प्रमुखतोऽसृजत् तेऽहार्षुर्देवयंतो विसृष्टां तां प्रभामहः २२ देवोदेवा न्जघनतः सृजति स्मातिलोलुपान् ते एनं लोलुपतया मैथुनायाभिपेदिरे २३

करत भए १९ ते यक्ष राक्षस क्षुधा प्यास के मारे ब्रह्मा ही ही कौ खायवे कौं दौरे या की रक्षा मति करौ या य खल लेउ ऐसें क्षुधा प्यास कर कहत भये २० तब उद्विग्न होय ब्रह्मा उन सौं बोल्यौ मोहि खावौ मति मेरी रक्षा करौ मेरी तुम यक्ष राक्षस प्रजा हो २१ कांति करि देदीप्यमान ब्रह्मा प्रधान्य करि मुख तें जिन जिन देवतान कौं सृजत भयौ ते ते देवता ब्रह्मा ने छोडौ जो वह शरीर सो दिन होइ गयौ ताय श्री आकर ग्रहण करत भए २२

अ

नैमिषारण्य के रहिवे वारे ऋषिन्नें जब यह सूतजी सों पूछ्यौं तब यह मैत्रेयजी नें गायौं तब ऐसें सूत बोले अहो मुनीश्वरो सुनौ ७
अपनी माया करि वाराह मूर्ति तिनें धारण करी औ रहिरण्याक्ष कौं जिनें अवज्ञा करि मार्यो यह कथा सुनि विदुर आनंद जात भयौं ऐ
सें विदुर मैत्रेयजी सों यह बोलौं ८ अब प्रजापतिन कौ पति ब्रह्मा जिन की सृष्टि में प्रजापतिन कौ सृजि कैं कहा आरंभ करत भयो
क्रम मे आगें कहौ ९ जो मरीचि आदिक स्वायंभुव मनु ए ब्रह्मा की आज्ञा तें कैसें या जगत कौं उपजावत भए सो कहौ १० ये सृष्टि

एवमुग्रश्रवः पृष्ठ ऋषिभीर्नैमिषायनैः भगवत्यर्पिताध्यात्मास्तानाह श्रूयतामिति ७ सूत उवाच: हरेर्धृतक्रो
डतनोः स्वमायया निशम्य गोरुद्धरणं रसातलात् लीला हिरण्याक्षमवज्ञया हतं संजात हर्षो मुनिमाह भारतः ८
विदुर उवाच: प्रजापतिः पतिः सृष्ट्वा प्रजासर्गे प्रजापतीन् किमारभत मे ब्रह्मन् प्रब्रूह्यव्यक्तमार्गवित् ९ ये मरी
च्यादयो विप्रा यस्तु स्वायंभुवो मनुः ते वै ब्रह्मण आदेशात् कथमेतदभावयन् १० सद्वितीयाः किमसृजन् स्वतं
त्रा उत कर्मसु आहोस्वित्संहताः सर्व इदं स्म समकल्पयन् ११ मैत्रेय उवाच: दैवेन दुर्वितर्क्येण परेणानिमि
षेण च जातक्षोभाद्भगवतो महानासीद्गुणत्रयात् १२ रजःप्रधानान्महतस्त्रिलिंगो दैवचोदितात् जातः ससर्ज
भूतादिर्वियदादीनि पंचशः १३

सहित प्रजा सृजत भए अथवा स्वतंत्र भए अथवा सब इकट्ठे होइ जगत कौं रचत भए ११ दुर्वितर्क्य जो दैव सबकौं वही
काल रूप तातें क्षोभ जागौं भयौ ऐसो प्रधान तातें एक पुरुष होत भयौ ता पुरुष ते माया उपस्थि भई ता माया तें त्रिगुण ३
भए तिन गुणन तें विकार तें महतत्त्व भयो १२ रजोगुण है प्रधान जामें सो महत्तत्त्व दैव कौ प्रेरयौं तातें अहंकार भयौं सो अहंके
हमि सौ कैं पंच सत तत्त्वन कौं सृजत भयौं १३

मैत्रेय बोले हे विदुर १

परचरित्र महापवित्र है धनकौं देवेवारौ यसकौं वढायवेवारौ आयुकौं और आसिखनकौं स्थान है और युद्धमे प्राणईंद्रीयनकौं सूरताकौवढायवेवारो है और अंतमे नारायणही गति होहै ३८ इति श्री तृतीयस्कंधे येकोनविंशोध्याय: १९
सौनक पूछे है हेसूत तेरोमहर्षणाके पुत्र स्वायंभूमनु पृथ्वीस्थान पायकै अर्वाचीन प्राचीन कौं कौन उपायन करि सृजन करसो कहो १ और विदुरजी परमभागवत है कृष्णकोएकांत सुहृद जाने धृतराष्ट्रकै पुत्रन सहित विमुखजानके त्यागि दीयो २

यतेमहापुन्यमलंपवित्रं धन्यंयसस्यंपदमायुराशिषां प्राणेंद्रीयाणांयुधिशौर्यवर्द्धनंनारायणोंतेगतिरंगशृण्वतां ३८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे येकोनविंशोध्याय: १९ सौनकउवाच: महींप्रतिष्ठामध्यस्यसौते स्वायंभुवोमनु: कान्यन्वतिष्ठद्वाराणिमार्गायावरजन्मनां १ क्षत्तामहाभागवत: कृष्णस्यैकांतिक: सुहृत यस्तत्याजाग्रजंकृष्णे सापत्यमघवानिति २ द्वैपायनादनवरोमहीत्वेतस्यदेहज: सर्वात्मनाश्रिता कृष्णंतत्परांश्चाप्यनुव्रत: ३ किमन्वपृच्छन्मैत्रेयंविरजास्तीर्थसेवया उपगम्यकुशावर्तआसीनंतत्त्ववित्तमं ४ तयोसंवदतोस्सूत: प्रवृत्ताह्यमलाकथा आपोगंगाइवाघघ्नी हरे:पादांबुजाश्रया: ५ तान्नकीर्तयभद्रंतेकीर्तन्योदारकर्मण: रसज्ञाकोनुतृप्येतहरिलीलामृतंपिबत् ६

जो विदुर महिमामे वेदव्यासतें न्यून नही सो या प्रकार श्रीकृष्णकौ आश्रय और साधुनकौं अनुवर्ती है ३ बहुत दिन तीर्थसेवन करि निर्मल भयो सो हरद्वारमे जाय मैत्रेयजी वैठि सो तत्ववेत्तानमे श्रेष्ठ तिनैं और कहा पूछत भयो सो कहो ४ तिन दोन्‍नमे विदुरमैत्रेयमें गंगाजलकी सी नाई पापहरकरवे वारी निर्मल हरिकी कथा प्रवृत्ति होत भई ५ सो कहो कीर्तन करवे लायक उदारकीर्ति जाके जो भगवान् की कथा हमारे आगे कहो ऐसे रसज्ञन कौं रै जो हरिलीलामृत पीवतनसी अघाय जाय है ६

भा॰ त॰ ऐसैं असह्य जाकौ पराक्रम ऐसो हिरंण्याक्ष ताहि वाराहजी मारि करि ब्रह्मादिक देवतान नैं स्तुति जिन की करी सो अपनें
५१ धाम जामैं उत्साव ऐसैं अपने लोक कौं जात भए ३१ हे विदुर वाराहजी अवतार जामैं लीयौ ता हरि कौ चरित्र मैंनैं तेरे आगें जथा
जोग्य कह्यौ। जैसें युद्ध मैं वडे पराक्रमी हिरण्याक्ष कौं खिलौंना की सी नाईं मार डार्यौ ३२ सूतजी कहै हैं हे सौनक ऐसैं मैत्रेय
जी नैं कही जो वाराहजी की कथा ताहि सुनि कैं विदुर महाभागवत वडे आनंद कौं प्राप्ति होत भए ३३ और पुण्य स्लोक वडे यसी ले
साधन की कथा सुनिके आनंद होत है तो हूं श्रीवत्स कौ चिन्ह जाकें ता हरि की कथा सुनि सुनि कैं कौंन आनंद होइ ३४ जो भ

एवं हिरंण्याक्षमसह्यविक्रमं ससादयित्वा हरिरादिसूकरः जगाम लोकं स्वमखंडितोत्सवं समीडितः पुष्करवि
ष्टरादिभिः ३१ मया यथानूक्तमवादि ते हरेः कृतावतारस्य सुमित्र चेष्टितं यथा हिरंण्याक्ष उदारविक्रमो महा
मृधे क्रीडनवन्निराकृतः ३२ सूत उवाच इति कौषारवाख्यातामाश्रुत्य भगवत्कथां क्षत्तानंदं परं लेभे म
हाभागवतो द्विजा ३३ अन्येषां पुण्यश्लोकानामुद्दामयशसां सतां उपश्रुत्य भवेन्मोदः श्रीवत्सांकस्य किं पुनः
३४ यो गजेंद्रं झषग्रस्तं ध्यायंतं चरणांबुजं क्रोशंतीनां करेणूनां कृच्छ्रतोमोचयद्रुतं तं सुखाराध्यमृजुभिः
रनन्यशरणैर्नृभिः कृतज्ञः को न सेवेत दुराराध्यमसाधुभिः ३६ यो वै हिरंण्याक्षवधं महद्भुतं विक्रीडितं कारण
सूकरात्मनः शृणोति गायत्यनुमोदतेंजसा विमुच्यते ब्रह्मवधादपि द्विजाः ३७

गवान् गजराज ग्राह नैं हाथी पकर्यौं और हथिनी पुकार वे लगी तब जाय कैं ग्राह तैं छुडावत भए। ऐसैं भगवान् अनन्य नैं
शरणागत भक्तन कौं सुख करि आराधन कौं जोग्य असाधुन कौं दुराराध्य ताहि ऐसो कृतज्ञ कौंन जो न सेवन करै ३५
जो कोई हिरण्याक्ष वध मैं वडो अद्भुत वाराहजी कौ चरित्र ताहि सुनै गावै वा अनुमोदन करै सो ब्रह्म हत्या पाप तैं छूटि जाय और

ऐसे विश्वजित हरि नै अवज्ञा कर मार्यौ अंग जाकौ भ्रमै है आंखि जाकी निकस आई फूले है भुजा के पा जाके ऐसे गिरत भयौ
जैसे पवन कौ मार्यौ वडो प्रसाद गिरै है २६ तहां दैत्य पृथ्वी मैं सोवै है अकुंठ जाकौ तेज करालजा की दाढ होठन कौ चलावतौ ही मरौ
ताय देष कर आये ब्रह्मादिक देवता ते वडाई करवे लगे देखो आश्चर्य है ऐसी मृत्यु कौन पावै बडे भाग्य ते हरि के हाथ मृत्यु होत है २७
जाकौ जोगी योग समाधि मैं एकांत मैं ध्यान करै है लिंगदेह ते छूटवे की इछा कर तिन भगवान ने यह दैत्य मार्यौ धन्य भाग्य या

सत्याहतो विश्वजिना ह्यवज्ञया परिभ्रमद्गात्र उदस्तलोचनाः विकीर्णबाह्वंघ्रिशिरोरुहोपतद्यथा नगेंद्रोलु
लितो नभस्वता २६ क्षितौ शयानं तमकुंठवर्चसं करालदंष्ट्रं परिदष्टदच्छदं अजादयो वीक्ष्य शशंसुरागताः
अहो इमं को नु लभेत संस्थितं २७ यं योगिनो योगसमाधिना रहो ध्यायंति लिंगादसतो मुमुक्षया तस्यै
ष दैत्यऋषभः पदाहतो मुखं प्रपश्यंस्तनुमुत्ससर्ज ह २८ एतौ तौ पार्षदावस्य शापाद्यातावसद्गतिं
पुनः कतिपयैः स्थानं प्रपत्स्येते ह जन्मभिः २९ देवा ऊचुः नमो नमस्तेखिलयज्ञतंतवे स्थितौ गृही
तामलसत्वमूर्तये दिष्ट्याहतोयं जगतामरुंतुदस्त्वत्पादभक्त्या वयमीश निर्वृताः ३०

के सुख देखत देखत शरीर छूटत भयौ २८ ये दोऊ हरि के पार्षद सनकादिकन के शाप ते असुर गति कौ प्राप्त
भये अब कछुक और जन्मन ते हरि कौ स्थान पावैगे २९ देवा ऊचुः सब जगत के विस्तार करवे वारे पालन के लि
ये ग्रहण करी है सत्व मूर्ति जाने ता तुम्हारे अर्थ प्रणाम है और बडौ मंगल भयौ यह लोकन कौ दुखदाई मार्यौ
यह तुम्हारे चरणारविंद की भक्ति कर वडे आदर कौ प्राप्ति भये ३०

आकास मैं बादर बीजुरी गडगडाय रुधिर आकास तें गिरयौं निरंतर राध लोहू केस विष्ठा मूत्र अस्थि इन नें निरंतर बरषा होत भयौं १९ परवत अनेक दिखाई देत भये नग्न यातुधानी सूल हाथ मैं लिये केस षोलें अनेक आयुध छोडन दिखाई देत भयौ २० बहोत यक्ष राक्षस प्यादे घोडा हाथी रथनि पै बैठे तिन नें करी अति उच्च स्वर वाणी गर्जि कें मारो काटो ऐसे होत भई २१ दैत्य नें प्रकट करी जो ए आसुरी माया तिन कैं नाश करवे वारो अपनो प्यारो सुदर्शन चक्र ताहि भगवान् चलायौ

द्यौर्नष्टभगणाभ्रौघैः सविद्युत्स्तनयित्नुभिः वर्षद्भिः पूयकेशासृग्विण्मूत्रास्थीनि चासकृत् १९ गिरयः प्रत्यदृ
श्यंत नानायुधमुचोऽनघ दिग्वाससो यातुधान्यः शूलिन्यो मुक्तमूर्धजाः २० बहुभिर्यक्षरक्षोभिः पत्त्यश्वरथकुं
जरैः आततायिभिरुत्सृष्टा हिंस्रा वाचोऽतिवैशसाः २१ प्रादुष्कृतानां मायानामासुरीणां विनाशयत् सुदर्शना
स्त्रं भगवान् प्रायुङ्क्त दयितं त्रिपात् २२ तदा दितेः समभवत्सहसा हृदि वेपथुः स्मरंत्या भर्तुरादेशं स्तनाच्चासृक् प्र
सुस्रुवे २३ विनष्टासु स्वमायासु भूयश्चाव्रज्य केशवं रुषोपगूहमानोऽमुं ददृशेऽवस्थितं बहिः २४ तं मु
ष्टिभिर्विनिघ्नंतं वज्रसारैरधोक्षजः करेण कर्णमूलेऽहन् यथा त्वाष्ट्रं मरुत्पतिः २५

तासमय मैं दिति के हृदय मैं कंप होत भयौं और पति नें जो कही तेरे पुत्र कौं हरि मारैंगे ताकौ स्मरण करवे लगी और
स्तनन मैं लोहू स्रववे लग्यौं २३ जब वाकी सब माया नष्ट होइ गई तब फेर हरि के निकट आय क्रोध करि जानवे
भीतर खावा रहे जी कौं दाववे लग्यौं इतने मैं देखै तो बाहर खडे हैं २४ वज्रन तें कठिन जो मुष्टी तिन करि मारत जो दैत्य
ताकौं वज्र समान थप्पर करि भगवान् कर्णमूल मैं मारत भए जैसे वृत्रासुर कौं इंद्र मारत भयो २५

अपनौपौरुषनष्टभयोंगयोहैंगर्वजाकौहारगयों ऐसोंजोअसुरताकौहरिअपनेआपुनतेंगदादेतेंपरइच्छालैवेकीनकरत
भयों १२ फिरतौप्रज्वलनअग्निकीसीनाईंवैरीनकेयज्ञनमैंव्यय ऐसोंत्रिशूलतायहरिकौंमारवेकौलेतभयों जैसेंत्वध
मैनिधब्राह्मणऔंमारवेकौंकोईअभिचारकरैंपरवाधेचलैनहीं १३ सोवहत्रिशूलदैत्यनेंवडेबलसें उत्कंठाजाकीऐसो
आकासमेंवढ़तथीभादेतभयों तायवेनीजाकीधारऐसेचक्रकरभगवान्नुकाटडारतभए जैसेंअमृतकेलेवेकौंगरु
डनेंत्यागोजोपक्षतायजैसेंइंद्रवज्रकरकाटडारतभयों १४ हरिनैंचक्रकरिकेंत्रिशूलकाटेसंतें फेरसामहेंआयक्रोधयुक्त

स्वपौरुषेप्रतिहतेहतमानोमहासुरः नैच्छद्गदांदीयमानांहरिणाविगतप्रभः १२ जग्राहत्रिशिखंशूलं
ज्वलज्ज्वलनलोलुपम् यज्ञायधृतरूपायविप्रायाभिचरन्यथा १३ वृक्णेस्वशूलेबहुधारिणाहरेः प्रत्येत्यविस्तीर्ण
मुरोविभूतिमत् प्रवृद्धरोषःसकठोरमुष्टिनानदन्प्रहृत्यान्तरधीयतासुरः १४ तदोजसादैत्यमहाभटार्पितंचकास
दंतःखउदीर्णदीधिति चक्रेणचिच्छेदनिशातनेमिना हरिर्यथातार्क्ष्यपतत्रमुज्झितं १५ तेनेत्थमाहतःक्षत्तर्भग
वानादिसूकरः नाकंपतमनाक्क्वापिस्रजाहतइवद्विपः १६ अथोरुधासृजन्मायां योगमायेश्वरेहरौ यांवि
लोक्यप्रजास्त्रस्तामेनिरेस्योपसंयमं १७ प्रववुर्वायवश्चंडास्तमःपांसवमैरयन् दिग्भ्योनिपेतुर्ग्रावाणःक्षेप

हरिकेंविशालवक्षस्थलमैंमूठीमारिगर्जकरिवहदैत्यअंतर्धानहोतभयों १५ तादैत्यनेंऐसेंमूठामारमारेतव
भगवान्वाराहजीनेंजोहून्हींकंपतभए ऐसेंफूलकेमारेंहाथीनहींकांपेहै १६ अथवापाकेअनंतरयोगमायाकेईश्व
रहरिविषैअनेकमायासृजतभयो जामायाकूंदेषप्रजाईपनेविश्वकौप्रलयमानतभई १७ धूलकरअंधे
रौंकरतप्रचंडपवनचलतभयों दिशानमेंवडेपथरगिरवेलगेंमानौपंतमेंधरकैचलायोहै १८

विराजैचक्रजाकोंऐसेदितिपुत्रनमेंमुख्यऐसेअपनेपारषदनमेंमुख्यहिरंण्याक्षतासोंयुद्धकरतकोंदेखकरिकोंतेग्वयेनजा
ननदेवतानकीउतविचित्रवाणीहोतभई वाराहजीतुमयाकोंकल्याणहोउयाहिमारों ६ चक्रलीयेआगेंठाढेतिनकेकमलकेसे
नेत्रऐसेहरिकोंदेखिक्रोधकरव्याप्तजाकीइंद्रीऐसोदैत्यश्वासलेतक्रोधकरहोठचबावतभयो ७ करालहैंदंष्ट्राजाकीनेत्रन
करऐसेंदेखैजोंबराबरहैंजोऐसनिकटआयहृदयकेआगेंमुसिलायऐसेदेखैतौंवराबरहैंऐसेंनिकटआयहृदयकेआगें

तस्याग्रजचक्रंदितिपुत्राधमेनस्वपार्षदमुख्येनविसज्जमानं चित्रावाचोतद्विदांखेचराणांतत्रास्मासनुस्वस्तिते
मुंजहीति ६ सतंनिशाम्यात्तरथांगमग्रतोव्यवस्थितंपद्मपलाशलोचनं: विलोक्यचामर्षपरिप्लुतेंद्रियोरुषास्वदं
तच्छदमादशच्छ्वसन् ७ करालदंष्ट्रश्चक्षुर्भ्यांसंचक्षाणोदहन्निव अभिप्लुत्यस्वगदयाहतोसीत्याहनद्धरिं ८
पदासव्येनतांसाधोभगवान्यज्ञसूकरः लीलयामिषतःशत्रोःप्राहरद्वातरंहसा ९ आहचायुधमाधत्स्व
घटस्वत्वंजिगीषसि इत्युक्तःसतदाभूयस्ताडयन्व्यनदद्भृशं १० तामापततींवीक्ष्यभगवान्समवस्थि
तः जग्राहलीलयाप्राप्तांगरुत्मानिवपन्नगीं ११

मुसिलायऐसेंगदाकरिकेंहरिताकोंमारतभए ८ हेविदुरतबभगवान्यज्ञमूर्तिवाराहलीलाकरबैरीकेदेखतपवनकों
सोंवेगऐसीगदासोंवायेंपावसैंमारकेंगिरायदेतभयो ९ औरदैत्यसोंयहवोले शस्त्रधारणकरजीतवेकीइच्छारा
खेहैंतातेंउद्यमकरऐसोंजबहरिनेकह्योंतबवाहीगदासोंमारतगरजतभयों १० तागदाकोंआवतीदेखि
भगवान्बारेठाढेरहेऔरलीलाकरवागदाकोंग्रहणकरतभये जैसेगरुडसर्पकोंपकरेहै ११

अब आभिजित नाम एक महूर्त आयौ सो मारे सुहृदन के कल्याण के लिये याइ दुस्तर कौं जलदी मारौ २७ वडो मंगल भयौ अब या
कौं जु मवि तिमृत्यु माहि प्राप्ति भयौ तातें पराक्रम करि याहि मारौ लोकन कूं सुख में स्थापन करौ २८ इति श्री भाग तेतृतीय०
अष्टादशोध्याय: १८ ऐसे ब्रह्मा के निष्कपट सरी के वचन सुनि के प्रेम हे गर्भ में आके ऐसे पल कर अंगीकार कर लै भए चिंतामति
करे जाहि मारतो १ ता पीछे वैरी अकुतोभय सों ह्यां विचरै हैं ऐसो दैत्य ताहि भगवान् वाराह जी गदा तें रकपोल के आघो भाग में मार्‍यौ २

अथुनैषोऽभिजिन्नाम योगो मौहूर्त्तिको ह्युगात् शिवाय नस्त्वं सुहृदामासु निस्तर दुस्तरं २७ दिष्ट्यात्वां विहितं मृत्युं
मयमासादितः स्वयं विक्रमैनं मृधे हत्वा लोकानाधेहि शर्मणि २८ इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कन्धे अष्टादशो-
ध्यायः १८ मैत्रेय उवाच: अवधार्य विरंचस्य निर्व्यलीकामृतं वचः प्रहस्य प्रेम गर्भेण तदपांगेन सोऽग्रहीत् १
ततः सपत्नं मुखतश्चरंतमकुतोभयं जघानोत्पत्य गदया हन्वावसुरमक्षजः २ सा हता तेन गदया विहता भगवत्क-
रात् विघूर्णितापतद्रेजे तदद्भुतमिवाभवत् ३ स तदा लब्धतीर्थोऽपि न बबाधे निरायुधं मानयं स मृधे धर्मं विष्वक्सेनं प्र-
कोपयन् ४ गदायामपविद्धायां हाहाकारे विनिर्गते मानयामास तद्धर्मं सुनाभं चास्मरद्विभुः ५

रत्व विद्वस्या है जे अपनी गदा कर भगवान की गदा में दी सो हरि के हाथ में ते गदा छूटि के गिरत वहुत सोभा देत भई सो वडो
आश्चर्य भयौ सब कौं ३ सो वह दैत्य युद्ध के धर्म में मान हरि कौं कंपित करावत वाव रौ या मारवे कौं दाव पायौ परतु हरि कौं निरायुध
जान के न मारत भयौ ४ गदा गिरे संते हाहाकार भयौ पीछे भगवान् वे दैत्य धर्म मान तभए ५

भा०त्र०
४८

दैत्य ओर गरुड़ एक रीतें वाराह मूर्ति जाने तिन दोउन कों युद्ध पृथ्वी निमित्त होतें ताय देखवे कों ली ये ऋषीन कर वेष्टित ब्रह्मा
वत भयो २० युद्ध कों पायो है सो ऐसो जानें निडर है सज्जा को कियो है प्रतिकार जाने अप्रसह्य जाको पराक्रम ऐसो दैत्य ताहि
लखि कें ब्रह्मा आदि सूकर नारायण सों यह बोले २१ हे देव तुम्हारे चरण मूल कों प्राप्त भयो जो देवता और
ब्राह्मण गौ और जो निरअपराधी प्राणी तिन को यह दैत्य वृथा अपराध करवे वारो अर्थ प्राणादिकन कों दुःखिवे वारो हम पे लेपा

दैत्यस्य यज्ञावयवस्य मायागृहीतवाराहतनोर्महात्मनः कौरव्य मह्यां विषमं विमर्दनं दिदृक्षुरागादृषिभिर्वृतः
स्वराट् २० आसन्नशौण्डीरमपेतसाध्वसं कृतप्रतीकारमहार्यविक्रमं विलक्ष्य दैत्यं भगवान् सहस्रणीर्जगाद ना
रायणमादिसूकरं २१ ब्रह्मोवाच: एष ते देव देवानामंघ्रिमूलमुपेयुषां विप्राणां सौरभेयीणां भूतानामप्य
नागसां २२ आगस्कृद्भयकृद्दुष्कृदस्मद्राद्धवरोऽसुरः अन्वेषन्नप्रतिरथो लोकानटति कंटकः २३ मैनं
मायाविनं दृप्तं निरंकुशमसत्तमं आक्रीड बालवद्देव यथाशीविषमुत्थितं २४ न यावदेव वर्द्धेत स्वां वेलां
प्राप्य दारुणः स्वां देव मायामास्थाय तावज्जह्यघमच्युत २५ एष घोरतमा संध्या लोकछंबट्करी प्रभो उप
सर्पति सर्वात्मन् सुराणां जयमावह २६

यो है वर दान जाने ऐसो यह असुर नहीं है कोउ सामे लड़िवे वारो जाको ऐसो निःशंक लोकन में डोले है २२ यह वडो
मायावी गर्वीलो निरंकुश महादुष्ट तासों खेल मति करो जैसे आगें स्थित जो सर्प तासों बालक जैसें एं छपकर
के खेले है २३ यह दानव दैत्य अपनी वेला संध्या पाई न वढे ता तें पहिलें अपनी माया में स्थित होई या पापरूप को मा
रो २४ हे सर्वात्मन् यह लोकन को नास करवे वारी अति भय करि संध्या आवे है ता तें पहिलें देवतान की जय करो २५॥

सो वाराहजी वैरी के जो दुर्वचन जोई भए वाण तिन करि भिद्यमान दंष्ट्राग्र जगत जो पृथ्वी ताहि भयभीत देखि वा दुःख कूं सहत
ल जल में तें ऐसें निकसत भये जैसें ग्राह को मारों हथनी सहित हाथी निकसै है ६ जब वे वाराहजी जल में तें निकसे तब पीछे
हिरण्याक्ष ऐसें लग्यो चल्यो आयो जैसें हाथी के पीछें ग्राह चल्यो आवै है और कराल ज्याकी दंष्ट्रा वज्र सो ज्याको शब्द ऐसो वो
ल्यो तो सारके दुष्ट निर्लज्जन को आज नीं विदित है ७ सो वाराहजी वा पृथ्वी कों जल के ऊपर धरि अपनी आधार शक्ति राखत
भए वारंवार देवतान ने अस्तुति करि विश्वसृष्टा ने फूलन की वर्षा करी और हिरण्याक्ष को मारिवे की हरि इच्छा करत भए ८

सनुद्यमानोरिदुरुक्ततोमरैर्दंष्ट्राग्रगां गामुपलक्ष्य भीतां तोदं मृषन्निरगादंबुमध्याद्ग्राहाहतः सकरेणुर्यथेभः ६
तं निःसरंतं सलिलादनुद्रुतो हिरण्यकेशो द्विरदं यथा झषः करालदंष्ट्रोऽशनिनिःस्वनोऽब्रवीद्गतह्रियां किं त्वसतां विगर्हि
तं ७ स गामुदस्तात्सलिलस्य गोचरे विन्यस्य तस्यामदधात्स्वसत्त्वं अभिष्टुतो विश्वसृजा प्रसूनैरापूर्यमाणो विबु
धैः पश्यतोऽरेः ८ परानुषक्तं तपनीयोपकल्पं महागदं कांचनचित्रदंशं मर्माण्यभीक्ष्णं प्रतुदंतं दुरुक्तैः प्रचंडमन्युः प्र
हसंस्तं बभाषे ९ श्रीभगवानुवाच सत्यं वयं भो वनगोचरा मृगा युष्मद्विधान्मृगये ग्रामसिंहान् न मृत्युपाशैः प्र
तिमुक्तस्य वीरा विकत्थनं तव गृह्णंत्यभद्र १० एते वयं न्यासहरा रसौकसां गतह्रियो गदया द्राविताः स्ते तिष्ठामहे
ऽथापि कथंचिदाजौ स्थेयं क्व यामो बलिनोत्पाद्य वैरं ११

पीछे पीछे लग्यो आवै है सब शोक जाके प्रानरी बडी जाकी
अ दासोने के विचित्र कवच पहिरैं दुर्वचन कर निरंतर मर्मन को काटे है ऐसे हिरण्याक्ष को देख प्रचंड जाको क्रोध ऐसे
वाराहजी हसिके वासों बोले ९ रे हिरण्याक्ष सांचि है हम वन के रहवे वारे मृग हैं तू सारके ग्रामीन कूं ढूंढत फिरै है मृत्यु
पासन कर बंध्यो जो तू तातें तेरो वचन हम माने १० हम रसातल वारेन को हरवे वारे हैं निर्लज्ज तेरी गदा न जोरै
पल अब जैसे तोइ सी जो हम में समर्थ तो इगी तैसे युद्ध में ठाढे होइंगे जो हम असमर्थ होइ जो उन बल सों वैर उपजाइवे कों

सो हिरण्याक्ष वडों जाको मन ऐसो वरुण को वचन सुनि वडों मत्त करि मन में लायो औ धारी वैरी या नारद जी नें आय के कही जो
तेरी पृथ्वी वाराहजी लीये जाय है यह सुनि जल ही रसातल में प्रवेश करत भयो १ तातें वैरी या रसातल में जाय आगली दंष्ट्रा पे
धरी पृथ्वी ना हि लीयें जात है ऐसे वाराह जी कूं देषत भयो अरु रण सोभा युक्त जो नें चतागरि कै अपनी को त्रिलोकी तिरस्कार करें है ति नें देष
हसत भयो देखो अहो आश्चर्य यह थलचर को वाराह है ऐसे कहि हस्यो २ औ इय ह वोल्यो वाराहजी सों अरे यह मेरी पृथ्वी छोड दे रम

मैत्रेय उवाच: तदेवमाकर्ण्य जलेशभाषितं महामनास्तद्विगणय्य दुर्मदः हरे[illegible]र्विदित्वा गतिमंग नारदाद्रसातलं
निर्विविशे त्वरान्वितः १ ददर्श तत्राभिजितं धराधरं प्रोन्नीयमानावनिमग्रदंष्ट्रया मुष्णंतमक्ष्णा स्वरुचोरुणश्रि
याजहास चाहो वनगोचरो मृगः २ आहैनमेह्यज्ञ महीं विमुंच नो रसौकसां विश्वसृजेयमर्पिता न स्वस्तियास्य
स्यनया ममेक्षतः सुराधमासादितसूकराकृते ३ त्वं नः सपत्नैरभवाय किं भृतो यो मायया हंत्यसुरान्परोक्षजि
त् त्वां योगमायाबलमल्पपौरुषं संस्थाप्य मूढ प्रमृजे सुहृच्छुचः ४ त्वयि संस्थिते गदया शीर्णशीर्षण्यस्मद्भु
जच्युतया ये च तुभ्यं बलिं हरंत्यृषयो ये च देवाः स्वयं सर्वे न भविष्यंत्यमूलाः ५

कौ रसातलवासीन कौं यह ब्रह्मा नें अर्पण करी है मेरे देषत या वाराह तसातिल लै जाय के कल्याण कूं न पावेगो [illegible] सुराधम धा
रण करी है सूकर की आकृति सो ऋषि जाने तू स्मार वैरी देवता नें तै मारे ना पालन करिवे कूं पुष्ट कियो है जो माया पा[illegible] परोक्ष [illegible] मारे है
तो मैं योगमाया को वल है औ र पराक्रम थोरो रे हे मूढ सो तो हि प्रथम मारि सुहृदन को शोक दूर करूंगो ४ [illegible] दि
जो गदा ताकरि के हलो तेरो शिर जाकौं ऐसे तेरे मरे संते जे सैं ऋषी देवता तो कूं भेजे है ते आपते आप निर्मूल होइ जाइगे ५

भा·त·
४५

गौभयकेमारेस्त्रोहुंडारतभई मेघराधलोहुवरषनलगें देवतानकीप्रतिमारुदनकरतभई वृक्षविनाईपवनगिरतभये १३
औरअक्रूरमंगलादिकग्रहपवित्रग्रहवुधादिकतिनैं औरवहोतनसत्रगणतिनैं अतिक्रमकरविचरतभए औरपरस्परयुद्ध
करतभए १४ औरवडेवडेउत्पाततिनेदेषसनकादिकनविना औरकोउपानत्वकूंजानेनहीयातेंसवप्रजाविश्वकोप्रलय
कोमानतभई १५ तेआदिदैत्यप्रगटकीयोहेपुर्वीसिद्धिपौरुषजिननेंवज्रहूतेकठिनशरीरताकरिऐसेंवडेगिरिराजतिनहीजैसें
देषवेत १६ वेवढतभएदेउ स्वर्गकोंस्परीकरेहें सोनेकेमुकटतिनके अग्रभागनकरिव्यापीहेंदिशाजिनमें देदीप्यमान:

गावोत्रसन्नसृग्दोहास्तोयदाः पूयवर्षिणः व्यरुदन्देवलिंगानीद्रुमापेतुर्विनाऽनिलं १३ ग्रहान्पुण्यतमानू
न्येभगणंश्चापिदीपिताः अतिचेरुर्वक्रगत्यायुयुधुश्चपरस्परं १४ दृष्ट्वान्यांश्चमहोत्पातानतत्त्वविदः प्रजाः
ब्रह्मपुत्रानृतेभीतामेनिरेविश्वसंप्लवं १५ तावादिदैत्यौसहसाव्यज्यमानात्मपौरुषौ ववृधातेऽश्मसारेण
कायेनाद्रिपतीइव १६ दिविस्पृशौहेमकिरीटकोटिभिर्निरुद्धकाष्ठौस्फुरदंगदाभुजौ गांकंपयंतौचरणैःपदेपदे
कट्यासुकांच्यार्कमतीत्यतस्थतुः १७ प्रजापतिर्नामतयोरकार्षीद्यःप्राक्स्वदेहाद्यमयोरजायत तंवैहिरण्य
कशिपुंविदुःप्रजायंतंहिरण्याक्षमसूतसाग्रतः १८

हैवाजूवंदउजनमैंजिनकेंअरुचरनकरिपदपदमेंपृथ्वीकोंजोंकंपितकरेहें सुंदरहेकांचीछुद्रघंटिकाजामैंताकर
सूर्यकोंउलंघनकरिस्थितहोतभए कोधमौंनकेकुंदनानकेजोकामासूर्यआपकयो १७ कश्यपजीउनकेनाम
करतभए ऊनजोरूपानसेतेजोपहिलेंअपनीस्त्रीतेभयोताहिजोप्रजाहिरण्यकशिपुऐसेंकहेहें औरजोहिमाता
पीछेंउपजावतभई तातिहिरण्याक्षकहेहें १८

४५

तीहरणजाकोंस्पर्शऐसीपवनचलनभई फुंकारनकोंफेरतबडेबडेवृक्षणकोंउन्मूलनकरतपरोहैंआमोकजाकीजरतहैंभुजाजाकी ५
अतिसयगरचमकतहेंबीजुरीजिनमें ऐसीजोबादरकीघटातिनकरनभरैहैतोगगणजामें एसोजोआकाशतामेरविषेजोसूर्यआर
लाकरनछादिखाईनदेतभयो ६ समुद्रकिसमुद्रहीयतेंपुकारनलग्यो तरंगिनकरिजाभिनतहैं उदरजाकोंकुआनलावनसहितनदीनमल
जिनकेस्रवेसोभयकोंप्राप्तिभयो ७ राहुग्रस्तनोचंद्रमाहस्थतिनकोवारंवारपटवेषहोतभयो विनावादरगर्जनाहोतभई परवतनको

ववौवायुःस्फुटत्प्रोषाः फुत्कारानीरयन्मुहुः उन्मूलयन्नुपतत्रीनुवात्यानीकोत्सुको ध्वजा ५ जज्वलस्तडितदंभोदाघटया
नसन्नागणे यौभिप्रविघलमसानस्मव्यादृश्यतेपदं ६ चुक्रोशोविमनावार्धिरुद्धर्मिविभिनोदरः सोदपानाप्लवसरि
तश्चुक्षुभेभः छत्पपंकजाः ७ मुहुः परिधयोभूयनूसराहोस्मिप्रोसूर्ययोः निघीतारोथिनिर्हादाःविवरेभ्यः प्रजज्ञिरे ८
ग्रंतर्गीमेघमघतोवमंतोवन्हिमुल्वणं भगालोलूकटंकारैः मणेदुराप्रीवाशिवः ९ संगीतवमोदनवुद्धमयापि
शेधरो व्यमुंचत्तुविधावाचो ग्रामसिंहस्तरस्वतः १० खराघ्नवर्कशैस्तनः खुरैर्भतंतधस्तलं खाकृतरमसामता
पर्यधावन्नूवरूथपाः ११ रुदंतोरासमभ्रस्ता नीडाडुपतन्नुखगाः घोषरेस्पेचपशवः शकृन्मूत्रमकुर्वत १२

गुहान्नतेरथनकीसीध्वनहोइवेलगी ८ ग्रामकेश्नीमरअमंगलीकस्पारनीमुरवतें अग्निवमनकरतिस्याररुल्वणजीध्वन
निसतनवतरेंईसब्दकरतभई ९ ऐसेकोईगावेतैसेंरुदनकरैते ताकीभांतिग्रीवाउठाइकुत्ताजंतौनानाप्रकारनकीवाणीवो
लतभए १० खरजोहैंसेकठनपाखरनिकरिपृथ्वीतलकोंखोदलमनकारैंगर्धभजामकोप्राप्तकीरेकेंझुंडचहुंधाभजतडोलत
भे ११ गर्धवरकेडरकेमारेपक्षीरुदनकरतउंचेहूतेउएसोगिरतभये। औरघोषनमैवननमेंजिनावरमूत्रभयनकरिवरोतकरतभये॥ १२५

भा॰ त॰
४४

तेई दोउ हरि के पार्षद कस्यप के वीर्य मैं दिति के उदर मैं अब प्राप्ति भये हैं ३४ हे देवताओ तेई दोउ जो असुर रूप तिन के तेज करि तुम्हारो तेज
अरूप हू रहि गयो है सो ताकौ उपाय भगवान् ही करैंगे जो विश्व की उत्पत्ति पालन नास के हेतु आदि पुरुष योगेश्वरन करि अनतिक्रमणीय
है योगमाया जाकी सोई त्रिलोकी के ईश्वर भगवान् हमारो कल्याण करैंगे तौ हमारे विचार करिबे कहा अर्थसिद्धि होइगो ३६ इति
श्रीभागवते महापुराणे तृतीय स्कंधे षोडशोध्याय: १६ ब्रह्मा ने कह्यौ जो कारण ताहि सुनिकैं संदेह रहित होई सब देवता ब्रह्मा के लोक
तैं निवर्त्त होइ स्वर्ग कौं फिरि कै आये १ कस्यप जी ने दिति सों कह्यौ ही जो तेरे पुत्रनि तैं लोकन कौं दुःख होइगो या डर के मारे देवतन के

तावेव ह्यधुना प्राप्तौ पार्षद प्रवरौ हरेः दितेर्जठर निर्विष्टं काश्यपं तेज उल्बणं ३४ तयोरसुरयोरद्य तेजसा यमयोर्हि वः आक्षि-
प्तं तेज एतर्हि भगवांस्तद्विधित्सति ३५ विश्वस्य यः स्थितिलयोद्भव हेतुराद्यो योगेश्वरैरपि दुरत्यय योगमायः क्षेमं विधा-
स्यति स नो भगवांस्त्र्यधीशस्तत्रास्मदीय विमृशेन कियानिहार्थः ३६ इति श्रीभागवते तृतीय० षोडशोध्यायः १६ मैत्रेय उवाच
निशम्यात्मभुवा गीतं कारणं शंकयोज्झिताः ततः सर्वे न्यवर्तंत त्रिदिवाय दिवौकसः १ दितिस्तु भर्तुरादेशादपत्य परिशंकिनी
पूर्णे वर्षशते साध्वी पुत्रौ प्रसुषुवे यमौ २ उत्पाता बहवस्तत्र निपेतुर्जायमानयोः दिवि भुव्यंतरिक्षे च लोकस्योरुभयाव-
हाः ३ सहाचला भुवश्चेलुर्दिशः सर्वाः प्रजज्वलुः सोल्काश्चाशनयः पेतुः केतवश्चार्तिहेतवः ४

उपद्रव देइंगे ता कारण सौं सौ वर्ष ताई पेट मैं आपने राखे ता पीछें जो कस्यप जी दोउ पुत्र जोडा उपजावत भई २ उन के होते ही तीनि
या स्वर्ग मैं पृथ्वी मैं आकास मैं लोकन कूं बहुत भय देवे वारे उत्पात होत भए ३ परवतन सहित भूमि चलत भए
सब दिसनि मैं हाहाकार होइवे लगे उल्कान सहित वज्र पात होइवे लगे दुःख के हेतु पुच्छल तारे उदय भए ४

अब एहो ऊजल हीतौ अस्तु रगनि पाइकै आवेश करि मोमैं मन लगाय मेरे निकट जल हीतौ आवैंहु तातें रजोयत तुम्हारौ
शाप सो मेती वधौ है यह जानि २६ याकै अनंतर वेसकादिक मुनिनेत्रनकै आनंदकौं पाय वह वैकुंठलोक और वैकुंठनाथ देषि
आनंद पावे हैं २७ भगवान्की परिक्रमा दै दंडोत करि आज्ञा मांगि वैकुंठकी शोभा की वडाई करत भए २८ तव वैकुंठनाथ पार्षदन
सों वोले जाउ मति भय करौ तुम्हारौ कल्याण होइ हम में समर्थ है सो परि ब्रह्म तेज तेना प्रापावदिवे कौ न ही करते हूं यह मेरो ई मत है २९ मैं नें कौ
धावे प्रा करि ब्राह्मणके अवतार रूप पाप कौ मरिकै थोरे ही दिनन मैं मेरे ही निकट प्रामैगे ३० ऐसें भगवान् द्वारपालन कौं आज्ञा देकै

श्रीभगवानउवाच: एतौ सुरेतरगतिं प्रतिपद्य सद्य: संरंभसंभृतसमाध्यनुवद्धयोगौ भूय: सकाशमुपयास्यत आशु यो व:
शापो मयैव निमितस्तदवेत विप्रा २६ ब्रह्मउवाच: अथ ते मुनयो दृष्ट्वा नयनानंदभाजनं वैकुंठं तदधिष्ठानं वैकुंठं च स्वयंप्रभं: २७
भगवंतं परिक्रम्या प्रणिपत्यानुमान्य च: प्रतिजग्मु: प्रमुदितास्ते शंसंतो वैष्णवीं श्रियं २८ भगवाननुगावाह यातं माभैष्टमस्तु
शं ब्रह्मतेज समर्थोपि हंतुं नेच्छे मतं तु मे: २९ मयि संरंभयोगेन निस्तीर्य ब्रह्महेलनं प्रत्येष्यतं निकाशं मे कालेनाल्पीय
सा पुन: ३० द्वास्थावादिश्य भगवान् विमानश्रेणिभूषणं सर्वातिशयया लक्ष्म्या जुष्टं स्वधिष्ण्यमाविशत् ३१ तौ तु गीर्वाण
ऋषिभौ दुस्तराद्धरिलोकत: हतश्रियौ ब्रह्मशापादभूतां विगतस्मयौ ३२ तदा विकुंठधिषणात्तयोर्निपतमानयो: हाहाकारो म
हानासीत् विमानाग्र्येषु पुत्रका: ३३

वैलोकनके नाथ अतिशय लक्ष्मी करि भिंप्रोत विमानन की पंक्ति करि शोभित ऐसो जो निज मंदिर ता मैं प्रवेश करत भए ३१ ते देवतान
मैं श्रेष्ठ दुस्तर ब्रह्म शाप तें नष्ट गर्व सो हु नीचे कौं गिरत भए हरि लोक तें ३२ ब्रह्मा देवतान सों कहै हैं पुत्र तव वैकुंठ लोक में गिरत जो
जय विजय तिन नैं देखि देवतान के विमानन मैं वडो हाहाकार होत भयो ३३

परमभागवतनमैंतेप्रसंगजाकोंऐसेजेतुमशुद्धचरित्रनकरिसेवनकरलजोलक्ष्मीताकोनहीआदरदेहैं सोतुमद्विजनकीमार्गमें
लगीजोपवित्ररजताकरिपवित्रभएकहैं ओरभजनीयगुणनकेआपनकहीश्रीवत्सकोंओरकोंप्राप्तिभए २१ हेत्रियुगतीनोंयुगनमेंरहे
आवीर्यभावजाकोंधर्मरूपजोतुमताकेसत्वतुम्हारेजोतिनचरणमयसोचरयातिनकरिस्थावरजंगमसवलोगणपालनकियो
हे वाधर्मकोंधारणकरिजोतुमतायसत्वमूर्तिकरिनाशकरिकै २२ तुमहीजोरक्षाकरिकैवेजोगयरब्राह्मणनकोंकुलताहि
धर्मरूपजोतुमसोसुंदरमीठीवाणीपूजाकरिजोतुमहीरक्षानकरोंतोंकल्याणकारीजोतुम्हारोवेदमार्गसोनाशकोंप्राप्तहोइ

यस्तांविविक्तचरितैरनुवर्तमानांनात्याद्रियत्परमभागवतप्रसंगः सत्वंद्विजानुपथपुण्यरजःपुनीतः श्रीवत्स
लक्ष्मकिमगाभगभाजनस्त्वं २१ धर्मस्यतेभगवतस्त्रियुगत्रिभिःस्वैः पद्भिश्चराचरमिदंद्विजदेवतार्थं नूनंभृ
तंतदभिघातिरजस्तमश्चसत्वेननोवरदयातनुवानिरस्य २२ नत्वंद्विजोत्तमकुलंयदिहात्मगोपंगोप्तावृषःस्व
र्हणेनससूनृतेन: तर्ह्येवनंक्ष्यतिशिवस्तवदेवपंथालोकोऽग्रहीष्यदृषभस्यहितत्प्रमाणं २३ तत्तेनभी
ष्टमिवसत्वनिधेर्विधित्सोःक्षेमंजनायनिजशक्तिभिरुद्धृतारेः नैतावतात्र्यधिपतेर्वतविश्वभर्तुस्तेजःक्षतंत्व
ऽवनतस्यसतेविनोदः २४ यंवानयोर्दममधीशभगवान्विधत्तेवृत्तिंनुवातदनुमन्महिनिर्व्यलीकं अस्मासुवा
यउचितोध्रियतांसदंडो येनागसौवयमयुंक्ष्महिकिल्बिषेण २५

औरतुम्हारेहीचलनकोंआगेलोकग्रहणकरैहै २३
अपनीशक्तिनकरमारेहैवीरजानैंजगतकोकल्याणकरोंवहीतवतुमकोवेदमार्गनष्टहोइजायपहअभीष्टनहीं ॥
औरत्रिलोकीकेईश्वरपोषणकरिवेवारेजोतुमब्राह्मणनकेआगेनम्रहोईइतमेंकरिवेमेंकरितुम्हारेतेजउहैनहीं
एकतुम्हारोविनोदहीहै २४ अववइनपार्षदनकोंयातोतोंदंडदेउ अथवाजीकोपाजीजोकरियाइहेउमनतेप्रगटहोई
कैमानैहैं अथवाजिनअपराधीनकोंहमनेंशापलगायोहैयातेहमारेलायकजोदंडसोहमेंकोंदीजीये २५

अखंडवैकुंठजाकीविभूतिऐसेंमैंजोमेरेचरणकौंजलमस्तकपैधारितेसबलोकनकौंपवित्रकरैहैंऐसोहमैंजिनब्राह्मणनकेच
रणरेणुमुकटपेंधारणकरूंहूंतिनब्राह्मणनकौंऐसोऔरकौनजोनसहै ९ पापकरनतेंजिनकीदृष्टिसर्पनकोंसीहैजिनकोंक्रोध
ऐसेजेकोउमेरीमूर्त्तिब्राह्मणऔरगौऔरनकहूंपाइतेंशरणजिननेंऐसेप्राणीतिन्नेंभेदबुद्धिकरिदेषेंतिनमेंअधिकारीजोदंडु
दातायमताकेगृध्रक्रोधकरतवैतिनकूंचरकूटैहैं १० औरजेब्राह्मणदुर्वचनहूबोलैहैंउनैंजोवासुदेवदृष्टिकरिपूजनकरैहैंवाके
दुर्वचनहैंसुनिमनमेंप्रसन्नहोवैंकोमलपानकोहैसोईसुधाताकरिसींचेहैपद्मतुल्यमुखजिननैंऐसेप्रेमभागकीभरीवाणीकरिकें

येषांबिभर्म्यहमखंडविकुंठयोगमायाविभूतरमलांघ्रिरजः किरीटैः विप्रांस्तुकोनविषहेतयदर्हणांभः सद्यः पुनातिसहचं
द्रललामलोकान् ९ येमेतनूर्द्विजवरान्दुहतीर्मदीयाभूतान्यलब्धशरणानिचभेदबुद्ध्या द्रक्ष्यंत्यघक्षतदृशोह्यहिमन्यव
स्तान्गृध्रारुषाममकुषंत्यधिदंडनेतुः १० येब्राह्मणान्मयिधियाक्षिपतोर्चयंतस्तुष्यद्धृदः स्मितसुधोक्षितपद्मव
क्त्राः वाण्यानुरागकलयात्मजवद्गृणंतः संबोधयंत्यहमिवाहमुपाहृतस्तैः ११ तन्मेस्वभर्तुरवसायमलक्षमा
णौयुष्मद्व्यतिक्रमगतिंप्रतिपद्यसद्यः भूयोममांतिकमितांतदनुग्रहोमेयत्कल्पतामचिरतोभृतयोर्वि
वासः १२ ब्रह्मोवाच अथतस्योशतींदेवीमृषिकुल्यांसरस्वतीं नास्वाद्यमन्युदष्टानांतेषामात्माप्यतृप्यत १३

पुत्रकीसीनाईंस्तुतिकेकरतसंतोषनदैवैंकालहैजैसेंमेरेभृत्यनेंतौलोमारीऔरमैंजैवासोहितकीयोंजेसोजोकरैहैं
तिन्नैंमोहिवसकीयोंहै ११ तातेंमैंब्राह्मणयायमेरेअभिप्रायइन्नैंजान्योनहींसोअबजलदीहीतुम्हारेअपराधकोउचित
गतिपायकरिशीघ्रहीमेरेसमीपआवैगें यहमेरौअनुग्रहहै तातेंअबजलदीइनकौंविनाशकरायै १२ याभांतिहरिकी
ऋषिकुलकेयोग्यप्यारीवाणीकरिताहिस्वादलैकरक्रोधकरिदृषिसनकादिकतिनकोआत्मामैंतृप्तहोतभयो १३ १३

जाकैं आगे लक्ष्मी हूंकी सुंदरता गर्व दूरि भयौ है ऐसे तिनके मनमें ऐसौ विचार वेकौ जोग्य है बहुत से प्रभुता करि संयुक्त ओ मेरे महा देव केतुम्हारे लीये स्वर्गि प्रगट करै हैं ताइ देखैं कोई जिनकी अभ्यां हूं नही ऐसें सनकादिक प्रसन्न होय प्रिरनाय करि प्रणाम करत भये ४२ ता कमल लोचन भगवान के चरणारविंद कौ स्पर्श करि मिश्रित तुलसी ताकौ मकरंद में व्यौ सो पवन जब उनके नासाछि द्र में होइ अंतर भीतर भई तब तेतौ ब्रह्मानंद को उनको चित्त ओर सरीरकौं तौ भय करत भये ४३ ते सनकादिक सुंदरता में कासी है सन गसो हलको सनि ऐसे ही हरि को नासिका सो मुखारविंद देखि कें मनोरथ जिनके पूरण भए फेरि हरि कौ चरण कमल स्वरूप प्रणाम

अत्रोपसृष्टमिति चोत्स्मितमिंदिरायाः स्वनाभियाविरचितं बहुसौष्ठवाढ्यं मह्यं भवस्य भवतां च भजंतमंगं नेमुर्निरीक्ष्यनवितृप्तदृशो मुदा कैः ४२ तस्यारविंदनयनस्य पदारविंदकिंजल्कमिश्रतुलसीमकरंदवायुः अंतर्गतः स्वविवरेण चकार तेषां संक्षोभमक्षरजुषामपि चित्ततन्वोः ४३ ते वा अमुष्य वदनासितपद्मकोशमुद्वीक्ष्य सुंदरतराधरकुंदहासं लब्धाशिषः पुनरवेक्ष्य तदीयमंघ्रिद्वंद्वं नखारुणमणिश्रयणं निदध्युः ४४ पुंसां गतिं मृगयतामिह योगमार्गैर्ध्यानास्पदं बहुमतं नयनाभिरामं पौंस्नं वपुर्दर्शयानमनन्यसिद्धैरौत्पत्तिकैः समगृणन्युतमष्टभोगैः ४५

णि की मा में सो भा नाहि देखकरि आनंद में निमग्न होइ ध्यान करत भए ४४ जोग मार्ग न करि जो गति ढूंढिये हैं तिनकौं ध्यान करि सर्व तत्व दर्शनकौं रमायवे वारो सो पुरुष रूप दिखावे हैं स्वभाव सिद्ध जो अणिमादिक ऐश्वर्य तिन करि युक्त ता हरि की प्रानिकादिक अस्तुति करत भए ४५ हे प्रभो जो तुम दुष्ट जिन कौ चित्त तिनकौ हृदे मैं मासि मतहोपरि अंतरहित तो औ रहमारे ने अनके आगें अवतीन ती प्राप्ति भयौ तामें हमारे पिताने जब तुम्हारो स्वरूप स्यामउ हे उ हे प्रकाशियौ तब ही हमारी बुद्धि मैं प्राप्ति भए ४६

ऐसे वारी समै कमलनाभ भगवान सनकादिकनको अपराध मैं पार्षदन मैं कीयो यह जानके भलौ जिनको हर्ष लक्ष्मी
सहत वा स्थान मैं जात भए परमहंस महामुनीनके ढूंढ़वेकोयोग जो चरण तिनै चलावत ३७ सो भगवान उहां आए तिनै
सनकादिक देखत भए जिनके संग २ सेवक छत्र चमरादिक लीये आगे हैं और जो अपनी समाधि करि भजनीय फलसो चैत
न्य भए और हंस की सी जिनकी सोभा ऐसो जो व्यजन तिनकी अलकन जो पावन ताकर चलजो उज्वल और सोई भयो चंद्रमा

एवं देव भगवानरविंदनाभः स्वानां वीबुद्ध सदतिक्रममार्यहृद्यः तस्मिन्ययौ परमहंस महामुनीनामन्वेषणीय
चरणौ चलयन्सहश्री ३७ तंत्वागतं प्रतिहृतौपयिकं स्वपुंभिस्तेचक्षताक्ष विषयं स्वसमाधि भाग्यं हंसश्रियोर्व्यजन
योशिव वायुलोलच्छुभ्रातपत्रशशिकेसरसीकरांबु ३८ कृत्स्नप्रसाद सुमुखं स्पृहणीयधाम स्नेहावलोककलया हृदि सं
स्पृशंतं स्यामे पृथावुरसी शोभितया श्रिया स्वश्चूडामणिं सुभगयंतमिवात्मधिष्ण्यं ३९ पीतांशुके पृथुनितंबिनि विस्फुरंत्याकां
च्यालिभीर्विरुतया वनमालया च वल्गुप्रकोष्ठवलयं विनतासुतांसे विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमब्जं ४० विद्युत्क्षिप
न्मकरकुंडलमंडनार्ह गंडस्थलोन्नसमुखं मणिमत्किरीटं दोर्दंडखंडविवरे हरतापरार्ध्य हारेण कंधरगतेन च कौ

स्तुभेन अलंकारविलंकावितन नै गिरै हैं अंबुणका जापै ३८ सनकादिक और अपने पार्षद है जिनके सन्मुख निवीरकर
वेला घल गुणनके स्थान और प्रेम सहित कटाक्ष करि हृदय सुख देहै और स्याम पुष्ट जो वक्षस्थल ता विषै सोभित जो
लक्ष्मी ताकर स्वर्ग के चूडामणि की नाई स्थित जो अपनो लोक ता पसो भाग्ययुक्त करै है ३९ पृथुनितंबन पै जो पीतांबर
ता पै जो क्षुद्रघंटिका ताकर सोभायमान और भौरा जा पै गुंजार करै ता वनमाला युक्त मनोहर चूरामणिका युक्त गरुडके कंधा

नेवेचाह्योजुनिसनकादिक सबकेबडे वृह्माकेपहलेपुत्र देषनमैपांचवर्षकी जिनकीग्र अवस्था आत्मनजिनमैजानो तिनमैदेषिवेतिष्टी
आइदे निवारनकर नवारोकरतभऐं वेतोवालायनहैं परंतुवालकहैं उतांहिटाई असेउनकेतेजकीहांसीकरकेयेकहतभऐंतुमको
नहीं भगवान्वृह्मनदेवप्रतिकूलहैस्वभावजिनको ३० अतिसयएकुनगहुतै परिजिनदेवतानकेदेषत तरकेजे द्वारपालजननेरोकै
नवहरकेदर्शनमैं जिनकोमन भागवतनमैं ओरतेकछुक्रोधकरिकेभिनजिनकेनेत्रतेसनकादिक द्वारपालनसोंत्योवोलेतुरकीप
रिचर्याकरिएकांतआऐं भगवानधर्मतोईयताकेरतिवेवारे तिनमैतिहारोयहविषमस्वभावभागवतनतैं कहांतेविभ्रामरहितहरमैंतुम

उभयोज्ञ्युः कोवाईहैत्यभगवत्परिचर्ययोच्चस्तद्धर्मिणां निवसनां विषमस्वभावः तस्मिन्प्रशांतपुरुषेगतविग्रहेवां
कोवात्मवत्कुहकयोः परिसंकनीया ३० नह्यंतरं भगवतीहसमस्तकुक्षावात्मानमात्मनिनभोनभसीवधीरा पस्यंतियत्रयु
वयोःसुरलिंगनो किंव्युत्पादितं ह्युदरभेदभयंयतोस्य ३१ तद्वाममुष्यपरमस्यविकुंठभर्तुःकर्तुंप्रकृष्टमिहधीमहिमंदधीभ्यां
लोकानितोव्रजतमंतरभावदृष्ट्या पापीयसस्त्रयइमेरिपवोस्ययत्र ३२ तेषांमितीरितमुभावेवधार्यघोरंतंब्रह्मदंडमनिवारण
मस्त्रपूगै ३४ सद्योहरेरनुचरावुरुबिभ्यतस्तत्पादग्रहावपततामतिकातरेण ३५ भूयादघोनिभगवद्भिरकारिदंडोयोनौहरे
तसुरहेलनमप्यशेषं मावोनतापकलयाभगवत्स्मृतिघ्नो मोहेभवेदिहतुनौव्रजतोरधोधाः ३६

यहसंकाकरोतौ जेसेहमकपटीतैंमैसोमतिकोई औरकपटीप्रवेशाकरैं असैंकोनसंकाकरवेकोयोग्यहै ३२ समस्तविश्वजाकीकुक्षमेंताआत्मा
विषेविवेकीभेदनहींदेखेहैं जेसेघटाकासमठाकाशमैभेदनहीं तामैदेवतानकोसोजाकेचिन्ह ऐसेजोतुम तातुमने औरराजानकोजेसेमरवेमार
वेकोहैं तेसे उदरभेदयहहारलगावेईकहा ३३ सोयवैकुंठनाथनुमारेस्वामीतिनकोमहत्पनुमममरखहू तातुम्हारेकल्याणकरवेको याअपराध
मैंजोगयहहैं तातितुमविचारोहै अवतुमयावेकुंठलोकमैतेंजोलोकननिमैजाऊं जहांत्रमक्रोधलोभयेतीनोवैरीहैं ३४ ऐसेभस्रानकरहं जाको
निवारणनहीं तासनकादिकनकोसापसुनकेजयविजयजयहरषे पार्षद्रुपिके उनकेचरणनमैं दंडकीसीनाईगिरतभऐं ३५ हेब्रह्म
षितुमनेहमपापीनके अपराधमैंउचितजेदंडसोईकीयौ यामैतुमारोकछुअपराधनहीं सोहमकूंयहदाऊं जाकेभोगेतेहमारोसबपा
पजायं परंतुतुमारीकृपाकरनिमित्त अननापताकोजोलेस तकरहमनीचतेंनीचयोनिमैजाईं तोवीहरकोस्मरनभुलायवेकोमोह मोहतहरि

भा॰त॰
३८

जोकोई हमारे स्थित हैं जतांतरमैं अनुराग कर जो तै जिन नियमन कर तरके वल प्रेमीनैं हमारे तत्वा तरखेलापक जिनके स्वभाव परस्पर
अपने स्वामीके जे कथ्या तामें अनुराग ताकर विहूलता ताकर के जो आसन कौ लता ताकर पुलकावनते अंग जिनकौ ने वालोकमैं जातें २४
जाकोलोकमैं विश्वके गुरु भगवान विराजै तै और भुवन जालोक कौ दंडोत करै है और दिव्य तें विचित्र देवनानके विमान जामें कांतिक
रसोभायमान ऐसे पूर्वलोकमैं योगमायाके वलकर जाय सनकादिक मुनि वडे आनंद कौ प्राप्त होत भए २५ ता लोकमैं सनकादिक छै ६
डोढीन पै ये कछु न अटके ताप रे छै सात ई डोढी पै जाय देखत वतिने देखत भए वरोवरकी जिनकी अवस्था गदा लिये वहुत मोलके वाजे

तद्विश्वगुर्वधिकृतं भुवनेकवंद्यं दिव्यं विचित्र विवुधाग्नि विमानशोचिः आपुपरां मुदमपूर्वमुपेत्य योगमायावलेन मुनयस्त
द्थोवकुंठं २४ तस्मिन्नतीत्य मुनयः षडसज्ज माना: कक्षाः समान वयसावथ सप्तमायां देवावचक्षत गृहीत गदौ परार्ध्य के
यूर कुंडल किरीट विटंकवेषौ मत्तद्विरेफवनमालिकया निवीतौ विन्यस्तयासित चतुष्टय वाहुमध्ये वक्त्रं भ्रुवा कुटिलया स्फुट
निर्गमाभ्यां रक्तेक्षणेन च मनाग्रभसं दधानौ २६ द्वार्येतयोर्निविविशुर्मिषतोरपृष्ट्वा पूर्वा यथा पुरट वज्र कपाटिका या सर्वत्र
ते विषमया मुनयः सुदृष्ट्या ये संचरंत्यविहिता विगताभिसंका २७ तान्वीक्ष्य वातरसनांश्चतुरः कुमारान् वृद्धान् दशार्द्ध
वयसो विदितात्मतत्वान् वेत्रेण चास्खलयतामतदर्हणांस्तौ तेजो विहस्य भगवत्प्रतिकूलशीलौ २८ ताभ्यां मिषत्स्वनि
मिषेषु निषिध्यमाना स्वर्हत्तमा ह्यपि हरेः प्रतिहारपाभ्यां ऊचुः सुहृत्तम दिदृक्षित भंग ईषत्कामानुजेन सहसा त उपप्लुताक्षाः

वंद कुंडल मुकट इनकर सुंदर जिनके वेष हैं २७ मतवारे भौरा जापै गुंजार करैं ऐसी वनमाला ता पहरे नीलकटा छ्या:
चार भुजानके वीचमैं राषी ताकर भाम ऐसे दरसे २८ सनकादिकनको भीतर आवते देषि टेडी भ्रकुटी कर फलाऐतें नाषाफुट जि
नने और लाल नेत्र करि एक कछु कामको धारण करै हैं २९ सुवर्ण कर अलंकृत वाज्रमय जिनमैं कपाल ऐसे छै ६ द्वारन
पै जैसें विना पूछे शनकादिकनने प्रवेश कीयौ ऐसेई उनके देषत सातवी डोढीमैं प्रवेश करत भए एतौ सव ओर तेजामैं विष
डर भई ऐसी छ्वकर विश्वमैं विचरे हैं कहत जिनकौ संका नहीं ऐसा जिनकी दृष्टि होती भई २९

हरकेचरणनमैंजोप्रणाम तिनमेमानोकरदेवैं जेवैडूर्यके मरकत मणिके ओरसुवर्णकेजेविभागतिनकर संकीर्ण उहलोकहैं नहापार्षदन
कीस्त्री वडेजिनकेकटतटमुखकानकरसोभितजिनकेहृदयहास्यमैंजिनकोमन पार्षदनकोहावनकर जोगुणनकरसकनभयो २० जहांमूर्ति
मतिलक्ष्मीचरणारविंदनमैंनूपुरकोपादझकरत चांचलजानेहर जोगुणनकरसकनभयो २० दुरकहो ऐसीलीला कमलहाथमैंलीयैं सुवर्णि
करयुक्त जोस्फटकमणिकोघरनामेमानोवुहारेदवैं ऐसीदीसैहैं जालक्ष्मीकेअनुग्रहकेलीयैं ओरदेवतायत्नकरैहैं २१ सखीनकरयुक्तलक्ष्मी

श्रीरूपिणीक्वणयतीचरणारविंदंलीलांवुजेनहरसद्मनिमुक्तदोषा संलक्ष्यतेस्फटिककुड्यउपेतहेम्नसंमार्जतीवयदनुग्रहणे
न्ययत्नः २० वापीषुविद्रुमतटास्वमलामृताप्सुप्रेष्यान्वितानिजवनेतुलसीभिरीशंम्अभ्यर्चतीस्वलकमुन्नसमीक्ष्यवक्रमुच्छेषितंभ
गवतेत्यमतांगयच्छ्री २१ यन्नव्रजंत्यघभिदोरचनानुवादाच्छृण्वंतीयेन्यविषयाः कुकथामतघ्नीः यास्तुश्रुताहतभगैर्नृभीरात
सारास्तांस्तान्क्षिपंत्यसरणेषुतमःसुहंता २२ येभ्यर्थितामपिचनोनृगतिंप्रपन्ना ज्ञानंचतत्त्वविषयंसहधर्मयत्रा नाराधनंभग
वतोवितरंत्यमुष्यासंमोहताविततयावतमायपाते २३ यच्चव्रजंतनिमिषामृषभानुवृत्यादूरेयमाह्युपरिनःस्पृहणीयसीला
भर्तुर्मिथासुयशसः कथनानुरागवैक्लव्यवाष्पकलयापुलकीकृतांगाः २४ २५ २६

अपनेकमलनकेवनमैं तुलसीनकरहरिकीपूजाकरत मुंगानकरकै जिनकेतटनिर्मलजिनकेजल ऐसीवावरीनमैंसुंदरजाभैअ
लकऊंचीजामैनासिका ओरमुखकोदेखअतोभाग्य यहभगवाननैचुंवनकीयोहैं ऐसेमानैहैं २२ जोकेकर्मपापनकोनासकरवेवा
रो हरगुणानुवादनुमैंव्यतिरिक्त ओरकामअर्थकीखोटीकथा मनकीनासकरवेवारीतिनेसुनैहैं तेनहीजावैं भाग्यहीनमनुष्य
नसुनी ओजानकीपुरुषार्थहरवेवारीवेकुकथा घोरनर्कनवोसुनवेवारेनकुडारैहैं २३ हंसाकहैहैं तेदेवताहोतभए जाकीप्रार्थनाकु
रैहैं ऐसेमनुष्यहैं धर्मसहिततत्त्वविषयज्ञानतें ताकोपाईजोभगवानकीआराधनानहीकरैहैं तेइहरकोविस्तीर्णमायाकरमोहितहै २४

तेऽग्रकहिनाभगवान्वैकुंठनाथकें वैकुंठसवलोकजाकोंनमस्कारकरैहै ऐसौजातभए १३ जालोकमेंसवपुरुषवैकुंठनाथकीसीछ-
नकीमूर्तिऐसेहीरहैहैं जेनिस्कामधर्मकरकैहरिकोंआराधनकरैहैं तेहीउहांरहैहैं १४ जालोकमैंनिश्रेयसनामवनहै ताकेविषेवेदांतन
करिवेद्य एकभगवानविराजेहैं धर्मसूर्तिप्रभुः सत्वरूपधारणकरि अपनेजनकौआनंददेतविराजैहैं १५ जालोकमेंनिश्रेयसनामवनहै
सवऋतुनकीजामेसोभा ऐसेकल्पवृक्षनकरिशोभायमान मानोमूर्तिमानकैवल्यवृक्षहीहै १६ जाकौंलोकनमेंस्त्रीनसहित देवता
लोकनकेपापदूरकरिवेवारेहरिकेचरित्रनकौगामेहैं औरजलकेभीतरविकसीजोमकरंदयुक्तवसंतकीलता तिनकेगंधकरिखंडि

तथेदंभगवंल्लोकोवैकुंठस्यामलात्मनः यत्रवैकुंठनिलयंसर्वलोकनमस्कृतं १३ वसंतियत्रपुरुषासर्वेवैकुंठमूर्तयः ये
निमित्तनिमित्तेनधर्मेणाराधयन्हरिं १३ यत्रचाद्यःपुमानास्तेभगवान्शब्दगोचरा सत्वंविष्टभ्यविरजंस्वानांनोमृडय
न्वृषः १४ यत्रनैश्रेयसंनामवनंकामदुघैर्द्रुमैः सर्वर्तुश्रीभिर्विभ्राजत्कैवल्यमिवमूर्तिमत् १५ वैमानिकाःसललना
श्चरितानियत्रगायंतिलोकशमलक्षपणानिभर्तुः अंतर्जलेनुविकसन्मधुमाधवीनां गंधेनखंडितधियोप्यनि
लंक्षिपंतः १६ पारावतान्यभृतसारसचक्रवाकदात्यूहहंसशुकतित्तिरिबर्हिणांयः कोलाहलोविरमतेचिरमात्रमुच्चैं
र्भृंगाधिपेहरिकथामिमगायमाने १७ मंदारकुंदकुरवोत्पलचंपकार्णपुन्नागवकुलांवुजपारिजाताः गंधेर्चिते
तुलसिकाभरणेनतस्यायस्मिन्तपःसुमनसोवहुमानयंति १८ यत्संकुलंहरिपदानतिमात्रदृष्टैर्वैडूर्यमारकतहेम
मयैर्विमानैः येषांवृहत्कटितटाःस्मितशोभिमुख्यः कृष्णात्मनांनरजआदधुरुत्स्मयाद्यैः १८

तेसेवुद्धिनिनकी ऐसेहहैं परिवारपावनकोंतिरस्कारकरिहरिहीकौभजनकरैहैं १७ जवमतोभृंगराजऊंचेस्वरकरिकथासुनावैहैं
तवपरेवा कोकिला सारस वक चकवा चातक हंस तोता तीतर मयूर इनकौंजो कोलाहलसोवंदहोइरहैहैं यातेंजहांसमरमानंदीपरमेय
रपक्षपक्षीनकों हरिकथाश्रवणकरिआनंदहोहै १८ औरतुलसीकेआभरणपतिहैं जवराकेस्तुगंधकीहरिवडाईकरैहैं सवऔर
तिननीपुष्पनकीजाति मंदार कुरव कुंद उत्पल चंपा चमेली अरणीपुन्नाग नागकेसर वकुल अंवुज कमल पारिजात कल्पवृक्षऔ
रहूअनेकहैंपुष्प तेसवतुलसीहीकीवडाईकरेहैं १८

भस्महीन हैं आत्मानी हैं ते जाके लोकविलास रूप चरित्र कौं हसी करे हैं जिन जननि कुत्तान कौं भोजय रूप सरीर वस्त्र माला आभरण अनुलेपन करि अपनो मान लीयो है २७ ब्रह्मादिक जाकी करी मरजाद कौं पाले हैं जाकौ करीयो है विश्व है माया जाकी आज्ञाकारी है वारी ताकौं पिशाचवत् जो आचरण देखौ तो बडेन कौं चरित्र अतर्क्य है २८ ऐसे पतिनें बहुत समझाई हू परंतु कामदेव ने छली है इंद्री जाकी सो आपु वस्त्र ताकौ गहे लाज रहित भई वेश्या की सी नाई निर्लज्ज होइ २९ सो कश्यपजी स्त्री कौ कुकर्म में हठ देखिकें देव कौं दंडोत करवा कौं लें एकांत में जाय संग करत भए ३० तापीछे अस्नान करि प्राणायाम करि मौन लेके ब्रह्म ज्योति कौ ध्यान करत गायत्री कौं ध्यान करत भए ३१ दिती तो बाहु

हसंति यस्याचरितं हि दुर्भगाः स्वात्मन्रतस्याविदुषः समीहितं यैर्वस्त्रमाल्याभरणानुलेपनैः श्वभोजनं स्वात्मतयोपलालितं २७ ब्रह्मादयो यत्कृतसेतुपाला यत्कारणं विश्वमिदं च माया आज्ञाकरी यस्य पिशाचचर्या अहो विभूम्नश्चरितं विडंबनं २८ मैत्रेय उवाचः सैवं संविदिते भर्त्रा मन्मथोन्मथितेंद्रिया जग्राह वाससो ब्रह्मर्षेर्वृषलीव गतत्रपा २९ स विदित्वाथ भार्यायास्तं निर्बंधं विकर्मणि नत्वा दिष्टाय रहसि तयाथोपविवेश ह ३० अथोपस्पृश्य सलिलं प्राणानायम्य वाग्यतः ध्यायन् जजाप विरजं ब्रह्म ज्योतिः सनातनं ३१ दितिस्तु व्रीडिता तेन कर्मावद्येन भारत उपसंगम्य विप्रर्षिमधोमुख्यभ्यभाषत ३२ दितिरुवाचः न मे गर्भमिमं ब्रह्मन् भूतानामृषभोवधीत् रुद्रः पतिर्हि भूतानां यस्याकरवमंहसं ३३ नमो रुद्राय महते देवायोग्राय मीढुषे शिवाय न्यस्तदंडाय धृतदंडाय मन्यवे ३५

तिन कर्म करि लाज लीनी होय कश्यपजी के नीचे करनी चौ मुख जाको सो यह बोली ३२ सब प्राणीन के राजा महादेवजी मेरे गर्भ कौं मति मारौ जाकौ मैं अपराध कीयो है ३३ वा रूप कौं मेरी प्रणाम है जो बडे देवतान के देवता उग्र सकाम कौं फल देवे वारे निष्काम न कौं मोक्ष ताकौं है दंड जिनने और दुष्टन के उपर धारण कीयो है दंड जिनने ३४ सो मेरी बहन के पति बडो जिन कौं अनुग्रह सो आराधन है कृपा करिवे कौं जोग है मछीने प्रसन्न होउ जो शिवजी के पति है उनहू के घर में स्त्री है वेद स्त्री की विद्या कौं जाने है ३५

जा स्वामी कौ आश्रय लें ग्रौर आश्रमनकौं दुर्जय ईश्वरी रूप वे तीनकौं हम सरन मैं जीतै हैं जैसे गरुड पतिनकौं जीतै हैं १८ हे गुरेस्वरी तातें हिम प्रत्युपकारकरी करिवे कौं समर्थ हैं से कहौ आन्वल नरि भोग्य प्रियप ग्रोर हरेनेकहौ ते समर्थ होइगो २० सो मे पुत्र स्तु त्वोत्पकी तेरी कामना पूरी करस्यौं परंतु जो पुरुष मेरी निहान करें से ध्यान करत देष तातें दोघ दीधीये धरि २१ यत वो लोक घोर है इनकौं घोरही सेहें यामें महादेव के अग्र चर भूतप्रेत डोले हैं २२ हे साध्वि या संध्या में भगवान प्रजान के पालनहारे महादेवजी भूत प्रेत नकौं संग लें नादी या पे चढे डोले हैं २३ मसान में भो वा तन मंडली तामें जो तांडव जारि रमज औरफैली है बिजरी सी जटा समू

यमाश्रित्येन्द्रियारातीन् दुर्जयानितराश्रमैः वयं जयेम हेलाभिर्दस्यूनर्णवपतिर्यथा १९ न वयं भव वस्तां वां मग्नसुर्गजे ग्रारि: अप्याऽप्राबांव्यधनिये बान्धेयएण ग्रघवः २० अथापि काममेतं ते प्रजात्यै वरये वरम् यथा मां नाति वाचं तिम हर्षेप्रतिपालया २१ एषा घोरतमा वेला घोराणां घोरदर्शनः चरंति यस्यां भूतानि भूतेशानुचराणि ह २२ तस्यां साध्वि संध्यायां भगवान् भूतभावनः परीतो भूतपार्षद्भिर्वृषेणाटति भूतराट् २३ श्मशानचक्रानिलधूलिधूम्रविकीर्णविद्योतजटाकलापः भस्मावगुंठामलरुक्मदेहो देवस्त्रिभिः पश्यति देवरस्ते २४ न यस्य लोके स्वजनः परो वा नात्यादृतो नोत कश्चिद्विगर्ह्यः वयं व्रतैर्यच्चरणापविद्धामाशास्महेऽजां बत भुक्तभोगाम् २५ यस्यानवद्याचरितं मनीषिणो गृणंति विद्यापटलं विभित्सवः निरस्तसाम्यातिशयोऽपि यत्स्वयं पिशाचचर्यामचरद्गतिः सतां २६

रूजा की माया करि आवत भिमेल सो नेकी सी है देहजाकी ऐसे तेरो देवर तीन नेत्रन करि देषे हैं २४ जा शिवजी कौं लोक मे कोई प्यारअपने नपरहे नकोई आदर देवो है ननिंदा करिवे लायक और जाके चरन न सौं निर्माल्य की सी नाई छुटि त्याग जो विभूत ताहि हम ने मरवे की आराधना करि यत मत प्रसाद है ऐसे हम व्रत करे है २५ जो अविद्या के कोई निकस्यो चाहे हे ते विषयाशक्ति कन्या जाके आचरण को गृहण करे हैं और न कोई जाके समान अधिक वैसे हैं साधन की गति है परंतु पिशाच की सी नाई विचरे है २६

हे ब्रह्मन् यह तुम्हारे रोकी पे काम धनुषबानकीयें मोगरीधिनीकौं कपावैहै जैसे मतराथीकौं फालोकपावैहै ९ सो पुत्रवती सो तिनकी समृद्धि करि जरत जो मैं तामो पे अनुग्रह करौ १० भरता जिनकौं मान राखैहैं तिनको नकौ यश लोकन मैं व्यापिहै औरतुमसरीके पति जिनके पुत्ररूप होइ उपजै तिनकी नौकौ कहावा नहै ११ पहिलै हमारे पिता दक्ष वेटीन मैं वडो प्यार हम सो यो पूछत भयो है पुत्री तैं तुम कौन कौन कौं वरोगी १२ सो हमारो तेरै हैन कौ भाव तुम मैं देखि करि जो तुमारी पालसो राजीभई तिनै तुमकौं देत भयो १३ हे कमललोचन तातै मेरी कामना पूरन करो तुमसरीके महानुभावन मैं मोसरीके दीनन कौं दया पालैवो व्यर्थ नहीं जात है १४ हे विदुर ऐसे दीन वचन विनती

दितिरुवाच: एष मां त्वत्कृते विद्वन् काम आत्तशरासनः दुनोति दीनां विक्रम्य रंभामिव मतंगजा ९ तद्भवान् दह्यमानायां सपत्नीनां समृद्धिभिः प्रजावतीनां भद्रं ते मय्यायुङ्क्तामनुग्रहं भर्तर्याप्तोरुमानानां लोकानाविशते यशः पतिर्भवद्विधो यासां प्रजया ननु जायते १० पुरा पिता नो भगवान् दक्षो दुहितृवत्सला कं वृणीत वरं वत्सा इत्यपृच्छत नः पृथक् ११ स विदित्वात्मजानां नो भावं संतानभावनाः त्रयोदशाददात्तासां यास्ते शीलमनुव्रताः १२ अथ मे कुरु कल्याण कामं कंजविलोचन आर्तोपसर्पणं भूमन्नमोघं हि महीयसि १३ इति तां वीर मारीचः कृपणं बहुभाषिणी प्रत्याहानुनयन् वाचा प्रवृद्धानंगकश्मलं १४ कश्यप उवाच एष तेऽहं विधास्यामि प्रियं भीरु यदिच्छसि तस्याः कामं न कः कुर्यात् सिद्धिस्त्रैवर्गिकी यतः १५ सर्वाश्रमानुपादाय स्वाश्रमेण कलत्रवान् व्यसनार्णवमत्येति जलयानैर्यथार्णवं १६ यामाहुरात्मनो ह्यर्धं श्रेयस्कामस्य मानिनि यस्यां स्वधुरमध्यस्य पुमांश्चरति

करैहैं काम व्यथा जानै वडीहैं ता यसं धाकाल वाइवे केलीयें वकाई करत योंबोले १५ हे भीरु जो तुम इच्छाकरैहै सो मैं करुंगो तेरो प्रिय जातें अर्थ धर्म काम सिद्धि होहै ताकौं प्रिय ऐसो कौन करै १६ ये तीनौं कुरुषरूप अपने गृहस्थाश्रम करि सव आश्रमन कौं अन्नादिक दान करत दुःखसमुद्र के पार होहैं और नहूं कौं कय हैं तिनारेहैं और अपनी ऐसें नावन करि समुद्र तरीये है १७ अपनी कल्याण चाहत जो पुरुष ताकौं पत्नी कौं अर्द्धांगी कहेहैं जा पै घर कौ वोझ धरय हपुरुष निश्चिंत विचरैहै १८

उद्धार्थनकोसार ज्ञानवेवारोंऐसोजोनतैंजोपरर्वंवृतांतकैमध्य भगवतकथारूप अमृत समिको कहिवेवारे नारद्जीरूप अंजुलसो पानकरिजोविरामकोंप्राप्तिहोइ एकपलबिना पशूहैंभगवतकथामेप्रीतिनहीहोहै ५० इतिश्री भागवतेतृतीयस्कंधे त्रयोदशोध्याय: १३ विदुरजी सोंयाभांतमैत्रेयजीनेवर्णनकरीजोवाराहजीकीकथातासैंतृप्तिनहीभए सोअधिककरमैत्रेयजीसोंफिरपूछतभए १ हेमैत्रेयजीतांवाराहजीनें आदिदैत्यहिरण्याक्षमारायहहमनैंसुनीहै २ अपनीदंष्ट्रापैधरिकेलीलाकरपृथ्वीकोंउद्धारकरतजोवाराहजी औ हिरण्याक्षतिनकोंयुद्धकोंनहेतुतेभयो यहमेरेआगेकहो ३ मैत्रेयजीकहैहैं हेवीरतुमनेंभलीपूछी जोमनुष्यनकेमृत्युपाशकेकाटिवेवारी

कोनामलोकेपरमार्थसारविदुरोहरेःकथानांभगवत्कथासुधां आपीयकर्णांजलिभिर्भवायहा महोविरमेतविनानरेतरं ५०
इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेमैत्रेयविदुरसंवादेत्रयोदशोध्याय:१३ शुकउवाच: निशम्यकौषारविणोपवर्णितां हरेःकथांकारणसूकरात्मना पुनःसपप्रच्छतमुद्यतांजलिर्नचातितृप्तोविदुरोधृतव्रतः १ विदुरउवाच: तेनैवतुमुनिश्रेष्ठ हरिणायज्ञमूर्तिना आदिदैत्योहिरण्याक्षोहतइत्यनुशुश्रुम २ तस्यचोद्धरतःक्षौणींस्वदंष्ट्राग्रेणलीलया दैत्यराजस्यचब्रह्मन्कस्माद्धेतोरभून्मृधः ३ मैत्रेयउवाच: साधुवीरत्वयापृष्टमवतारकथांहरेः यत्त्वंपृच्छसिमर्त्यानांमृत्युपाशविशातनी ४ ययोत्तानपदःपुत्रोमुनिनागीतयार्भकः मृत्योःकृत्वैवमूर्ध्न्यंघ्रिमारुरोहहरेःपदम् ५ अथात्राप्यीतिहासोयंश्रुतोमेवर्णितःपुरा ब्रह्मणादेवदेवेनदेवानामनुपृच्छतां ६ दितिर्दाक्षायणीक्षत्तर्मारीचंकश्यपंपतिम् अपत्यकामाचकमेसंध्यायांहृच्छयार्दिता ७ इष्ट्वाग्निजिह्वंपयसापुरुषंयजुषांपतिं निम्लोचत्यर्कआसीनमग्न्यागारेसमाहितम् ८

हरिजीअवतारकथाताहिपूछीहै ४ नारदजी नेंगाईजोकथाताकरिउत्तानपादकोबेटाध्रुवमृत्युकेमाथेपैपाउंदैहरिकेपरंपदकूंप्राप्तहोतभयो ५ इहांमैंएकइतिहासकहूंजोहे देवतानकेपूछेसतें ब्रह्मदेवतातानैंकह्योहै ६ विदुरदक्षकीबेटीदितिजाकेमनोकामनाकामकरपीडितसंध्यासमयमें मरीचकेपुत्रकश्यपतिनकोंकामनाकरतीभई ७ अग्निजाकीजिह्वा पतितनकेपतिभगवान्कोंपूजनकरसूर्यकेअस्तसमयमेंअग्निहोत्रके घरमेंबैठेतिनसोंयहबोली ८

यह तुम्हारी श्रीदेह सो ऐसो बर जगमगात है जैसे शोभा सम्भे अर्थ यह मानो है सब गीतासि घर देह तुम कर समति पायो तुम दंडोल गरे हैं
ज्ञा मैं तुम अपने तेज ऐसें धरत भए जैसें अरणी मैं अग्नि ४२ रसातल तें पृथ्वी कों लायवो यह तुम बिना और कोन करि सके सो
विश्व कों विस्मय रूप तुम जातुम मैं परंतु आश्चर्य नहीं सो तुम माया कर अति विस्मय रूप या विश्व कों सर जत भए ४३ वेदमय अपनो
रूप प्रगट कीं जो हम तातुम ने केशवालन कायपिच जो बिंदु तिन कर हम जन लोक तप लोक वासी तिन के पवित्र कीये ४४ अपार
कर्म जो तुम तातु कर्म न को पार पायो चाहै सो भ्रष्टबुद्धि है जा तुम्हारी जोग माया के गुण जोग करि सब विश्व मोहित होइ रह्यौ है सो तुम

त्रयीमयं रूपमिदं च शौकरं भूमंडलेनाथ दता धृतेन ते चकास्ति शृंगोढघनेन भूयसा कुलाचलेंद्रस्य यथैव विभ्रमः ४२ सं
स्थापयैनां जगतां सतस्थुषां लोकाय पत्नीमसि मातरं पिता विधेम चास्यै नमसा सह त्वया यस्यां स्वतेजोग्निमिवारणावधाः ४३
कः श्रद्दधीतान्यतमस्तव प्रभो रसां गताया भुव उद्विबर्हणम् न विस्मयोसौ त्वयि विश्वविस्मये यो मायये(दं) ससृजेतिविस्मय
म् ४४ विधुन्वता वेदमयं निजं वपुर्जनस्तपःसत्यनिवासिनो वयम् सटाशिखोद्धूतशिवाम्बुबिंदुभिर्विमृज्यमाना भृशमीशपा
विताः ४५ स वै बत भ्रष्टमतिस्तवैष ते यः कर्मणां पारमपारकर्मणः यद्योगमायागुणयोगमोहितं विश्वं समस्तं भगवान्वि
धेहि सं ४६ मैत्रेय उवाच इत्युपस्थीयमानस्तै र्मुनिभि र्ब्रह्मवादिभिः सलिले स्वखुराक्रांत उपाधत्तावितावनिम् ४७ स इत्थं
भगवानुर्वीं विष्वक्सेनः प्रजापतिः रसाया लीलयोन्नीतामप्सु न्यस्य ययौ हरिः ४८ य एवमेतां हरिमेधसो हरेः कथां सुभद्रां
कथनीयमायिनः शृण्वीत भक्त्या श्रवयेत वोशतीं जनार्दनोस्याशु हृदि प्रसीदति ४८ तस्मि
न्प्रसन्ने सकलाशिषां प्रभौ किं दुर्लभं ताभिरलं लवात्मभिः अनन्यदृष्ट्या भजतां गुहाशयः स्वयं विधत्ते स्वगतिं परः पराम् ४८

हमारे कल्यान करो ४५ ऐसे वेदवादी मुनिन्ह स्तुति कीये भगवान अपने खुरन करि और अक्रांत जो जलता मैं पृथ्वी को राषत भए ४६ सो
भगवान ऐसें रसातल तें लीला कर लाये जो पृथ्वी ताहि जल मैं राषि अपने धाम को जात भये ४७ यह बड़ी माया वी हरि की मंगल रूप कथा
ताहि भक्ति करि जो सुनैं सुनावै तापे हरि प्रसन्न होत है ४८ और सब मनोरथन के दैन वारे जब हरि प्रसन्न भए तब दुर्लभ कहा और तुच्छ आसी

हे जज्ञमूर्त्ति तुमने वडो उत्कर्ष प्रगट कीयो वेदमयी मूर्त्ति धारण करी ता तुम्हें दंडोत है ३४ यज्ञ जो तिहारो रूप सो दुर्जनन कौं विना तिन कौं दु
राधर्ष जानीं त्वचा मै छंद रोमन मैं वर्हि दृष्टि में आज्य अंघ्रि मैं चातुर्होत्र ३५ स्रुक् तुंड तिहारे मुख मै है स्रुवा नासिका मै है इडा उदर मै
चमसा कर्णरंध्र मै है प्राशित्र मुख में ग्रसन मैं ग्रह और अग्निहोत्र है सो तुम्हारो चर्वण है ३६ दिक्षा है सो वारंवार भिस तर्है उपसद
ग्रीवा मैं है सोल रोसन तोषि है राछेहादे प्रवर्ग्य जिह्वा है प्रायवसथा क्रतुशिर है चितितुम्हारे प्राण है ३७ सोमरेत है सुत सवनादि स्थितरे:
धातु तुम्हारे संस्थाभेद है प्राकारिक सर्वत्र सब सरीर संधि है तुम सब यज्ञ क्रतुरूप जाकु इष्टानेरि बंधन जाको ३८ सो तुम्हें दंडोत है:

ऋषिरुवाच: जितं जितं तेजित यज्ञभावन त्रयीतनुं स्वां परिधुन्वते नमः यद्रोमगर्तेषु निलिल्युरध्वरास्तस्मै नमः कारणसू
कराय ते ३४ रूपं तवैतन्ननु दुष्कृतात्मनां दुर्दर्शनं देव यदध्वरात्मकं छंदांसि यस्य त्वचि वर्हिरोमस्वाज्यं दृशि त्वंघ्रिषु चातु
र्होत्रं ३५ स्रुक् तुंड आसीत्स्रुव ईश नासयोरिडोदरे चमसा कर्णरंध्रे प्राशित्रमास्ये ग्रसने ग्रहास्तु ते यच्चर्वणं ते भगवन्नग्नि
होत्रं ३६ दीक्षानुजन्मोपसदः शिरोधरं त्वं प्रायणीयोदयनीयदंष्ट्रः जिह्वा प्रवर्ग्यस्तव शीर्षकं क्रतोः सभ्यावसथ्यं चितयोसवो
हि ते ३७ सोमस्तु रेतः सवनान्यवस्थितिः संस्थाविभेदास्तव देव धातवः सत्राणि सर्वाणि शरीरसंधिस्त्वं सर्वयज्ञक्रतुरि
ष्टिबंधनः ३८ नमो नमस्तेखिलमंत्रदेवताद्रव्याय सर्वक्रतवे क्रियात्मने वैराग्यभक्त्यात्मजयानुभावितज्ञानाय विद्यागुर
वे नमो नमः ३९ दंष्ट्राग्रकोट्यां भगवंस्त्वया धृता विराजते भूधर भूः सभूधरा यथा वनान्निःसरतो दता धृता मतंगजेंद्रस्य सपत्र

सो तुम सब मंत्रानि रूप हो सर्वयज्ञ रूप हो क्रियात्मा हो अरु वैराग्य भक्ति करि चित्त स्थैर्य ता करि साक्षात्कृत जो ज्ञान ता करि लख परो
और ज्ञान करवे वारे गुरू हो ता तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ३९ हे भगवान् दंष्ट्रा के अग्रभाग मैं तुमने धरी जो पृथ्वी पर्वतन सहित सो
ऐसी सोभा देत है जैसें जल मै तैं निकस्यो जो हाथी ताने दांत पै पत्र सहित कमलिनी जैसे सोभा देहै ४० हे नाथ भूमंडल जो तुम्हा
रे दांत पै धारण करो ता करि वेदत्रयीमय पशु सूकर रूप वहोत सोभा देइहै जैसें शिखर के ऊपर धर्यो जो दरवाजो ता करि जैसें पर्वत सोभा

घात्सकरिपृथ्वीकोएदवोक्तंसंघन नामकोंशत्रयत्‌परंतुयत्नमेंजिहें सोएकजीवोदंष्ट्राअैसेहें परंतुअस्तुतिनरतजोब्रालणतिनकोंमलद्दिए। द्रीव समुद्रकेजलमेंप्रवेशनरत भए २८ वज्रहतेकठोरजोभगवानकोंश्रृंगताकेगिरवेकेवेगिकरदूटीहेकुरदजाकी अैसेसमुद्रयादं करनपैलीजोवडीतरंग तेईभईभुजाजिनेंउद्दाय दुदोयालोइप्रप्नावेलग्यो हेयज्ञेस्वरमेरीरक्षाकरो २९ अपारजोसमुद्रकोंजलताहितिरा स्कारकरतरविहीतरत आगेंआयपृथ्वीकोदेषतभयें जोजीवनकेआधारपृथ्वीनाहिप्रलैमेंसोपेंचातन आपउदमेराषतभए ३० अवजलमेंडूवीजोपृथ्वीताहिआपनीदंष्ट्रापेराषिराषरसातलतेंचालिउठाइवहोनप्राभादेतभयो उहांगहलिंयेंहिरण्याक्षआयोताहि

प्रागेनपृथ्व्याःपदवीं जिघ्रन्क्रोडापदेशः स्वयमध्वरांगः करालदंष्ट्रोप्यकरालदृग्भ्या उदीक्ष्य विप्रान्गृणतोविशत्कं २८ सवज्रकूटांगनिपातवेगविशीर्णकुक्षिस्तनयन्नुदन्वात उत्सृष्टदीर्घोर्मिभुजैरिवार्त्तश्चुक्रोशयज्ञेश्वरपाहिमेति २९ खुरैः क्षुरप्रैर्दरयंस्तदाप उत्पारपारंत्रिपरूरसायां ददर्शगांतत्रसुषुप्सुरग्रेयांजीवधानींस्वयमभ्यधत्त ३० स्वदंष्ट्रयोद्धृत्यमहीं निमग्नां सउत्थितःसंरुरुचेरसायाः ३१ तत्रापिदैत्यं गदयापतंतं सुनाभिसंदीपिततीव्रमन्युः जघानरुंधानमसह्यविक्रमं सलीलयेभं मृगराडिवांभसि ३२ तद्रक्तपंकांकितगंडतुंडोयथागजेंद्रोजगतींविभिंदन् ३२ तमालनीलं सितदंतकोट्याक्ष्मामुत्क्षिपंतंगजलीलयांग प्रज्ञायबद्धांजलयोनुवाकैर्विरंचिमुख्याउपतस्थुरीशं ३३

चक्रवतहैतीक्ष्णजोधारजाकी अैसेभगवानमारतभए ३१ सिंहजैसेंहाथीनकोंमारैहें अैसेंवडोंजाकोंपराक्रमताहिहिरण्या क्षकोंलीलाकरिमारि वाकोलोहूकीकिंडनमरकेअैतिजहेंकपालओरचोंचजाकी अैसेभगवानवहोतसोभादेतभए जैसेंगजराज पृथ्वीकोंबिदीर्णकरिगेरुकरिरंगेउजाकीअग्रहरएभईसोसोभादेतेहैंतेसें ३२ तामालसरसनीलोजाकोंवर्णहाथीकीसीलालाकरि पृथ्वीकोंलीयेंआवेहें स्वेतदंतकेअग्रभागपेंधरिजाहरिकोजानकें ब्रह्मादिकहाथजोरकेवारतजो कीप्रस्तुतिकरतभए ३३

तावल्लोकेदेखतें एक छिनमें गजमात्र होत भयो सो बडो अचंभो भयो १९ सो वाराहजी को स्वरूप देखकरि मरीच्यादि ब्राह्मन लए मनसहित स्वायंभुमनु
सहित चित्तकै नाना तरह करत भये २० यह कहा है सूकर के व्याज सो दिव्य प्राणी है और हे बडो आश्चर्य है मेरी नासिका में ते निकस्यो २१ पहिले तो मैंने अंगुष्ठ
के प्रमाण पोषाण सो देख्यो और एक छिन में बडे पाषाण के सो होइ गयो सो वाराह रूप निश्चय भगवान तो है मेरे मन को मोहत है २२ ऐसे पुत्रन सहित ब्र
ह्मा आप ने मन में विचारें हैं इतने ही में परवत सरीके भगवान् यज्ञपुरुष गर्जत भयो २३ सो गर्जना करि करि ब्रह्मा को आनंद देत भये और उ
न ब्राह्मनन हू को जो गर्जना करि की दसो दिशान में छाइ गई २४ सो अपने खेद को दूरि करिवे वारो मायामय सूकर को घुरघुरात शब्द ताहि सुनि

तस्याभिपश्यतः खस्थः क्षणेन किल भारत गजमात्रः प्रववृधे तदद्भुतमभून्महत् १९ मरीचिप्रमुखैर्विप्रैः कुमारैर्मनुना सह दृष्ट्वा तत्
सौकरं रूपं तर्कयामास चित्रधा २० किमेतत्सौकरव्याजं सत्वं दिव्यमवस्थितं अहो बताश्चर्यमिदं नासाया मे विनिःसृतं २१ दृष्टोंगु
ष्ठशिरोमात्रः क्षणाद्गंडशिलासमः अपिस्विद्भगवानेष यज्ञो मे खेदयन्मनः २२ इति मीमांसतस्तस्य ब्रह्मणः सह सूनुभिः
भगवान्यज्ञपुरुषो जगर्जागेंद्रसंनिभः २३ ब्रह्माणं हर्षयामास हरिस्तांश्च द्विजोत्तमान् स्वगर्जितेन ककुभः प्रतिस्वनयता
विभुः २४ निशम्य ते घर्घरितं स्वखेदक्षयिष्णु मायामयसूकरस्य जनस्तपःसत्यनिवासिनस्ते त्रिभिः पवित्रैर्मुनयो गृणन्स्म २५
तेषां सतां वेदवितानमूर्तिर्ब्रह्मावधार्यात्मगुणानुवादं विनद्य भूयो विबुधोदयाय गजेंद्रलीलो जलमाविवेश २६ उत्क्षिप्त
वालः खचरः कठोरः सटा विधुन्वन्खररोमशत्वक् खुराहताभ्रः सितदंष्ट्र ईक्षाज्योतिर्बभासे भगवान्महीध्रः २७

कें जनतप सत्यलोक के वासी मुनि ऋग्वेद यजुर्वेद साम वेद के मंत्रन करि स्तुति करत भये २५ उनकी स्तुति करे सेतें यज्ञमूर्ति भग
वान् अपनो गुणानुवाद सुनि के फेर गर्जके गजराज की सी जाकी लीला सो भगवान् देवतान के उदय के लीयें जल में प्रवेश करत भ
ए २६ ऊंची उठाइ के पूंछ जाने आकाश अति कठिन जिन को शरीर तीछन हे मेरी रोम और त्वचा जाकी खुरन करि विदीर्ण करे हें बादर
जाने अति उज्ज्वल जाकी दाढ़ा निरीक्षण ती हे प्रकाश जाकी केश वाल फटकारत भगवान् पृथ्वी के उद्धार करिवे वारे वो होत सोभा देखत भयो २७

सो हमारे लायक कर्म हैं तिनमें हमें आज्ञा करु तुमें नमस्कार है जा करके तैनें जाण्यो हमें जस लोई परलोक में जस लोई सो करो ८ हे तात मैं तुमपे
प्रसन्न भयो तुम्हारो कल्याण होउ जो निष्कपट हृदय होइ मो शिर पायो है ऐसें तें आपनपो अर्पण करत भयो ९ पुत्र न करि इतनी है गुरु मुनि
की पूजा करवे योग्य है जो समस्त ताधीति आदर सो आज्ञा उनकी आज्ञा प्रतिग्रहण करी १० सो तू आपस्त्री मैं संतान करि पृथ्वी के धर्मनें तुल्य पुत्र उपजाय
धर्म करि पृथ्वी को पालन करि और यज्ञ करि के हरि को भजन करि ११ हे नृप प्रजान की रक्षा कर मेरी बडी सेवा होइगी परमेश्वर हैं प्रजान को भरण
पोषण करेगो तो तो पे हरि प्रसन्न होइगो १२ जिनपे यज्ञमूर्ति जनार्दन भगवान प्रसन्न भये तिनके सब सफल हैं तिन पे न भये तिन को सा

तद्विधेहि नमस्तुभ्यं कर्मस्वीड्यात्मशक्तिषु यत्कृत्वेह यशो विष्वगमुत्र च भवेद्गतिः ८ ब्रह्मोवाच प्रीतस्तुभ्यमहं तात स्वस्ति स्ता
द्वां क्षितीश्वर यन्निर्व्यलीकेन हृदा शाधि मेत्यात्मनार्पितं ९ तावरेकत्यात्मजैर्वीर कार्या ह्यपचितिर्गुरौ शक्त्याप्रमत्तैर्गृह्येत सादरं
गतमत्सरैः १० स त्वमस्यामपत्यानि सदृशान्यात्मनो गुणैः उत्पाद्य शास धर्मेण गां यज्ञैः पुरुषं यज ११ परं शुश्रूषणं मह्यं
स्यात्प्रजारक्षया नृप भगवांस्ते प्रजाभर्तुर्हृषीकेशोऽनुतुष्यति १२ येषां न तुष्टो भगवान् यज्ञलिङ्गो जनार्दनः तेषां श्रमो ह्यपार्था
य यदात्मा नादृतः स्वयं १३ मनुरुवाच आदेशेऽहं भगवतो वर्तेयामीवसूदन स्थानं त्विहानुजानीहि प्रजानां मम च प्रभो १४
यदोकः सर्वसत्त्वानां मही मग्ना महाम्भसि अस्या उद्धरणे यत्नो देव देव्या विधीयतां १५ श्रीमैत्रेय उवाच परमेष्ठी त्वपां मध्ये त
था सन्नामवेक्ष्य गां कथमेनां समुन्नेष्य इति दध्यौ धिया चिरं १६ सृजतो मे क्षितिर्वार्भिः प्लाव्यमाना रसां गता अथात्र किमनुष्ठेय
मस्माभिः सर्गयोजितैः यस्याहं हृदयादासं स ईशो विदधातु मे १७ इत्यभिध्यायतो नासाविवरात्सहसानघ वराहतोको निरगात्

वके सब श्रम वृथा ही हैं जातें अपने आत्मा हरि को मान्यो आदर न कीयो १३ हे पापन के नाश करवे वारे मैं तुम्हारी आज्ञा में वर्तें सो परंतु मेरे और
प्रजान के करवे को स्थान बताओ १४ जो सब प्राणीन को रहिवे को स्थान पृथ्वी सो तो जल के भीतर डूब रही है सो हे देव या के उद्धार को यत्न करो १५
न बतौ ब्रह्मा जल में डूबि पृथ्वी देखि या लिये से उद्धार करूं ऐसें मन में चिंता करत भयो १६ मेरे सृष्टि करते जल न करि डूबी पृथ्वी रसातल में
गई और हम को ईश्वर ने सृष्टि की आज्ञा करी अब हम कैसी करें बिना पृथ्वी के से सृष्टि करें १७ जाके हृदय ते मैं भयो सोई ईश्वर मनोरथ पू
रण करेगो ऐसें ब्रह्मा ध्यान करते हैं इतने ही में ब्रह्मा के नासिका छिद्र ते अंगुष्ठ के प्रमाण शूकर को बालक होत भयो १८

मनुकी रानी तब मैथुन भाव करि प्रजा बढावत भई ५३ सो मनु सतरूपा रानी मैं पांच बालिक भये तेउ जन कौ उपजावत भयौ और तीनु कंन्या उपजावत भयो प्रियव्रत उत्तानपाद ये दोउ पुत्र और तीन कंन्या भई आकूती देवहूती प्रसूती नामें आकूती तौ रुचि प्रजापति कौ विवाह दई कर्दम कौ देवहूती दई और दक्ष कौ प्रसूती दई जिनकी संतति करि जगत छाय गयौ ५५ इति श्री भागवते तृतीय स्कंधे द्वादशो ध्याय: १२ ॥ छ ॥ ० हे राजा ऐसे मैत्रेय जी की वाणी सुनि हरि की कथा मैं प्रेम बढौ ऐसे विदुर फेर पूछत भये १ हे मैत्रेय सो ब्रह्मा कौ प्यारो पुत्र स्वायंभू मनु प्यारी स्त्री पाय कहा करत भयो सो कहौ २ ता आदि राजा स्वायंभू मनु कौ चरित्र मेरे आगे कहौ मेरे अभिवे की बडी अभिलाषा है जातें वा हरि के आश्रे पाते वाके

ततो मैथुन धर्मेण प्रजा ह्येधांबभूविरे ५३ स चापि शतरूपायां पंच पत्यान्यजीजनत् प्रियव्रतोत्तानपादौ तिस्रः कन्याश्च भारत आकूतिर्देवहूतिश्च प्रसूतिरिति सत्तमा ५४ आकूतिं रुचये प्रादात् कर्दमाय तु मध्यमां दक्षायादात् प्रसूतिं च यत आपूरितं जगत् ५५ इति श्री भागवते तृतीय स्कंधे द्वादशोध्याय: १२ श्रीशुक उवाच: निशम्य वाचं वदतो मुने: पुण्यतमां नृप भूय: पप्रच्छ कौरव्यो वासुदेवकथादृत: १ विदुर उवाच: स वै स्वायंभुव: सम्राट् प्रिय: पुत्र: स्वयंभुव: प्रतिलभ्य प्रियां पत्नीं किं चकार ततो मुने २ चरितं तस्य राजर्षेरादिराजस्य सत्तम ब्रूहि मे श्रद्दधानाय विष्वक्सेनाश्रयो ह्यसौ ३ श्रुतस्य पुंसां सुचिरश्रमस्य नन्वंजसा सूरिभिरीडितोऽर्थ: तत्तद्गुणानुश्रवणं मुकुंद पादारविंदं हृदयेषु येषां ४ श्रीशुक उवाच: इति ब्रुवाणं विदुरं विनीतं सहस्रशीर्ष्णश्चरणोपधानं प्रहृष्टरोमा भगवत्कथायां प्रणीयमानो मुनिरभ्यचष्ट ५ मैत्रेय उवाच: यदा स्वभार्यया साकं जात: स्वायंभुवो मनु: प्रांजलि: प्रणतश्चेदं वेदगर्भमभाषत ६ त्वमेक: सर्वभूतानां जन्मकृद्वृत्तिद: पिता अथापि न: प्रजानां ते शुश्रूषा केन वा भवेत् ७

चरित्र सुनिवे कौ जोग्य है ३ बडो की यो है श्रम जामैं ऐसो जो शास्त्र श्रवण ताकौ विवेकयुक्त फल कह्यो है जो जिनके हृदै मैं मुकुंद के चरणारविंद है तिन भगवान के गुण कौ स्मरण करौ ४ ऐसे कहत जो विदुर जो हरि के चरणारविंद कौ तकी यातें जब तब हरि प्रसन्न होत हैं नम्र प्रतक्ष सातें विदुर जी की गोदी मैं पाउ पसारे है सब तरी मैं तातें हरि कथा मैं प्रेरे तब प्रसन्न होय मैत्रेय मुनि यह बोले ५ हे विदुर जब सतरूपा अपनी स्त्री सहित स्वायंभू मनु भए तब हाथ जोर नम्र होय ब्रह्मा सों यह बोले ६ तुम ही एक सब प्राणीन के जन्म करि विचार आजीविका के देवेवारे पिता हो

भा॰त॰ ३१

सावित्र प्राजापत्य ब्राह्म वृहत् चार तरह की वृत्ति ब्रह्मचारी की वार्ता संचय शालीन शिलोंछ यह गृहस्थ वृत्ति सृजत भयौं ४२ वैखानस वालखिल्य औदुंवर फेनुप ये चार प्रकार के वानप्रस्थ सृजे संन्यास में कुटीचक बहूदक हंस परमहंस ये सृजे ४३ मोक्षधर्म आन्वीक्षिकी विद्या दंडनीति औ सेई व्याहृति दह्रतोत भयौं प्रणव ब्रह्मा के हृदयाकाश तें भयौं ४४ ब्रह्मा के लोम तें उष्णिक छंद भयो गायत्री त्वचा तें त्रिष्टुप मांस तें स्नायु तें अनुष्टुप जगती छंद अस्थि तें ४५ मज्जा तें वृहती पंक्ति प्राण तें स्पर्श के ते लोमता ई जीव भयौ सो स्वर देह कहीयें ४६ उष्मा इंद्रिय कहीयें

सावित्रं प्राजापत्यं च ब्राह्मं चाथ वृहत्तथा वार्तासंचयशालीनशिलोंछ इति वै गृहे ४२ वैखानसा वालखिल्यौदुंवराः फेनपा वने न्यासे कुटीचकः पूर्वं बहूदो हंसनिष्क्रियौ ४३ आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दंडनीतिस्तथैव च एवं व्याहृतयश्चासन् प्रणवो ह्यस्य दह्रतः ४४ तस्योष्णिगासील्लोमभ्यो गायत्री च त्वचो विभोः त्रिष्टुप् मांसात्स्नुतोऽनुष्टुप् जगत्यस्थ्नः प्रजापतेः मज्जाया पंक्तिरुत्पन्ना वृहती प्राणतोऽभवत् ४५ स्पर्शस्तस्याभवज्जीवः स्वरो देह उदाहृतः ऊष्माणमिंद्रियाण्याहुरंतःस्था वलमात्मनः स्वराः सप्त विहारेण भवंति स्म प्रजापतेः ४६ शब्दब्रह्मात्मनस्तस्य व्यक्ताव्यक्तात्मनः परः ब्रह्मावभाति विततो नानाशक्त्युपबृंहितः ४७ ततोऽपरामुपादाय स सर्गाय मनो दधे ४८ ऋषीणां भूरिवीर्याणामपि सर्गमविस्तृतं ज्ञात्वा तद्धृदये भूयश्चिंतयामास कौरव ४९ अहो अद्भुतमेतन्मे व्यापृतस्यापि नित्यदा न ह्येधंते प्रजा नूनं दैवमत्र विघातकं ५० एवं युक्तकृतस्तस्य दैवं चावेक्षतस्तदा कस्य रूपमभूद् द्वेधा यत्कायमभिचक्षते ताभ्यां रूपविभागाभ्यां मिथुनं समपद्यत ५१ यस्तु तत्र पुमान् सोऽभून्मनुः स्वायंभुवः स्वराट् स्त्री याऽऽसीच्छतरूपाख्या महिष्यस्य महात्मनः ५२

अंतस्था वल कहीये स्वर सप्त विहार कहीयें ४७ वैखरी प्रणव रूप जो ब्रह्मा तातें परे परमेश्वर सोई ईश्वरी रूप होइ वाणी रूप होइ भासे हैं ४८ तापीछे और का आप्राक्ति अंगीकार करस्वर के अर्थ रमन करत भये वडे हैं वीर्य जिन में ऐसे ऋषिन की सृष्टि वढी जब वाकी वृद्धि के अर्थ फेर चिंता करत भये ४९ देखो हो आश्चर्य है मैं नित्य व्यापार करत हूं पर प्रजा नहीं वडे हैं या में दैव ही विधाता हैं ५० ऐसें चिंता करत दैव की ओर देखें ब्रह्मा ने में ब्रह्मा के दो विभाग से रूप भयौ जाको काय कहै हैं ५१ ता शरीर के दो विभाग तिन में तें एक भो भई एक पुरुष भयौं तामें पुरुष तो स्वायंभू मनु भयो स्त्री शतरूपा रानी भाई ५२

प

ऐसें कहि जब ब्रह्मानें न मानी तब हरि सों बीनती करवे लगे ता भगवान के अर्थ प्रणाम है जो अपनी कांतिन करि अपने में स्थूल जो विश्व ताहि प्रका
श करत भयो सोई धर्म की रक्षा करिवे कों जोग्य है ३१ ऐसे पुत्रन कों आगें ठाढे हरि की स्तुति करत देखि प्रजापतिन को पति ब्रह्मा लाजि कें अपने सरीर कों त्याग
करत भयो ३२ सोई कुहरि होइ गयो अंधकारमय ता ब्रह्मा की मूर्ति कों दिसा ग्रहण करत भई ३३ एक समें ब्रह्मा चिंता करें हैं कैसें लोकन कों सर
ज्यों वा समें ब्रह्मा के चारों मुखन तें चार वेद होत भए ३४ चातुर्होत्रकर्म यज्ञविस्तार उपवेद न्याय धर्म के चारों पाय तें आश्रम और आश्रम
न की वृत्ति ये सब ब्रह्मा के मुखन तें भये हैं ३५ हे मैत्रेय सो विश्वसृष्टान के ईश ब्रह्मा जा जा मुखतें जिन जिन वेदन कों सृजत भए सो कहो ३६ ऋग्

तस्मै नमो भगवते य इदं स्वेन रोचिषा आत्मस्थं व्यंजयामास स धर्मं पातुमर्हसि ३१ स इत्थं गृणतः पुत्रान् पुरो दृष्ट्वा प्रजापतीन् प्रजापति
पतिस्तन्वं तत्याज व्रीडितस्तदा ३२ तां दिशो जगृहुर्घोरां नीहारं यद्विदुस्तमः ३३ कदाचिद्ध्यायतः स्रष्टुर्वेदा आसंश्चतुर्मुखात् कथं स्रक्ष्या
म्यहं लोकान् समवेतान् यथा पुरा ३४ चातुर्होत्रं कर्मतंत्रमुपवेदनयैः सह धर्मस्य पादाश्चत्वारस्तथैवाश्रमवृत्तयः ३५ विदुर उवाच
स वै विश्वसृजामीशो वेदादीन् मुखतोऽसृजत् यद्यद्येनासृजद्देवस्तन्मे ब्रूहि तपोधन मैत्रेय उवाच ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यान् वेदान् पूर्वा
दिभिर्मुखैः शस्त्रमिज्यां स्तुतिस्तोमं प्रायश्चित्तं व्यधात्क्रमात् ३७ आयुर्वेदं धनुर्वेदं गांधर्वं वेदमात्मनः स्थापत्यं चासृजद्वेदं क्रमात्
पूर्वादिभिर्मुखैः ३८ इतिहासपुराणानि पंचमं वेदमीश्वरः सर्वेभ्य एव वक्त्रेभ्यः ससृजे सर्वदर्शनः ३९ षोडश्युक्थौ पूर्ववक्त्रात् पुरीष्य
ग्निष्टुतावथ आप्तोर्यामातिरात्रौ च वाजपेयं सगोसवं ४० विद्या दानं तपः सत्यं धर्मस्येति पदानि च आश्रमांश्च यथासंख्यमसृजत् सह वृत्तिभिः ४१

म

यजुः साम अथर्वण जो चारों वेद तिनें पूर्वादिक मुखन करि ब्रह्मा सृजत भयो और ये ना के कर्म शास्त्र अध्वर्यु कों कर्म इज्या उद्गाता कों कर्म स्तुति सम
ब्रह्मा कों कर्म प्रायश्चित्त ताहि क्रमतें सृजत भयो ३७ अब उपवेदन कों उपदेश क्रम कहें हैं आयुर्वेद धनुर्वेद गानविद्या विश्वकर्मशास्त्र पूर्वेदतें
नादि क्रमतें पूर्वादिक मुखन करि सृजत भयो ३८ इतिहास पुराण सब और वेदनादि सब मुखनतें सृजत भयो ३९ प्राग्याम षोडशी और
उक्थ पूर्व के मुखतें सृजत भयो पुरीषी अग्निष्टोम कर्म दक्षिण के मुखतें सृजत भयो आप्तोर्याम अतिरात्रि ये पश्चिम के मुखतें सृजत भयो
वाजपेय गोसव ए उत्तर के मुखतें सृजत भयो ४० विद्या दान तप सत्य धर्म के पाउ तिनें और आश्रम तिनें यथासंख्य सृजत भयो वृत्तीन सहित ४१

ऐसैजवब्रंम्हानेकही तबु मतादेवजूभलीकही ऐसैंकहिकैं परिक्रमाकैं आज्ञामांगितपकेलीयैंवनमे जातभये २० पाकेअनंतरसबकौ ध्यानकरनजोब्रम्हाताकेदशपुत्र होतभए लोकनकेविस्तारकरवेकूरे २१ मारीच अत्रि अंगिरा पुलह पुलस्त क्रतु भृगुवशिष्ठ दक्षपांचेनारद जीभए २२ नारदजीब्रम्हाकीगोदमेभए दक्षअंगुष्ठातेभए प्राणनवशिष्ठ भए चवातें नखतेकतुभपे पुलस्तनाभितेभये पुलहकरणतें अंगिरामुखतें अत्रिमरीचमनतेंभए २४ धर्मब्रम्हाकेदाहिनेस्तनतेंभयौ जाधर्मीकैंनारायणउत्रभयौ अधर्मब्रम्हाकीपीठतेंभयौ ता नाआधर्मकैलोकनकौंभयकरिबेवारौंमत्युभयौ २५ हृदयतेकाम भ्रकुटीतेक्रोधभयौ लोभनीचेकेहोठतेंभयौ मुखतेवाणी मेढ्सतेसमुद्र

मैत्रेयउवाच। एवमात्मभुवादिष्टः परिक्रम्यगिरांपतिं वाढमित्यनुमानंत्याविवेशतपसेवनं २० अथाभिध्यायतः सर्गंदशपुत्राःप्रजज्ञिरे भगवच्छक्तियुक्तस्यलोकसंतानहेतवः २१ मरीचिरत्र्यंगिरसौपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः भृगुर्वसिष्ठोदक्षश्चदशमस्तत्रनारदः २२ उत्संगान्नारदोजज्ञेदक्षोंगुष्ठात्स्वयंभुवः प्राणाद्वसिष्ठःसंजातोभृगुस्त्वचोकरात्क्रतुः २३ पुलहोनाभितोजज्ञेपुलस्त्यःकर्णयोर्ऋषिः अंगिरामुखतोक्ष्णोत्रिर्मरीचिर्मनसोभवत् २४ धर्मःस्तनाद्दक्षिणतोयत्रनारायणःस्वयं अधर्मःपृष्ठतोयस्मान्मृत्युर्लोकभयंकरः २५ हृदिकामोभ्रुवःक्रोधोलोभश्चाधरदच्छदात् आस्याद्वाक्सिंधवोमेढ्रान्निर्ऋतिःपायोरघाश्रयः २६ छायायाःकर्दमोयज्ञेदेवहूत्याःपतिःप्रभुः मनसोदेहतश्चेदंयज्ञेविश्वकृतोजगत् २७ वाचंदुहितरंतन्वींस्वयंभूर्हरतींमनः अकामांचकमेक्षत्तःसकामइतिनःश्रुतं २८ तमधर्मेकृतमतिंविलोक्यपितरंसुताः मरीचिमुख्यामुनयोविश्रंभात्प्रत्यबोधयन् २९ नैतत्पूर्वैःकृतंत्वद्यनकरिष्यंतिचापरे यत्त्वंदुहितरंगच्छेरनिगृह्यांगजंप्रभुः ३० तेजीयसामपिह्येतन्नसुश्लोक्यंजगद्गुरो यद्वृत्तमनुतिष्ठन्वैलोकःक्षेमाय

छातेकिर्दमऋषिभयौ जोमुघत्स्यतैं २६ ब्रम्हाकीछायातेदेवहूतीकेपतिकर्दमभए ऐसैविश्वकेसृजवेवारे ब्रम्हाकेमनतेदेहतेसबजगतहोतभयो २ वाणीजोब्रम्हाकीबेटीसुंदरताकरिमनकौचुरावैहै सोवेइतनिच्छामहुँ परिब्रम्हावासौसकामहोतभयौ यहहमनेंसुन्यौहै २८ जैसेब्रम्हा पितानेंजबअधर्ममेरतिकरीतबमरीचतेआदिदेंमुनिब्रम्हाकेबेटासमुझायवेलगें २९ अगलेब्रम्हामरीचनननैंऐसीनकरीऔरहोंइगे तेउऐसीनकरैंगें जोतूकामदेवकौनरोकिकैंइहितापगमनकरैंगे ३० हेजगतगुरौंतेजस्वीनकौंयहबडाईकीबातनहीजिनकेआचरण

वी

ऐसैं ब्रह्मा महादेव कौ वचन पालन करत संदर वांणी करि यह बोल्यौ हे पुत्र रोवै मति तू कहै सो करौंगो ८ हे सुरश्रेष्ठ जो उद्यम सहित बालक की सी नाई तू रोयौ तातें प्रजा रुद्र तो हि कहैंगे ९ हृदय इंद्रीय प्राण आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी सूर्य चंद्रमा तप ये ते रे स्थान मैं पहिलें ही कर राखे हैं १० मन्यु मनु महिनस महान् शिव ऋतुध्वज उग्ररेता भव काल वामदेव धृतव्रत एते रे नाम होइंगे ११ धी वृत्ति उशना उमा नियुत सर्पि इला अंबिका ऐरावती सुधा दीक्षा रुद्राणी एते रीइ स्त्री होहिंगी १२ स्त्री सहित ए नाम और स्थान तिनें ग्रहण करि और इन करि बहुत प्रजा

इति तस्य वचः पाद्मो भगवान् परिपालयन् अभ्यधाद्भद्रया वाचा मा रोदीस्तत्करोमि ते ८ यदरोदीः सुरश्रेष्ठ सोद्वेग इव बालकः ततस्त्वामभिधास्यन्ति नाम्ना रुद्र इति प्रजाः ९ हृदिन्द्रियाण्यसुर्व्योम वायुरग्निर्जलं मही सूर्यश्चन्द्रस्तपश्चैव स्थानान्यग्रे कृतानि ते १० मन्युर्मनुर्महिनसो महाञ्छिव ऋतध्वजः उग्ररेता भवः कालो वामदेवो धृतव्रतः ११ धीर्वृत्तिरुशनोमा च नियुत्सर्पिरिलाम्बिका इरावती सुधा दीक्षा रुद्राण्यो रुद्र ते स्त्रियः १२ गृहाणैतानि नामानि स्थानानि च सयोषणः एभिः सृज प्रजा बह्वीः प्रजानामसि यत्पतिः १३ इत्यादिष्टः सगुरुणा भगवान्नीललोहितः सत्त्वाकृतिस्वभावेन ससर्जात्मसमाः प्रजाः १४ रुद्राणां रुद्रसृष्टानां समन्ताद्ग्रसतां जगत् निशाम्यासंख्यशो यूथान् प्रजापतिरशंकत १५ अलं प्रजाभिः सृष्टाभिरीदृशीभिः सुरोत्तम मया सह दहन्तीभिर्दिशश्चक्षुर्भिरुल्बणैः १६ तप आतिष्ठ भद्रं ते सर्वभूतसुखावहं तपसैव यथापूर्वं स्रष्टा विश्वमिदं भवान् १७ तपसैव परं ज्योतिर्भगवन्तमधोक्षजं सर्वभूतगुहावासमञ्जसा विन्दते पुमान् १८

सृज जाते तू प्रजान कौं पति है १३ ऐसें जब ब्रह्मा नें आज्ञा दई तब नीलकंठ महादेव जी बल आकृत स्वभाव करि आप सरीसी प्रजा सृजत भए १४ रुद्र नें रुद्र ही सृजे ते ई सब जगत कौं खाइवे लगे तिन कौं असंख्य देखि प्रजा सृजत भये तब तो प्रजापति डरपे और महादेव जी सौं यह बोले १५ हे सत्तम ऐसी सृजी जो प्रजा तिन करि तौ हु हे रम्यो नहि सहित दिशान कौ उल्वण नेत्रन करि जराये देत हैं १६ सब प्राणीन कौं सुख कौं देनवारौ जो तप ता में स्थित होउ तप ही करि पहलें या विश्व कौं तुम सृजत भए १७ तप ही ते परम ज्योति सब प्राणीन के निवासि तिनें प्रयास बिन प्रत्यक्ष जाने है १८

पावैहैं औरु ऐसें कोटि ब्रह्मांडनके समूहताहि में ध्यंतर यल्लक्षि से हैं ४० सो भगवान् अखर ब्रह्म सबकारणनके कारण कहीये पतउत्तमाह्य मा भगवान को स्वरूप हैं ४१ इतिश्री भागवते महापुराणे तृतीय स्कंधे एकादशो ध्यायः ११ हे विदुर परमेश्वर के प्रागै काल जा को नाम सो वर्णन करों परमात्मा भगवान को महिमा है अब ब्रह्मा जैसें याविश्व को सृजन भयौ सो मोपे तें सुनो १ पहिले ब्रह्मा सौं अंधतामिस्र महामोह मोह ये भयों अज्ञान हति पंच पर्वा अविद्या ता हि सृजत भयौ २ पापिष्ठ सृष्टि देखके ब्रह्मा अपनें मन राजी न भयौ तब हरि को ध्यान कर पवित्र मन करि और सृष्टि करत भयो ३ सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार ए ऊर्ध्वरेता मुनि तिनें सृजत भयौ ४ तिनसों ब्रह्मा यह बोल्यौ हे पुत्रहो

इति श्री भागवते तृतीय स्कंधे काल स्वरूप निरूपणो नाम एकादशो ध्यायः ११ श्री मैत्रेय उवाच: इति ते वर्णितः क्षत्तः कालाख्यः परमात्मनः महिमा वेदगर्भोथ यथास्राक्षीन्निबोध मे १ ससर्जाग्रेंधतामिस्रमथतामिस्रमादिकृत महामोहं च मोहं च तमश्चाज्ञानवृत्तयः २ दृष्ट्वा पापीयसीं सृष्टिं नात्मानं बह्वमन्यत भगवद्ध्यानपूतेन मनसान्यां ततोसृजत् ३ सनकं च सनंदं च सनातनमथात्मभूः सनत्कुमारं च मुनीन् निष्क्रियानूर्ध्वरेतसः ४ तान्बभाषे स्वभूः पुत्रान्प्रजाः सृजत पुत्रकाः तन्नै छन्मोक्षधर्माणो वासुदेवपरायणाः ५ सोवध्यातः सुतैरेवं प्रत्याख्यातानुशासनैः क्रोधं दुर्विषहं जातं नियंतुमुपचक्रमे ६ धिया निगृह्यमाणोपि भ्रुवोर्मध्यात्प्रजापतेः सद्योजायत तन्मन्युः कुमारो नीललोहितः ७ स वै रुरोद देवानां पूर्वजो भगवान्भवः नामानि कुरु मे धातः स्थानानि च जगद्गुरो ८

प्रजा सृजो परंतु वे मोक्षधर्मी वासुदेव परायण सृष्टि की इच्छा न करत भये ५ जब प्रान कादिकन नें ब्रह्मा की आज्ञा न मानी अवज्ञा करी तब बडो क्रोध भयौ परंतु पुत्र जानि ब्रह्मा क्रोध रोकवे की इच्छा करत भयो ६ ब्रह्मा ने बुद्धि करि वह तो ते रोक्यो क्रोध रोक्यों परंतु नरूनौं भृकुटी नके मध्य ते एक क्रोध रूप बालिक भयो जाको नाम महादेव कहैहैं नील लोहित जो वर्ण हैं ७ सो सब देवतान के बडे महादेव रुदन करत भयो और ब्रह्मा सों यह बोल्यौ हे देव जगद्गुरु मेरे नाम करो और स्थान करो ८

सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग एसे चार युग हैं ते दिव्य बारह हजार वर्ष में सो होजांय हैं १८ चार हजार आठसै वर्षनौं सतयुग तीन हजार छसैं वर्षनौं त्रेता दोहजार चारसैं वर्षनौं द्वापर एकहजार दोसैं वर्षनौं कलियुग १९ ऊपर के जो सै कहाते हैं उ और संध्या और संध्यांश कहीयें तिनकै मध्य में जो काल ताहि जुग कहतें हैं विद्वान् जो मध्य मजुग को धर्म तिनकौ ध्यान करियें है २० सतयुग में चार पाउन कौ धर्म मनुष्यन में बसत हैं सोई धर्म त्रेतायुगन में एक पाउं घटि जायगो अधर्म को पाउ बढै है तातें २१ त्रिलोकी ते बाहर महलोक तें लेकें ब्रह्मलोक परियंत तक हजार चौकडी एक दिन है उतनी ही रात्री तामें ब्रह्मा सोवे हैं २२ ब्रह्मा की रात्रि में लोक कल्प की रचना नहीं होइ है और जब

मैत्रेय उवाच । कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति चतुर्युगं । दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षैः सावधानं निरूपितं १८ चत्वारि त्रीणि द्वे चैकं कृतादिषु यथाक्रमं संख्यातानि सहस्राणि द्विगुणानि शतानि च १९ संध्यासंध्यांशयोरंतर्यः कालः शतसंख्ययोः तमेवाहुर्युगं तज्ज्ञा यत्र धर्मो विधीयते २० धर्मश्चतुष्पात्संपूर्णः कृते समनुवर्त्तते सत्यान्येष्वधर्मेण व्येति पादेन वर्द्धता २१ त्रिलोक्या युगसाहस्रं बहिराब्रह्मणो दिनं तावत्येव निशा तात यन्निमीलति विश्वसृक् २२ निशावसान आब्रह्मलोककल्पो भवत्यते यावद्दिनं भगवतो मनवस्तु चतुर्दश २३ स्वं स्वं कालं मनुर्भुंक्ते साधिकां ह्येकसप्ततिम् मन्वंतरेषु मनवस्तद्वंश्या ऋषयः सुराः भवंति चैव युगपत्सुरेशाश्चानु ये च तान् २५ एष दैनंदिनः सर्गो ब्राह्मस्त्रैलोक्यवर्त्तनः तिर्यङ्नृपितृदेवानां संभवो यत्र कर्मभिः २६ मन्वंतरेषु भगवान्बिभ्रत्सत्त्वं स्वमूर्तिभिः मन्वादिभिरिदं विश्वमवत्युदितपौरुषं २७

ताई ब्रह्मा को दिन रहै है तब ताई चौदै मनु अपने अपने मन्वंतर कों पालन करैं हैं २३ कछु उपर इकहत्तर चौकरी एक एक मनु अपने काल कों भोगैं हैं और मन्वंतर में मनु के वंश के ऋषि देवता इन्द्र गंधर्वादिक ये सब एक बार ही होत हैं २४ यह ब्रह्मा को दिन हिन कौ सर्ग है त्रिलोकी कों रचवे वारो जामें पशु ऋषी मनुष्य देवता न को कर्मन करि जन्म है २५ मन्वंतरन के विषें मन्वंतरावतार न कर अपनो पुरुषार्थ प्रगट कर मनुष्यन कर सहित या विश्व कों पालन भगवान् करै है २६ और प्रलय में तमोगुण के लेके पाछैं अपनो पराक्रम जामें सु ऐसें

तामें मनुष्यन कौ चार पहर कौ दिन चार पहर की रात्रि पंद्रह दिन कौ पक्ष तामें एक कृष्णपक्ष एक शुक्ल १० तिन दोऊ पक्षन कौ एक मही
ना होइ है दोय महीना की एक ऋतु होवे है छ महीना कौ उत्तरायण छ मीना कौ दक्षिणायन होत है ११ वे दोउ देवतान के दिन रात्रि है उत्त
रायण दिन दक्षिणायन रात्री है सो बारह मास महीना कौ मनुष्यन कौ वर्ष कहावे है ऐसे सौ वर्ष की मनुष्यन की परम आयु है सो ताई जीवे तो
महाताई अवधि है १२ ऐसे ग्रह नक्षत्र तारागणन में स्थित सूर्य नारायण ते आदि दे संवत्सर जाको अन्त ऐसो काल नारी बारह रासिन कौ
भोग सब आवर्त लगावे है १३ संवत्सर परिवत्सर इडावत्सर अनुवत्सर वत्सर और अनंत ब्रह्मा ... दिन को घटे बढे ते वासर के पांच भेद है

यामाश्चत्वारश्चत्वारो मर्त्यानामहनी उभे पक्षः पंचदशाहानि शुक्लः कृष्णश्च मानद: १० तयोः समुच्चयो मासः पितॄणां तदह
र्निशं द्वौ तावृतुः षडयनं दक्षिणं चोत्तरं दिवि: ११ अयने चाहनी प्राहुर्वत्सरो द्वादश स्मृतः संवत्सरं शतं नृणां परमायुर्न
रूपितं १२ ग्रहर्क्षताराचक्रस्थः परमाण्वादिना जगत् संवत्सरावसानेन पर्येत्यनिमिषो विभुः १३ संवत्सरः परिवत्स
र इडावत्सर एव च अनुवत्सरो वत्सरश्च विदुरैवं प्रभाष्यते १४ यः सृज्यशक्तिमुरुधोच्छ्वसयन् स्वशक्त्या पुंसो भ्रमा
य दिवि धावति भूतभेदः कालाख्यया गुणमयं क्रतुभिर्वितन्वंस्तस्मै बलिं हरत वत्सरपंचकाय १५ विदुर उवाच: पितृदेवम
नुष्याणामायुः परमिदं स्मृतं परेषां गतिमाचक्ष्व ये स्युः कल्पाद्बहिर्विदः १६ भगवान् वेद कालस्य गतिं भगवतो ननु वि
श्वं विचक्षते धीरा योगराद्धेन चक्षुषा १७

तिन पांच वर्षन में होमत मास तु है फिर वृह्मा न पापी चौन जो चले है १४ जाते
जो मंडल सूर्य नारायण आपनी शक्ति करि दिन तिथि पर्व जो बीजादिकन की शक्ति ताहि नाय करके सब लोक जरत और इन भूतन कौ
आयु नीके नापकरि विषय प्राप्ति निवृत्ति करत काल रूप शक्ति करि पुण्य प्राणीन कौ स्वर्गादिक फल देत जो आकाश में वि
चरै है पांचो संवत्सर नको प्रवेश करवे वारो ताके अर्थ है विदुर बलि देउ १५ विदुर जी पूछे है मैत्रेय यह अपने प्राप्त लोकन से जेव
से ते तिन हू की आयु कौ प्रमाण मैने आगे कहो १६ तुम काल की गति अच्छी तरे सो जानत हो जे तुम सरीके धीर पुरुष है ते पाप
रहित दृष्टि करि सब विश्व को देखे है १७

भा॰ त॰
२७

जोपरमाणुनाकौं भोगें सो परमाणु काल कहीयें ३ और जो किपंचकौं विषेश भोगकरै सो परम महान काल कहिये ४ दो परमा णूकौं एक अणु कहीये तीन अणून कौं एक त्रिषरेणु कहीयें जो झरोषान में प्रविष्ट जे सूर्य की किरन तिन में आमित होइ पृथ्वी में गोरन कि र आकास ही मैं चल्यौ जाय ५ जो तीन त्रिषरेणुकौं भोगें है सो काल त्रुटि कहीयें सात त्रुटिकौ एक वेध होहै तीन वेदन कौं एक लव कहीयें ६ तीन लवन कौं एक निमिष जानीये तीन निमिषन कौं एक क्षण पंच क्षण कौ एक काष्ठा पंद्रह काष्ठान कौ एक लघु

> एवं कालोऽप्यनुमितः सौक्ष्म्ये स्थौल्ये च सत्तम। संस्थानभुक्त्या भगवानव्यक्तो व्यक्तभुग्विभुः ३ स कालः परमा णुर्वै यो भुङ्क्ते परमाणुतां सतोऽविशेषभुग्यस्तु स कालः परमो महान् ४ अणुर्द्वौ परमाणू स्यात्त्रसरेणु स्त्रयः स्मृतः जालार्करश्म्यवगतः खमेवानुपतन्नगात् ५ त्रसरेणुत्रिकं भुङ्क्ते यः कालः स त्रुटिः स्मृतः शत भागस्तु वेधः स्यात्तैस्त्रिभिस्तु लवः स्मृतः ६ निमेषस्त्रिलवो ज्ञेय आम्नातास्ते त्रयः क्षणः क्षणान्पंच विदुः काष्ठां लघु ता दश पंच च ७ लघूनि वै समाम्नाता दश पंच च नाडिका ते द्वे मुहूर्तः प्रहरः षड्यामः सप्त वा नृणां ८ द्वादशार्धपलोन्मानं चतुर्भिश्चतुरङ्गुलैः स्वर्णमाषैः कृतच्छिद्रं यावत्प्रस्थजलप्लुतं ९

ता कहीयें ७ पंद्रह लघुनि की एक नाडी कहीयें दो नाडीन कौ एक महूर्त होहै छ घडी कौ प्रहर वा सात घडी कौ मनुष्यान कौं पहर होहै हे विदुर घटका कौ प्रमाण एक और है जा कर संसार में जानीं जात है पल छ आठ ताम्र के तावे कौं करोरा बनाईये चारो और चार २ अंगुल ऊंचो करे और चार मासे स्वर्ण की चार अंगुल की सलाका बनाइ पाच जा को प्रमाण मासो करी यें वा सों वा भेनी चे मध्य मे छिद्र करीये जल के तवला में वाकौं धरीयें जाव वह प्रस्थ प्रमाण जल में डूबै तब घडी जानीये ९

देवतानकी सृष्टि आठ प्रकार की विबुध १ पितर २ असुर ३ गंधर्व ४ अपसरा ५ सिद्ध ६ यक्ष ७ राक्षस ८ चारण भूतप्रेतपिशाच
विद्याधर किन्नर ए आठ देवतानके भेद हैं विदुर दस सर्ग ब्रह्माने कीये जिन तें मैं सब प्रजा भई सो हम कहे २८ याते और मैं वंश और मन्
वंतर तिने कहूंहूं सो सुनौ ऐसो रजोगुण व्याप्त सृष्टि हरि कौ स्वरूप ब्रह्मा अभाय जा कौं संकल्प सो आपुही अपने करि आपुही कौं सृजौं
है वाते भिन्न कछु नहीं ३१ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे दशमोध्यायः १० कार्यके असंसनकौ अंत कौं जो अंश सजातीयौं
असंसन तें इजा सौं आगें कोई कार्य न तो इ सम अवस्था तकौं न प्रमाणि सो परमाणु जानीयें मानें मनुष्यनकौं एकपनवुद्धि होत है १ और

भूतप्रेतपिशाचाश्च विप्राः किंनरादयः दशैते विदुराख्याताः सर्गास्ते विश्वसृक्कृताः २८ अतः परं प्रवक्ष्यामि वंशान्म
न्वंतराणि च एवं रजःप्लुतः स्रष्टा कल्पादिष्वात्मभूर्हरिः सृजत्यमोघसंकल्पः आत्मैवात्मानमात्मना २९ एवं व्य
यस्तोस्मिन्मायाविद्याद्दशो प्रातुः नयोर्वीपर्यामिच्छंति न घांम्रामुक्त्मे रविः ३० देवासुरादयः स्मातः कल्पेस्मिन्
येप्रकीर्तिताः नवेवनामरूपाभ्यां मासंमन्वंतरांतरे ३१ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीय० दशमोध्यायः १०
मैत्रेय उवाच: चर्मः सद्विशेषाणामनेकोऽसंयुतः सदा परमाणुः स विज्ञेयो नृणामैक्यभ्रमो यतः १ सत एव पदार्थस्य
स्वरूपावस्थितस्य यत् कैवल्यं परममहानविशेषो निरंतरः २

जाकौ अंत कौ असो परमाणु सो ई कार्य जो तौं तो अपने स्वरूप मैं स्थित वाकौं जो एक्य सो परममहान् काल कहीयें भेद
विवस्था रहित विशेषादित ते जो प्रपंच परममहान् कहीयें २ ऐसें ही सूक्ष्म स्थूलतामें काल अह अनुमान करियें है पर
माणवादि जिन करि अव्यक्त जो भगवान् सो या कौ अव्यक्त या प्रपंच कौं भोगे है ३

ग्रोरभीतरस्पर्षहीकोंजानेंहैं अव्यास्थितिपरणामादिअनेकभेदमानेंहैं १९ पसनकोंग्राठयोंसर्गग्रठाईसप्रकारकोंहैं वहुतजि नमेंतमघ्राणनरिवास्तकोंजानेंहैं हृदयमेंजिनकेंवहुतज्ञांनहीं २० गोवकरामेंसाह्रस्मा:हिरणभूकरगैडेरीछ्भेडऊंनेंहंडे विडुर एकोईदोईखुरकेंकहियेंहैं २१ गधेव घोडाखिच्चरगोमृगशरभचमरीयेएकनखकेंकहीयेहैं ग्रवपंचनखकेंजेपशुतिनेंसुनौ २२ कुतासिकराकुरासियारी व्याघ्रविलावशसेसेहसिंहवानरहाथी कछ्वग्रामकरमल्लारतेंग्रादिदें पांचनखकेपशुहें २३

सप्तमोमुख्यसर्गस्तुषट्विधस्तस्थुषांचय: वनस्पत्योषधीलतात्वक्सारावीरुधोद्रुम: उच्छ्रोतसमस्तप्रायाग्रन्त:स्पर्शाविशेषिण: १८ तिरश्चाष्टम:सर्ग:सोष्टाविंशद्विधोमत: ग्रविदोभूरितमसोघ्राणज्ञाहृद्यवेदिन: २० गौरजोमहिष:कृष्ण:शूकरोगवयोरुरु: द्विशफा:पशवश्चेमेअविरुष्ट्रश्चसत्तम: खरोश्वोश्वतरोगौरशरभश्चमरीतथा एतेचैकशफा:क्षत्त:शृणुपंचनखान्पशून् २२ श्वासृगालोवृकोव्याघ्रोमार्जारशशशल्लकौ सिंहकपिर्गज:कूर्मोगोधाश्चमकरादय: २३ कंकगृध्रवकश्येनभासभल्लूकवर्हिण: हंससारसचक्राह्वकाकोलूकादय:खगा: २४ ग्रर्वाक्स्रोतस्तुनवम:क्षत्तरेकविधोनृणाम् रजोधिका:कर्मपरादु:खेचसुखमानिन: २५ वैकृतास्त्रयएवैतेदेवसर्गश्चसत्तम: वैकारकस्तुय:प्रोक्त:कौमारस्तूभयात्मक: २६ देवसर्गश्चाष्टविधोविवुधापितरोसुरा: गंधर्वाप्सरस:सिद्धायक्षरक्षांसिचारणा: २७

कंकगृध्रवकशिकराभासभल्लूकमयूरहंससारसचकवाकाकउल्लूतेंग्रादिदेंपक्षीयेपंचनखीहैं २४ मनुष्यनकीसृष्टि९नौंहूंहैं सोएकप्रकारकीहैं नीचेकोंग्राहारकोंचलेंहैं रजोगुणनकोंग्राधिककर्मपरायण ग्ररुदु:खहीमेंसुखमानेंहैं २५ एतीन्योंजोकहेंतेवैकारिकुहैं ग्रोरदेवसर्गहूवैकारिकहैं ग्रोरजोसनत्कुमारनकोसर्गप्राकृतहू ग्रोरवैकृतहू २६ देवतानकीसृष्टिग्राठप्रकारकी १विवुध २पितर ३ग्रसुर ४गंधर्व ५ग्रप्सरा ६सिद्ध ७यक्ष ८राक्षस ९चारण १०भूतप्रेतपिशाचयेहैं २७ हरेनम: २७

मकों जो परणाम ला करि जो करियें सो कालु हैं निर्विशेष जाकों कहूं पर्यवसान नहीं ऐसो जो पुरुष आपुही जामें निमित्त: ऐसी आपुही
विश्व यह होत भयो ताहि लीला करि सृजत भयो ११ ब्रह्म है सूक्ष्म रूप जाको ऐसो विश्व है और हरि की माया करि संस्थित है और अव्यक्त रूप है
प्रगटो कालता करि न्यारो प्रकाशित है १२ यह विश्व जैसो है तैसो ई आगें हो पीछें हू पर्यैसो ही होई यो ताको नो प्रकार को प्रकार कृत कहत है
और दश वैकृत है १३ काल द्रव्य गुण इन करि तीन प्रकार की नो प्रलय और पहलो सर्ग तो महत्तत्व को है जामें हरि में गुणन को वैषम्य १४

गुणव्यतिकराकारो निर्विशेषोप्रतिष्ठिता पुरुषस्तदुपादानमात्मानं लीलयासृजत् ११ विश्वं वै ब्रह्मतन्मात्रं संस्थितं वि
ष्णुमायया ईश्वरेण परिछिन्नं कालेनाव्यक्तमूर्त्तिना १२ यथेदानीं तथाग्रे च पश्चादप्येतदीदृशम् सर्गो नवविधस्तस्य
प्राकृतो वैकृतस्तु यः कालद्रव्यगुणैरस्य त्रिविधः प्रतिसंक्रमः १४ आद्यस्तु महतः सर्गो गुणवैषम्यमात्मनः द्वि
तीयस्त्वहमो यत्र द्रव्यज्ञानक्रियोदयाः १५ भूतसर्गस्तृतीयस्तु तन्मात्रो द्रव्यशक्तिमान् चतुर्थ ऐन्द्रियः सर्गो यस्तु ज्ञान
क्रियात्मकाः १६ वैकारिको देवसर्गः पंचमो यन्मयं मनः षष्ठस्तु तमसः सर्गो यस्त्वबुद्धिकृतः प्रभो १७ षडि
मे प्राकृताः सर्गा वैकृतानपि मे शृणु रजोभाजो भगवतो लीलयं हरिमेधसः १८

दूसरो अहंकार को सर्ग जामें द्रव्य ज्ञान क्रिया को उदय तिन में महाभूतन को उपजायवे वारो भूत सूक्ष्म आकाशादिकान को स
र्ग १५ चौथो इंद्रीयन को सर्ग है द्रव्य जीव क्रियास्वरूप पांचयों देवसर्ग वैकारिक करिकें भयो जो मन है १६ और नाथ यें जीवन
को आवर्ण विक्षेपक रै है ताथ पंचपर्वा अविद्या छटो सर्ग है ए छे ६ तो प्राकृत सर्ग हैं अब वैकृतन को हौं तिनें सुनों १७ रजोगुण
के जीववारे हरि की लीला है सो भयो ब्रह्मा की सी नाई कीयो पहलो सो स्थावरन को सर्ग है हे विदुर यह मैने तेरे आगें छेय प्रको
र को सर्ग है सो कह्यो १८ वनस्पती औषधि लता त्वक्सार कीचक द्रुम ए छे प्रकार के हैं ऊपर को सो है प्रकाश से चार जिन के मुख्य

अवलोकनकौं वडौं ब्रह्मा देखतै या प्रकार की प्रजा सृजत भयौं सो कहौ १ हे वहुतज्ञानीनमें श्रेष्ठ जे एश्न में तुमसौं करे हैं तिनैं क्रम करकें मेरे सव संसय तिनैं काटौ २ सूतजी कहैं हैं हे सौनक या भांति विदुरने प्रेरे वे मुनि ते प्रसन्न होई हृदय में स्थित जो वे प्रश्न तिनै कहत भए ३ ब्रह्मा हू दिव्य सौ वर्ष तांई सब्द के लीये तप करत भयौं हरि कौं हृदय मे धरि सो प्रथम कहि गए हैं ४ ब्रह्मा जा कमल पै वैठे हैं ता कमल कौं प्रलय काल की वायु करिकें कंपित देखकें और तप जलकौं यह प्रति भय करकें पित देखिकें ५ वडौं जो तप और आत्म संस्था विद्या तिन करकें वडौं है ज्ञान जाकौं ऐसो ब्रह्मा जलकर सहित प्रलय की पवन कौं पीवत भयौ ६ ता पीछें जा पे प्राप वे

विदुर उवाच: अन्तर्हिते भगवती ब्रह्मा लोकपितामहः प्रजाः ससर्ज कतिधा दैहिकीर्मानसीर्विभुः १ ये च मे भगवन् पृष्टास्त्वय्यर्था बहुवित्तमः तान् वदस्वानुपूर्व्येण छिन्धि नः सर्वसंशयान् २ सूत उवाच: एवं संचोदितस्तेन क्षत्त्रा कौषारविर्मुनिः प्रीतः प्रत्याह तान् प्रश्नान् हृदिस्थानथ भार्गव: ३ श्रीमैत्रेय उवाच: विरंचोपीत था चक्रे दिव्यं वर्षशतं तपः आत्मन्यात्मानमावेश्य यथाह भगवानजः ४ तद्विलोक्याब्जसंभूतो वायुना यदधिष्ठितः पद्ममंभश्च तत्कालकृतवीर्येण कंपितं ५ तपसा ह्येधमानेन विद्यया चात्मसंस्थया विवृद्धविज्ञानबलो न्यपाद्वायुं सहांभसा ६ तद्विलोक्य वियद्व्यापि पुष्करं यदधिष्ठितं अनेन लोकान् प्राग्लीनान् कल्पितास्मीत्यचिंतयत् ७ पद्मकोशं तदाविश्य भगवत्कर्मचोदितः एकं व्यभांक्षीदुरुधा त्रिधा भाव्यं द्विसप्तधा ८ एतावान् जीवलोकस्य संस्थाभेदः समाहृतः धर्मस्य ह्यनिमित्तस्य विपाकः परमेष्ठ्यसौ ९ विदुर उवाच: यथात्थ बहुरूपस्य हरेरद्भुतकर्मणः कालाख्यं लक्षणं ब्रह्मन् यथा वर्णय नः प्रभो १० मैत्रेय उवाच:

वैठे हैं वह आकास में व्याप रह्यौ जो कमल ताहि देखि करि पहिलें लीन जो लोक तिनैं रचूंगो तिनै ऐसो विचारत भयौ ७ तव हरि नैं आज्ञा जाकौं करी सो ब्रह्मा वा कमल को कोस में प्रवेश करि एक ही कमल कौं वहुत प्रकार विभाग करत भयौं त्रिलोकी रूप करि चतुर्दश भुवन रूप करि ८ इतनौ ही जीव लोक कौ रचन विशेष कह्यौ है और निष्काम धर्म धर्म को फल रूप यह ब्रह्म पद है ९ वहौ तें रूप जाके वहुत जाके कर्म ता भगवान कौं कमल जाकौ नाम सो स्वरूप ताहि हमारे आगें यथा जोग्य वर्णन करौ १० मैत्रेय जी कहे हैं हे विदुर गुण जो महत्तादिक

जो देहधारीनकौं जामें ध्यान सों तेनें मुज जान्यो जो महात्मताई ही गुण अहंकार इनकरि रहित हैं मोहि माने है याते ३६ ताकों जो ईहै
औं ढहैकेंनहीं यह संदेह सप्रीते मेंनें जलमें होइ न डूवत जो नहीं ताकों हृदे ही में आत्मा दिखायो ३७ और जो मेरी कथानके अभ्युदय नकरि
अंकित में सो वत तुम करत भये और जो तप में तेरी निष्ठा यह मेरो ही अनुग्रह जानि ३८ मैं तोपै प्रसन्न हूं तेरो कल्याण होइ जो लोकके
सनवे वारी इछाकरि तिन गुणनमें नाहि गुणमय वर्णन करत नन स्तुति करत भयो ३९ जो यह तेंनें स्तोत्र कीयों ताकरि स्तुति करि मो
हि भजें तापै मैं प्रसन्न होहूं सब कामनवरदनको ईश्वर हूं ४० वापी कूप तडाग वनाइ तप करि यज्ञ दान योग समाधि करि पुरुषनकों सि

ज्ञातोऽहं भवतात्वद्य दुर्विज्ञेयोपि देहिनाम् यन्मांत्वं मन्यसेयुक्तं भूतेंद्रियगुणात्मभिः ३६ तुभ्यं मद्विचिकित्सायामात्मा मे द
र्शितोऽवहिः नालेन सलिले मूलं पुष्करस्य विचिन्वतः ३७ यच्चकर्थांग मत्स्तोत्रं मत्कथाभ्युदयांकितम् यद्वा तपसि ते निष्ठा
स एव मदनुग्रहः ३८ प्रीतोहमस्तु भद्रं ते लोकानां विजयेच्छया यदस्तौषीर्गुणमयं निर्गुणं मानुवर्णयन् ३९ य एतेन पु
मान्नित्यं स्तुत्वा स्तोत्रेण मां भजेत् तस्याशु संप्रसीदेयं सर्वकामवरेश्वरः ४० पूर्तेन तपसा यज्ञैर्दानैर्योगसमाधिना राद्धं
श्म निःश्रेयसं पुंसां मत्प्रीतिस्तत्त्वविन्मतं ४१ अहमात्मात्मनां धातः प्रेष्ठः सन्प्रेयसामपि अतो मयि रतिं कुर्याद्देहादिर्यत्कृते प्रियः
४२ सर्ववेदमयेनेदमात्मनात्मात्मयोनिना प्रजाः सृज यथापूर्वं याश्च मय्यनुशेरते ४३ मैत्रेय उवाचः तस्मा एवं जगत्स्र
ष्ट्रे प्रधानपुरुषेश्वरः व्यज्येदं स्वेन रूपेण कंजनाभस्तिरोदधे ४४ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे नवमोऽध्यायः ९

द्धि फल यही है जो मोमैं प्रीति करनी यही तत्ववेत्तानकों मत है ४१ हे ब्रह्मा मैं सब जीवनकों आत्मा प्यारेनकों प्यारो हूं याही ते विवेकी
मोमें प्रीति करें जो मेरे ही पीछें देहादिक प्यारे लगे हैं ४२ सब वेदमय अजन्मा जो आपनो स्वरूप ताकरि नू यह त्रैलोक्य और सब प्र
जा सृजि जे मोमें लीन हैं ४३ मैत्रेयजी कहै हैं इह रनागनके सृजवे वारे ब्रह्माके अर्थ या विश्वकों प्रकास करि आपने रूप करि अंतर हित
होत भए ४४ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे नवमोध्यायः ९ विदुरजी पूछै हैं हे मैत्रेयजी जब भगवान् अंतर्हित भए

मैत्रयजी कहै हैं हे विदुर तप विद्या समाधिन करि तिहरि कों देषीन करजहां तांई मन वाणी ये ह्वै तहां तांई ब्रह्मा स्तुति करि खेद खिन्न की सी नाईं विराम कों प्राप्ति भयो २६ याके अनंतर मधुसूदन भगवान् ब्रह्मा कों अभिप्राय जान यह बोलत भयो २७ लोकन कीर चना ज्ञान वे मैं खेद युक्त ब्रह्मा ताकों मोह दूरि करत अगाध वाणी कयप दुवोले २८ हे वेदगर्भ वेद है गर्भ मे जाकैं ब्रह्म ने करने ही मैं ब्रह्मा कों सव वेद आय गए ब्रह्मा तूं आलस्य कों मति प्राप्ति होउ सृष्टि कों उद्यम कर जो तू मो हि प्रार्थना करै है सो मैं पहले ही वड़वान करवना घर यों है २९ अव तू और हू तप मैं स्थित हो और मदाश्रय जो विद्या है ता मैं स्थित हो उन दोउन करि

मैत्रेय उवाचः स्वसंभवं निशाम्यैवं तपोविद्यासमाधिभिः यावन्मनोवचस्स्तुत्वा विरराम स खिन्नवत् २६ अथाभिप्रेतमन्विक्ष्य ब्रह्मणो मधुसूदनः विषण्णचेतसं तेन कल्पव्यतिकरांभसाः २७ लोकसंस्थानविज्ञानः परिखिद्यतः आत्मनः तमाहागाधया वाचा कश्मलं शमयन्निव २८ श्रीभगवानुवाचः मा वेदगर्भ गास्तंद्रीं सर्ग उद्यममावह तन्मयापादितं ह्यग्रे यन्मां प्रार्थयते भवान् २९ भूयस्त्वं तप आतिष्ठ विद्यां चैव मदाश्रयां ताभ्यामंतर्हृदि ब्रह्मन्लोकान् द्रक्ष्यस्यपावृतान् ३० तत आत्मनि लोके च भक्तियुक्तः समाहितः द्रष्टासि मां ततं ब्रह्मन्मयि लोकांस्त्वमात्मनाः ३१ यदा तु सर्वभूतेषु दारुष्वग्निमिव स्थितं प्रतिचक्षीत मां लोको जह्यात्तर्ह्येव कश्मलं ३२ यदा रहितमात्मानं भूतेंद्रियगुण(श)यैः स्वरूपेण मयोपेतं पश्यन्स्वाराज्यमृच्छति ३३ नानाकर्मवितानेन प्रजा बह्वीः सिसृक्षतः नात्मावसीदत्यस्मिंस्ते वर्षीयान्मदनुग्रहः ३४ ऋषिमाद्यं न बध्नाति पापीयांस्त्वां रजोगुणः यन्मनो मयि निर्बद्धं प्रजाः संसृजतोऽपि ते ३५

अपने हृदय मैं तू द्रष्टावलोकन कों खुलो देषैगो ३० तव भक्ति युक्त सावधान होय अपने मैं और लोक विषैं मो हि व्यापक देषैगो और मो विषै लोक और जीवनि ने देखैगो ३१ जव सर्व प्राणीन मैं स्थित मो हि देषैं जैसे काष्ठ मैं अग्नि तव यह सव मोह कों दूरि करै है ३२ जव यह प्राणी भूत इंद्री गुण अर्थ पायन सूं न्यारो रहति आत्मा कों मेरे स्वरूप करि युक्त देषै तव मोक्ष कों प्राप्ति होइ ३३ नाना कर्म विस्तार करि वहुत प्रजा सृजवे जोतू ताते रो आत्मा वडुत खेद न पावेगो यह मेरो तोपै वडो अनुग्रह है ३४ सव ते पहिले भयो ऋषि तू ताहि पापरूप पापी रजोगुण मैं न बांधै रहैगो जो प्रजा सृजत हू मैं तेनें मन मो मैं बांधो है याते ३५

जोरमपंचपर्वी अविद्या करताउिन नहींहै तोउ लोकन के सुष देवेकों यों निद्राकों प्रेसोतें यहारे खावतउदरमैं त्रिलोकी करि जलके भीतरभयंकरतरंगनिके समूहमें शेषशैयाके उपरसोवतभए २० हे प्रभो जाके तुम्हारे नाभिकमलमें मैं होतभयो जानुम्हारे अनुग्रहकरि जो मेरी त्रिलोकी उपकर्णकरहै सोउदरमैं हैत्रिलोकी जाके योगनिद्रा के अंतमें विकसत कमलसे जाके नेत्र तातुम्हारे अर्थ दंडोत है २१ सोये सवलोकन के सुहृद आत्मा जोज्ञान ऐश्वर्य कर भुवनकों सुखदेतें हों सो तुमनाहि रखानु करिकहे सखकों स्पर्शकरो जो पहली सीनाई याविश्वकूं स्रजूं मैं प्रणत है तुमप्रणतप्रियहो रामनवाएष्टार एगरामन केवरदे

या घोविद्यमानुपहतोपिदशार्द्धवृत्त्यानिद्रामुवाहजठरीकृतलोकयात्रः अंतर्जलेहिकशिपुस्पर्शानुकूलांभीमोर्मिमालिनि जनस्यसुखंविवृण्वन् २० यन्नाभिपद्मभवनादहमाससमीड्यलोकत्रयोपकरणोयदनुग्रहेण तस्मैनमस्तउदरस्थभवा पयोगनिद्रावसानविकसन्नलिनेक्षणाय २१ सोयंसमस्तजगतांसुहृदेकआत्मासत्वेनयन्मृडयतेभगवान्भगेन तेनैवमेदृशमनुस्पृशताद्यथाहंस्रक्ष्यामिपूर्ववदिदंप्रणतप्रियोसौ २२ एषप्रपन्नवरदोरमयात्मशक्त्यायद्यत्करिष्यति गृहीतगुणावताराः तस्मिन्स्वविक्रममिदंसृजतोपिचेतोयुंजीतकर्मशमलंचयथाविजह्यां २३ नाभिह्रदादिहसतो भसियस्यपुंसोविज्ञानशक्तिरहमासमनंतशक्तेः रूपंविचित्रमिदमस्यविवृण्वतोमेमारीरिषीष्टनिगमस्यगिरां विसर्गः २४ सोसावदभ्रकरुणोभगवान्विवृद्धप्रेमस्मितेननयनांबुरुहंविजृंभन् उत्थायविश्वविजयायचनोविषादं माध्व्यागिरापनयतात्पुरुषःपुराणः २५

वेवारे अवतार कीये हैं अवतार जानें ता विषें हरिकी प्रभाव रूप हजगत नाहि सृजत जो मैं ता मेरो चित लगयो जामें कर्मन कों मैल है ताहि दूरि करो २३ जलमैं स्थित जो पुरुष ताके नाभि हृदते विज्ञान शक्ति मैं होत भयो सो याही कों विचित्र है विश्व ताहि सृजत मैं ता मेरे वेद वाणीन कों विसर्ग न्यारी रूपा करि भक्त तुम देउ २४ सो ए हरि वडी हैं करुणा जामें सो वढी जो प्रेम करि मुसिक्यान ताकर उठे नेत्र कमल खोल लीये श्री की सुखके लीयें उदरवोणीनकरि पुराणपुरुषः तुम मेरो विषाद दूरि करो २५

भा॰ स॰
२३

जो तुम्हारे अवतार गुण कर्मन की है अनुकरणी जिनमें ऐसे जु तुम्हारे नाम तिनें प्राण छूटती बेर हरि बस होइ कै लै लेतें ते अनेक जन्मन के पाप तत्काल दूरि करि आवर्णरहित सत्य अजन्मा जो तुम ताहि प्राप्ति होतें १५ ब्रह्मा कहतें हैं हौं मैं और महादेव और विष्णु तुम्हारो स्वरूप ये तीन्यों उत्पत्ति पालन नाश के हेतु हैं ते तुम्हारे तीन्यों गुण हैं और तुम भुवनात्मा वृक्ष हो जो तुम प्रधान के गुणत्रयरूप करि विभाग करिकै बहु भाग बड़े बड़े जो जिनकी प्राणी हैं ता तुम्हारे अर्थ दंडवत हैं १६ यह लोक कुकर्म में रत हैं और तुमने कह्यो जो कर्म तिहारी सेवा आराधनता में असावधान परंतु तुम कालरूप बलवान याके जीवे की आशा को तत्काल

यस्यावतारगुणकर्मविडंबनानि नामानि येसुविगमे विवशा गृणंति ते नेकजन्मशमलं सहसैव हित्वा संयांत्यपावृत मृतं तमजं प्रपद्ये १५ यो वा अहं च गिरिशश्च विभुः स्वयं च स्थित्युद्भवप्रलयहेतव आत्ममूलं भित्वा त्रिपाद्ववृध एक उरुप्ररोहस्तस्मै नमो भगवते भुवनद्रुमाय १६ लोको विकर्मनिरतः कुशले प्रमत्तः कर्मण्ययं त्वदुदिते भवदर्चने स्वे यस्तावदस्य बलवानिह जीविताशां सद्यश्छिनत्त्यनिमिषाय नमोस्तु तस्मै १७ यस्माद्बिभेम्यहमपि द्विपरार्द्धधिष्ण्यमध्यासितः सकललोकनमस्कृतं यत् तेपे तपो बहुसवोवरुरुत्समानः तस्मै नमो भगवतेधिमखाय तुभ्यं १८ तिर्यङ्मनुष्यविबुधादिषु जीवयोनिष्वात्मेच्छयात्मकृतसेतुपरीप्सया यः रेमे निरस्तविषयोप्यवरुद्धदेहस्तस्मै नमो भगवते पुरुषोत्तमाय १९

छिन्न करो हो ता तुम्हारे अर्थ दंडवत है १७ जा तुमतें यह भय मानत हूं जो मैं सकल लोक जाको नमस्कार करैं हैं ऐसो द्विपरार्द्धता ईता इतने तावत विषें वे हजारन तुम्हारे प्राप्त होई वे की इच्छा करत बहुत दिन ताई तप करत भयो तौ और कोन की गिनती है सो तु भयत्रादिक कर्मन के अधिष्ठाता ता तुम्हें प्रणाम है १८ जो तुम पशु मनुष्य देवतान में आदि दै और जीवन की अनेक योनिन में अपनी इच्छा करि मूर्ति धारन करत भए वास्तव तें विषय सुख जिनने दूरि कर्यो ऐसे तुम तिनें प्रणाम है १९ १६ १६

तुम्हारी ईंद्री विषयरूप जो माया ताका बल है आधिक्य जाको ऐसो आत्मा ते न्यारो देहादिक मानता पृथक् पुरुष देखे है तब तो ई यह संसार
उपशम कों प्राप्ति होय है तो फुंहौ परि दुःख समूह कों प्राप्ति होहे ९ हे देव जे दिन में तो नाना व्योपार करि के क्लेश पावै जिन की इंद्री और रात्रि में
सोइ रहे हैं सो नाना मनोरथन में जो बुद्धि ताकरि क्षण क्षण में ग भंगते निंद्रा जिन की और ते मनोरथ हू फुंहे दैव ने अर्थ सिद्धि जिन
की दूरि करी है याते तुम्हारे प्रसंग ते जो विमुख ते ऋषि संसार ही कों प्राप्त होहे १० हे प्रभो भक्ति करि शुद्ध कीयो जो अपने भक्तन कों
हृदय तो विषै तुम आय विराजे हो कैसे तुम हो श्रवण करि देखियो मार्ग जिन को और हे प्रभावत जा जा स्वरूप को भक्त ध्यान करे है ता

यावत्पृथक्त्वमिदमात्मन ईंद्रीयार्थमायाबलं भगवतो जन ईस पश्येत् तावन्नसंसृतिरसौ प्रतिसंक्रमेत व्यर्थापि दुःख
निवहं वहती क्रीयार्था ९ अह्न्यापृतार्तकरणा निशि निःशयाना नानामनोरथधिया क्षणभग्ननिद्रः दैवाहतार्थरचना ऋषयोपि दे
व युष्मत्प्रसंगविमुखा इह संसरंति १० त्वं भक्तियोगपरिभावितहृत्सरोज आस्से श्रुतेक्षितपथो ननु नाथ पुंसां यद्यद्धियात
उरुगाय विभावयंति तत्तद्वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय ११ नातिप्रसीदति तथोपचितोपचारैराराधितः सुरगणैर्हृदि बद्धकामैः य
त्सर्वभूतदययाऽसदलभ्ययैको नानाजनेष्ववहितः सुहृदंतरात्मा १२ पुंसामतो विविधकर्मभिरध्वराद्यैर्दानेन चोग्रतप
सा व्रतचर्ययाच आराधनं भगवतः स्तव सत्क्रियार्थो धर्मोर्पितः कर्हिचिद्ध्रियते न यत्र १३ शश्वत्स्वरूपमहसैव निपी
तभेदमोहाय बोधधिषणाय नमः परस्मै विश्वोद्भवस्थितिलयेषु निमित्तलीलारासाय ते नम इदं चकृमेश्वराय १४॥

ता रूप को साधन के अनुग्रह के लीये तुम प्रगट करो हो ११ हृदय में बंधी है कामना जिन के ऐसे देव गणनें बहुत प्रकार पूजा धूप आदि करि
तुम्हारी पूजा करी तोउ तुम प्रसन्न नहीं होतो जो तुम नाना प्राणीन में विराजो हो सब के हितकारी अंतरात्मा हो १२ याते पुरुषन को ना
ना कर्म करि यज्ञ दान उग्र तप व्रत इन करि तुम्हारी आराधना करनी यही श्रेष्ठ है प्रमान को फल है जो तुम में अर्पण कीयो धर्म न बहु ना
श को नहीं प्राप्ति होय है १३ निरंतर स्वरूप चैतन्य करि दूरि करि दियो है भेद मोह जानें विद्या ते शक्ति जा की ता तुम्हे प्रणाम है
विश्व की उत्पत्त पालन नाश को निमित्त जो माया सो है क्रीडा जा की ता ईश्वर के अर्थ हम प्रणाम करे हैं १४ १४ १४ १४

भा॰त॰
२२

हे भुवन मंगल हमारे उपासनके लीयें ध्यानमें पर आपनें रूप दिखायें तातें तुम्हारे अर्थ अनुराग करि हम प्रणाम करें हैं जो तुमकों तुमतें नि
ष नरकके परनहारे आदर दें हैं ४ और जो भक्त श्रवणरूपी पवननमें प्राप्ति कीयो तुम्हारे चरणारविंदको गंध तातें कर्णरूपी छिद्रन करि
ग्रहें हैं और भक्ति करि तुम्हारे चरणारविंदको ग्रहण करें हैं तिन भक्तनके हृदय कमल तें कबहू तुम दूरि नहीं होऔ अहो तुम ऐसे हो ५
द्रव्य घर सुहृद ये हैं निमित्त जाकों ऐसो भय तब ही ताई शोक वडाय संभव और बडो लोभ और ये मेरी यह दुरखको भाव कुंठो आ

तद्वा इदं भुवनमंगल मंगलाय ध्याने स्म नो दर्शितं त उपासकानाम् तस्मै नमो भगवतेऽनुविधेम तुभ्यं यो नादृतो
नरकभाग्भिरसत्प्रसंगैः ४ ये तु त्वदीयचरणांबुजकोशगंधं जिघ्रंति कर्णविवरैः श्रुतवातनीतम् भक्त्या गृहीतचरणः पर
या च तेषां नापैषि नाथ हृदयांबुरुहात्स्वपुंसाम् ५ तावद्भयं द्रविणदेहसुहृन्निमित्तं शोकः स्पृहा परिभवो विपुलश्च लो
भः तावन्ममेत्यसदवग्रह आर्तिमूलं यावन्न तेंघ्रिमभयं प्रवृणीत लोकः ६ दैवेन ते हतधियो भवतप्रसंगात्सर्वाशुभो
पशमनाद्विमुखेंद्रिया ये कुर्वंति कामसुखलेशलवाय दीना लोभाभिभूतमनसोऽकुशलानि शश्वत् ७ क्षुत्तृट्त्रिधा
तुभिरिमा मुहुरर्द्यमानाः शीतोष्णवातवर्षैरितरेतराच्च कामाग्निनाच्युत रुषा च सुदुर्भरेण संपश्यतो मन उरुक्र
म सीदते मे ८

१ ख

अरु तब ही ताई है जब ताई निर्भय तुम्हारे चरणारविंद तिन्हें यह पुरुष नहीं वरें हैं और चरणकी शरण लीयें हैं सब भय हरि
होत हैं ६ दैवने उनकी बुद्धि नष्ट करी तें जे सब अशुभनके दूरि करिवेवारे तुम्हारो प्रसंग तातें विमुख हैं और लोभ करि व्यापित जि
नके मन ऐसे वे विषय सुखके लीयें निरंतर खोटे कर्मनको करे हैं ७ क्षुधा पिपासा वात पित्त कफ और शीत उष्ण पवन व
र्षा करि पीड्यमान राजा प्रजा और कामाग्नि अरु दुर्भर क्रोध करि पीड्यमान प्रजा तिन्हें देष हे प्रभो मेरो मन बहुत पीडा पावे है ८

ताईसमैतरिकैनाभिसरोवरमैकमलताकेउपरआपवैठगे औरजलपवनआकासयेपांचौदेषतभयो लोकनकीसृष्टिजाकीग्रै सोंब्रलाघातेंआगेंऔरकछूनदेषतभयो ३२ लोकरसष्टिकेकारणवनादिकपाचयेलीहैं यहदेषकरसृष्टिमैलीयौहैचित्तजानें रजो गुणकरयुक्तभगवाननेलगायौहैचित्तजानेंऐसौइछ्या अस्तुतिकरवेकौंजोग्यहरितासिंअस्तुतिकरतभयौ ३३ इतिश्रीभाग वतेतृतीयस्कंधेअष्टमोध्याय ८ ब्रह्मोवाच: हेप्रभोमैनेवहुतदिनउपासनाकरी तुमअवजानेहौ औरदेहधारीनकौंतुम्हारीगति नजानीजाय स्वरूपमैमनलगैयहवडोदेषैहैं औरहेप्रभोतुमतेविरक्तकछूनहीं तुमहीसर्वस्तरूपहौ सोउत्पत्तिनहीं जामायाके

तर्ह्येवतन्नाभिसरःसरोजमात्मानमंभःश्वसनंवियच्च ददर्शदेवोजगतोविधातानातःपरंलोकविसर्गदृष्टिः ३२ सकर्म बीजंरजसोपरक्तःप्रजाःसिसृक्षन्नियदेवदृष्ट्वा अस्तौद्विसर्गाभिमुखस्तमीड्यमव्यक्तवर्त्मन्यभिवेशितात्मा ३३ इतिश्री मद्भागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेनामअष्टमोध्यायः ८ ब्रह्मोवाच: ज्ञातोसिमेद्यसुचिरान्ननुदेहभाजांनज्ञायतेभगव तोगतिरित्यवद्यं नान्यत्वदस्तिभगवन्नपितन्नशुद्धंमायागुणव्यतिकराद्यदुरुर्विभासि १ रूपंयदेतदवबोधरसोदयेन शश्वन्निवृत्ततमसःसदनुग्रहाय आदौगृहीतमवतारशतैकबीजंयन्नाभिपद्मभवनादहमाविरा सं २ नातःपरंपरमयद्भवतःस्वरूपमानंदमात्रमविकल्पमविद्धवर्चः पश्यामिविश्वसृजमेकमविश्वमात्मन् भू तेंद्रियात्मकमदस्तउपाश्रितोस्मिः ३

गुणनकेसोभनंत तुमवहोतप्रकारकेभासौहौ १ साधनकेअनुग्रहकेलीयें चिच्छक्ति केआविर्भावकरिपहलैयहरूपआपनैग्रहणकीयोहै जैसेसंकराभअवतारकोंविजहैं तुम्हारोनाभिकमलसोईभयोघर तामेंप्रगटभयो २ अषयातेंपरें औरआपकोस्वरूपनहींपहीहैं जोआनंदमात्रविकल्परहितआनाहतिप्रकासहैं ऐसो हेदजौविश्वकेसृजवेवारोविश्वतेंन्यारोअमलहौं भूतेंद्रियनकोंकारणतामैंआश्रितहौ ३

अपनी कामना करवे हो कमार्गकरि पूजन करे तिनकों कृपा करि चरणकमल दिखावें हैं कैसें चरण हैं नखहीमयूख तिनकी जो किरन तिनकरि
भिन्न जो अंगुली तेई हैं मनोहर पत्र जाके २६ लोकन की आर्तिहरिवे वारी है मुसक्या जिनमें और देदीप्यमान कुंडलन करि मंडित अरुण
ताकों आचरण करें जो ओष्ठबिंब सो है जामें सुंदर जामें नासिका सुंदर भ्रुकुटी मुख करि पूजकन कों सन्मान करें हैं २७ कदंब के पराग
तुल्य जो पीत वस्त्र और मेखला तिन करि नितंब सुंदर अलंकृत और श्रीवत्स चिह्न जो वक्षस्थल तापें परे जो बहुमोल्य जो हार तिनकरि
अलंकृत २८ बहुत मोल के बाजूबंदन में मणिसमूह तिनकरि व्याप्त जो भुजदंड तेई हैं हजारन साखा जाकी ऐसे भुवनात्मक वृक्ष है:

पुंसां स्वकामाय विविक्तमार्गैरभ्यर्चतां कामदुघांघ्रिपद्मं प्रदर्शयंतं कृपया नखेंदुमयूखभिन्नांगुलिचारुपत्रं २६ मुखे
न लोकार्तिहरस्मितेन परिस्फुरत्कुंडलमंडितेन शोणायितेनाधरबिंबभासा प्रत्यर्हयंतं सुनसेन सुभ्र्वा २७ कदंबकिंजल्क
पिशंगवाससा स्वलंकृतं मेखलया नितंबे हारेण चानंतधनेन वत्स श्रीवत्सवक्षःस्थलवल्लभेन २८ परार्ध्यकेयूर
मणिप्रवेकपर्यस्तदोर्दंडसहस्रशाखं अव्यक्तमूलं भुवनांघ्रिपेंद्रमहींद्रभोगैरधिवीतवल्शं २९ चराचरौको भगवन्
महीध्रमहींद्रबंधुं सलिलोपगूढं किरीटसाहस्रहिरण्यशृंगमाविर्भवत्कौस्तुभरत्नगर्भं ३० निवीतमाम्नायमधुव्रतश्रिया
स्वकीर्तिमय्या वनमालया हरिं सूर्येंदुवाय्वग्न्यगमं त्रिधामभिः परिक्रमत्प्राधनिकैर्दुरासदं ३१

प्रधान जाके मूल और जे सेंच इनके वस्त्रन में सर्प लिपटे होइ ऐसें तौ प्रोषपके फणन करि वेष्टित है कंधा जाकौ २९ फेर भगवान्
परवत सरीके हैं स्थावर जंगम को निवास हैं वाह्में सर्प रहे हैं ये प्रोषधके वे धरे हैं मैनाकादिक परवतन में हैं येह जल करि व्याप्त हैं
सहस्र जे मुकुट तेई हैं सुवर्ण के शिखर जाके तासमान जाको स्वभाव मणि सो है गर्भ जाकौ ३० वेदही भये भौंरा तिनकरि शोभा
जाकी ऐसी अतिरमणीक वनमाला करि युक्त सूर्य चंद्रमा पवन अग्नि इनकर अगम्य तीन्यों लोकन में हैं मार्ग जिनकी ऐसे रक्षा
के लीये चारयों ओर फिरत और सेनापती जिनकों प्रयोजन तिनकों दुर्दर्शनादिक असत्रन करि दुराय है ऐसे हरि कों ब्रह्मा देखीं न क

सो ब्रह्मा ऐसें देष करि ता कमल नाभि की डाडी में होइ भीतर जल में प्रवेश करत भयो । नीचे जाई वा कमल नाभि के भीतर ढूंढत ब्रह्मा मध्य न जा
नत भयो १९ हे विदुर ता अपार तम में अपने सृजिवे वारे हरि कों ढूंढत ब्रह्मा कों बहुत काल बीतो मतो भयो । जो देहधारीन कूं भय देत सब की
आर्बल काटै है ऐसो संवत्सर रूप काल गयो जो हरि कों सुदर्शन चक्र कहीयत है २० जब हरि न मिले ब्रह्मा की कामना पूरन न भई तब ब्रह्मा
अपने कमल पे बैठ धीरें धीरें स्वास रोकि चित्त जीत समाधि जोग में आरूढ होत भयो २१ सो ब्रह्मा सौ वर्ष ताई की जो योग गति ता करि कें लौं
हे ज्ञान जा कों सो आप ही तें अपने ध्यान मैं प्रकाश करत जो भगवान् तिने देषत भयो । जिनें पहिले बहुत यजन करत न देष्यो । जो भगवान कम

स इत्थमुद्वीक्ष्य तदब्जनालनाडीभिरन्तर्जलमाविवेश । नार्वाग्गतस्तत्खरनालनालनाभिं विचिन्वंस्तदविन्दताजः १९ तमस्यपारे वि
दुरात्मसर्गं विचिन्वतोऽभूत्सुमहांस्त्रिणेमिः । यो देहभाजां भयमीरयाणः परिक्षिणोत्यायुरजस्य हेतिः २० ततो निवृत्तोऽप्रतिलब्धकामः स्व
धिष्ण्यमासाद्य पुनः स देवः । शनैर्जितश्वासनिवृत्तचित्तो न्यषीददारूढसमाधियोगः २१ कालेन सोऽजः पुरुषायुषाभिप्रवृत्तयोगे
न विरूढबोधः । स्वयं तदन्तर्हृदयेऽवभातमपश्यतापश्यत यन्न पूर्वं २२ मृणालगौरायतशेषभोगपर्यङ्क एकं पुरुषं शयानं । फणा
तपत्रायुतमूर्द्धरत्नद्युभिर्हतध्वान्तयुगान्ततोये २३ प्रेक्षां क्षिपन्तं हरितोपलाद्रेः संध्याभ्रनीवेरुरुरुक्ममूर्ध्नः । रत्नोदधारौषधि
सौमनस्यवनस्रजो वेणुभुजाङ्घ्रिपाङ्घ्रेः २४ आयामतो विस्तरतः स्वमानदेहेन लोकत्रयसंग्रहेण । विचित्रदिव्याभरणांशुका
नां कृतश्रियापाश्रितवेषदेहं २५

जो भगवान कमल के दंड तै गौर सचिक्कण हैं सेस रूप जो सेष सो ई भई सेया ता पें सोमते हैं और सेष के फण रूप छत्र में सब और लगे जे
मणि तिन में जो रत्न के समूह तिन की जोति करि हरि भयो है अंधकार जा कों ऐसें प्रलय के जल में शेष शैया पें पोढे हरि को दर्शन करत भयो २३
संध्या के बादर बाघा सो और बीजुरी की सी नाई जा को पीताम्बर वा लाम्पय परवत की सोभा को पीताम्बर करि तिरस्कार करे हैं अनेक स्वर्ण के हैं
सिखर जा में हरि के उलास वर्ण के मुकुट हैं फिर रैसो पुक्न है हिरण्य जल की धारा औषधी पुष्प समूह ऐसी वनमाला की सी नाई जा के
बाहु हैं भुजा की सी नाई जा के वृक्ष हैं चरण की सी नाई जा के ऐसे परवत की सोभा को तिरस्कार करे है २४ देह विस्तार करि अपने प्रमाण की
सी नाडी जा के वृक्ष हैं चरण की सी नाई जा के ऐसे परवत को प्रभा तें नाकर सोभित है २५

प्रेरत अपनो स्थान जो जल ताबिषें बास करत भयो जैसें काष्ठ में अग्नि रहै तें अपने ई मैं रो को तें प्रभाव जानें ११ हजार चौकरी ता
ई जल मैं सोवत आपुही प्रेरी ऐसी काल रूपी जो शक्ति ता कर प्राप्त भये कर्म तंत्र जाकों ऐसें भगवान अपनी देह मै लीन जे सब लो
कन तिन्है देषत भये १२ लोकन सृष्टि के लीयें अर्थ सूक्ष्म में अति निविष्ट जाकी दृष्टी ताके अंतर गत जो अर्थ सो काल अनुगत रजो
गुण ता करि स्तुति त होई बडो भयो ताहन सो नाभि में तें कमल रूप होई निकसत भयो १८ वह जो कमल कोस सो कर्मनि जगायो
जो काल ताकर उदवत भयो अपनी कांति करि विशाल जो जलना हि प्रकाश करत सूर्य की सी नाई श्रीविष्णु हैं उत्पत्ति स्थान जाको १४

सोंतःशरीरेर्पितभूतसूक्ष्मः कालात्मिकां शक्तिमुदीरयाणः उवास तस्मिन् सलिले पदे स्वे यथानलो दारुणि रुद्धवीर्यः ११
चतुर्युगानां च सहस्रमप्सु स्वपन् स्वयोदीरितया स्वशक्त्या कालाख्ययासादितकर्मतंत्रो लोकानपीतान्ददृशे स्वदेहे १२ तस्या
र्थसूक्ष्माभिनिविष्टदृष्टेरंतर्गतोर्थो रजसा तनीयान् गुणेन कालानुगतेन विद्धः सूष्यंस्तदाभिद्यत नाभिदेशात् १३ स
पद्मकोशः सहसोदतिष्ठत्कालेन कर्मप्रतिबोधनेन स्वरोचिषा तत्सलिलं विशालं विद्योतयन्नर्क इवात्मयोनिः १४
तल्लोकपद्मं स उ एव विष्णुः प्रावीविशत् सर्वगुणावभासं तस्मिन् स्वयं वेदमयो विधाता स्वयंभुवं यं स्म वदंति सोभूत् १५
तस्यां च सांभोरुहकर्णिकायामवस्थितो लोकमपश्यमानः परिक्रमन् व्योम्नि विवृत्तनेत्रश्चत्वारि लेभेनुदिशं मुखानि १६
तस्माद्युगांतश्वसनावघूर्णजलोर्मिचक्रात् सलिलाद्विरूढं उपाश्रितः कंजमु लोकतत्त्वं नात्मानमद्धाविददादिदेवः १७ क
एष योसावहमब्जपृष्ठ एतत्कुतो वाब्जमनन्यदप्सु अस्ति ह्यधस्तादिह किंचनैतदधिष्ठितं यत्र सता नु भाव्यं १८

ताकमल की कर्णिका पैं बैठे जो ब्रह्मा लोकन को हित ता हीं ग्रीवा चलावत लोकन लोकन के देषवे के लीयें हैं ग्रीवा हजानें ऐसो ब्रह्मा बास
दीशान में वार प्रलय को प्राप्त भयो १५ सब जीवन के विषयें प्रकास करवे वारो लोकात्मा कमल ता में भगवान प्रवेश करत भये तु
व वा कमल में वेदमय ब्रह्मा होत भयो जाकों स्वायंभू कहते हैं १६ प्रलय की पवन करि स्पर्श होत रमन के समूह जो में ऐसें जल में ते भयो
जो कमल ता पैं बैठो ब्रह्मा लोक रचना हेत न जानत भयो और आपुहु कौं साक्षात न जानत भयो जो मैं कौन १७ सो मैं हूं जो कमल के उपर बै
ठो हूं और एक ही पर कमल में कहां तें भयो और याके नीचें कोई है याके आश्रय पर कमल जो कोई एक करि यह कमल भाव ना मैं आवे है १८

फरसंकर्षणऐसेहैं वासुदेवतिनकोंनामऐसेंपरमानंद हरिकोध्यानमार्गकरि अनुभवकरिकेसर्वेश्वरकरप्रजियेतें अंतर्मुखकी
यांहेनेत्रकमलजिननेंसोसनत्कुमारनकेलीयेंप्रगटजिननेंकीयों कछुलीयेंकछुएकनेत्रकमलकोंखोलेंहें ४ गंगाजलकरि
भीजेजेजटासमूहतिनकरसनकादिकपणजीकेचरणकमलकोंस्पर्शकरेंहैं औचरणकोंवरननकेअर्थेनानाभेटलेंनागकंन्या
एजेहैं ५ हजारमुकुटतिनमैंजेउत्तममणि तिनकरजेदीप्यमानहैंफणनकोंसहस्रजाकें ऐसेफजीकेजेकर्मतिनेंअनुरागकरि
सहितस्खलितजामेंपदऐसीवाणीपाठि वासनत्कुमारनेंपूछों सोउनकेअर्थश्रीभागवतकहतभए उनकोंसांख्यायननेंप

स्वमेवधिष्ण्यंबहुमानयंतंयद्वासुदेवाभिदमामनंति प्रत्यग्धृताक्षांबुजकोशमीषदुन्मीलयंतंविबुधोदयाय ४ स्वर्धुन्युदार्द्रैः
स्वजटाकलापैरुपस्पृशंतश्चरणोपधानं पद्मंयदर्चंत्यहिराजकन्याःसप्रेमनानाबलिभिर्वरार्थाः ५ मुहुर्गृणंतोवचसानु
रागस्खलत्पदेनास्यकृतानितज्ज्ञाः किरीटसाहस्रमणिप्रवेकप्रद्योतितोद्दामफणासहस्रं ६ प्रोक्तंकिलैतद्भगवत्तमेन
निवृत्तिधर्माभिरतायतेन सनत्कुमारायसचाहपृष्टःसांख्यायनायांगधृतव्रताय ७ सांख्यायनःपारमहंस्यमुख्योविव
क्षमाणोभगवद्विभूतीर्जगादसोस्मद्गुरवेन्विताय पराशरायाथबृहस्पतेश्च ८ प्रोवाचमह्यंसदयालुरुक्तोमुनिःपुलस्त्ये
नपुराणमाद्यं सोहंतवैतत्कथयामिवत्सश्रद्धालवेनित्यमनुव्रताय ९ उदाप्लुतंविश्वमिदंतदासीद्यन्निद्रयामीलितदृ
ङ्न्यमीलयत् अहींद्रतल्पेधिशयानएकःकृतक्षणःस्वात्मरतौनिरीहः १०

छों तबवेसांख्यायनकेअर्थकहतभए ७ पारमहंसधर्ममेंमुख्य ऐसेसांख्यायनभगवद्विभूतितिनकेअर्थकहतभए ७ ता
पारासरकोंप्रसन्नहोय पुलस्त्यमुनिनेंआसीर्वादिकेदीयों तबपुराणवक्ताहोतवडेरपालपाराशरजूमेरेअर्थश्रीभागवत
कहतभएं सोहेविदुरतुमकोंमेंकहेंआगेंकहतहुंअनुराकरउक्त ओरअनुव्रतीहैतिनेंसुनि ८ जबप्रलयमेंयहविश्वजलकरव्याप्त
भयो तबअतिरोहितजिनकीचिच्छक्ति ऐसेंभगवानएकशेषशैयापेंसोई योगनिद्राकरिनेत्रमूंदतभए आत्मरतिमेंपायें
हैंअवसरजानेंसोभगवान्निरीहहोईसोवतभये १० सोभगवान्शरीरकेभीतरअर्पणकरेहैं भूतसूक्ष्मजानेंकालशक्तिकों

भा०त्र० १९

हरिकी जोंन सेवन करें हैं और जोंन हरिके संवत सो पारपीछें हैं सो कहों ३७ जीव कों स्वरूप कहों और परमात्मा कों स्वरूप कहों और वेदमें कह्यों जो ज्ञान ताइ कहों और गुरुशिष्य कों जो प्रयोजन ताइ कहों ३८ और जो विवेकीन के ज्ञान के साधन ते कहों और गुरुसेवनकों प्राप्त ते ज्ञान कैसें और भक्ति वैराग्य कैसें होइ सो कहौ ३९ मपाकरनकु जाकी दृष्टी असो मैं अज्ञान ताते हरिकी लीला जानवेके लीयें जीये प्रश्न कीये तिने मित्र भाव करकहों ४० जीव कों ज्ञान उपदेश करें अभय दान करनों याकी सोलनी कलाहू सबवेदन को पाठ और यज्ञ तप दान कोऊ नहीं करसकें ते तातें तत्व उपदेश करों ४१ शु०उ० हे राजन् असें कौरवनमें श्रेष्ठ विदुर

तत्वानां भगवंतेषां कतिधा प्रतिसंक्रमः तत्रेमं क उपासीरन् क उस्विदनुसेरते ३७ पुरुषस्य च संस्थानं स्वरूपं वा परस्य च ज्ञानं च नैगमं यत्तद्गुरुशिष्यप्रयोजनं निमित्तानि च तस्येह प्रोक्तान्यनघसूरिभिः ३८ स्वतो ज्ञानं कुतः पुंसां भक्तिर्वैराग्यमेव वा ३९ एतान्मे पृछतः प्रश्नान् हरेः कर्मविवित्सया ब्रूहि मेऽज्ञस्य मित्रत्वादजया नष्टचक्षुषः ४० सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ४१ श्रीशुक उवाच: स इत्थमापृष्टपुराणकल्पः कुरुप्रधानेन मुनिप्रधानः प्रवृद्धहर्षो भगवत्कथायां संचोदितस्तं प्रहसन्निवाह ४२ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीये सप्तमोऽध्यायः ७ मैत्रेय उवाच: सत्सेवनीयो बत पूरुवंशो यल्लोकपालो भगवत्प्रधानः बभूविथेहाजितकीर्तिमालां पदे पदे नूतनयस्यभीक्ष्णं १ सोऽहं नृणां क्षुल्लसुखाय दुःखं महद्गतानां विरमाय तस्य प्रवर्तये भागवतं पुराणं यदाह साक्षाद्भगवानृषिभ्यः २ आसीनमुर्व्यां भगवंतमाद्यं संकर्षणं देवमकुंठसत्वं विवित्सवस्तत्वमतः परस्य कुमारमुख्या मुनयोऽन्वपृछन् ३

जीने मुनीन में श्रेष्ठ है मैत्रेयजी कों जब असें पूछ्यों भगवत्कथान में प्रश्न्यों तब बहौतें आनंद जाकों असें मैत्रेयजी हसतसेय ह बोले ४२ इति श्रीभागवते तृतीये सप्तमो ७ पर तुम्हारों पूरुजीं वंश साधन के सेयवे लायक है जामें तुम भागवतन में मुख्य लोकपाल धर्मराज ती प्रवर्ती रहे हे ते सो तुम भगवान् की जो कीर्ति माला ताहि पद पद में नवीन करों हों १ सो मैं थोरे विषयसुख के लीयें बडे २ दुःख कों प्राप्ति भये जे मनुष्य तिनके दुःख दूरि करवेके लीयें श्रीभागवतपुराण कहूंगो जो साक्षात सेसजी ने सनकादिकनके आगें कह्यों २ शंकर्षणजीने परमेश्वर कौ तत्व जानो चाहत असें जे सनकादिक

और गुणावतारन करि सर्गस्थिति और नाश या विश्व कौं करत जो भगवान् तिनके उदार चरित्र मेरे आगें कहौं २८ हे मैत्रेय वर्णा
श्रम कौं विभाग कहौं और रूपशील स्वभाव ते कहौं ऋषिन के जन्म और कर्म ए कहौं और वेदन के विभाग कहौं २९ यज्ञन के विस्तर औ
र योगन के मार्ग सो कहौं और निष्कर्म जो सांख्य योग सो कहौं हरि नें कह्यौ जो अपनौ पूजा प्रकार सो कहौं ३० पाखंडिन कौं होति सो ई वै म
षम्यता ता हि कहौं प्रतिलोम जो भए तिन की रचना कहौ जीव की जो गति तिनि जनी गुणकर्मन तें भई सो कहौं ३१ धर्म अर्थ काम मोक्ष न
के उपाय परस्पर अविरोध कहौं कृषि आदि कवनी और दंडनीति और शास्त्र श्रवण की विधि न्यारी न्यारी करि कहौं ३२ श्राद्ध की विधि और

गुणावतारैर्विश्वस्य सर्गस्थित्यप्ययाश्रयं सृजतः श्रीनिवासस्य व्याचक्ष्वोदारविक्रमं २८ वर्णाश्रमविभागांश्च रूपशील
स्वभावतः ऋषीणां जन्मकर्माणि वेदस्य च विकर्षणं २९ यज्ञस्य च वितानानि योगस्य च पथः प्रभो नैष्कर्म्यस्य च सांख्यस्य
तंत्रं वा भगवत्स्मृतं ३० पाखंडपथवैषम्यं प्रतिलोमनिवेशनं जीवस्य गतयो याश्च यावतीर्गुणकर्मजा ३१ धर्मार्थका
ममोक्षाणां निमित्तान्यविरोधतः वार्त्ताया दंडनीतेश्च श्रुतस्य च विधिं पृथक् ३२ श्राद्धस्य च विधिं ब्रह्मन् पितॄणां सर्गमेव
च ग्रहनक्षत्रताराणां कालावयवसंस्थितिं ३३ दानस्य तपसो वापि यच्चेष्टापूर्त्तयोः फलं प्रवासस्थस्य यो धर्मो यश्च पुंस
उतापदि ३४ येन वा भगवांस्तुष्येद्धर्मयोनिर्जनार्दनः संप्रसीदति वा येषामेतदाख्याहि मेऽनघ ३५ अनुव्रतानां शि
ष्याणां पुत्राणां च द्विजोत्तम अनापृष्टमपि ब्रूयुर्गुरवो दीनवत्सलाः ३६

पितरन कौं सर्ग कहौं और ग्रह नक्षत्र तारागण
न की जो कालचक्र मैं स्थिति सो कहौं ३३ दान कौ यज्ञ कौ तप कौ जो फल वापी कूप तलाव इन कौं बनायवे कौ जो फल और प्रवा
स मैं रहिवे वारे कौ जो फल और आपत्ति मैं जो पुरुष कौ धर्म सो कहौ ३४ धर्मयोनी मैं ऐसे जो जनार्दन जा कर्म करि प्रसन्न होंहैं
और जिन पै प्रसन्न होंहैं यह मेरे आगें कहौं ३५ हे मैत्रेय जी जो अनुवर्ती शिष्य और पुत्र तिन कौं दीन दीन वे पूजे गुरु ते अन ए
छी हू बात कहै हैं जो मैं नें न पूछी और गुह्य होइ सो उ कहौं ३६ और हे भगवान् उन तत्वन कौं जिन प्रकार सौं प्रलय रहैं ता प्रलय

वास्तवतें नहीं घटमें नें निश्चय करली यों वह प्रतीत रह गई हैं ताहूकूं तुम्हारे चरणारविंद की कृपा करि दूरि करूंगों १८ जो तुम्हारी सा
धुन की सेवा करनि विकारन भगवान् हरि के चरणन विषे संसार को दूरि करवे वारो तीव्र प्रेम मन न तो है १९ थोरे जिन नें तप करे हैं
तिन कों साधुन की सेवा दुर्लभ है जिन साधुन में देवन के देव भगवान् नित्य गाइये है २० भगवान् पहलें विकारन करि सहित
महत्तादिकन कों क्रम तें सृज करि तिन द्वारा विराट कों सृज करि वामें भगवान् प्रवेश करत भए २१ जाकों आदि पुरुष कहे हैं
हजारन हैं चरण जंघा भुजा जाके जामें ये सब लोक प्रसन्न होय रहे हैं २२ जामें दश प्रकार को प्राण है इंद्रिय अधिदेवतान्तर

अथाभावं विनिश्चित्य प्रतीतस्यापि नात्मनः तां चापि युष्मच्चरणसेवयाहं पराणुदे १८ यत्सेवया भगवतः कूटस्थस्य मधु
द्विषः रतिरासो भवेत्तीव्रः पादयोर्व्यसनार्दना १९ दुरापा ह्यल्पतपसः सेवा वैकुण्ठवर्त्मसु यत्रोपगीयते नित्यं देवदेवो
जनार्दना २० सृष्ट्वाग्रे महदादीनि सविकाराण्यनुक्रमात् तेभ्यो विराजमुद्धृत्य तमनु प्राविशद्विभुः २१ यमाहुराद्यं पुरुषं
सहस्राङ्घ्र्यूरुबाहुकं यत्र विश्व इमे लोकाः सविकाशं त आसते २२ यस्मिन् दशविधः प्राणः सेन्द्रियार्थेन्द्रियस्त्रिवृत् त्वयेरितो
यतो वर्णास्तद्विभूतीर्वदस्व नः २३ यत्र पुत्रैश्च पौत्रैश्च नप्तृभिः सह गोत्रजैः प्रजा विचित्राकृतय आसन्याभिरिदं ततं २४
प्रजापतीनां स पतिश्चकॢपे कान्प्रजापतीन् सर्गांश्चैवानुसर्गांश्च मनून्मन्वन्तराधिपान् २५ एतेषामपि वंशांश्च वंशानुच
रितानि च उपर्यधश्च ये लोका भूमेर्मित्रात्मजासते तेषां संस्थां प्रमाणं च भूर्लोकस्य च वर्णय २६ तिर्यङ्मानुषदेवानां सरीसृ
पपतत्त्रिणां वद नः सर्गसंव्यूहं गार्भस्वेदद्विजोद्भिदां २७

अधित्व ताहरि तें तुमनें वर्णन कीजे ताही की विभूती ब्रह्मादिक कैसें भए यह हमारे आगें कहो २३ तातें ब्रह्मा तें पुत्र पौत्र बेटा नाती गोत्रन
के न सहित विचित्र तिनकी आकृत ऐसी प्रजा होत भई तिन करय तत विश्व ही व्याप्त है २४ सो प्रजापति जिन कोंपति ब्रह्मा कौन कौन प्रजाप
ति कों रचत भए और सर्ग अनुसर्ग मनु मन्वंतरन के अधिपति तिनें कैसें रचत भए २५ इन सबन के वंस और जो वंश में भए तिन के चरि
त्र में ते आगें कहो और इस में जे ऊपर नीचे लोक रहे हैं तिनें कहो २६ और तिन लोकन कों रचना कहो भूलोक कों वर्णन करो तीर्य
क मनुष्य देवता जंगम और पक्षीन की सृष्टि कहो २७ और स्वेदज अंडज जरायुज उद्भिज इनकी सृष्टि की रचना हमारे आगें कहो ॥

विरोध करैहै जो ईश्वरकों अविद्याकर कार्पण्य और विउन बंधन यह हरिकी माया है ९ जैसें स्वप्नमें देखवेवारेकों अपने शिरकों काटवो
प्रतीतहोहै और शिरछेदतेनही ऐसेंही हैनही और जीवकों देहादिकनको धर्मसी षे है १० जैसें जलमें जो चंद्रमाके प्रतिबिंबकों दृष्टिसो
जलोपाधिकृत है वास्तवतेनही ऐसेंही याबातकों वास्तवतें देहके धर्मसुख दुःखादिकनही परिदिखाई देहै ११ सोदेहधर्मसंसर धर्म
निवृत्तिकर जो हरिकृपा ताकरभगवान्‌की जो प्राप्तिताकरिकें और अंतरध्यानहोजाय १२ जबहरिकों अपनेमें जानिलेइ तावपाकेसव
क्लेशनष्टहोइजाहै जैसेंभलीभांतिजे सोयेंताकों सवपीडा निवृत्तिहोइजाहै १३ हरिकेगुणानुवादको जोश्रवणसो संपूर्णक्लेशनकोंसा

मैत्रेयउवाच: सेयंभगवतोमायायन्नयेनविरुध्यते ईश्वरस्यविमुक्तस्यकार्पण्यमुतबंधनं ९ यदर्थेनविनामुष्यपुं
सआत्मविपर्ययः प्रतीयतउपद्रष्टुः स्वशिरश्छेदनादिकः १० यथाजलेचंद्रमसःकंपादिस्तत्कृतोगुणः दृश्यतेऽसन्नपिद्रष्टु
रात्मनोनात्मनोगुणः ११ सवैनिवृत्तिधर्मेणवासुदेवानुकंपया भगवद्भक्तियोगेनतिरोधत्तेशनैरिह १२ यदेंद्रियोपरामोऽथ
द्रष्टात्मनिपरेहरौ विलीयंतेतदाक्लेशाःसंसुप्तस्येवकृत्स्नशः १३ अशेषसंक्लेशशमंविधत्तेगुणानुवादश्रवणंमुरारेः कुतः
पुनस्तच्चरणारविंदपरागसेवारतिरात्मलब्धा १४ विदुरउवाच: संछिन्नःसंशयोमह्यंतवसूक्तासिनाविभो उभयत्रा
पिभगवन्मनोमेसंप्रधावति १५ साध्वेतद्व्याहृतंविद्वन्नात्ममायायनंहरेः आभात्यपार्थंनिर्मूलंविश्वमूलंनयद्ब
हिः १६ यश्चमूढतमोलोकेयश्चबुद्धेःपरंगतः ताबुभौसुखमेधेतेक्लिश्यत्यंतरितोजनः १७

निकरैहै तो हरिके चरणारविंदमकरंदसों जानें जवयानें प्रीति मनकरणाई तवकौंनक्ञानेंदहोइ १४ हे प्रभो तुम्हारे वचनरूप
खड्गकरिमेरोसंसय कटगयो आगेमेरोमनदोऊबातनमें संसयकरैहै जो कैसेंबंधन और कैसेंमोक्ष सोजानें अविद्याकृतहै
वास्तवतेनही १५ हे विद्वन तुमनैं भल्योंकह्यों यह हरिकों जो जीवविषयमाय्यीनायकरइमेगत्यादिकनकों सोझूठे हैं निरमूलहै अज्ञा
नकरि अज्ञानविनानही १६ जो या लोकमें अतिसयकरमूढहै अथवा जो बुद्धितेपरे ईश्वरकों प्राप्तिहै यह दोनों सुखकों प्राप्तहोहैं
और बीचकों अधवप्रातोंक्लेशहीपावैहै सो आगेमें अल्पतों ज्ञातेंसंदेहभयोंसो भक्तुम्हारी कृपातें निवृत्तिभयो १७ हैतों प्रतीतप्रपंचपर

इंद्रीयनके अधिष्ठाता सब देवता और स्वर्ग मन करसा हैं वाणी अहंकार के अधिष्ठाता रुद्र जा कोंन बाइ सकें और तमारे वायवे मैं नहीं आवें ता भगवान् कें अर्थ दंडोत है ५० इति श्री भागवते तृतीय षष्ठोध्यायः ६ शुक उवाच ः ऐसें मैत्रेयजी नें जब कही तब वेदव्यास के पुत्र विदुरजी सुंदर वाणी करि प्रसन्न करत मैत्रेयजी सों यह बोले १ हे मैत्रेयजी भगवान चिन्मात्र ता अविकार को लीला ही कर क्रिया कैसें बनें और निर्गुण कैसें बनें २ और जो कहियें बालक की सी नाई क्रीडा करें हैं तहां बालक तो जो क्रीडा मैं उद्यम है सो भीतर की कामना करि है अथवा कोई वस्तु विलास मनों वा कोई बालिक न के संग कर और जो हरि स्वतः तृप्त और रहैं निवृत्त ताकों क्री

यतो प्राप्य निवर्तंते वाच स्यमन सा सह अहं चान्य इमे देवा तस्मै भगवते नमः ५० इति श्रीमद्भागवते तृतीय स्कंधे षष्ठो ६
श्रीशुक उवाच ः एवं ब्रुवाणं मैत्रेयं द्वैपायन सुतो बुधः प्रीणयन्निव धारत्या विदुर प्रत्यभाषत ः १ विदुर उवाच ः कथं ब्र
ह्मन भगवतश्चिन्मात्रस्याविकारिणः लीलया वापि युज्येरन्निर्गुणस्य गुणाः क्रियाः २ क्रीडायामुद्यमोर्भस्य कामश्चिक्रीडि
षान्यतः स्वतस्तृप्तस्य च कथं निवृत्तस्य सदान्यतः ३ अस्राक्षीद्भगवान्विश्वं गुणमय्यात्ममायया तया संस्थापयत्येतद्भूयः
प्रत्यपिधास्यति ४ देशतः कालतो योसाववस्थातः स्वतोन्यतः अविलुप्तावबोधात्मा स युज्येताजया कथं ५ भगवानेक एवैष
सर्वक्षेत्रेष्ववस्थितः अमुष्य दुर्भगत्वं वा क्लेशो वा कर्मभिः कुतः ६ एतस्मिन्मे मनो विद्वन्खिद्यतेज्ञान संकटे तन्नः परा
णुद विभो कश्मलं मानसं महत् ७ शुक उवाच ः स इत्थं चोदितः क्षत्त्रा तत्त्वजिज्ञासुना मुनिः प्रत्याह भगवच्चितः स्मयन्निव गत

टि॰

डा की इच्छा कैसें बनें ३ जो भगवान् गुणमई अपनी माया करया विश्व कों सृजत भए वाही करि पालन करैं हैं फेर माया ही करि संहा
र करैं ४ जो भगवान देश तैं काल तैं अवस्था ते आप तें और तें न लोप रहै तो ज्ञान ता कों ऐसे माया करि कैसें जुरें ५ सो एक ही
भगवान् कैसें भीतर जीव स्वरूप करि विराजैं हैं ता कों करमन कों करि वीं भाग्य और क्लेश ये कैसें बनें ६ या अज्ञान संकट मैं मेरो मन
खेद पावै हैं ता हि दूरि करो यह मेरे मन में बडो विस्मय है ७ शुक उ॰ हे राजन् तत्त्व जानों चाहत जो विदुर ता नें ऐसें जब मेरे तब भग
वान में ता को चित्त ऐसें मैत्रेयजी समय पाय के पद उत्तर भए ८ हे विदुर सो यह भगवान की माया है जो तर्क कर विरोध पावें तर्क

भगवान्के मुखतें वेद होत भयो। और ब्राह्मण होत भए याहीतें सब वर्णन के गुरु मुख्य होत भए ३० और भगवान की भुजानतें
क्षत्री धर्म भयो पहिलै हरिनें जीवका बनाई तापीछें वर्ण भये जो क्षत्री अपने पराक्रम नें चारि दिशान के पक्षतें वर्ण की रक्षा करैहें
जो हरि कों प्रसन्न है ३१ ता भगवान् के जंघातें लोकन की आजीविका के हेतु कृष्यादि व्यापार भए और जंघाहीतें वैश्यन को व्याकी वृत्ति
भई जाकरि मनुष्यकी आजीविका चलैहै ३२ धर्मसिद्धिकेलीये भगवान्के चरणनतें सेवा सो भई पीछें शुश्रूषा करवे वारो सूद्र भयो
जाकी वृत्ति करि हरि बहुत प्रसन्न भए ३३ एवर्ण स्वधर्म करि अपने उपजायवे वारे हरि तिनें अपनी शुद्धता करिवे हें तातें अन्न करि सहित

मुखतोवर्तत ब्रह्म पुरुषस्य कुरूद्वह यस्तून्मुखत्वाद्वर्णानां मुख्योभूद्ब्राह्मणो गुरुः ३० बाहुभ्योवर्तत क्षत्रं क्षत्रियस्तदनुव्रतः
योजातस्त्रायते वर्णान् पौरुषः कंटकक्षतात् विशोवर्तंत तस्योर्वोर्लोकवृत्तिकरीर्विभो वैश्यस्तदुद्भवो वार्तां नृणां यः समवर्तयत् ३२
पद्भ्यां भगवतो जज्ञे शुश्रूषा धर्मसिद्धये तस्यां जातो पुरा शूद्रो यद्वृत्त्या तुष्यते हरिः ३३ एते वर्णाः स्वधर्मेण यजंति स्वगुरुं हरिं श्रद्ध
यात्मविशुद्ध्यर्थं यज्जाताः सह वृत्तिभिः एतत्क्षत्तर्भगवतो दैवकर्मात्मरूपिणः कः श्रद्दध्यादुपाकर्तुं योगमायाबलोदयं ३५ अ
थापि कीर्तयाम्यंग यथामति यथाश्रुतं कीर्तिं हरेः स्वां सत्कर्तुं गिरमन्याभिधासतीं ३६ एकांतलाभं वचसो नु पुंसां सुश्लोकमौले
र्गुणवादमाहुः श्रुतेश्च विद्वद्भिरुपाकृतायां कथासुधायामुपसंप्रयोगं ३७ आत्मनोवसितो वत्स महिमा कविनादिना संवत्स
रसहस्रांते धिया योगविपक्वया ३८ अतो भगवतो माया मायिनामपि मोहिनी यत्स्वयं चात्मवर्त्मात्मा न वेद किमुतापरे ३९

हे विदुर काल कर्म स्वभाव शक्तिमान हरि। ताकी योगमाया के बलकों उहां संपूर्ण निरूपण करिवेकों न समर्थ हैं ३५ हरि की यो
गमाया को वर्णन नहीं करो जाई तथापि हरि ख्याति विन और अर्थ करिवे वारी मलीन जो अपनी वाणी ताहि पवित्र करिवेकों यथामति जैसें
सेंकल वडेनतें सुन्योतें सो वर्णन करूं हूं ३६ वाणी को एकांत लाभ यही है जो हरि के गुणगाइवो श्रोतन को फल यहै जो हरिकथा तिन में
मन लगाइवो ३७ ब्रह्मा नें हरि वर्ष पीछें योगकरि पुत्र रत भई जो बुद्धि ताकरि हरि की महिमा कछून जानी तो और कोई कहा जानेंगो ३८
यातें हरिकी माया वडे वडे मायावीरन की मोह करवे वारी है जो अपनी योगमाया को मार्ग हरि आपुही नहीं जानें तो और कोई कहा जानेंगो ३९

हाथ वाकें निकसि आए तिन मैं ईद्र लोकपाल प्रवेश करत भए देवोलैवो परव्यवहार वाकौ अंश पाहैं ताकर सहित यह पुरुष आजीविका
कौ प्राप्त होहैं २१ ता विराट पुरुषके पाउ निकसि आए तिन मैं लोकपाल विस्नु नें प्रवेश कीयो गति जो अंस ता करिकें सहित जाकर जो
प्राप्य होइ तामें लोकपाल ब्रह्मा प्रवेश करत भए बोध ब्रह्मा कौ अंस है ताकरिकें सहित जाकर जो वस्तु ताकि प्राप्ति होहै बुद्धि याके होइ
आई जानवे कौ जो अपनो वस्तु ता कौ निश्चय की प्राप्ति होहै २३ वा विराटकैं हृदय होइ आयौ तास्थान मैं चंद्रमा नें प्रवेश कीयो मन वाकौ
अंस है ता कर सहित ताकर संकल्पादिक विकार कौ प्राप्त होहै २४ ता विराटकें अहंकार होत भयो ता अपने स्थान मैं रुद्र प्रवेश करत भयो

गुदं पुंसो विनिर्भिन्नं मित्रो लोकेश आविशत् पायुनांशेन येनासौ विसर्गं प्रतिपद्यते २० हस्तावस्य विनिर्भिन्नौ विंद्रः स्वर्पतिराविशत् वार्त्तयांशेन पुरुषो यया वृत्तिं प्रपद्यते २१ पादावस्य विनिर्भिन्नौ लोकेशो विष्णुराविशत् गत्या स्वांशेन पुरुषो यया प्राप्यं प्रपद्यते २२ बुद्धिं चास्य विनिर्भिन्नां वागीशो धिष्ण्यमाविशत् बोधेनांशेन बोधव्य प्रतिपत्तिर्यतो भवेत् २३ हृदयं चास्य निर्भिन्नं चंद्रमा धिष्ण्यमाविशत् मनसांशेन येनासौ विक्रीयां प्रतिपद्यते २४ आत्मानं चास्य निर्भिन्नमभिमानोविशत्पदं कर्मणांशेन येनासौ कर्तव्यं प्रतिपद्यते २५ सत्वं चास्य विनिर्भिन्नं महान्धिष्ण्यमुपाविशत् चित्तेनांशेन येनासौ विज्ञानं प्रतिपद्यते २६ शीर्ष्णोस्य द्यौर्धरा पद्भ्यां खं नाभेरुदपद्यत गुणानां वृत्तयो येषु प्रतीयंते सुरादयः २७ अत्यंतकेन सत्वेन दिवं देवाः प्रपेदिरे धरां रजस्वभावेन पणयो ये च तानन्तु २८ तार्तीयेन स्वभावेन भगवान्नाभिमाश्रिताः उभयोरंतरं व्योम
ये रुद्रपार्षदां गणाः २९

कर्म अपनो अंस ता हिलैकें जाकर यह पुरुष कर्मन कौ प्राप्ति होहै २५ सत्व वा विराटकें भयो तास्थान मैं महतत्व नें प्रवेश कीयो
चित्त कौ अंस हैं ता कर सहित जाकर विज्ञान कौ प्राप्ति होहै २६ वा विराट पुरुष के सिरतें स्वर्ग भयो पाउनतें पृथ्वी भई आकास ना
भितें भयो जिन मैं गुणन के परणाम तें सतो मनुष्य भूतप्रेत ए प्रतीत होहैं २७ अत्यंतिक सत्वगुणन करि देवता स्वर्ग कौ प्राप्त
भए रजोगुणा के स्वभाव कर व्यवहारी मनुष्य पृथ्वी कौ प्राप्त भए उनके पीछे यक्षादिक हू पृथ्वी मे २८ और तामसी स्वभाव
करि अंतरीक्ष के रहिवे वारे रुद्र पार्षद गण भए ति आकासती मैं बसे है २९

नातेहेप्रभोतुमत्वादिकजाबोलियेंभएहें सोरमैंप्रसादेहु हमनराखेरैं तुम्हारोअनुग्रहजिनपैंऐसेहमकोंब्रह्मांडरचिनाकरिवेकेलीयें
सकलज्ञानदेहु ५० इतिश्रीभागवतेतृतीयःपंचमोध्यायः ५ मनुष्यमहेविश्वरचनाजाकी ऐसेंसोंस्थितिजोमहदादिकनकीस्थितदेषकेरिउ
नमेंप्रवेशकरतभए १ प्रकतिहेंसेनाजाकीऐसीभक्तिकेंभगवानधारणकरतेतेईपातत्वनकेगुणमैंभगवान्रएकवारहीप्रवेशक
रतभए २ सोभगवान्क्रियाशक्तिकरिवागणमेंप्रविष्टहोइ उनकीकर्मक्रियाजगावत न्यारेन्यारेवेसवहैं तिनैमिलावतभए ३ देव
मैजगाईहैक्रियाज्ञाकी ऐसेंतेईसोनकोंप्रेमगणहारिकोंप्रेरयोंअपनेशरीरविराटहेतुउपजावतभए ४ अपनेअंशकरयामैंजेवतरि

ततोवयंसत्प्रमुखायदर्थेबभूविमात्मनुकरवामकिंते त्वंनःस्वचक्षुः परिदेहशक्त्यादेवक्रियार्थेयदनुग्रहाणां ५० इतिश्री
मद्भागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेनामपंचमोध्यायः ५ मैत्रेयउवाचः इतितासांस्वशक्तिनांसतीनामसमेत्यशः प्रसुप्तलोकतंत्रा
णांनिसम्यगतिमीश्वरः १ कालसंज्ञांतदादेवींबिभ्रच्छक्तिमुरुक्रमाः त्रिर्योविंशततत्त्वानांगणंयुगपदाविशत् २ सोनुप्रविष्टोभग
वान्श्चेष्टारूपेणतंगणं भिन्नंसंयोजयामासासुप्तकर्मप्रबोधयन् ३ प्रबुद्धकर्मादैवेन त्रयोविंशतिकोगणः प्रेरितोजनय
त्स्वाभिर्मात्राभिरधिपूरुषः ४ परेणविशतास्वस्मिन्मात्रयाविश्वसृग्गणः चुक्षोभान्योन्यमासाद्ययस्मिंलोकाश्चराचराः ५
हिरण्मयसपुरुषः सहस्रंपरिवत्सरान् अंडकोशउवासाप्सुसर्वसत्त्वोपबृंहिताः ६ सवैविश्वसृजांगर्भोदैवकर्मात्मशक्तिमान्
विबभाजात्मनात्मानमेकधादशधात्रिधा ७ एषह्यशेषसत्त्वानामात्मांशःपरमात्मनः आद्योवतारोयत्रासौभूतग्रामोविभाव्यते ८
साध्यात्मसाध्यदैवश्चसाधिभूतइतित्रिधा विराट्प्राणोदशविधएकधाहृदयेनचः ९

नेप्रवेशकीयों तबविश्वसृष्टानकोगणपरस्परमिलकैंभयकोंप्राप्तभयों जामैंस्थावरजंगमसबलोकहै ५ हिरण्मयबरउपुरुषस
वजीवनसहितजलमैं हजारवर्षलौंब्रह्मांडकोशमैंरहतभए ६ सोवहविश्वसृष्टानकोईश ज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिभोक्ताशक्तिहैजामैं
अपनेकोंआपहीकरिएकप्रकारदशप्रकार तीनप्रकारविभागकरतभयों ७ वहसवप्राणीनकोंआत्मा परमात्माकोंअंसहरिकोंआदि
अवतारहै विराटरूपमैंसवप्राणीनकोंसमूहभगवान्कहीयेहै ८ अध्यात्मअधिभूतअधिदैवसहितविराटतीनप्रकारकोहै प्राणरू

विश्वकी उत्पत्ति पालन नास के लीये कीये हैं अवतार जानें तातुम्हारे चरणन के हम सब सरण आए हैं जो चरण स्मरण करे तें अपने
भक्त जिन कों अभय देत हैं ४२ जो सब सामिग्रीन सहित या देह में बैठे हैं मेरी यह दुराग्रह तजि न तें ऐसे पुरुषन की देह में तुम रहते हौं
परिदूर रहौ और भक्तन के निकट हौं तातुम्हारे चरणारविंद कों हम भजें हैं ४३ और खोटी है दृष्टि जिनकी ऐसी इंद्रीयन नें हरे हैं म
न जिनके ऐसे जे असाधुजन हैं ते हे प्रभो तुम्हारे चरणारविंद की लीला कथन करि सोभायमान जो भक्ति तिनैं न ही देखत है जो
सत्संग उनकों कहा जो सत्संग हीन हैं ते नो हरि न पाए श्रवण उनकों नहीं ४४ हे देव तुम्हारे कथामृत के पान करि बढी जो भक्ति तिन करि

विश्वस्य जन्मस्थितिसंयमार्थे कृतावतारस्य पदांबुजं ते व्रजेम सर्वे शरणं यदीस स्मृतं प्रयच्छत्यभयं स्वपुंसां ४२ यत्सानु
बंधेसत देहगेहे ममाहमित्यूढदुराग्रहाणां पुंसां सुदूरं वसतोपि पुर्यां भजेम तत्ते भगवान् पदाब्जं ४३ तान्वा असद्वृत्तभि
रक्षिभिर्ये पराहृतांतर्मनसः परेश अथो न पश्यंत्युरुगाय नूनं ये ते पदन्यासविलासलक्ष्म्याः ४४ पानेन ते देव कथासु
धायाः प्रवृद्धभक्त्या विशदाशया ये वैराग्यसारं प्रतिलभ्य बोधं यथांजसान्वीयुरकुंठधिष्ण्यं ४५ तथापरे चात्मसमाधियो
गबलेन जित्वा प्रकृतिं बलिष्ठां त्वामेव धीराः पुरुषं विशंति तेषां श्रमः स्यान्न तु सेवया ते ४६ तत्ते वयं लोकसिसृक्षयाद्य त्व
यानुसृष्टास्त्रिभिरात्मभिस्स्म सर्वे वियुक्ताः स्वविहारतंत्रं न शक्नुमस्तत्प्रतिहर्तवे ते ४७ यावद्बलिं तेज हराम काले यथा व
यं चान्नमदाम यत्र यथोभयेषां त इमे हि लोका बलिं हरंतोन्नमदंत्यनूहाः ४८ त्वं नः सुराणामसि सान्वयानां कूटस्थ आद्यपुरु
षः पुराणः त्वं देव शक्त्यां गुणकर्मयोनौ रेतस्त्वजायां कविमादधेऽज ४९

निर्मल जीवन के अंतःकरण ते बैराग्य है सार जामें ऐ
से ज्ञान कों पाय अनायास बैकुंठलोक कों प्राप्ति होत है ४५ तैसें ई कोई एक ज्ञानी मन कों धैर्य और ज्ञान योग के बल कर बलिष्ठ माया कों
जीत तुम्हारी में प्रवेश करैं हैं परंतु उन कूं बडो श्रम होत है ४६ हे प्रभो आप ने हम सब लोक के सृजवे के लीये तुम्हें अर्पण करवे कों हम समर्थ
नहीं हैं ४७ तातें हे अज तुमकों हम बलि अर्पण करैं हैं और हम अन्न भक्षण करैं और जैसे जीव हमकों तैसें उनकों भेट देत निर्विघ्न अन्न भ
क्षण करैं ऐसी कृपा करौ ४८ हे देव कारणन सहित हमारे देवतान के तुम कारण हो और तुम ही गुण कर्मन की माया ता विषे महत्तत्व रू

तेजकरव्यापजोजलतानकीग्रोरहरिनैजबदेख्योंतबवरुणहैगंधजामैंगुणग्रैसीपृथ्वीकौंउपजावतभए कालमायाचितांश्रसपेगते ३५ हेविदुरयेग्राकासतेंग्रादिदैपंचमहाभूत तिनकौउपरलेनमेंपरिलेकारणग्रनुसूतहै यातेकारणकेगुणयथासंख्यसबमेंहैं ग्राकासमेंएकसब्दहीगुणहै पवनशब्दस्पर्शदो तेजमेंशब्दस्पर्शरूपतीन३ जलमेंसब्दस्पर्शरूपच्यारि पृथ्वीमेंशब्दस्पर्शरूपरसगंधपांचगुणहैं ३६ कालमायांचेतनायेहैं तिनमेदेवताग्यारेग्यारेहैं यातेग्रपनीग्रपनीक्रियामेंसमर्थहैं तबसामर्थकेलीयेहाथजोरकेस्तुतिकरतभए ३७ हेदेवहमतुम्हारेचरणारविंदकौंदंडौतकरैहैं जेचरणशरणागतनकेतापहरिवेकौंछत्रधारीकेहैं कोमलहैंग्राम

ज्योतिषाम्भोनुसंसर्गाद्विकुर्वद्ब्रह्मवीक्षितं महीगंधगुणामाधात्कालमायांसयोगत ३५ भूतानांनभआदीनांयद्यद्भव्यावरावरं तेषांपरानुसंसर्गाद्यथासंख्यंगुणान्विदुः ३६ एतेदेवाःकलाविष्णोः कालमायांशलिंगिनः नानात्वात्स्वक्रियानीशाःप्रोचुःप्रांजलयोविभुं ३७ देवाऊचुः नमामितेदेवपदारविंदं प्रपन्नतापोपशमातपत्रं यन्मूलकेतायतयोंजसोरुसंसारदुःखंबहिरुत्क्षिपंत ३८ धातर्यदस्मिन्भवईसजीवास्तापत्रयेणाभिहतानशर्मः आत्मांल्लभंतेभगवंस्तवांघ्रिछायांसविद्यामतआश्रयेम ३९ मार्गंतियत्तेमुखपद्मनीडैश्छंदःसुपर्णैरृषयोविविक्ते यस्याघमर्षोदसरिद्वरायाःपदंपदंतीर्थपदःप्रपन्नाः ४० यच्छ्रद्धयाश्रुतवत्याचभक्त्यासंमृज्यमानेहृदयेवधाय ज्ञानेनवैराग्यबलेनधीराव्रजेमतत्तेंघ्रिसरोजपीठं ४१

यजिनकौं ग्रैसेंयतीग्रनायाससंसारकेदुःखकौंदूरित्यागिदेहैं ३८ हेप्रभोयालोकमेंयेजीव तीनतापनकरपीडितसुखकौनहीप्राप्तहोहैं यातेहमतुम्हारीचरणारविंदकीछायाकौंग्राश्रेलेहै ३९ तुम्हारेमुखकमलमैंरहेवेदरूपपक्षीनकरएकांतमेंबैठऋषीश्वरजाहिढूंढेहैं ग्रोरपापनकौंदूरिकरिवेवारीजिनकौंजल ग्रैसीनदीनमेंश्रेष्ठगंगाजिनकेचरणनतेंनिकसी तातुम्हारीतुमशरणहैं ४० जातुम्हारीश्रवणपूर्वकश्रद्धाकरिभईजोभक्ति ताकरशुद्धजोहृदय तामेंधीतिसरोध्यानकरिवैराग्यकौबलजामें ग्रैसेज्ञानकरधीरपुरुषहोहैं तातुम्हारेचरणपीठकीहमसरणागतप्राप्तभयेहैं ४१ ४१

हृ मैंजो विश्वतादि प्रकास करत भयो तमको दूरि करिवेवारो २७ सोमहतत्व अंस चिदाभास भिन्न भिन्न और रज गुण पारुन काल सो भव तत्वरूप भगवद् दृष्टि पायकें याविश्वकी सृजवे की इच्छा करि विकार कौं प्राप्ति भयो २८ महतत्व जब विकार कों प्राप्ति भयो त बवातें अहंकार भयो जो अनुपती कार्य कारण कर्ता को स्वरूप और पंच महाभूत इंद्री मन सो मयहै २९ सो अहंकार तीन प्रकार कौहै सात्विक राजस तामस तामात्विक अहंकार ते मन भयो और इंद्रीयनके अधिष्ठाता देवता भए जिनते विषयनको प्रकास होहै ३०

कालवृत्त्या तु मायायां गुणमय्यामधोक्षजः पुरुषेणात्मभूतेन वीर्यमाधत्त वीर्यवान् ततोभवन्महत्तत्वमव्यक्तात्का लचोदितात् विज्ञानात्मात्मदेहस्थं विश्वं व्यंजंतमोनुदः २७ सोप्यंसगुणकालात्मा भगवद्दृष्टिगोचरः आत्मानं व्यक रोदात्मा विश्वस्यास्य सिसृक्षया २८ महत्तत्वाद्विकुर्वाणाद्दहंतत्वं व्यजायत कार्यकारणकर्त्रात्मा भूतेंद्रियमनोमयः २९ वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा अहंतत्वाद्विकुर्वाणान्मनोवैकारिकादभूत् वैकारिकाश्च ये देवा अर्थाभि व्यंजनं यत ३० तैजसानींद्रियाण्येव ज्ञानकर्ममयानि च तामसो भूतसूक्ष्मादिर्यतः खं लिंगमात्मनः ३१ कालमा यांशयोगेन भगवद्वीक्षितं नभः नभसोनुसृतं स्पर्शं विकुर्वन्निर्ममेनिलं ३२ अनिलोपि विकुर्वाणो नभसोरुबला न्वितः ससर्ज रूपतन्मात्रं ज्योतिर्लोकस्य लोचनं ३३ अनिलेनान्वितं ज्योतिर्विकुर्वात्परवीक्षितं आधत्ताम्भोरसमयं का लमायांसयोगतः ३४

तानें इंद्री तामें और एक में इंद्री तामें राजस अहंकार शब्द ले आकास भयो जो आत्मकों स्वरूप है ३१ कालमाया चिदाभास इनके योगक रहरि नें जब देषो आकास तब वाते स्पर्श भयो जब स्पर्श विकार कौं प्राप्ति भयो तब पवन और चलभए ३२ आकास करि बहुत बलयुक्त पवन जब विकार कौं प्राप्ति भयो जब रूपतें तन्मात्रा जाको ऐसो लोकन कौं प्रकास तेज ताहि उपजावत भए ३३ पवन करयुक्त तेज हरिनें जाकौ और देष्यो ऐसो जब विकार कौं प्राप्ति भयो तब काल माया चिदाभास के संयोग ते रसमय जल कौं उपजा वत भये ३४

और रहस्य मैं चितजानौं ताअपनी कीर्तिजोविस्तारोंचाहैहैं याहितुनिकें लोकनकों भलौं होयगो १८ वेदव्यासके वीर्यतें भए जो तु
म तातुममैंयह कछु आश्चर्य नही जो अनन्यभावकर भगवान् ईश्वर जो तुमनें गृहण करेहै १९ मांडव्य ऋषिके शापतें प्रजानके
दंडदेवेवारे भगवान् यमराज तो तुम विचित्रवीर्यनें अंगीकार आज्ञाकरीयो ऐसी जो गावती दासी तामें व्यासजी तें तुम भए हौ २०
तुम भक्तन सहित भगवान् केसंमत हौ जातुम्हारे ज्ञानउपदेशकरवें चलती वेर भगवान् मोसों कहगए हैं २१ अब मैं तेरे आगें
योगमायानें बढाई जे भगवान् की लीला विश्वकी उत्पत्ति पालन नाश यतजिनकों प्रयोजन तिनें क्रमसौं वर्णन करुंहूं तुम सुनौ २२

मैत्रेय उवाच॥ साधुपृष्टं त्वया साधो लोकान्साध्वनुगृह्णता कीर्तिं वितन्वता लोके आत्मनोऽधोक्षजात्मनः १८ नैतच्चि
त्रं त्वयि क्षत्तर्बादरायणवीर्यजे गृहीतोऽनन्यभावेन यत्त्वया हरिरीश्वरः १९ मांडव्यशापाद्भगवान् प्रजासंयमनो यमः भ्रा
तुः क्षेत्रे भुजिष्यायां जातः सत्यवतीसुतात् २० भगवान् भगवतो नित्यं संमतः सानुगस्य च यस्य ज्ञानोपदेशाय मादि
शद्भगवान्व्रजन् २१ अथ ते भगवल्लीला योगमायोपबृंहिताः विश्वस्थित्युद्भवांतार्था वर्णयाम्यनुपूर्वशः २२ भग
वानेक आसेदमग्र आत्मात्मनां विभुः आत्मेच्छानुगतावात्मा नानामत्युपलक्षणः २३ स वा एष तदा द्रष्टा नापश्यद्दृश्यमे
कराट् मेनेऽसंतमिवात्मानं सुप्तशक्तिरसुप्तदृक् २४ सा वा एतस्य संद्रष्टुः शक्तिः सदसदात्मिका माया नाम महा
भाग ययेदं निर्ममे विभुः २५ जीवनके आत्मा भगवान् मायाके लय भए संतें सृष्टि तें पहिलें एकही होत भए सो नाना भा
ननकरनकरीयें हैं २३ सो वतद्रिष्टा भगवान् एकतौ हैं दृश्यपदार्थ कछु न देखत भयो तब आपे कोंन भयो सोमान्यों जो द्रिष्टा
विनाद्रिश्यके होजान्यों परें केसें तें सोई है माया शक्ति जाकी और नही सोई है विषयशक्ति जाकी २४ सो द्रष्टा भगवानकी माया
नाम कार्यकारणरूप शक्ति है ताकर विश्वकों रचत भए २५ एककाल शक्ति करगुणमयी मायाके विषें अपनें अंसभूत जो पुरुष
ताकर वीर्य धारण करत भए जो चिच्छक्ति रूप है २६ तब काल प्रेरत जो माया तातें महत्तत्व होत भयो जो विज्ञान तातें अपनी

गगातें चरण में जाके भगवान की कथा अमृत नारदादिनें तु स्वारे समाज में गाये तिन सों कोन तृप्त होइ भगवान कथा द्वारा पुरुष की
नाडी कर्ण में जाइ संसार की देवेवारी जो घर मैं रति ताहि काटे है ११ और तुम्हारे सखा मुनि व्यासदेव है भगवान के गुणन कहिवे की इछा सी
ये महाभारत करत भए जामें ग्रामीन सुखन के कथान द्वारा हरि कथान विषे ही बुधि ग्रहण करी है १२ हरि के चरणारविंद के स्मरण सुख जा
कों आनंद श्रधावान को ऐसें पुरुष की भई जो हरिकथा सो न करे है १३ जो एवं पापन ने कथा में करि विमुख ते सोचन हूं कों सोच करिवे लों जो
ग्य तिनें में हं सोच करूं हूं अथाती मैं मन वाणी देह के व्यापार जिनके तिन की आयुर्दा स्वरूप भगवान वृथा ही हरे है १४ ताते हे दीनबंधु

कस्तृप्णुयात्तीर्थपदोभिधानात्सत्रेषु वः सूरिभिरीड्यमानात् यः कर्णनाडीं पुरुषस्य यातो भवप्रदां गेहरतिं छिनत्ति ११ मुनि
र्विवक्षुर्भगवद्गुणानां सखापि ते भारतमाह कृष्णः यस्मिन्नृणां ग्राम्यसुखानुवादैर्मतिर्गृहीता नु हरेः कथायां १२ साश्रद्दधा
नस्य विवर्द्धमाना विरक्तिमन्यत्र करोति पुंसः हरेः पदानुस्मृतिनिर्वृतस्य समस्तदुःखात्ययमाशु धत्ते १३ तान्शोच्यशो
च्यानविदोनुशोचे हरेः कथायां विमुखानघेन क्षिणोति देवोनिमिषस्तु येषामायुर्वृथावादगतिस्मृतीनां १४ तदस्य कौषार
व शर्मदातुर्हरेः कथामेव कथासु सारं उद्धृत्य पुष्पेभ्य इवार्तबंधो शिवाय नः कीर्तय तीर्थकीर्ते १५ स विश्वजन्मस्थिति
संयमार्थे कृतावतारः प्रगृहीतशक्तिः चकार कर्माण्यतिपूरुषाणि यानीश्वरः कीर्तय तानि मह्यं १६ शुक उवाच एवं स
भगवान्पृष्टः क्षत्त्रा कौषारवो मुनिः पुंसां निःश्रेयसार्थेन तमाह बहुमानयन् १७

मैंने ये विश्व के सुखदाता हरि तिन की
कथान में जो सार कथा तिनें जैसें पुष्पन में ते भौंरा मकरंद ले लेहै ऐसें उधार करि हमारे आगें कहो जैसें भगवान की कीर्ति संसार
की तारवेवारी है १५ या विश्व के जन्म पालन संहार के लीयें अवतार जाको और ग्रहण करे है ब्रह्मादिक रूप जानें सो भगवान पु
रुषन पे न वनि सकें ऐसें जिन जिन कर्मन कूं करत भए तिनें मेरे आगें कहो १६ शुकदेवजी कहे है ऐसें विदुरजी नें जब मैत्रेयजी
सों पूछो तब बहुत विदुरजी कों सन्मान करत पुरुषन के कल्यान के लिये यह कहत भए १७ हे साधु विदुर तू लोकन को कल्याण करयो

भक्ति करि प्रवेश भये जो हृदय तामें बैठ कर भगवान तत्त्व विचार सहित जो ज्ञान ताहि देत है ४ भगवान त्रिलोकी के ईश्वर अपने स्वा
धीन अवतारन करि जिन कर्मन को करै है और निरीह भगवान जैसें या विश्व को सृजत भए और या की स्थिति करि जैसें पाल
न करै है आरी हरि न करै सो कहो ५ और प्रलय में या विश्व कों अपने उदर में धरि योग माया करि जैसें सोवै है और योगे
श्वरन के ईश्वर भगवान एक ही या विश्व में प्रवेश करि ब्रह्मादिक रूप करि बहुत प्रकार जैसे होत भए ६ जो भगवान अवता
र भेदन करि क्रीडा करत गो ब्राह्मण देवतान के लीये कर्मन कों करै है तिन हरि के चरित्रन कों सुनें है रात्रि दिन परत मारो मन अघा

नसाधु वर्णीद्दिश्य वत्सेषन: संराधितो भगवान्येनपुंसां हृदिस्थितो यछति मक्षपते त्वानं सतत्त्वाधिगमं पुराणं ४
करोति कर्माणि कृतावतारो यान्यात्मतंत्रो भगवांस्त्र्यधीशः यथा ससर्जाग्र इदं निरीहः संस्थाप्य वृत्तिं जगतो विधत्ते
५ यथा पुनः स्वे ख इदं निवेश्य शेते गुहायां स निवृत्तवृत्तिः योगेश्वराधीश्वर एक एतदनुप्रविष्टो बहुधा यदासीत् ६ क्री
डन् विधत्ते द्विजगोसुराणां क्षेमाय कर्माण्यवतारभेदैः मनो न तृप्यत्यपि शृण्वतां नः सुश्लोकमौलेश्चरितामृतानि ७
येस्तत्त्वभेदैरधिलोकनाथो लोकानलोकान्सह लोकपालान् अचीक्लृपद्यत्र हि सर्वसत्त्वनिकायभेदोधिकृतः प्र
तीतः ८ येन प्रजानामुत आत्मकर्मरूपाभिधानां च भिदां व्यधत्त नारायणो विश्वसृगात्मयोनिरेतच्च नो वर्णय विप्र
वर्य ९ परावरेषां भगवान्व्रतानि श्रुतानि मे व्यासमुखादभीक्ष्णं अतृप्नुम स्वल्पसुखावहानां तेषामृते कृष्णकथाम

यनही ७ लोकनाथन के अधिपति भगवान जिन तत्त्व भेदन करि लोकपालन सहित लोक अलोकन कों रचित भए जिन लो
कनि में सब प्राणीन के समूहन को भेद अपने अपने कर्म द्वारा करि देषियें है ८ जा कर्म करि कैं नारायण भगवान विश्व के स्र
ष्टा प्रजान के स्वभाव कर्म रूप नाम इन के भेद जैसें करत भए सो हे ब्राह्मण न में श्रेष्ठ मेरे आगें कहो ९ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य
शूद्र इन के व्रत में नें व्यास देव के मुख तैं निरंतर सुनें परंतु अल्प सुख कों देवे वारो याते उन में तृप्त होइ गइ एक श्री कृष्ण की कथामृत

देहन्यासें धारी ताकी श्लाघा करवे लायक कर्मनि सुनि प्रेम विह्वल होइ रुदन करत भए ३३ औरं हरिकौं परम धाम जाय वौ
धीरनकौं धैर्य बल करिवे वारौं और अधीर जिनके चित्त पशु सरीखे तिनकौं अति दुस्तर और श्रीकृष्णचंद्रने चलती बेर मोकौं
मन करि स्मरण कह्यौं यह विचारि अब भागवत उद्धवजी गए तव प्रेम मैं विह्वल होय रुदन करत भये ३४ कालिंदीजी पैतें कछू दि
न पीछैं विदुरजी गंगाजी कौं गए हरद्वारमैं जहां मैत्रेयजी विराजै है तहां जात भए ३६ इति श्री भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे
चतुर्थोध्यायः ४ शुकदेवजी कहै है हे राजन् कौरवनमें श्रेष्ठ हरिमैं जो भावता करि शुद्ध श्रेष्ठ शील्यादि कगुणन करि परिपूर्ण ऐसें

विदुरोप्युद्धवाछ्छुत्वा कृष्णस्य परमात्मनाः क्रीडयो यात्तदेहस्य कर्माणि श्लाघितानि च ३३ देहन्यासं च तस्यैवं धीराणां
धैर्यवर्द्धनं अन्येषां दुष्करतरं पशूनां विक्लवात्मनां ३४ आत्मानं च कुरुश्रेष्ठ कृष्णेन मनसेक्षितं ध्यायन्गते भाग
वते रुरोद प्रेमविह्वला ३५ कालिंद्याः कतिभिः सिद्ध अहोभिर्भरतर्षभ प्रापद्यत स्वःसरितं यत्र मित्रासुतो मुनिः ३६ इति
श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे नाम चतुर्थोध्यायः ४ श्रीशुक उवाचः द्वारि द्युनद्या ऋषभः कुरूणां मैत्रेयमासी
नमगाधबोधं क्षत्तोपसृत्याच्युतभावशुद्धः पप्रच्छ सौशील्यगुणाभितृप्तः १ विदुर उवाचः सुखाय कर्माणि करोति
लोको न तैः सुखं वान्यदुपारमं वा विंदेत भूयस्तत एव दुःखं यदत्र युक्तं भगवान्वदेन्नः २ जनस्य कृष्णाद्विमुखस्य दैवा
धर्मशीलस्य सुदुःखितस्य अनुग्रहायेह चरंति नूनं भूतानि भव्यानि जनार्दनस्य ३

विदुरजी अगाधजाकौं ज्ञान ऐसे मैत्रेयजी सौं हरिद्वारमैं जाय पूछत भये १ हे मैत्रेयजी ये लोक सुख के लीयें राति दिन कर्म
नकौं करै है तिन करि प्राप्ति नहीं और सुखकौं नहीं और अधिक अधिक दुखही होहै कर्म करेतें अब यामैं जो करिवे जोग्य होइ
सो तुम्ह कहौ तुम सर्वज्ञ हो २ दैवतें प्रारब्ध करि श्रीकृष्णचंद्रतें विमुख ऐसे मनुष्य याहीतें अधर्मशील ताते महा दुखित जिनकें अ
नुग्रह के अर्थ तुम सारिखे हरिभक्त या पृथ्वी मैं विचरे है ३ ताते साधुनमें श्रेष्ठ कल्याणकारी मार्ग कहौ जाकरि आराधन करे संतें

भा॰त॰
११

हे विदुर तुम्हेंकों ज्ञान केलीये मैत्रेयजीकों सेवन करवो जोग्य है अप्रगट लीला करती वेर साक्षात भगवान मैत्रेयजीकों तुम्हारे उप
देस करिवेकों कहि गए हैं २६ ऐसें विदुर करि सहित हरिकी गुणकथा सोई भयो सुधा ता करि दूरि भयो है ताप जाकों ऐसें उद्धवजी रा
त्रिकूं उहांही श्रीयमुनाजीके पुलिन में रहे सो वह रात्र विदुरजी के संग करि छिनकी सी नाई व्यतीत भई सवेरों होतें ही बद्रिकाश्रम
कों गए २७ राजा संदेह करि पूछे हैं अहो सुषदेवजी वृष्णि भोज सब यादवन कों नाश होइ गयो और हरि नें अंतर रति लीला करी तो
उद्धवजी ह सब मुख्यन में मुख्य कैसें अवशिष्ट रहे सो मो सों कहो २८ अमोघ जाकी वांछा ऐसे हरि ब्राह्मणन के शापके जामैं मूंओं

उद्धव उवाच: ननु ते तत्वसंराध्य ऋषिः कौषारवोंतिके साक्षाद्भगवतादिष्टो मर्त्यलोकं जिहासता २६ शुक उवाच: इति स
ह विदुरेण विश्वमूर्त्तेर्गुणकथया सुधया प्लावितोरुतापः क्षणमिव पुलिने यमस्वसुस्तां समुषित औपगविर्निशां ततोगात्
२७ राजोवाच: निधनमुपगतेषु वृष्णिभोजेष्वधिरथयूथपयूथपेषु मुख्यः स तु कथमवशिष्ट उद्धवो यद्धरिरपि तत्यज आकृ
तिं त्र्यधीशः २८ शुक उवाच: ब्रह्मशापापदेशेन कालेनामोघवांछितः संहृत्य स्वकुलं नूनं त्यक्ष्यन् देहमचिंतयत् २९
अस्माल्लोकादुपरते मयि ज्ञानं मदाश्रयं अर्हत्युद्धव एवाद्धा संप्रत्यात्मवतां वरः ३० नोद्धवोण्वपि मन्न्यूनो यद्गुणैर्ना
र्दितः प्रभुः अतो मद्वयुनं लोकं ग्राहयन्निह तिष्ठतु ३१ एवं त्रिलोकगुरुणा संदिष्टः शब्दयोनिना बदर्याश्रममासा
द्य हरिमीजे समाधिना ३२

ऐसें कालकों संघार करि आप जब अप्रगट होइवे लगे तब यह विवाद करत भए २९ या लोकतें उपरांत पाये संतें मेरे पीछें
अब उद्धवजी ही धारण करनेकों योग्य हैं यातें आत्मवेतान में श्रेष्ठ हैं ३० उद्धव हूं यातें कछू घाट नही जो विषयन करि दुःभीत
नहीं यातें मद्विषयक ज्ञान लोकन कों ग्रहण करावत याही लोक में विराजो ३१ ऐसें त्रिलोकीके गुरु हरि नें आज्ञा जाकों दई
सो उद्धव बदर्याश्रम में जाय एकाग्र चित करि हरि कों पूजन करत भयो ३२ विदुरजी उद्धव तें श्रीकृष्ण परमात्मा कीज्ञ केलीयें

हे प्रभो आत्म रहस्य कौ प्रकाशवेवारौं जो ज्ञान सो तुम मेनैं ब्रह्मा के आगे कह्यौं सो जो मैं कहिवे कौं पात्र होहु तौ मेरे हू आगें कहौं जात
रमैं दुःखसमुद्र के पार होहुं ऐसे निवेदन कीयौ है अपनौ अभिप्राय जानें तामें के अर्थ भगवान् हरि अपने स्वरूप की श्रेष्ठ स्थिति कर
न भए १९ सो आराधन करवे कौं जोग्य जिन के चरण ऐसे गुरु भगवान् तें पायौ है आत्मज्ञान कौ मार्ग जानें ऐसौ मैं हरि की प्रदक्ष
णा दै चरनन मे दंडोत कर विरह कर आतुर जाकौ चित्त हो इहां आयौ हूं २० सो मैं हरि के दर्शन कौ आनंद और वियोग दुःख ता कर यु
क्त वाकौ प्यारौ बद्रिकाश्रम मंडल ताकौं जाउंगो २१ जहां नारायण देव नर और नर भगवान् ये दोउ लोकन के पालनहारे कोमल और दुस्तर

मंत्रेषु मां वा उपहूय यत्त्वमकुंठिताखंड सदात्मबोधः पृष्ठः प्रभो मुग्ध इवाप्रमत्तस्तन्नो मनो मोहयतीव देवः १८ ज्ञानं परं
स्वात्म रहः प्रकाशं प्रोवाच कस्मै भगवान्समग्रं अपि क्षमं नो ग्रहणाय भर्त्तर्वदांजसा यद्वृजिनं तरेम १९ इत्यावेदित हार्दा
यमह्यं स भगवान्परः आदिदेशारविंदाक्ष आत्मनः परमां स्थितिं २० स एवमाराधित पाद तीर्थादधीत तत्वात्मविबोध
मार्गः प्रणम्य पादौ परिवृत्य देवमिहागतोहं विरहातुरात्मा २१ सोहं तद्दर्शनाह्लाद वियोगार्त्तियुतः प्रभो गमिष्ये दयितं तस्य
बदर्याश्रम मंडलं २१ यत्र नारायणो देवो नरश्च भगवानृषिः मृदु तीव्रं तपो दीर्घं तेपाते लोकभावनौ २२ श्रीशुक उवाचः
इत्युद्धवादुपाकर्ण्य सुहृदां दुःसहं वधं ज्ञानेनाशमयत्क्षत्ता शोकमुत्पतितं बुधः २३ स तं महाभागवतं व्रजंतं कौरवर्षभः
विस्रंभादभ्यधत्तेदं मुख्यं कृष्णपरिग्रहे २४ ज्ञानं परं स्वात्मरहःप्रकाशं यदाह योगेश्वर ईश्वरस्ते वक्तुं भवान्नोर्हति यद्धि
विष्णोर्भृत्याः स्वभृत्यार्थकृतश्चरंति २५

बडो तप करत भए २२ शुकदेवजी कहे हैं ऐसें उद्धव तें सुहृदन कौं दुःसह वध सुनिकैं उ
ठे जो शोक ताहि विदुरजी ज्ञान तें दूर करि शांति करत भए २३ ऐसें कहि कैं परम भागवत कृष्ण परिग्रह में मुख्य उद्धव जी जब चालि
वे लगे तब विश्वास तें विदुरजी यह कहत भए २४ हे उद्धव ईश्वर भगवान नें आत्मस्वरूप कौं प्रकाश करवेवारौं ज्ञान जो तुम कौं
कह्यौं सो तुम मेरे आगें कहिवे कौं जोग्य हौं जो भगवत भक्ति साधिकै कल्याण के लीयें विचरै है सो मो हि भृत्य जान कृपा करि कहौ २५

मेरेंअनुग्रहभयौ औरअबमैंमनुष्यलोककौंछोडौंचाहौंहौं सोतुमइतांएकांतमैंआय एकांतभक्तिकरिमेरोदर्शनकीनौ
सोबडौमंगलभयौ १२ औरहेउद्धव सबतेंपहलेंयाकल्पमैंनाभिकमलमैंस्थितजोब्रह्मातिनकेअर्थसृष्टिकेप्रारंभमैं
मेरीमहिमाकौप्रकासकरबेवारोज्ञानमैंनेंकह्यौजाकौविवेकीश्रीभगवान्कहैहैं १३ ऐसेंआदरपूर्वकमोकौंजबकह्यौ
तबलहएमैंहरिकेअनुग्रहकौपात्रस्नेहतेंरोमांचजाकेठाठेभए गदगदजाकीवाणी आंसूडारतहाथजोरिहरिसोंबोलौ

सएससाधोचरमोभवानामासादितस्तेमदनुग्रहोवत् यन्मांनृलोकान्रहउत्सृजंतंदिष्ट्यादृदृश्वान्विशदानुवृत्या
१२ पुरामयाप्रोक्तमजायनाभ्येपद्मेनिषण्णायममादिसर्गे ज्ञानंपरंमन्महिमावभासंयत्सूरयोभागवतंवदं
ति १३ इत्यादृतोक्तःपरमस्यपुंसः प्रतीक्षणानुग्रहभाजनोहं स्नेहोत्थरोमास्खलिताक्षरस्तंमुंचन्शुचःप्रां
जलिराबभाषे १४ कोन्वीशतेपादसरोजभाजांसुदुर्लभोर्थेषुचतुर्ष्वपीह तथापिनाहंप्रवृणोमिभूमन्भ
वत्पदांभोजनिषेवणोत्सुकः १५ कर्माण्यनीहस्यभवोभवस्यतेदुर्गाश्रयोथारिभयात्पलायनं कालात्मनोय
त्प्रमदायुताश्रमः स्वात्मन्रतेःखिद्यतिधीर्विदामिह १७

टीका १४ हेईसजेकोईतुम्हारेचरणारविंदकौंभजैहैं तिनकौं
चारौंपदार्थनकौंदुर्लभकहाहैं तथापिपरंतुतुम्हारेचरणारविंदकीसेवाकौउत्साह ऐसौंमैंकछूनहींमांगतहूं १५ औरअखं
डित अखंडसत्तांजाकौ आत्मज्ञान ऐसेतुमतिनमेंमोहखुलाय बहोतसावधान तथापिमुग्धबालककीसीनाईंसुला
हरछलें सोमेरेमनकौंबहोतमोहउपजावैहै १६ अकर्मातुमतातुम्हारेकर्म अजन्माकौंजन्म कालात्माकौंगढकौंआ
श्रयं आत्मारामहूंकेंहजारनस्त्रीनकौंराषिबौ याविचारमैंबडेबडेपंडितनकीबुद्धिगोताखाइहै १७

मेउनको अभिप्राय कुलके संघारकों जान्यौ हुतो तोउ उनके चरणारविंदकौं वियोग मोपै न सह्यौ गयो सो मैं हू उनके पीछें प्रभास
कूं चल्यौ गयो ५ सो मैं तहां ढूंढत अपने सेवे हैं मैंनें देषे जो मेरे प्यारे पति लक्ष्मी के निकेत सरस्वती के तट किये हैं घर जिननें वा सव
न वलें ग्रहादिरहित है ६ स्याम सुंदर स्वछ्छ सत्वमय प्रशांत औरजिन के नेत्र चार भुजा न कर पीतांबर औढें ऐसे देषे ७
अं वामें घांपें दक्षण चरण कमल धरें वैठें हैं पीछें आश्रय लीयें हैं कोमल अश्वत्थ वृक्ष जानें अपने आनंद मैं परिपूर्ण त्यागे हैं वि

अथापि तदभिप्रेतं जानन्नहमरिंदम पृष्ठतोन्वगमं भर्तुः पादविश्लेषणाक्षमः ५ अद्राक्षमेकमासीनं विचिन्वन्
दयितं पतिं श्रीनिकेतं सरस्वत्यां कृतकेतमकेतनं ६ श्यामावदातं विरजं प्रशांतारुणलोचनं दोर्भिश्चतुर्भिर्विदितं
पीतकौशांबरेण च ७ वाम ऊरावधिश्रित्य दक्षिणांघ्रिसरोरुहं अपाश्रितार्भकाश्वत्थमकृशं त्यक्तपिप्पलं ८ त
स्मिन् महाभागवतो द्वैपायनसुहृत्सखा लोकाननुचरन् सिद्ध आससाद यदृच्छया ९ तस्यानुरक्तस्य मुनेर्मुकुं
दः प्रमोदभावानतकंधरस्य आश्रृन्वतो मामनुरागहाससमीक्षया विश्रमयन्नुवाच १० श्रीभगवानुवाच
वेदाहमंतर्मनसीप्सितं ते ददामि यत्तद्दुरवापमन्यैः सत्रे पुरा विश्वसृजां वसूनां मत्सिद्धिकामेन वसो त्वयेष्टः ११

षयजिनैं ८ ताई समें स्थान में वेदव्यास के प्यारे मित्र ऐसे मैत्रेय जी लोकन में विचरत देव इच्छा करि आय गए ९ सो अ
नुरागी मुनि प्रेमभाव करनम्र हैं ग्रीवा जाकी ता के सुनत अनुराग सहित हैं हसनि जाकी ऐसी दृष्टि मेरो श्रम दूरि करत मो
सों कहतें १० भगवान वोले हे उद्धव मैं तेरे मन कौं वांछित जानूं हूं जो औरन कूं दुर्लभ सो नाति देउंगो पहिलें विश्व के
रचावन्हारे यज्ञ में मेरी प्राप्ति कामना करि तैं नें मो ति एज्यो है: ११ सो हे साधो तुम ने यह जन्मन में अवजन्म पायो है जामें

एकसमयपुरीमेंयदुभोज्यइनकेबालकक्रीडाकरतेहैं साउननेहांसीकरकोपजिन्मेंकरायौं असेंब्राह्मणएतरिकेअभिप्रायजान
नवारेशापदेतभए २४ तापीछेंकितनेकमहीनानपीछें वृष्णिभोज्यअंधकसबयादवरथनमेंवैठिप्रभासअतोहरिकीमायाकर
मोहितप्रभासकोंजातभए २५ उहांस्नानकरपितरदेवताऋषिनकौंतर्पणकर ब्राह्मणनकौंबहुतजिनमेंगुणअसीगौदेतभ
ए २६ औरसुवर्ण[illegible]सय्यावस्त्र अजिननामपालकी रथहाथीघोड़ा औरकन्याजीवकादेवेवारीपृथ्वीब्राह्मणनकोंदेत
भए २७ बहोतजामेंरसअसेंसोअन्न भगवतप्रीतनिमित्तदेतभये गोब्राह्मणकेअर्थजिनकेप्राण असेंसूरयादवब्राह्मणनकूंप्र

पुर्य्यांकदाचित्क्रीडद्भिर्यदुभोज्यकुमारकैः कोपितामुनयःशेपुर्भगवन्मतकोविदाः २४ ततःकतिपयैर्मासैर्वृष्णिभोजां
धकादयः ययुःप्रभासंसंहृष्टारथैर्देवविमोहिता २५ तत्रस्नात्वापितॄन्देवान्ऋषिंश्चैवतदंभसा तर्पयित्वाथविप्रेभ्यो
गावोबहुगुणाददुः २६ हिरण्यंरजतंसेय्यांवासांस्यजिनकंबलान् यानान्रथांनिभान्कन्यांधरांवृत्तिकरीमपि २७
अन्नंचोरुरसंतेभ्योदत्वाभगवदर्पणं गोविप्रार्थासवःशूराप्रणेमुर्भुविमूर्द्धभिः २८ इतिश्रीभाग·तृतीय·ततीयोध्या·३
उद्धवउवाचः अथतेतदनुज्ञाताभुक्त्वापीत्वाचवारुणीं तयाविभ्रंशितज्ञानादुरुक्तैर्मर्मपस्पृशुः १ तेषांमैरेयदोषेण
विषमीकृतचेतषां निम्लोचतिरवावासीद्वेणूनामिवमर्द्दनं २ भगवान्स्वात्ममायायागतिंतामवलोक्यसः सरस्वतीमु
पस्पृश्यवृक्षमूलउपाविशत् ३ अहंचोक्तोभगवताप्रपंन्नार्तिहरेणह बदरींत्वंप्रयाहीतिस्वकुलंसंजिहीर्षुणा ४

णामकरतभए २८ इतिश्रीभा·मता·तृतिय· नामततीयोध्यायः ३ ताकेअनंतरबालएनसोंआज्ञालेंभोजनकरवारुणीमद
रापीतेंई ज्ञानजिनकेदूरिभए तेआपसमेंदुर्वचननकरमर्मकाटिवेलगे १ वामदराकेदोषकरविषमाजिनकौंचित्त तिनयादवन
कोंसूर्यअस्तहोतेंहोतें असेंलडिकरिनासहोइगयौं जैसेंवांसनमेंअग्निलगेतेंवेदग्धहोइजाय २ श्रीकृष्णचंद्रअपनीमायाकी
वहगतिदेषि सरस्वतीमेंआचमनकरिपीपरकेनीचेंजायविराजतभए ३ उद्धवजीकहेहैविदुर शरणागतिकेदुःखकेहरिवेवारे

युधिष्ठरकौं अपने राजपै बैठाय साधुनकों मार्ग दिखावत सुहृदनकौं आनंद देत भए १६ अभिमन्युनैं उत्तरामें सर्वजो प्रवेश
राख्यौं एक गर्भमें परिक्षित रहि गयौं सो उ अश्वत्थामा नैं ब्रह्मास्त्र करि जरायौं परंतु भगवान्नैं रक्षा करी राख्यौ १७ और राजा युधि
ष्ठरकौं तीन अश्वमेध यज्ञ करावत भए और राजा युधिष्ठरहू कृष्णकौं अनुवर्त होइ भैयान सहित पृथ्वीकी रक्षा करत भयौ १८
भगवान विश्वात्मा वारे लोक वेदके मार्ग कौं चलवे वारे द्वारकामें विषयनकौं सेवन करत भए और सांख्य रहित प्रकृति पुरुष कौं विवे
कमें स्थित होइ १९ स्नेह युक्त मंद मुसिक्यान चितवन अमृतसरीकी वाणी निर्दूषित चरित्र सोभाकौं निकेत स्वरूप करिकर २० या लो

एवं संचित्य भगवान् स्वाराज्ये स्थाप्य धर्मजं नंदयामास सुहृदः साधूनां वर्त्म दर्शयन् १६ उत्तरायां धृतः पूरोर्वंशः सा
ध्वभिमन्युना सवै द्रौण्यस्त्रसंछिन्नः पुनर्भगवता धृतः १७ अयाजयद्धर्मसुतमश्वमेधैस्त्रिभिर्विभुः सोपि क्ष्मामनु
जै रक्षन् रेमे कृष्णमनुव्रतः १८ भगवानपि विश्वात्मा लोकवेदपथानुगः कामान्सिषेवे द्वार्वत्यामासक्तः सां
ख्यमास्थितः १९ स्निग्धस्मितावलोकेन वाचा पीयूषकल्पया चरित्रेणानवद्येन श्रीनिकेतेन चात्मना २० इमं
लोकममुं चैव रमयन् सुतरां यदून् रेमे क्षणदया दत्तक्षणस्त्रीक्षणसौहृदः २१ तस्यैवं रममाणस्य संवत्सरग
णान् बहून् गृहमेधेषु योगेषु विरागः समजायत २२ क परलोक मैं आनंद देत यादवनकौं अति पाय आनंद देत रा
त्रिनकौं दीनीं है उत्सव जानैं ऐसे भगवान् रमण करत भए उनस्त्रीन में क्षण भर रहें सौहृद जानैं २१ ऐसे बहोत वर्षनत
क रमत हरिकौं गृहस्थाश्रममें वैराग्य होय आयौं २२ उद्धवजी कहै है हे विदुर जो हरिहीकौं स्वाधीन विषय भोगनमें वैराग्य भयौं
तो देवाधीन भोग देवाधीन पर पुरुष सो हरि अनुवर्ती होय सो कौन इन विषेनमें विश्वास करै २३
श्लो. ६८ उद्धव उवाच: दैवाधीनेषु कामेषु दैवाधीनः स्वयं पुमान् को विश्रंभेत योगेन योगेश्वरमनुव्रतः २३

तापीछे नहीं न होयवे की इच्छा करत उन इस्त्रीनमें एक एकमें दस दस आपने पुत्र उपजावत भए ९ पीछे कालयमन जरासिंधु शा
ल्वादिक सेनानकों आपने पुरकों रोकत तिनें मारत भए औरआपने यादवनकौं प्रभाव बढावत भए १० संवर द्विविद बाण
मुर बल्वल और दंतवक्र आदि दै वैरीनकौं मारत भए और कोई राजनकौं बलदेवादिकनतें घात करावत भए ११
ताके अनंतर तुमारे भैयानके बेटा पांडव कौरव तिनके पक्षमें आए जे राजा तिनें कुरुक्षेत्रमें परस्पर मरवावत भए जिनके
आवतमें सेनानतें पृथ्वी चलायमान भई १२ कर्ण दुःसासन शकुनी इनके कुमंत्रके फलन करनष्ट भई है संपत्य और आवर्दा

तास्वपत्यान्यजनयदात्मतुल्यानि सर्वतः एकैकस्यां दसदस प्रकृतेर्विबुभूषया ९ कालमागधशाल्वादीननीकैः रुंधतः
पुरः अजीघनत्स्वयं दिव्यं स्वपुंसां तेज आदिशत् १० शंबरं द्विविदं बाणं मुरं बल्वलमेव च अन्यांश्च दंतवक्रादीनवधीत्कां
श्च घातयत् ११ अथते भ्रातृपुत्राणां पक्षयोः पतितान्नृपान् चचाल भूः कुरुक्षेत्रं येषामापततां बलैः १२ सकर्णदुःसास
नसौबलानां कुमंत्रपाकेन हतश्रियायुषं सुयोधनं सानुचरं शयानं भग्नोरुमुर्व्यां न ननंद पश्यन् १३ कियान्भुवोयं क्षि
पितोरुभारो यद्द्रोणभीष्मार्जुनभीममूलैः अष्टादशाक्षौहिणिको मदंशैरास्ते बलं दुर्विषहं यदूनां १४ मिथो यदैषां
भविता विवादो मध्वामदाताम्रविलोचनानां नैषां वधोपाय इयानतोन्यो मय्युद्यतेंतर्दधते स्वयं स्म १५

जाकी ऐसें दुर्योधन घोटूया के टूटे अनुचरनु सहित पृथ्वीमें सोयौ ताहि देख करश्री कृष्णचंद्र प्रसन्न भए जो अब ती लौं यादवतौं
बने ही रहे यातें १३ द्रोण भीष्म अर्जुन भीम इनद्वारा घट अठारे अक्षौहिणी सेना मारी सो पृथ्वीकौ भार कितनौं उतरयौ अब ती दु
र्विषह यादवनकौ बल बन्यो है १४ सो जब मद राकरये मत्त होई इनमें आपुसमें विवाद होइ तब ये मारे जाय और इनके मर
वेकौ उपाय नहीं परंतु जो मैं उत्पन्न भयो आपुही अंतरहित होइ जाइगे १५ ऐसें भगवान् आपने मनमें विचार करिके राजा

और राजा नग्नजित के बेटी कों स्वयंवर ताविषें सात बैल नासिका तिनकी बिंधी नहीं तिनैं नाथ कें स्वयंवर मैं नग्नजिती कों विवाहत भए श्रीकृष्णचंद्र नैं मानभंग जिन कों कीयो ऐसे अज्ञानी राजा नाग्नजिती कों लेंबे के लीयें राह रोकि ठाढे भए सस्त्र लेले कें तिनै भगवान् अपने सस्त्रन कर मारत भए ४ और प्रभु ग्राम्यजीन की सी नाई सत्यभामा कौं प्रिय कर वे के लीये स्वर्ग तें कल्पवृक्ष कों ले आए तब इंद्र को ध्वकर देवतान कों संग लैं युद्ध कर वे कों आयौं ताहि जीत्यौं यह इंद्र हू स्त्रीन के क्रीडामृग की सी नाई आधी

ककुद्मिनोविद्धनसो दमित्वा स्वयंवरे नाग्नजितीमुवाह तद्भग्नमानानपि गृध्यतोऽज्ञान्जघ्नेऽक्षतः शस्त्रभृतः स्वशस्त्रैः ४ प्रियं प्रभुर्ग्राम्य इव प्रियाया विधित्सुरार्च्छद्द्युतरुं यदर्थे वज्र्याद्रवत्तं सगणो रुषांधः क्रीडामृगो नूनमयं वधूनां ५ सुतं मृधे खं वपुषा ग्रसंतं दृष्ट्वा सुनाभोन्मथितं धरित्र्या आमंत्रितस्तत्तनयाय शेषं दत्वा तदंतःपुरमाविवेश ६ तत्राहृतास्ता नरदेवकन्याः कुजेन दृष्ट्वा हरिमार्त्तबंधुं उत्थाय सद्यो जगृहुः प्रहर्षव्रीडानुरागप्रहितावलोकैः ७ आसां मुहूर्त्त एकस्मिन् नानागारेषु योषितां सविधं जगृहे पाणीननुरूपः स्वमायया ८ ॥

नहै ५ और भौमासुर सरीर कर आकाश कों ग्रसें तें सो भगवान् नें चक्र कर मार्यौं तब पृथ्वी नें हरि की प्रार्थना करी तब भौमासुर कों बेटा भगदत्त ता कों राज्य दै कें वाके अंतःपुर में प्रवेश करत भए ६ तहां भौमासुर नैं सोलैं हजार एक सो राजान की कन्या जीत जीत कें एकठी करी ती ते दीनबंधु हरि कौं देखि उठि कें आनंद पूर्वक लज्जा सहित अनुराग कर प्रसन्न चितवन कर हरि कों अंगीकार करत भई ७ उनें द्वारका में लाय न्यारे न्यारे मंदिरन मे राखि अपनी माया कर उतने ही रूप धारण कें पाणिग्रहण विधिपूर्वक करत भए ८

औरएकदिनाकालीदहमैंविषकरभरेजेगौगोपतिनैंपिवाय कालीनागकौदहमैंतेनिकासवहजलनिर्मलभयौंतायगोन
कौप्यावतभए ३१ औरजवइंद्रकौजग्यआदीयौं वाकोमानभंगभयौं तवइंद्रवर्षाकरी तवव्रजकौंविकलदेषिगोवर्द्धनपरवत
कौछत्रकीसीनाईधारणकरअपनेव्रजरक्षाकरी ३२ शरदकेचंद्रमाकीकिरननकरउज्वलरात्रिनमैंस्त्रीनकेमंडल
कीसोभाकरवेवारेमनोहरजामैंपदऐसोगानकरतव्रजांगनानकेप्रागरात्रिकीरात्रकरतभए ३३ इतिश्रीमद्भागवतेतृतीयस्कंधे
द्वितीयोध्यायः २ उद्धवजीकहैहैं हेविदुर नारीछैंवलदेवसहितव्रजमैंमथुराकेआई अपनेमातापितानकेप्रीयकरवेकोंलीयें:

विपलान्विषपानेननष्टेहभुजगाधियं उत्थाप्यापाययद्गावस्तत्तोयंप्रकृतिस्थितं ३१ अयाजयद्गोसवेनगोपराजंद्विजो
त्तमैं वित्तस्यचोरुभारस्यचिकीर्षन्सद्व्ययंविभुः ३२ वर्षतींद्रेव्रजंगोपाद्भग्नमानेतिविह्वला गोत्रलीलातपत्रेणत्रातोभ
द्रानुगृह्णता ३३ शरच्छशिकरैर्मृष्टंमानयंरजनीमुखं गायंपदंकलरमेस्त्रीणांमंडलमंडनः ३४ इतिश्रीमद्भागवतेमहा
पुराणेतृतीयस्कंधेनामद्वितीयोध्यायः २ उद्धवउवाचः ततःसमागत्यपुरंस्वपित्रोश्चिकीर्षयासंवलदेवसभला निपा
त्यतुंगाद्रिपुयूथनाथंहतंविकर्षव्यसुमोजसोर्व्यां १ सांदीपनेःसकृत्प्रोक्तंब्रह्माधीत्यसविस्तरं तस्मैप्रादाद्वरंपुत्रंमृतंप
चजनोदरात् २ समाहुताभीष्मककन्ययायेश्रियःसवर्णेनबुभूषयैषां गांधर्ववृत्त्यामिषतांस्वभागंजह्रेपदंमूर्ध्निदधत्

ऊंचेमाचेपैतेंवडेंवैरीनमैंश्रेष्ठकंसताहिनीचेपटकितभये मरेकौंवलकरिएथ्वीमैंखैंचतभए १ फेरउज्जैननजायसांदीपन
गुरूनैंएकवारपढायोंवेदताहिविस्तारसौंपढि वाकोंमरयौंपुत्रसमुद्रमैंडूब्योंताहिपंचजन्यदैत्यकोंमारिपुत्रलायगुरूकौं
देतभए २ औरलक्ष्मीकेसमानकौंरूपऐसीरुक्मिणीकेस्वयंवरमैंशिसुपालतेआदिदैजेराजा औरतिनकेमाथेनपैं
पाउंदैं सवकेदेखतरुक्मिणीकौंगांधर्वविधिकरिहरिलाये जैसेंगरुडअमृतकौंलावैंहै ३

जाकी शरण लीजीयें २३ ओर असुरन हूं कौं मैं परम भागवत मानूं हूं जिननैं हरि कौ द्वेष सौं चित्त लगाए ओर यु
द्ध मैं गरुड़ हू कौं दर्शन करत भए ओर वाके ऊपर सुदर्शन चक्र लीयें हरि सन्मुख मारवे कौं आवे हैं तिन कौं दर्शन कीयौ तातें वे पर
म भागवत हैं असुरन जानि २४ अब श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र संक्षेप करि विदुर जी के आगें कहै हैं अब ब्रह्मा ने विनती करी ता पाए पृथ्वी के
कल्यान करवे कौं वसुदेव देवकी विषें कंस के बंदीगृह मैं जन्म लेत भए २५ तब कंस के भय ते वसुदेव नें नंद व्रज मैं पहोंचाये उहां छि
प करि वलदेव सहित ग्यारें वर्ष ताईं रहे २६ उहां व्रज मैं गोपन करि सहित वो लरिका जे पशु तिन करि संकीर्ण जा मैं वृक्ष ऐसे श्रीय

अहो बकी यं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम २३ मन्ये
ऽसुरान् भागवतांस्त्र्यधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् ये संयुगे ऽचक्षत तार्क्ष्यपुत्रमंसे सुनाभायुधमापतंतं २४ व
सुदेवस्य देवक्यां जातो भोजेंद्रबंधने चिकीर्षुर्भगवानस्याः शमजेनाभियाचितः २५ ततो नंदव्रजमितः पित्रा कंसा
द्विबिभ्यता एकादश समास्तत्र गूढार्चिः सबलो ऽवसत् २६ परीतो वत्सपैर्वत्सांश्चारयन् व्याहरन् विभुः यमुनोपव
ने कूजद्द्विजसंकुलितांघ्रिपे २७ कौमारीं दर्शयंश्चेष्टां प्रेक्षणीयां व्रजौकसां रुदन्निव हसन्मुग्धबालसिंहावलोकनः
२८ स एव गोधनं लक्ष्म्या निकेतं सितगोवृषं चारयन्ननुगान् गोपान् रणद्वेणुररीरमत् २९ प्रयुक्तान् भोजराजेन
मायिनः कामरूपिणः लीलया व्यनुदत्तांस्तान् बालः क्रीडनकानिव ३०

मुना के समीप वन मैं वछरान कूं चुगावत क्रीडा क
रत भए २७ व्रजवासीन कौं देखवे लायक कुमार लीला दिखावत सिंह की चितवन करि कहूं रुदन सो करत कहूं हसत मुग्ध
बालक की सी नाईं क्रीडा करत भए २८ सो भगवान् बड़े भए पैं लक्ष्मी के निकेत स्वेत हैं बैल वछरा तिन मैं ऐसें गायन कौं चुगावत
वेंसी बजावत गोपन कौं सुख देत भए २९ ओर कंस नें भेजे बड़े माया वीर जे सो रूप चाहैं तैसो धरलेंइ ऐसें असुरन कौं लीला
ही करि मारत भए जैसें बालक खिलौनान कौं फोर डारैं हैं ३०

तौ भगवान् के चरणारविंद मकरंद कौं एक वार संघि कैं ऐसौ कौन पुरुष जो छोडवे की इच्छा करैं जो भगवान् चढाई जो भृकुटी सोई भयो काल ता कर पृथ्वी कौ भार उतारत भए १८ हे विदुर और राजसूय में राजा युधिष्ठिर कौं ता में श्री कृष्ण सौं वैर करत जो शिशुपाल ताकी मुक्ति तुमने हू तौ देखी जा सिद्धि कौं बडे बडे योगन कर योगी चाहैं सो वैरी कौं भई ताते इनके विरह कौं न सहै १९ मैं सेई और मनुष्य लोक में जे वैरी युद्ध में नेत्रन करि कृष्ण मुखारविंद कौं पान करत अर्जुन के अस्त्रन करि पवित्र होई भारत युद्ध में श्री कृष्ण रूप माधुरी देखत हरि ही के परम पद कौं प्राप्त भए २० और आप तो ऐसे जिन की कोई बराबर न ही तो अधिक कहां ते

को वा अमुष्याङ्घ्रिसरोजरेणुं विस्मर्तुमीशीत पुमान् विजिघ्रन् यो विस्फुरद्भ्रूविटपेन भूमेर्भारं कृतान्तेन तिरश्चकार १८
दृष्टा भवद्भिर्ननु राजसूये चैद्यस्य कृष्णं द्विषतोऽपि सिद्धिः यां योगिनः संस्पृहयन्ति सम्यग्योगेन कस्तद्विरहं सहेत १९ तथैव
चान्ये नरलोकवीरा य आहवे कृष्णमुखारविंदं नेत्रैः पिबन्तो नयनाभिरामं पार्थास्त्रपूताः पदमापुरस्य २० स्वयं त्वसा
म्यातिशयस्त्र्यधीशः स्वाराज्यलक्ष्म्याप्तसमस्तकामः बलिं हरद्भिश्चिरलोकपालैः किरीटकोट्येडितपादपीठः २१ त
स्यैव कैंकर्यमलं भृतान्नो विग्लापयत्यंग यदुग्रसेने तिष्ठन्निषण्णं परमेष्ठिधिष्ण्ये न्यबोधयद्देव निधारयेति २२

होइ गो और परमानंद स्वरूप ता कर प्राप्त सब भोग जाकौं और भेट लैं के बडे बडे लोकपाल ब्रह्मादिक मुकुट के अग्र भाग कर जाकी चरण चौकी कौं प्रणाम करै हैं अस्तुति करै हैं इतने बडे हैं परंतु जब उग्रसेन राज्य सिंहासन पै बैठे हैं तब उनके आगे छरी बरदार की सी नाई ठाढे होय यों बिनती करै हैं महाराजाधिराज प्रभु करा ज्ञा आप कौ प्रणाम करै हैं दृष्टि निधा करीये ताथ जोर कें उग्रसेन के आगे कैंकरता सौं हम कौं भृत्यन कौं मोह उपजावै है २२ और एतना स्तनन में भरें जो कालकूट विष ताहि पिवावत भई परि तोहू मेता के लायक जो गति ताहि प्राप्त भई तो और ऐसो दयालु को है

जौंराजायुधिष्ठिरके राजसूयजज्ञविषैं नेत्रनकौं परमआनंदकारी हरिकौं स्वरूपदेषसवत्रिलोकी यहमानतभई जो ब्रह्माकी सृष्टिकी कारीगरी सो ब्रह्माने यासीस्वरूपमैं स्वचिकरी ब्रह्माबैं अबयातें आगें औरचतुराईरहीनहीं सो ब्रह्मकौं स्वरूप ब्रह्मानें कोस औनहीं स्वयंसिद्धिहैं परंतु लोकऐसेरीजानेंहैं १३ जाकौं अनुरागभरहासविनोद लीला इर्वकचितवनकरिपायोंहैमान जिननें ऐसी ब्रजोगनानेत्रनद्वारा हरिमैं गईहैबुद्धिजिनकी तेबावरीसी कोईकामकाजजिनसोंहोइनहीं ऐसी होत भई १४ जबक्षितिके सांतिरूप ब्राह्मणदेवता तिनकौं राक्षसनकरिदुःखितभए तबपरअपरकेईसभगवान् अजन्माजन्मलेतभए

यद्धर्मसूनोर्बत राजसूये निरीक्ष्य दृक्स्वस्त्ययनं त्रिलोकः। कार्त्स्न्येन चाद्येह गतं विधातुरर्वाक्सृतौ कौशलमित्यमन्यत १३
यस्यानुरागप्लुतहासरासलीलावलोकप्रतिलब्धमानाः। व्रजस्त्रियो दृग्भिरनुप्रवृत्तधियोऽवतस्थुः किल कृत्यशेषाः १४
स्वशांतिरूपेष्वितरैः स्वरूपैरभ्यर्द्यमानेष्वनुकंपितात्मा। परावरेशो महदंशयुक्तो ह्यजोऽपि जातो भगवान्यथाग्निः १५
मां खेदयत्येतदजस्य जन्म विडंबनं यद्वसुदेवगेहे। व्रजे च वासोऽरिभयादिव स्वयं पुराद्व्यवात्सीद्यदनंतवीर्यः १६ दुनोति चेतः स्मरतो ममैतद्यदाह पादावभिवंद्य पित्रोः। तातांब कंसादुरुशंकितानां प्रसीदतं नो कृतनिष्कृतीनां १७

जैसें अग्निकाष्ठनमैं प्रगटहोयहैं १५ यहजो अजन्मा भगवान् कौं वासुदेवकेघरमैं जन्म सो विडंबना है औरकंसके भयतें ब्रजमैं वास औरअनंतवीर्य होयकालयवनकेडरतें मथुरातें भाजे यहबातें मो हिखेदउपजावैं हैं आश्चर्य तो है अजन्माकौं जन्म कैसें कालस्वरूपकौं वैरीतें भयकैसें यहउपजें है १६ औरब्रजतें आयमातापिताके चरननमैं दंडौत करमदुकहतभए हेतात हमैं याकंसकौं बडोडर तातें तुम्हारीसेवाहमपैंनहीं बनआई सो तुमपैंप्रसन्नहोउ यहकंसकौं भयकालरूपमैं कहांबनें तातें विदुरएबातें जबमैं स्मरणकरूं तबमेरौ चित्तव्याकुलहोहै १७

हे विदुरजी श्रीकृष्णरूपसूर्य अस्त भए औरकालरूप सर्पनें निगलो ऐसें सोभारहित जो यादवन के घर तिनकी क्षेमकुशल है सो प
और ये लोक भाग्यहीन होय गए यादव अतिसय करके अभागे हैं जे सदा निकट रहे हैं परि हरि कौं न जानत भए जैसें जल
में प्रतिबिंब चंद्रमा ताहि मत्स्य न जानें वे जानें हैं सो ह मारी सी जातके हैं ऐसेंही यादवननें हरि कौ स्वरूप न जान्यौं अपनें स
जाती ही जाने ८ चित्तके जानवे में अतिसय निपुण संग उठें बैठें हरिके परतौं हू यादव अपनें तें श्रेष्ठतर हरि कौं न जानत भए
और सबनके ब्रह्मादिकन के उ ईश्वर ऐसें न जानत भए ९ और हरि की माया कर व्याप्त जे देहादिकन में आसक्त जे मूढ तिन के

उद्धव उवाच: कृष्णद्युमणिनिम्लोचे गीर्णेष्वजगरेण ह किं नु नः कुशलं ब्रूयां गतश्रीषु गृहेष्वहं ७ दुर्भगो बत लो
कोऽयं यादवो नितरामपि ये वसंतो पि न विदुर्हरिं मीना इवोडुपं ८ इंगितज्ञाः पुरुप्रौढा एकारामाश्च सात्वताः सात्व
तामृषभं सर्वे भूतावासममंसतु ९ देवस्य मायया स्पृष्टा ये चान्यदसदाश्रिताः भ्राम्यते धीर्न तद्वाक्यैरात्मन्युप्तात्म
नो हरौ १० प्रदर्श्यातप्ततपसामवितृप्तदृशां नृणां आदायांतरधाद्यस्तु स्वबिंबं लोकलोचनं ११ यन्मर्त्यलीलो
पयिकं स्वयोगमायाबलं दर्शयता गृहीतं विस्मापनं स्वस्य च सौभगर्द्धेः परं पदं भूषणभूषणांगं १२

वचनन करि मो सारिके की बुद्धि नहीं भोर पावें जो यादव ही हरि कौं न जानत भए तौ शिशुपालादिक मूढ नौं चाहैं सो कहैं १०
नहीं कीनो है तप जिननें नाहीं नेत्र हरि के दर्शनन तें जिनकी आंखें अघाईं नहीं ऐसेन हू एक बार अपनो सुंदर स्वरूप
दिखाय जो अंतर्धान भए ११ जो हरि कौ स्वरूप मनुष्य लीला के जोग्य अपनी जोगमाया को बल दिखायवे कौं ग्रहण
कीयौं जब दर्पण में देखते बिंब आपही विस्मय पावते ऐसौ स्वरूप सौभाग्य के अतिशय कर परकाष्ठा भूषण कौं भूषित करि

ऐसें परम भागवत उद्धवजी कौं विदुरजीनें जब श्रीकृष्णचंद्रजी की वार्ता जब पूछी तब हरि कौं स्मरण होइ आयौ । औरउत्कं
ठा जो भई तातें कछू बोल सकैं नहीं १ जो उद्धवजी वे पांच वर्ष के हे तब माता जें प्रातःकाल के भोजन कौं कही परंतु वा हरि की प्रति
मा बनाई बालक्रीडा करत हे जाकरि हें सो वा भोजन न करी इछा न करत भए माता मैं अपने प्रभु कौं भोग लगायो नहीं मैं पुन
लेंगे से भोजन करूं ऐसें कहत भए २ सो विदुर के पूछे परि तौ बहुत प्रयोग करि कृष्ण चरणारविंद सुधा मैं निमग्न होइ गये

श्रीशुक उवाच: इति भागवतः पृष्टः क्षत्रा वार्तां प्रियाश्रयं प्रतिवक्तुं न चोत्सेहे औत्कंठ्यात्स्मारितेश्वरः १ यः पं
चहायनो मात्रा प्रातराशाय याचितः तन्नैछद्रचयन् यस्य सपर्यां बाललीलया २ स मुहूर्तमभूत् तूष्णीं कृष्णा
ङ्घ्रिसुधया भृसं तीव्रेण भक्तियोगेन निमग्नः साधु निर्वृतः ३ स कथं सेवया तस्य कालेन जरसं गतः पृष्टो
वार्त्तां प्रतिब्रूयाद्भर्त्तुः पादावनुस्मरन् ४ पुलकोद्भिन्नसर्वांगो मुंचन्मीलद्दृशा शुचः पूर्णार्थो लक्षितस्तेन
स्नेहप्रसरसंप्लुतः ५ शनकैर्भगवल्लोकान्नृलोकं पुनरागतः विमृज्य नेत्रे विदुरं प्रीत्याहोद्धव उत्स्मयन् ६

और कोई बात कौं स्मरण न रह्यौ ३ सो उद्धवजी हरि की सेवा करत बुढापे कौं प्राप्त भए सो प्रभु स्वामी के चरणारविंद
कौं नमस्कार स्मरण करत विरति युक्त पूर्व पूछे हें ये कैसें जल दी उत्तर देहें ४ पुलकायमान अंग सब जाकैं भई तिन
मैं ते आंसू डारत भए स्नेह के प्रवाह मैं डूबि गए विदुरजीनें वा समें कृतार्थ देखो ५ धीरे २ भगवान के ध्यान तें जब मनुष्य
देह की सिधि आई तब तो नेत्र पोंछ मुसक्याय कै उद्धवजी विदुरजी सों यह बोले ६ उद्धवजी कहे हैं हो विदुरजी ॥ ६ ॥ ६

भा॰त॰
४

हे साधु मैं तौ नरन मैं पतत जो धृतराष्ट्र वाहि सोच करूं हूं जा ने मेरी भै या पांडु ता सों द्रोह करी वा के पुत्रन कों दुःख दीयो जा ते मैं वाकों परम सुहृद हतौ परंतु पुत्रन के मोह वस होय मेरी जीवते ही मोकों द्रोह कर्यो नगर मैं ते निकासत भयो ४१ सो मैं मनुष्यनाट्य के अनुकरण करि मनुष्यन के नेत्रन कों चलावत जो हरि तिनके प्रसाद ते उनकी माया कर महिमा देखत आश्चर्य रहित कोउ जाको न ही ऐसें पृथ्वी मैं विचरत हूं ४२ सो मैं जानत हूं हरि तौ पांडुवन कों दुःख एक घरी हू नहीं सह ते परंतु तीन मद नकरि उद्धव तव व होत से नान करि पृथ्वी कूं चलावत तें सब जव राजवर वध होतिन व मारस वकौं पांडुवन कों सुख देनो पालियें कौरवन को अपराध सहत

सोऽप्यानुशोचेत मथापत्तं तं भ्रात्रे परेताय विदुद्रुहे यः। निर्यापितो येन सुहृत्स्वपुर्यामहं स्वपुत्रान् समनुव्रतेन ४१
सोऽहं हरेर्मर्त्यविडंबनेन दृशो नृणां चालयतो विधातुः। नान्योपलक्ष्यः पदवीं प्रसादाच्चरामि पश्यन् गतविस्मयोऽत्र
४२ नूनं नृपाणां त्रिमदोत्पथानां महीं मुहुश्चालयतां चमूभिः। वधात्प्रपन्नार्तिजिहीर्षयेशोऽप्युपैक्षताघं भगवान् कुरूणां ४३ अजस्य जन्मोत्पथनाशनाय कर्माण्यकर्तुर्ग्रहणाय पुंसां। नन्वन्यथा कोऽर्हति देहयोगं परो गुणानामुत कर्मतंत्रं ४४ तस्य प्रपन्नाखिललोकपानामवस्थितानामनुशासने स्वे। अर्थाय जातस्य यदुष्वजस्य वार्तां सखे कीर्तय तीर्थकीर्ते ४५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे नाम प्रथमोऽध्यायः १ श्रीशुक उवाच:

भये ४३ अजन्मा हरि कौ जन्म सो कुपंथी मार्ग नाश करिवे कों और अकर्ता है कें जो कर्म करें है सो लोकन के प्राप्त होवे को लीयें नहीं तौ गुणन तें परे है सें देह कौं जोग और कर्म करवे कौं जो ग्यतो ४४ अपनी आज्ञा में स्थित सरणागत जे लोकपाल तिन के अर्थ यादवन में जन्म लीयो और सखा से जो अजन्म संसार तारवे वारी जो कीर्ति ता हरि की कथा वार्ता कहो ४५ इति श्री भागवते महापुराणे तृतीय स्कंधे नाम प्रथमोऽध्यायः श्रीशुकदेवजी कहैं हैं हे राजन् ॥१॥

५ पातीमितकैंपथकैंधारस्याअरराड्वारेम्मैसेअर्जुन

देवंश्री लक्ष्मचंद्र विषैं अनन्य वृत्ति करी अनुरागी ऐसे हे हीक सत्या जो पुत्र चारदेष्ण गदते आदि दै सब सो मकुपाल है ३५ और राजा
युधिष्ठिर हू अपनी छजा सरीके श्री कृष्ण अर्जुन तिनकी सहाय करि धर्म मर्यादा कौं पालन करे हैं जाकी सभा मैं दुर्योधन चक्रवर्ति भूपने
की संपत्य देखकर जयपरंपरा देखि बहुत दुःख ताकौं प्राप्ति भयो ३६ और महाबली भीमसेन कीयो है अपराध जिन नें तिन कौरवनि पैं वह
तत्काल तैं संचय कीयो जो क्रोध ताहि छोडत भयो केनाहि जाविरी याग गहाके मार्ग विचरें तें तावेर वाके अंगघात और वनभूमिन तिसर सके
सो भीमसेन है ३७ और रथीन के रथ पैं गांडीव धनुष करमारै हैं वल्ली जाने सो आछैं विराजै है जो महादेव मायाकरिकै भील कौ रूप धरि

अपि त्वदन्ये च निजात्मदैवममन्यवृत्ता समनुव्रताये हृदीक सत्यात्मज चारुदेष्णगदादयः स्वस्ति चरंति सौम्य ३५ अपि स्वदो
र्भ्यां विजयाच्युताभ्यां धर्मेण धर्मः परिपाति सेतुं दुर्योधनोऽतप्यत यत्सभायां साम्राज्यलक्ष्म्या विजयानुवृत्त्या ३६ किं वाकृता
घेष्वघमत्यमर्षी भीमोहिवद्दीर्घतमं व्यमुंचत् यस्यांघ्रिपातं रणभूर्न सेहे मार्गं गदायाश्चरतो विचित्रं ३७ कच्चिद्यशोधा रथ
यूथपानां गांडीवधन्वोपरतारिरास्ते अलक्षितो यच्छरकूटगूढो मायाकिरातो गिरिशस्तुतोष ३८ यमावुतस्वित्तनयौ पृथायाः
पार्थैर्वृतौ पक्ष्मभिरक्षिणीव रेमात उद्दाय मृधे स्वरिक्थं परात्सुपर्णाविव वज्रिवक्त्रात् ३९ अहो पृथापि ध्रियतेऽर्भकार्थे राजर्षिव
र्येण विनापि तेन यस्त्वेकवीरोऽधिरथो विजिग्ये धनुर्द्वितीयः ककुभश्चतस्र ४०

आये छिपकर सो युद्ध में अर्जुन के बाणन कर आवृत
रीझगए ३८ और नकुल सहदेव भाई जे पुत्र जैसें आदि देव कुंती के बेटा पांडवन पाले जो जैसें आंखिन कौं पर करसा करें ते है उ युद्ध में वैरी
न पै तें अपनो भाग लैंकी आवत रहे जैसें गरुड हांइ कुरख तें अमृत लावें ३९ है उद्धव देखो आश्चर्य पांडुराजा तिन विना कुंती कहा जीवें प
रंतु लरकों ही बालक न केलीये जीवें जो पांडु प्रके लोंई मरा रथी जाने दूसरौं धनुष न ही लीनो और चारौं दिशा जी[illegible]

जीतत भयो ४०

औरयादवनकेसेनापतिप्रद्युम्नआछैंसुखसोंहैं जोपूर्वजन्ममेंकामदेवहैं ब्राह्मणनकीआराधनाकरतरुक्मिणीभगवानतें
प्रापतभईसोप्रसन्नहैं २८ औरसात्वतिवृष्णिभोजदाशार्हयादवनकेराजाउग्रसेनआछैंसुखसोंहैं जाहिराजश्रीआसाछोडिभगवा
न्अभिषेककरतभए २९ औरहरिकेबराबरजौंपुत्ररथीनमेंश्रेष्ठसांबआछैंहैं जोपहिलेपार्वतीकेपेटमेंभयोंपीछेंजांबवती
नैंव्रतकरितातेंउपजायोंसोआछेंहैं ३० औरवत्सात्यकीआछैहैं जानेंअर्जुनपैसोंधनुषविद्यासीखीहै जोहरिकीसेवाकरजती

कच्चिद्वरूथाधिपतिर्यदूनांप्रद्युम्नआस्तेसुखमंगवीर यंरुक्मिणीभगवतोभिलेभेआराध्यविप्रान्स्मरमादिसर्गे २८ कच्चि
त्सुखंसात्वतिवृष्णिभोजदाशार्हकाणामधिपःसआस्ते यमभ्यषिंचच्छतपत्रनेत्रोनृपासनाशांपरिहृत्यदूरात् २९ कच्चिद्धरेसौ
म्यसुतःसदृक्षआस्तेग्रणीरथीनांसाधुसांबः असूतयंजांबवतीव्रताढ्यादेवंगुहंयोंबिकयाधृतोग्रे ३० क्षेमंसकच्चिद्युयुधान
आस्तेयःफाल्गुनाल्लब्धधनूरहस्यः लेभेंजसाधोक्षजसेवयैवगतिंतदीयांयतिभिर्दुरापां ३१ कच्चिद्बुधःस्वस्त्यनमीवआस्ते
श्वफल्कपुत्रोभगवत्प्रपन्नः यःकृष्णपादांकितमार्गपांसुष्वचेष्टतप्रेमविभिन्नधैर्यः ३२ कच्चिच्छिवंदेवकभोजपुत्र्याविष्णु
प्रजायाइवदेवमातुः यावैस्वगर्भेणदधारदेवंत्रयीयथायज्ञवितानमर्थं ३३ अपिस्विदास्तेभगवान्सुखंवोयःसात्वतांकामदु
घोनिरुद्धः यमामनंतिस्महिशब्दयोनिंमनोमयंसत्वतुरीयतत्वं ३४

नकोदुर्लभगतितापैप्राप्तिभयों ३१ औरबडेबुद्धिमाननिष्पाप भगवत्कृपाअक्रूरजीआछेहैं जोकृष्णचरणकरिअंकितब्रजमार्ग
कीधूलिमेंलोटतोप्रेमकरछूटगयोहैधैर्यजाकौ ३२ अदितीसरीसीदेवकीभगवानकीउपजायवेवारीसोकुशलक्षेमहैं जेअपनेग
र्भमेंभगवानकोंऐसेंधारणकरतभई जैसैंवेदत्रयीयज्ञकोंजामेंविस्तार ऐसेंअर्थकोंधारणकरैहैं ३३ औरयादवनकेकाम
नावर्षवेवारेऐसेजेअनिरुद्धसोसुखसोंहैं जायवेदशास्त्रकोंकारणकहैहैं मनकेप्रवर्तकअधिष्ठाताहैं ३४ औरहजेअपनेइष्ट

तासरस्वतीमेंत्रितउशनमनुपृथुअग्निअसितपवनसुदासगोस्वामिकार्तिक श्राद्धदेवइनकों तीर्थनकों सेवनकरतभयों
औरहूऋषिनैंकीनेजोविष्णुकेनानास्थान चक्रादिआयुधनकरअंकितजोमंदिरतिनमैंहरिलभए जिनकेदर्शनकरिश्रीकृ
ष्णकोंस्मर्णकरतरहैहै २३ तापीछेंसौराष्ट्रदेशमैंहोईसमृद्धिसौवीरमत्सकुरुजांगलयेदेश इनकोंउलंघनकरतजितने
कालमेंजमुनाजीगए तबलाईयावनकीअप्रगटलीलाभई औरउद्धवजीद्वारकातेंआए सोवृजराजजमुनातटपरमभागवतउ
द्धवजीकेदर्शनकरतभयों २४ सोविदुरजीवसुदेवकोअनुचरशांत वृहस्पतिकौशिष्यउद्धवजातिप्रेमसैं दृढआलिंगनकरि

तस्यांत्रितस्योशनसोमनस्चपृथोरथाग्नेरसितस्यवायोः तीर्थंसुदासस्यगवांगुहस्ययच्छ्राद्धदेवस्यसआसिषेवे २२ अ
न्यानिचेहद्विजदेवदेवैः कृतानिनानायतनानिविष्णोः प्रत्यंगमुख्यांकितमंदिराणि यद्दर्शनात्कृष्णमनुस्मरंति २३ त
तस्त्वतिव्रज्यसुराष्ट्रमृद्धंसौवीरमत्स्यांकुरुजांगलांश्च कालेनतावद्यमुनामुपेत्य तत्रोद्धवंभागवतंददर्श २४ सवासुदेवा
नुचरंप्रशांतं वृहस्पतेःप्राक्तनयंप्रतीतं आलिंग्यगाढंप्रणयेनभद्रंस्वानामपृछद्भगवत्प्रजानां २५ कच्चित्पुराणौपुरुषौ
स्वनाभ्यपाद्मानुवृत्येहकिलावतीर्णौ आसातउर्व्याःकुशलंविधायकृतक्षणौकुशलंशूरगेहे २६ कच्चित्कुरूणांपर
मःसुहृन्नोभामःसआस्तेसुखमंगशौरीः योवैस्वसॄणांपितृवद्ददातिवरान्वदान्योवरतर्पणेन २७

हरिकेपोष्यजोसुहृदतिनकीकुशलपूछतभए २५ हेउद्धवउराणपुरुषजोभगवानश्रीकृष्णबलदेव ब्रह्माकीवीनतीकरपृ
थ्वीमैंअवतीर्णभए वासुदेवजीकेघरमे सबनकोदीनोहैआनंदजिननें अबपृथ्वीकोंभारउतारेचाहैं सोद्वारकामेंअछैहैं २६
औरकहोहमारेकौरवनकेएकहितकारीवासुदेवतेंआछैंजोवडेउदारवरदानकौंनानाप्रकारकेदायजेदेतेरहैहै सोतेंआ

भा॰ त॰
२

कौरवनैं बडे पुण्य करि पाए विदुरजी सो हस्तनापुरतें निकसगये सो मानौं कौरवनकौ पुण्य ही निकसगयो सो जिन जिन स्थानन में सहस्रमूर्ति हरि विराजें हैं तिन तिन क्षेत्रन में सब पृथ्वी में पुण्य बढायवेकों प्राप्त भए हैं १७ पवित्र हैं उपवन पर्वत निकुंजन में ऐसे पुरन में निरमल जिन मैं जल ऐसे नदी सरोवर और भगवान की मूर्तिन करि कैं अलंकृत जो तीर्थ और क्षेत्र तिन मैं अकेले विचरत भए १८ ऐसें पृथ्वी मैं डोलत पवित्र असंगी … जानी … नित्य तीर्थन मैं जाकौ स्नान

स निर्गतः कौरवपुण्यलब्धो गजाह्वयात्तीर्थपदः पदानि: अन्वाक्रमत्पुण्यचिकीर्षयोर्व्यां स्वधिष्ठितो यानि सहस्रमूर्तिः १७ पुरेषु पुण्योपवनाद्रिकुंजेष्वपंकतोयेषु सरित्सरस्सु अनंतलिंगैः समलंकृतेषु चचार तीर्थायतनेष्वनन्यः १८ गां पर्यटन्मेध्यविविक्तवृत्तिः सदाप्लुतोऽधःशयनोऽवधूतः अलक्षितः स्वैरवधूतवेषो व्रतानि चेरे हरितोषणानि: १९ इत्थं व्रजन्भारतमेव वर्षं कालेन यावद्गतवान्प्रभासं तावच्छशास क्षितिमेकचक्रामेकातपत्रामजितेन पार्थः २० तत्राथ शुश्राव सुहृद्विनष्टिं वनं यथा वेणुजवह्निसंश्रयं: संस्पर्धया दग्धमथानुशोचन् सरस्वतीं प्रत्यगियाय तूष्णीं २१

भूमि मैं है सयन जाकौ अवधूत ताकौं सो जाकौ भेष अपने घर रहवैल पहिचानैं ऐसो होई हरि के प्रसन्न करवे के व्रतनि … ऐसे वन करत भए १९ ऐसें ही भरत खंड मैं डोलत जितने काल मैं प्रभास मैं गए उतने मैं जायकैं सुनि सो श्री कृष्णचंद्र की सहाय करि राजा युधिष्ठिर एकछत्र राज्य करै हैं २० उहां प्रभास मैं जायकैं सुहृदन कौ नास सुनत भयौ जैसें बांसन मैं अग्नि लगै है तब सब जरि जाई ऐसें स्पर्धा करि सब कुल जर गयौ ताको सोच करते जित सौं सरस्वती आवै है ताके सन्मुख जात भए २१

२

देवता है और राजा हैं और ब्राह्मण हैं सो भगवान् कृष्णचंद्र मूर्त्तिमान् हरी द्वारका में विराजे हैं जी में हैं सब राजा और देवता जाने १२ और
यह जो दुर्योधन है सो हरि तें विमुख दोषरूप गई है और जाकी जाहि न बुद्धि करि पोषै है सो या कुल को सब को कुशल चाहै तो
याहि त्याग जल्दी १३ ऐसे जब दुर्योधन कौं कहीं वे ते वाने विदुर जी को बड़ों अपमान कीयों जा विदुर जी कूं साधुन के बड़ाई और
बेलाय क स्वभाव है परंतु जो इन के मारे ढाडे जाके ता दुर्योधन नैं दूसासा प्रान पाकुनी सहित अवसा के वचन कहै हैं १४ या विदु

पार्थांस्तु देवो भगवान् मुकुंदो गृहीतवान् सक्षितिदेवदेवः आस्ते स्वपुर्यां यदुदेवदेवो विनिर्जिताशेषनृदेवदेवः १२
स एव दोषः पुरुषद्विडास्ते गृहान् प्रविष्टो यमपत्यमत्या पुष्णासि कृष्णाद्विमुखो गतश्रीस्त्यजाश्वशैवं कुलकौशला
या १३ इत्यूचिवांस्तत्र सुयोधनेन प्रवृद्धकोपस्फुरिताधरेण असत्कृतः सत्स्पृहणीयशीलः क्षत्ता सकर्णानुजसौ
बलेन १४ क एनमत्रोपजुहाव जिह्मं दास्याः सुतं यद्बलिनैव पुष्टः तस्मिन् प्रतीपः परकृत्य आस्ते निर्वास्यतामाशु
पुरात् श्वसान १५ स इत्थमत्युल्बणकर्णबाणैर्भ्रातुः पुरो मर्मसु ताडितोऽपि स्वयं धनुर्द्वारि निधाय मायां गतव्यथो
ऽयादुरुमानयानः १६

र कौं यहां कौंन ने बुलायो है महा अकुल है दासीपुत्र है बुलाय बेलाय कन ही है जो तुम्हारे माल षाय पुष्ट भयो है तिन ही
सों प्रतिकूल है पांडवन की कीर्ति करै है या कों पुर ते जल्दी निकास देउ यह जीवत ही मृतक प्राय है १५ सो विदुर या भांति
अति उल्वण कर्ण के बान सरीर के वचनन करि कै मैं या धृतराष्ट्र के आगे जब ताडित भयो तब धनुष कौं दरवाजे मे धरि जो पे
आपुती मैं रंगें धन पमो दिखता न करनो है या ते धरि हरि की माया की बड़ाई करत व्यथा ही रहित होई बन कौं जात भए १६ १६॥

भा.त.
१

जासभामेदूसासननैंद्रोपतिकीचोटीपकरी पुत्रजाकोमहानिंद्यलनहैं परिवाहिमननैंनकस्यौ जोद्रोपदीउत्रवधूहैं औरकुप
नेअंसूसनकरिकूचनकीकेसरधोवेहैं ७ जूआमेंअधर्मकरिजीतेवडेसाधसत्यवादीराजायुधिष्ठरजववनलेआए तवसवपैरा
आअपनोंमाग्यौं तवपुत्रनमैंआपाकराजाधृतराष्ट्र वाहिराज्यनदेतभयौ ८ जवयुधिष्ठरनेपठायेश्रीकृष्णचंद्रकौरवनकी
सभामैंगए औरजोवचनभीष्मादिकननेंअमृतस्यावतिहैं कहतभए परंतुहीणभयोहैंपुण्यजाकौ ऐसोराजाजाकौं नाहुत

यदासभायांकुरुदेवदेव्याकेशाभिमर्षंसुतकर्मगर्ह्यं निवारयामासनृपः स्नुषायास्वाश्रैर्हरंत्याःकुचकुंकुमानि:
७ द्यूतेत्वधर्मेणजितस्यसाधोःसत्यावलंवस्यवनागतस्य नयाचतोऽदात्समयेनदायं तमोजुषाणोयदजातशत्रोः
यदाचपार्थप्रहितसभायांजगद्गुरुर्यानिजगादकृष्णः नतानिपुंसाममृतायनानिराजोरुमेनेक्षतपुण्य
लेशः ९ यदोपहूतोभवनंप्रविष्टोमंत्रायपृष्टःकिलपूर्वजेन अथाहतन्मंत्रदृशांवरीयान्यन्मंत्रिणोवैदुरं
वदंति १० अजातशत्रोःप्रतियच्छदायंतितिक्षतोदुर्विषहंतवागः सहानुजोयत्रवृकोदराहिःश्वसन्रुषायत्तम
लंबिभेषि ११

राष्ट्रनैंवादुर्योधनतेवडुनकहीवहूमानों ९ तववासभामेंविदुरजीकोंवुलायौधृतराष्ट्रनेंमंत्रपूछ्यौं तवमंत्रीनमैंश्रेष्ठ
विदुरजीसोश्रेसोमंत्रकह्यौं जाकोंभवताईवडेमंत्रीवडाईकरैहैं १० हेधृतराष्ट्रअजातशत्रुराजायुधिष्ठरताकौंराज्यदेउ
तुह्मारेंवडेंअपराधताहिनैंसह्योंहैं जाकेढिगभीमसेनरूपीसर्प्प अर्जुनसहितक्रोधकरिकैंस्वासलेतरहैहैं जासोंतु
मअतिशयडरपोहौ ११ औरपांडवनकौंतौंमुकुंदभगवाननेंअंगीकारकस्यौहै औरजिनमेंक्षत्रंरहैतितहीमेंसव

॥श्रीगणेशायनमः शुकदेवजीकहतहैं हेराजन् यहीवात्र्योंजोतेनैमेत्रेतेपूछीसोईसमृद्धियुक्तघरछोडिकरवनमैंगएजो
विदुरजीतिननैमैत्रेयजीसोंजोपूछीहै १ जोतुम्हारेपांडवनकेजेदूतवनेभगवान्हस्तनापुरगएतवजोविदुरजीकोघरसोंअप
मैंजानिप्रवेशकरतभएऐं ओरविदुरवज्ञान्दूरयोधनकेघरनतरैं नानानसा॰ निगृहदुर्योधनकोछोडिविदुरकेघरसाकखा
जीपाई २ राजापूछेहैं अहोशुकदेवजी विदुरजीकोमैत्रेयभगवान्सोंकहांसंगमभयो ओरकबसंवादभयो यहहमारेआ
गेसवकहौ ३ ताविदुरजीकोंश्रीमैत्रेयविषेजोप्रश्नतामेंथोरेअर्थकौंउदैनहोइगो विदुरजीकोंप्रश्नजोमैत्रेयजीकेउच्चारन

॥श्रीशुकउवाच॥ एवमेतत्पुरापृष्टोमैत्रेयोभगवान्किल क्षत्तावनंप्रविष्टेनत्यक्त्वास्वगृहमृद्धिमत् १ यद्वाअयंमंत्र
कृद्वोभगवानखिलेश्वरः पौरवेंद्रगृहंहित्वाप्रविवेशात्मसात्कृतं २ राजोवाच॥ कुत्रक्षत्तुर्भगवतामैत्रेयेणाससंग
मः कदावासहसंवादएतद्वर्णयनःप्रभो ३ नेह्यल्पार्थोदयस्तस्यविदुरस्यामलात्मनः तस्मिन्वरीयसिप्रश्न
साधुवादोपबृंहितः ४ सूतउवाच॥ सएवमृषिवर्योयंपृष्टोराज्ञापरीक्षिता प्रत्याहतंसुबहुवित्प्रीतात्माश्रूयतामितिः ५
शुकउवाच॥ यदातुराजास्वसुतानसाधून्पुष्णन्नधर्मेणविनष्टदृष्टिः भ्रातुर्यविष्ठस्यसुतान्विबंधून्प्रवेश्यलाक्षाभवनेददाह ६

रिपलावतहैं ४ सोकहैं सूतजीकहैहै याभांतिराजापरीछतनेपूछेजोशुकदेवजीसोसर्वज्ञप्रसन्नहोयसुनौं
ऐसेराजासोंबोलैं ५ अहोराजन् जबराजाधृतराष्ट्रनैंअसाधुपुत्रनकौंपालनपोषणकरयौं अधर्मकरनष्टभ्रा
कीबुद्धिसोंपांडुकेपुत्रअपिताकरकैंतीनतिनैनैंतिलक्षागृहमैंप्रवेशकराइजरावनभयौ ६ श्रीरामजीसतायहरेनमः